लाल चीन में

लेखक :

लिउ शा-टोंग

सिद्धार्थ पब्लिकेशंस लिमिटेड

३५, फैज़ बाजार, दिल्ली- ७

प्रथम संस्करण
२००० प्रतियां

मूल्य १॥) रु.

मुद्रक :
अर्जुन प्रेस
नया बाजार, दिल्ली- ६

विषय सूची

प्रस्तावना

एक उदारवृत्ति वाले ऐसे व्यक्ति पर जो प्रगति चाहता है, जनतन्त्रता में विश्वास रखता है और शान्ति के लिये प्रयत्नशील है, किसी तानाशाही शासन में क्या बीतती है यह पुस्तक उसी की कहानी है। चीन के कम्युनिष्ट संघ में रहकर मुझको जो अनुभव हुआ उसी को मैंने अगले इन पृष्ठों में अंकित कर दिया है, ताकि मेरे इस वृतान्त से संसार को कुछ लाभ हो सके।

मेरा यह विश्वास है कि मैंने अतिशयोक्ति नहीं की। जहां तक बन पड़ा मैंने जैसी स्थिति देखी थी उसी का यथार्थ वर्णन कर दिया है। मेरी यह धारणा है कि कम्युनिस्टों के आचरण को समझने का यही एक सही ढंग है।

मैं एक वर्ष से अधिक समय तक चीन के कम्युनिस्ट संघ में रहा। उस समय में मैंने मानवीय स्वाधीनता और जनतन्त्रता के विरुद्ध कार्य किया। मेरे ऐसा करने से मानवजाति को स्वाधीनता की लड़ाई की जो क्षति हुई उसके लिये मुझको हार्दिक खेद है। यदि मेरे निम्न शब्द अब भी यह चेतना जमा सकें कि तानाशाही संसार के लिये एक बड़ा खतरा है और यह कि तानाशाही मानव की प्रतिष्ठा और उसके व्यक्तित्व दोनों की शत्रु है तो मैं यह समझूंगा कि मेरा प्रयत्न निष्फल नहीं रहा। और अपने इस स्वल्प प्रतिकार को मैं अपने अतीत के कुकृत्तियों का आंशिक प्रायश्चित मानूंगा।

स्वतन्त्र संसार के विरुद्ध कम्युनिस्टों ने जो युद्ध छेड़ रखा है, उसमें उसके पास एक भयंकर अस्त्र है : अभी तक स्वतन्त्र संसार को इस बात की कल्पना तक भी नहीं होती कि समस्त जनता से उसके विचार, भाषण और कार्य की स्वतन्त्रता किस प्रकार चुरा और छीन ली जा सकती है। किन्तु सुन्दर एवं सुमधुर नारे लगाते हुये चीन के कम्युनिस्टों ने अपने देश में यह सब कुछ कर दिखाया है, यह निर्विवाद रूप से सत्य है। उन्होंने एक नया शब्द-कोष रच लिया है और अपनी तानाशाही इच्छाओं की पूर्ति के लिये उन शब्दों में एक नया ही अर्थ डाल दिया है। इसी शब्दकोष के द्वारा वे

आये दिन अनेक अपराध करते रहते हैं और अपने अधिकृत क्षेत्रों में जनता को उन्मत्त रखते हैं और उन्हीं शब्दों द्वारा वे लोह-पट्ट के बाहर के देशों की जनता को अपनी ओर आकृष्ट करने का यत्न करते रहते हैं।

"जन तन्त्रता" शब्द ही को ले लीजिये। वे नित्यप्रति इसकी दुहाई देते हैं और यह दावा करते हैं कि उनका राज ही वास्तविक जनतन्त्रता है। उनकी सभाओं में जो निर्णय होते हैं देखने में उनको जन तन्त्रीय प्रणाली द्वारा ही सृजित किया जाता है। किन्तु सत्य यह है कि उनके राज में जन-तन्त्रता ही का सर्वथा अभाव है। वे स्वयं अपनी जन-तन्त्रता को "जन-तन्त्रीय केन्द्रवाद" अथवा "आदेशात्मक जनतन्त्रता" आदि नामों से पुकारते हैं। वास्तव में इस जनतन्त्रता का एक मात्र अर्थ कुछ मुट्ठी भर लोगों की स्वेच्छाचारिता ही है। यदि कोई व्यक्ति "स्वतन्त्र" रूप से उनकी आज्ञा नहीं मानता तो वे पुलिस और कारावास द्वारा उसकी "स्वेच्छा" प्राप्त कर लिया करते हैं।

दूसरा शब्द "स्वाधीनता" है, जिसका उनका अपना ही तर्क है। चीन के केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री ने धार्मिक स्वाधीनता के विषय में पीपिंग फुयेन विश्व-विद्यालय में जो कुछ कहा था उसको यहां उद्धृत करना श्रेयस्कर प्रतीत होता है, "इस समय धार्मिक स्वाधीनता को अधिनियमों के अनुरूप ढाला जा रहा रहा है। धार्मिक स्वाधीनता का अर्थ मनचाहे धर्म में विश्वास करना नहीं है और न ही उसका अर्थ किसी भी धर्म में विश्वास न करना है। धार्मिक स्वाधीनता का अर्थ धर्म के विरुद्ध संघर्ष करने की स्वाधीनता है।"

"शान्ति" एक ऐसा ही तीसरा शब्द है। इसके नारों से वे आये दिन वायुमण्डल को गुंजाते रहते हैं। चीन के कम्युनिस्टों का एक प्रसिद्ध विजय यात्रा गान है जिसके दो वाक्य यह स्पष्ट कर देते हैं कि इस शब्द से उनका वास्तव में क्या अभिप्राय है।

"युद्ध द्वारा की है हमने क्रांति, युद्ध द्वारा जीतेंगे हम शान्ति"

अपनी सेना को अधिक विस्तृत और शक्तिशाली बनाने के लिए वे अपने

सैनिकों को निरन्तर "पुनः शिक्षित" करते रहते हैं, विशेषतः उन सैनिकों को जो युद्ध से ऊब गए हैं। अपनी इस "पुनः शिक्षा" में वे अपने सैनिकों को तथाकथित वर्ग-व्यवस्था से ही घृणा करना नहीं सिखाते हैं वरन् अपने देश से बाहर की जनता से भी घृणा। शत्रु से किस प्रकार घृणा की जाय और किस प्रकार उसका विनाश, यह बताते समय वे अपनी "शान्ति भावना" ही को अपना मुख्य तर्क बताया करते हैं।

"राष्ट्रीय स्वाधीनता" भी एक ऐसा ही उदाहरण है। एक बार माउत्सी-तुङ्ग ने घोषणा की थी कि "अब से चीनी जनता अपने ही पांव पर खड़ी होगई है"। पर उसके तुरन्त बाद ही उन्होंने अपनी नई राष्ट्रीय नीति के विषय में एक नई घोषणा की। उस घोषणा में चीन की जनता को रूस का नेतृत्व स्वीकार करने का आदेश किया गया। इस प्रकार कम्युनिस्टों के अधीन आने से चीन की राष्ट्रीय स्वाधीनता का अर्थ विदेशी तानाशाही की दासता होगया।

"आत्म-सम्मान" एक शब्द भी इसी प्रकार तोड़ मरोड़ दिया गया है। अब चीन में "आत्म-सम्मान" का अर्थ कम्युनिस्टों के संघ में सम्मिलित होना है। उनके शब्दकोष में "सम्मान" शब्द का वास्तविक अर्थ कम्युनिस्टों की आज्ञाओं का पालन करना है। कम्युनिस्ट आदर्श की भी बातें किया करते हैं। किन्तु उनका एक मात्र आदर्श यह है कि सौ साल पहले कार्ल मार्क्स ने जो कुछ कहा था और उन्होंने स्वयं उसका जो अर्थ समझा था उसको पूज्य माना जाय।

कम्युनिस्टों का तर्क वहुधा उस व्यक्ति की याद दिलाता है जो किसी हलवाई की दूकान में गया और वहां उसने एक सेर बादाम हलवा मांगा। दुकानदार ने जब उसको हलवा लाकर दिया तो उसने कहा कि उसको हलवा नहीं अपितु एक सेर बर्फी चाहिए। दुकानदार ने जब उसको एक सेर बर्फी लाकर दी तो वह उसको लेकर चलता बना। जब दुकानदार ने उसका पीछा किया तो वह क्रुद्ध होकर बोला—"क्या बकते हो, क्या मैं तुमको इस बर्फी के बदले एक सेर हलवा नहीं दे चुका हूं ?" जब अभागे दुकानदार ने यह कहा कि उसको हलवे की कीमत तो नहीं दी गई थी तो ग्राहक प्रत्युत्तर में झल्ला

कर बोला कि "तुम्हारा हलवा था ही किस काम का जो मैं उसके लिए पैसे देता ?" उक्त दृश्य को देखकर आने जाने वाले लोग रुक गए थे। उधर दुकानदार को दुकान में अनधिकृत लोगों के घुस जाने का डर हो गया था। संक्षेप में परिणाम उसका यह हुआ था कि दुकानदार को अपनी एक सेर बर्फी से हाथ धोना पड़ा था।

लाल चीन के शासक रूस के अधिनायकों के आज्ञाकारी सहकारी हैं। मास्को की प्रत्येक बात उनके लिए शिरोधार्य है। चीन में कम्युनिस्ट संघ के नाम से जो जाल बिछाया गया है उसका उद्देश्य चीन को रूस की दासता में आबद्ध करना ही है।

निम्न पृष्ठों में मेरे एक साल के अनुभवों की कहानी है। यह कपोल-कल्पना नहीं है, और न गल्पगुच्छ। इसमें जो कुछ कहा गया है कला की दृष्टि से वह सम्भवतः मनोरंजक भी नहीं है। एक साधारण व्यक्ति के असाधारण अनुभवों का साधारण वक्तव्य ही है यह। किन्तु अनेक बार देखा गया है कि साधारण वक्तव्य ही असाधारण अर्थ का परिवाहक हुआ करता है। मेरा यह विश्वास है कि इस पुस्तक को पढ़ने के पश्चात् पाठक को कम्युनिस्टों के दावों को परखने और अपनी स्वाधीनता को सुरक्षित रखने में सहायता मिलेगी। जो लोग पहले ही अपना स्वाधीनता खो बैठे हैं उनकी आशा को सींचने के लिए यह पुस्तक सिद्ध होगी ऐसी आशा है।

पहला परिच्छेद

दक्षिण की ओर जाने वाली कार्य टोली

सन् १९४८ ई० के अन्तिम दिनों में जब कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी, कम्युनिस्ट सेनाओं ने भारी संख्या में पीपिंग और टियंट्सिन नामक नगरों पर आक्रमण कर दिया। उससे पहिले यह अफवाह फैली हुई थी कि शत्रु पीपिंग छोड़कर सीधा दक्षिण की ओर बढ़ता हुआ नानकिंग पर आक्रमण करेगा। जिन सेनानायकों पर पीपिंग की रक्षा की जिम्मेदारी थी उन्होंने इस अफवाह पर भरोसा कर लिया और इस प्रकार असावधानी में पड़कर बात की बात ही में नगर को अपने हाथ से खो दिया। जब सारी देह मगर के मुंह में जाने को थी, इनको अपने नाखूनों ही की चिंता थी।

नगरवासियों को इस अफवाह की असत्यता का उस समय पता लगा जब उन्होंने सुना कि भारी तोप गर्जन के साथ उनका नगर "मुक्त" हो चुका है और उसके सेनानायक एक छोटी सी कोठरी में बन्द हुए अपने रक्षाधिकारी होने के पाप पर चिंतन एवं पश्चाताप कर रहे हैं।

शहर पर अपना सैनिक अधिकार कर लेने के तुरंत पश्चात् कम्युनिस्ट अधिकारियों ने यह आदेश दिया कि अब कोई भी विदेशी संवाददाता संवाद न भेजे। शहर में जो समाचारपत्र या समाचार एजेंसियां थीं उनको या तो बन्द कर दिया गया, या उनको कम्युनिस्टों ने स्वयं अपने हाथ में ले लिया जिसका कारण यह बताया गया कि अब तक इनको जो लोग चलाते आये थे वे ठग हैं और प्रतिक्रियावादी ध्येय का समर्थन करते आये हैं। केवल नव-चीन-समाचार-एजेंसी को ही कार्य करते रहने की अनुमति मिली और "न्यू-चाइना डेली" नामक समाचार-पत्र को जीवित रहने दिया गया और वह भी इसलिए कि वह "जनता" के समर्थन में समाचार प्रकाशित करता आया था। रूस के जैसे लौह-पट्ट को अब उत्तरी चीन पर भी थोप दिया गया और इस प्रकार यह महान् सांस्कृतिक केन्द्र शून्यता के ऐसे गर्त में ढकेल दिया

गया जहां उसको अब शेष संसार से किसी प्रकार का सम्पर्क रखना भी असम्भव हो गया। तीन सहस्र वर्ष के उसके इतिहास में ऐसा पहले कभी न हुआ था।

उस समय मैं पीकिंग विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा था। अभी तक मुझको कुछ और योग्यता प्राप्त करने की आवश्यकता थी। अपनी आजीविका के लिए मैंने विश्वविद्यालय के प्रबंध कार्यालय में कुछ काम ले रखा था। मैं अपने एक सहकारी के साथ ही रहता था। मेरा यह साथी कियामुज़ (पीपिंग पर अधिकार होने से पहले कम्युनिस्टों की उत्तर-चीन की राजधानी) से होने वाले रेडियो ब्राडकास्ट सुना करता था। पीपिंग के "स्वातंत्र्य" के पश्चात् उसकी इच्छा हुई कि अब वह नानकिंग से होने वाले राष्ट्रवादी ब्राडकास्ट सुने। एक दिन दफ्तर में उसने मुझसे कहा था, "हो सकता है कि कोमिन्तांग प्रत्याक्रमण करे।" तीन दिन पश्चात् इस वाक्य को कहने के अपराध ही में उसको विश्वविद्यालय में स्थित सैनिक प्रतिनिधि के आदेशानुसार बर्खास्त कर दिया गया। पास के कमरे में सफाई करने वाले भंगी ने यह बात सुन ली थी और सैनिक प्रतिनिधि को इसकी सूचना दे दी थी। अब हमको पता लगा कि यह भंगी कामरेड पिछले चार वर्ष से अधिक से कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य था। इस बात से हम सबको बड़ी चिन्ता होने लगी।

एक सप्ताह के पश्चात् मुझको भी "अस्थायी बरखास्तगी" का आदेश मिल गया और इसका कारण यह बताया गया कि मैं एक साथ दो काम करने का अपराधी हूं अर्थात् यह कि मैं पढ़ता भी हूं और दफ्तर में काम भी करता हूं। यह बहाना मात्र था यह तो स्पष्ट ही था किन्तु वास्तव में मेरे अलग किए जाने का क्या कारण है यह मैं न जान सका। मेरे मित्र और मैं इस पर विचार विमर्श करने लगे। हममें से किसी को भी याद न आया कि पीपिंग के राज्य-पलट के पहले या बाद म मैंने कभी कोई ऐसी बात कही या की थी जिसको अनुचित समझा जायगा।

जब मैं अपने अलग किए जाने के आदेश को लेकर सैनिक प्रतिनिधि से मिला तो उसने मुझ से उस पर आपत्ति करने का कारण पूछा। इस भय से कि कहीं मेरे हाथ से मेरा काम न निकल जाए मैंने उससे कहा कि अब चूंकि मेरी आवश्यकता-पूर्ति हो गई है मैं भविष्य में एक साथ दो काम

न करूंगा, और अब तक मैंने जो अपराध किया है उसको अतीत की बात समझ कर भुला दिया जाए। क्षण भर के लिए जैसे वह असमंजस में पड़ गया और कहने लगा, "मुझको दुःख है किन्तु यह तो मेरे उच्चाधिकारियों का निर्णय है। फिर प्रतिक्रियावादी शासन में एक साथ दो काम करना हर हालत में अनुचित तो था ही।"

मैंने उत्तर में कहा "अब तो मैं ऐसा कर ही नहीं रहा हूं।" यदि उस समय मुझ को मालूम होता तो मैं असंख्य ऐसे उदाहरण दे सकता था जिनमें कम्युनिस्ट संगठन के अन्तर्गत ही लोग एक साथ दो दो काम करते पाए गए हैं। किन्तु उस समय मैं सिवाय यह अनुनय विनय करने के कि मुझको अपने भरण-पोषण के लिए दफ्तर में काम करते रहने की आवश्यकता थी और कुछ न कह सका। उसने अपने कंधे हिला दिए और इस प्रकार अपनी अस-मर्थता प्रकट की। हां उसने मुझको यह आश्वासन अवश्य दिया कि मैं चाहूं तो किसी दूसरे विश्वविद्यालय में भर्ती हो सकता हूं जहां मैं अपनी योग्यता के अनुसार तीन मास से लेकर अठारह मास तक की अवधि में अपना अध्ययन समाप्त कर सकूंगा।

यह एक ऐसी चोट थी जिसकी मुझको आशंका न थी। इसके कारण मेरा भविष्य अत्यन्त अन्धकारपूर्ण दिखाई देने लगा। पर तब कुछ समय पश्चात् विश्वविद्यालय के तथाकथित जनतंत्रीय उद्यान में मैंने बड़े बड़े पोस्टर लगे देखे। इन पोस्टरों में लिखा था कि दक्षिण चीन में क्रांति के प्रसार और प्रगति के लिए एक कार्यकर्ता टोली तैयार की जा रही है जिसके लिए सदस्यों की आवश्यकता है और जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक भर्ती हो सकता है; इस टोली में गर्भवती स्त्रियों और निरक्षर व्यक्तियों को नहीं लिया जायगा।

किन्तु इस "स्वतंत्र" भर्ती के साथ यह शर्त थी कि प्रत्येक प्रार्थी को अपने मोहल्ले की सरकार, यूनियन या विद्यार्थी संघ की सिफ़ारिश प्राप्त होनी चाहिए। सिफ़ारिश के लिए प्रार्थी की "राजनीतिक उद्बुद्धता" आवश्यक थी। जो लोग "पुराने समाज" में काम कर चुके थे उनको इस प्रकार की सिफ़ारिशी चिट्ठी विशेषतः दुर्लभ थी। जिनको काम का अनुभव था उनके

लिए अब यह कोई गर्व की बात न थी क्योकि अनुभव का उल्लेख करने पर यह आरोप लगाए जाने का डर था कि सम्बन्धित व्यक्ति पुराने समाज में असंख्य पाप कर चुका है। पर फिर भी क्योकि मुझ को काम की आवश्यकता थी और भूखो मरने के प्रति स्पष्ट अरुचि, मैंने यह निश्चय कर लिया कि मुझको इस विज्ञापन का उत्तर देना ही चाहिए फिर चाहे सैनिक प्रतिनिधि द्वारा पूछताछ किए जाने पर मुझ को कैसी ही जोखिम क्यो न उठानी पडे। अन्ततोगत्वा सैनिक प्रतिनिधि ने मुझको राजनीतिक उद्‌बुद्धता की सिफारिशी चिट्ठी दे दी, क्योकि विश्वविद्यालय से अलग करते समय उसने मुझको दूसरी किसी जगह भर्ती कराने का आश्वासन दे रखा था—छात्र होने के कारण मेरे प्रति नरमी का बर्ताव किया जा रहा था। छात्र पार्टी की दृष्टि मे गंभीर सदेह के योग्य नहीं समझे जाते थे।

दक्षिण को जाने वाली इस टोली का अस्तित्व अभी तक नाम मात्र ही था। जब मैं इसमें भर्ती हुआ तो इसके अधिकारियो की नियुक्ति के प्रश्न पर विचार हो रहा था। मुझ जैसे बहुत से व्यक्तियो को ट्रेनिग के लिए साम्राज्यवादी कैम्प नामक स्थान पर एकत्रित किया गया (साम्राज्यवादी कैम्प पीपिग मे उस स्थान का नाम रख दिया गया था जहा किसी समय बाक्सर विद्रोह के पश्चात् विदेशी सेना आकर ठहरी थी)। जब हम लोग वहा पहुचे तो हमको एक अधिकारी मिला जो कैम्प के लोगो के लिए भोजन आदि की व्यवस्था करता था। हमको बाद मे पता लगा कि अभी तक यही एक ऐसा व्यक्ति था जिसको दस वर्ष की निरन्तर "क्रान्तिकारी कार्य की योग्यता" प्राप्त थी। पर अपने निम्न कोटि के सास्कृतिक स्तर के कारण वह भंडारी के पद से न तो ऊपर उठ ही सका था और न कभी उठ ही सकता था। उसका नियमित कार्य केवल शाक सब्जी आदि की नाप तौल और देख भाल करना ही था।

अपने वहां पहुचने की पहली रात को हमको उसका एक भाषण सुनना पड़ा। वह निश्चय ही धाराप्रवाह वक्ता था। तीन घंटे तक वह निरन्तर हमको उपदेश करता रहा। उसकी समस्त वक्तृता मे केवल एक बात थी जो बार-बार दोहराई गई थी। "अभी तक हमारी जनता की चेतना अधूरी है और प्रतिक्रियावादियो और क्रान्ति के शत्रुओ की संख्या भारी है।" इसके पश्चात् उसने हमको आदेश दिया कि हम उन सब कागजों को, जो हमको मिले हैं, सावधानी के साथ पढें और अपनी अपनी आत्म-कथा लिखें।

शीघ्र ही मै आन्दोलनकारियो को पहचानने लगा। आन्दोलनकारी पार्टी के सदस्य अथवा पार्टी का समर्थन करने वाले ऐसे व्यक्ति थे जो प्रकटत: पक्ष-पातहीन व्यक्ति अथवा उदारवृत्ति के व्यक्तियों की हैसियत से टोली मे भर्ती हुए थे। उनको छाट-छाट कर महत्वपूर्ण स्थानो पर रखा गया था ताकि वे पार्टी के आदेशो को हमसे "जनतत्रात्मक ढग" से कार्यान्वित करा सकने मे सहायक हो। पहला सप्ताह तो यो ही किसी प्रकार बीत गया। मुझको उस समय आशा थी कि हमको शहर मे मनोरजन आदि के लिए जाने की आज्ञा होगी किन्तु एक साधारण सभा मे उक्त आन्दोलनकारियो की ओर से एक ऐसा प्रस्ताव आया जिसमे हमको आदेश दिया गया कि हम अपनी छुट्टी के दिन कैम्प मे रहकर काम करते रहने का आनन्द उठाए। इसको "जनतत्रात्मक चुनौती" के नाम से आभूषित किया गया और प्रत्येक टोली मे प्रत्येक व्यक्ति से यह कहला लिया गया कि वह इस चुनौती को पूरा करेगा। जो बात व्यक्तियो द्वारा कहलाई गई उसी को सामूहिक रूप से टुकडियो द्वारा दोहराया गया। यदि पूर्व की ओर से "स्वयसेवको" का उद्घोष हुआ तो पश्चिम से उसी की प्रतिध्वनि उठी। यह कहना कठिन था कि वास्तव मे कौन स्वय सेवक है और कौन डर या खुशामद के कारण ऐसा कर रहा है। यह स्पष्ट ही था कोई भी अपने आपको "पिछड़ा हुआ" व्यक्ति कहलाने को तैयार न था। इसलिए सर्व-सम्मति से यह प्रस्ताव पास हो गया कि छुट्टी के दिन भी हम सब कैम्प में रहेगे और अपनी छुट्टी को अध्यक्ष माओ की कामनापूर्ति मे लगाएगे।

जनतत्रात्मक चुनोती मे प्रत्येक व्यक्ति को शामिल होना आवश्यक न था किन्तु जब जनतत्रात्मक प्रस्ताव पास हो ही गया तो उसका पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य था। क्या इसी को जनतंत्रता कहते है ? जन-तंत्रता का मेरा यह पहला अनुभव बडा निराशाजनक था। वास्तविकता यह थी कि अब हम देश के चारो ओर खडे किये गये लौहपट्ट के भीतर एक छोटी लौहपट्टावृत दुनियां के वासी हो गए थे।

कैम्प मे पहुचने पर तीन सप्ताह तक हमने कभी घास काटी, तो कभी घोड़ों की लीद उठाई, फर्श लेपा तो कभी सभाओ मे भाषण सुनें। इन सबसे जो समय बचा, उसमे हम लोग अपनी आत्म-कहानियां लिखते रहे। अपनी आत्म-कहानी को स्वीकार करा लेना कोई आसान काम न था। पहले पहल तो कोई शायद यह समझ सकता था कि आत्म-कहानी लिखवाने का

उद्देश्य केवल लेखक के जीवन और अनुभवों के विषय मे साधारण जानकारी प्राप्त करना है, कम से कम आरम्भ मे मै तो यही समझा था, और इसी बात को ध्यान मे रखकर मैने अपनी जीवनी लिखनी शुरू की थी। पर मैने देखा कि मेरी इस कार्यवाही की तीव्र आलोचना की गई। मुझे बताया गया कि मैने अपने विषय मे जो कुछ लिखा है उसमे "न तो कोई सिद्धान्त है, न कोई दृष्टिकोण और न कोई सार"। इस कारण मै असफल ठहराया गया और सार्वजनिक रूप से जो मेरी भर्त्सना हुई उससे मुझे बड़ा लज्जित होना पड़ा। यह सौभाग्य की बात थी कि इस प्रकार की तीव्र आलोचना का शिकार होने वाला मै अकेला ही व्यक्ति न था। हम मे से वे लोग जो पहली बार असफल रहे वे दूसरी बार अपनी जीवनिया लिखते समय अधिक परिश्रम और सावधानी से काम करते पाए गए।

इस नवीन लेखन-पद्धति की भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियाए हुई। कम आयु वाली लडकियों मे से एक तो अपनी मेज पर सिर रख कर फूट-फूट कर रोने लगी क्योकि अब तक उसने जो कुछ लिखा था उससे भिन्न भी कोई बात उसके जीवन के विषय मे हो सकती है यह उसकी समझ मे नही आ रहा था। हममे से एक व्यक्ति किताबो की पुरानी दुकान मे गया और चादी के दस चीनी सिक्के खर्च करके कुछ ऐसी किताबे खरीद लाया जिनसे उसको अपनी जीवनी लिखने मे सहायता मिलने की आशा थी। हममे से जो प्रचारक प्रवृत्ति के थे वे इस आशा से कि उनके ऐसा करने से उनको प्रोत्साहन मिलेगा जी जान से मार्क्स, एगिल्स, लेनिन, स्टालिन और माओ की जीवनियो का अध्ययन करने लगे। 'अपनी आत्म-कहानी कैसे लिखे' नामक एक छोटी सी पुस्तिका की माग इतनी बढ गई कि एक ही दिन मे वह अनेक व्यक्तियो के हाथ मे देखी गई। आरम्भ मे इस पुस्तिका को पढने के लिए आधे दिन की अवधि दी जाती थी जो अब घटा कर दो घटे कर दी गई। सारे वातावरण मे तनाव और खिचाव का अनुभव हो रहा था। अनेक व्यक्तियो को एक से अधिक बार अपनी जीवनिया लिखनी पड रही थी। एक बेचारे को तो अपनी जीवनी नौ बार लिखनी पड़ी।

हरेक सफर का अन्त होता है। इस कैम्प की जो महिला कमिसार थी उसने अन्त मे हम सब को अपनी आत्मकथाओ के लिए "सार और विषय"

सुझा दिया और साथ ही यह भी जता दिया कि हमारी शिक्षा ही हमारी मूर्खता का कारण थी। उनके आदेश के अनुसार कुछ ऐसी बातें थी जो हम को अपनी जीवन-कथा में अनिवार्यतः सम्मिलित करनी चाहिये। उदाहरण के लिए सबसे पहले हमको बताना चाहिए कि इस कैम्प मे आनेसे पहले हम किस वर्ग के सदस्य थे, शोषण करने वाले वर्ग के या शोषित वर्ग के; यदि हममे से किसी को शोषक वर्ग का समझा गया तो उसको यह बताना अनिवार्य था कि उसने किसका कैसे शोषण किया। शोषित वर्ग के व्यक्ति से यह आशा की जाती थी कि वह यह बताए कि किसके द्वारा और कैसे उसका शोषण किया गया। अस्पष्ट अथवा अस्वेच्छापूर्ण वक्तव्यो को स्वीकार नहीं किया जायगा इसलिए यह आवश्यक ही था कि उन व्यक्तियो का जिन्होने शोषण किया और उन परिस्थितियो का जिनमे शोषण किया गया विशिष्ट रूप से उल्लेख किया जाय।

उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति सरकारी अफसर रह चुका है तो उसको यह "मानना ही चाहिये" कि वह "प्रतिक्रियावादी लुटेरे वर्ग" के शोषण कार्य मे सहायक रूप से ठगी करता रहा है। इतना बताने के पश्चात् उसको अपने "पापो का" तथा जिनके विरुद्ध पाप किए और "जन-कल्याण" के विरुद्ध जो अनाचार किए उन सब का विशद विवरण देना चाहिये। यदि कोई कहता कि मैंने कोई पाप ही नही किया तो उसकी कठोर आलोचना की जाती। यह सिद्ध हो जाने के बाद कि अमुक व्यक्ति शोषकों का सहायक रहा है, उसके लिये पाप से इन्कार करना असम्भव था। यदि कोई फिर भी इन्कार करता तो उसको "जागृत" नही माना जाता था। ऐसी अवस्था मे उसकी आत्म-कथा की स्वीकृति का प्रश्न ही नहीं उठता था।

यदि आप यह स्वीकार भी कर लेते कि वास्तव मे आपका शोषक वर्ग से सम्बन्ध रहा था तो उससे आपकी कठिनाइयों का अन्त नही बल्कि श्री गणेश ही होता था क्योकि तब आपको ठोस रूप से यह बताना अनिवार्य हो जाता था कि आपने कब कब और किस किस पर अनाचार किए। एक भूतपूर्व पुलिस कर्मचारी ने अपनी जीवनी में लिखा कि उसने एक रिक्शा वाले का शोषण किया था। उसके कथनानुसार रिक्शा वाला आने जाने वाले लोगों को अपनी रिक्शा में बैठने के लिए बार बार आग्रह करके तंग कर रहा था। इस पुलिस

कर्मचारी ने रिक्शा का तकिया निकाल लिया ताकि अब उसको कोई भी सवारी न मिल सके। यही उसका पाप था। एक लडकी ने जिसका जन्म किसी समृद्ध कुल में हुआ था बताया कि उसके पूर्वजों ने अपने अधीनस्थ व्यक्तियों का शोषण किया था। उसके लिये उसको इतना ही बड़ा अपराधी समझा गया जितना उसके पूर्वजों को। इसलिए उसके मामले को अंतिम निर्णय के लिए सघ के सुपुर्द कर दिया गया। उसका अपना यह अपराध था कि उसने अपने नौकरों को पीटा था और अपने निर्धन सहपाठियो पर डाट डपट की थी। एक छात्र ने स्वीकार किया कि उसने अपने एक निर्धन साथी से बार बार पैन्सिल और रबड़ उधार मांगकर और उधार ली हुई वस्तुओ को न लौटा कर शोषण का अपराध किया था।

कैम्प मे एक लड़की थी जो किसी की रखेल रह चुकी थी और जिसने हाथ के सिले कढे कई कीमती वस्त्रादि चुरा लिए थे। उसके कथनानुसार शोषक वर्ग पर उसके प्रहार करने का यह एक उपाय था और जो गृहणिया शोषित होती रही थी उनके द्वारा प्रतिशोध का एक ढग। जिस समय उसकी जीवनी "छोटी टुकडी" को सुनाई जा रही थी उस समय बार बार करतल-ध्वनि से उसके वक्तव्यो का समर्थन किया जा रहा था।

यदि कैम्प में आने से पहले आप छात्र रहे थे तो आपको यह भी बताना पड़ता था कि आप कोमिन्ताग (च्यांगकाईशेक का राजनीतिक दल) अथवा उसके सचिगट्वान नामक युवक संघ के सदस्य रहे थे या नही। यदि आप यह बता देते कि आप इनमे से किसी के भी सदस्य नहीं रहे थे तो निश्चय ही आपके लिए अन्य कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती थी। यदि आपने किसी प्रकार की राजनीतिक गति विधि मे भाग नही लिया था तो आपको यह बताना पडता था कि आपने अमरीका विरोधी जापान सहायता आंदोलन मे भाग क्यों नही लिया, अथवा भूख विरोधी प्रदर्शन मे हाथ क्यों नही बटाया। यदि आप अपने ऐसा न करने के पक्ष में कोई कारण न बता सकते तो आपको क्षमा याचना करनी पड़ती और यह स्वीकार करना पड़ता कि आपको अभी तक जागरण का अवसर नही मिला है।

आपको अपनी जीवनी के अधिकाश भाग मे अपने विचार-परिवर्तन की कहानी ही बतानी होती थी। केवल घटनाओं का उल्लेख कर देने भर से काम नही चलता था। इन भौतिकवादियों को विशिष्ट एवं ठोस बातों की

आवश्यकता थी, इसलिये वे निम्न प्रकार के प्रश्नो का उत्तर चाहते थे

"जन-सेना का आप पर कैसा प्रभाव पडा ? आप कैसे यह समझे कि नई सरकार की स्थापना हो गई है ? रूस और अमरीका के क्रमश जो दो भिन्न भिन्न कैम्प है उनके विषय मे आपकी क्या राय है ?" किन्तु इन प्रश्नों के उत्तर ऐसे होने चाहिए थे जिनसे आपकी अपनी विचारधारा का पूरा पूरा दिग्दर्शन हो सके। आपके लिए आवश्यक था कि आप सघ को विश्वास दिला दे कि आप जो कुछ कह रहे है सच्चे मन और ईमानदारी से कह रहे है। केवल इतना कह देने भर से काम न चलता था कि अमुक पक्ष अच्छा है। आपको दूसरे पक्ष के दोष भी बताने होते थे। फिर इतना ही कर देने भर से भी काम चल जाए यह बात न थी, क्योकि तब आपको यह बताना पडता था कि जिस पक्ष को आपने अच्छा कहा है वह क्यो अच्छा है और जिसको बुरा कहा है वह क्यों बुरा है और फिर आपके अपने कथन के समर्थन मे प्रमाण भी देने पड़ते थे। यदि कोई केवल इतना कह देता कि वह दक्षिण की ओर जाने वाली कार्यटोली मे इसलिए सम्मिलित हुआ था कि आजीविका कमा सके या यदि कह देता कि वह अमुक अमुक बातो के भेद को नही समझता तो उसकी जीवनी अस्वीकृत हो जाती थी और उसको गभीर आलोचना का शिकार बनना पड़ता था और उसके विषय मे कहा जाता कि उसके विचार अभी तक "स्पष्ट" नही हो पाए है।

अपनी आत्म-कथा में प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिवार, मित्रो और स्कूल की "आलोचना" भी करनी पड़ती थी। परिवार की आलोचना करते समय पिता को विशेषत आलोच्य समझा जाता था। पुराने समाज मे कभी-कभी कुछ बुजुर्गो ने हमको यह सिखाया गया था कि अपने परिवार के साथ हमारे कितने ही गहरे सम्पर्क क्यो न हों हमारी सबसे बडी भक्ति और वफादारी अपने देश के प्रति ही होनी शाहिये। अब पार्टी के नेताओ का आदेश था कि उस विश्वास को कार्यान्वित करने का समय आ गया है और इस लिए उनकी आलोचना करने का भी। यदि कोई अपने पिता को भला बुरा न कहता तो उसका जागरण और प्रगति-प्रेम उथला अथवा मिथ्या ठहराया जाता और उसको याद दिलाया जाता कि उसने अपने विचार विकास के विषय मे जो कुछ कहा है सच्चे मन से नही कहा।

यदि कोई अपने अतीत के विषय मे घटनाओ का ल्लेख भर करता तो उससे काम नही चलता था क्योकि प्रत्येक उस काम के लिए जिसका उल्लेख किया गया था, उसको विशद रूप से यह भी बताना पडता था कि उसके ऐसा करने की प्रेरणा उसे कहा और कैसे मिली । जागृति-पूर्ण आलोचना का अर्थ यह था कि प्रत्येक वाक्य मे जागृति की झलक होनी चाहिए । उदाहरण के लिए, यदि आप कहे कि आप सिगरेट या शराब पीते थे अथवा किन्ही लोगों के मित्र थे तो उस सबका यथावत् कारण बताना भी आवश्यक था ।

कैम्प मे रहकर यह भी मालूम हो गया कि पार्टी के नेताओ की दृष्टि मे विवाह एक बहुत बडा प्रश्न है । यदि आप कहते कि मै अमुक स्त्री से प्रेम करता हू तो आपको स्पष्ट रूप से यह भी बताना होता कि आप उसी से प्रेम क्यो करते है । फिर प्रश्न होता कि क्या वह स्त्री "जागृत" है । यदि नही तो क्यो नही । और यदि आप जिससे प्रेम करते हों वह जागृत न समझी जाती तो प्रश्न होता कि क्या अब भी आप उससे प्रेम करते रहेगे । यह स्पष्ट ही है कि जो व्यक्ति विवाह की बात नही सोच रहा हो अथवा अपनी महिला-मित्र के स्वप्न न देख रहा हो उसको दूसरो की अपेक्षा जागृत होने का अधिक अवसर था ।

× × ×

दिन बीतते गये और हमारी सदस्य सख्या बढ़ने लगी, कुछ लोग विश्वविद्यालयो से आये तो कुछ सरकारी दफ़्तरो से । आने वालो मे कुछ ऐसे व्यक्ति थे जिनको "उच्च सास्कृतिक स्तर" का ससझा गया तो कुछ ऐसे थे जिनको निम्न सास्कृतिक स्तर का ठहराया गया । कैम्प के सदस्यो में कुछ द्वारपाल थे, कुछ अध्यापक, कुछ प्राइवेट अध्यापक, कुछ छात्र, कुछ मजदूर, कुछ फेरीवाले, तो कुछ पुलिस मैन । शासको के मतानुसार आगन्तुक "ससार के प्राय. सभी वर्गों के सदस्य" थे । "पीपुल्स डेली" नामक समाचार पत्र ने पांच शीर्षकों के साथ एक समाचार छापा था जिसमे बताया गया था कि प्रोफ़ेसर शेग चेंग-हुआ जो पहिले जिग-हुआ विश्वविद्यालय में अध्यापक थे, दक्षिण जाने वाली टोली मे सम्मिलित हो गये है। अध्यापको की दुनिया मे उनका बहुत नाम न था और इस कैम्प मे आनेवाले वह अकेले प्रोफेसर थे । किंतु पार्टी के नेताओ ने इस समाचार का बार बार महत्व दोहराया और इसको बढा चढाकर प्रकाशित कराया ताकि उन छात्रों को प्रभावित किया जा सके जो

दक्षिरण जाने वाली इस कार्यटोली मे सम्मिलित होने से झिझक रहे थे और अपनी शक्ति और प्रतिभा को कही लगाने की खोज मे थे ।

शिक्षित व्यक्तियो की एक पृथक बैटेलियन सगठित की गई । हम लोगो की संख्या ४०० थी—अर्थात् समस्त जन संख्या का ५० प्रतिशत । इस कैम्प के अनुशासन अधिनायक ने हमारे "श्रम-प्रेम" को बड़ा सराहा—और कहा कि हमारी इस नवीन धारणा का श्रेय हमारे आधे मास के शारीरिक श्रम के अनुभव ही को है । उसके मतानुसार सारे कैम्प मे "वर्गगत धारणाओ" को ऐसे कुचल दिया गया है जैसे कि घास को काटा-साटा जाया करता है । जिस प्रकार अब कैम्प की जमीन पर लीद या गोबर देखने को नही मिलता थी उसी प्रकार उसका दावा था वर्गीय विशेषताये भी विलुप्त हो गई थी । कैम्प मे चारो ओर यहां वहा बुलेटिन चिपकाने के लिये बोर्ड लगे हुए थे जिन पर प्रतिदिन हमारे मानसिक कल्याण के लिये एक छोटा सा 'वाल पेपर' चिपका दिया जाया करता था । इस वाल पेपर मे कैम्प के अधिवासियो के विषय मे छोटी छोटी कहानिया भी रहती थी । उदाहरणार्थ, एक दिन एक ऐसी लडकी का उल्लेख किया गया जो यद्यपि कालिज मे शिक्षा प्राप्त कर चुकी थी, अपने हाथो से टट्टिया साफ करती थी । 'वाल पेपर' के सम्पादक ने उस बाला की भूरि-भूरि प्रशसा की और कहा कि "इसने अपने मन से स्वल्प सम्पत्तिशाली वर्ग गत धारणाओं को बहिष्कृत कर दिया है । अब उसने अपने मन मे मजदूर, किसान और सैनिक के प्रति एक नई धारणा को प्रस्थापित कर लिया है ।"

प्रारम्भिक सगठन कार्य के पश्चात् अब कैम्प की दिनचर्या एक परिपाटी मे ढली सी दिखाई देने लगी । नाश्ते और दोपहर के भोजन के बीच का समय बहुधा "बड़े अध्ययनालय" मे ही बिताया जाता था या कभी कभी हम सब लोग "रिपोर्ट" सुनने के लिये बाहर ले जाये जाते थे । हमारे "बडे अध्ययनालय" के शिक्षक हमारे 'बटेलियन कमिसार' थे जो दक्षिरण जाने वाली टोली के उपाध्यक्ष भी थे । "बडे अध्ययनालय" मे सब से अधिक जोर अनुशासन पर दिया जाता था और सगठन के आदेशो को शिरोधार्य समझने की श्रेष्ठता जताई जाती थी । बार बार इसी बात को हमारे कानों में ठूसा जाता था । एक बार हमारे शिक्षक महोदय को भी इस बात

को बार बार दोहराने की मूर्खता का आभास सा होता नजर आया। वह कहने लगा, "पार्टी का एक ही बड़ा सिद्धान्त है। आप इसको समझले तो काफ़ी है। हम फिर इस पर वाद विवाद नही करेंगे।" इसके पश्चात् वह कहता गया, "चैयरमैन माओ ने एक बार कहा था कि 'अनुशासन को दृढ़ करो, क्रान्ति स्वत. ही सफल हो जायगी।' एक दिन किसी ने खड़िया मिट्टी से अध्ययनालय के द्वार पर दो समानातर पक्तिया लिख दी। बाई ओर की पक्ति मे लिखा था "एक हजार शब्द और दस हजार वाक्य—अभिप्राय, केवल मजदूर, किसान और स्वल्प सम्पत्तिशाली व्यक्ति की प्रशसा।" उसके सामने दाहिनी ओर की पक्ति मे लिखा था, "बार बार शब्दो की पुनरावृत्ति—अभिप्राय केवल नौकरशाही, साम्राज्यवाद और सामन्तवाद की निन्दा।" सबने बडे उत्साह के साथ इन पंक्तियो की पुष्टि की और अपने उल्लास को व्यक्त करने के लिये जोर ज़ोर से तालिया बजाई। इसका परिणाम यह हुआ कि हमको चार घटे तक निरन्तर 'शिक्षा' और भर्त्सना सुननी पड़ी। हमारे उपाध्यक्ष महोदय मज़दूर, किसान, और स्वल्प सम्पत्तिशाली वर्ग, नौकरशाही साम्राज्यवाद और सामन्तवाद पर प्रवचन करते रहे।

"रिपोर्ट" सुनने का विषय अधिक मनोरजक था, क्योकि उस बहाने से हम कैम्प की नीरसता से छुटकारा पा जाते थे, और चायाग विश्वविद्यालव के मैदान या चुंगशान पार्क मे जाने का अवसर पा लेते थे। इसके अतिरिक्त रास्ते मे छुपकर इधर उधर खिसक जाने की भी सभावना रहती थी, बशर्ते कि रिपोर्ट समाप्त होने से पहले ही हम सभा में पहुच जाय। यदि किसी को इधर उधर खिसक जाने की भी हिम्मत न होती तो कम से कम सड़क पर इधर उधर जाने आने वालो तथा दर्शको को देखने का मौका तो रहता ही था। घूमने फिरने की स्वतन्त्रता खोने के पश्चात् सड़क पर यदा कदा चलने की अनुमति भी बरदान बन जाया करती है।

पहिले तो रिपोर्टो का सुनना भी काफी मनोरजक दिखाई देता था, क्योकि 'रिपोर्ट' पेश करने वाले कम्युनिस्टो के समर्थक होते हुए अभी तक पूरी तरह कम्युनिस्ट नही हो पाये थे और 'पुन· शिक्षा' की प्रारम्भिक अवस्था ही मे थे। चूंकि अभी तक वे सम्पूर्ण राजनीतिक दीक्षा नही प्राप्त कर पाये थे, उनकी कहानिया इतनी रसहीन न होती थी जितनी कि पुराने मजे मंजाये स्टाफ

अफसरों की वक्तृतायें। किन्तु कुछ दिन तक उनको सुनते रहने के पश्चात् हमको अनुभव होने लगा कि रिपोर्टों को सुनना और अध्ययनालय के अध्यापकों के भाषणों को सुनना एक सी ही बात है।

एक बार श्री कुओ मो-जो ने "रचनात्मक इतिहास" पर रिपोर्ट पेश की। वास्तव मे यह बडी विचित्र रचनात्मक ऐतिहासिक कहानी थी, क्योंकि उन्होंने हम को बताया कि यह चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ही का काम था कि चीन की जनता एकता सूत्र मे आबद्ध हो सकी और चीन जापान पर विजय प्राप्त कर सका। कुओ मो-जो ने कहा कि यह ऐसा सत्य है, जो प्रतिक्रियावादी इतिहास-पुस्तकों मे नही मिल सकता। ऐसी विचित्र बात इससे पहिले हमने कभी न सुनी थी।

जिस समय हम उनके भाषण को सुन रहे थे, किसी ने बिना हस्ताक्षर किये एक पर्ची श्रोताओं मे घुमा दी। उस पर्ची मे लिखा था, "श्री कुओ आप जब चुंगकिंग मे थे, तब तो आपने कभी ऐसी बात न कही थी।" यह पर्ची अन्त मे स्वय कुओ मो-जो के हाथो मे पहुच गई। उन्होने बड़ी चातुर्यपूर्ण मुस्कराहट के साथ इसका उत्तर दिया : "सच तो यह है कि मैंने चुगकिंग मे भी यही बात कही थी जो आज आप लोगो से कह रहा हू।" हम मे से जो २० वर्ष से कम आयु के थे, वे श्री कुओ मो-जो के इस अबाध क्रांति-प्रेम पर गद्गद् हो गये और अब उनकी और भी अधिक प्रशसा करने लगे। जो उनसे आयु मे बड़े थे, उनको तो पता ही था कि चुंगकिंग मे श्री कुओ मो-जो राजनीतिक शिक्षण मत्रालय के तृतीय विभाग मे प्रतिक्रियावादी यूनिफार्म पहिने हुए चलते फिरते नज़र आया करते थे।

हमको कई छोटी छोटी टुकड़ियो मे विभाजित कर दिया गया था और हमको प्रतिदिन "स्वल्प-समुदाय-जीवन" मे भाग लेने के नाम पर तीन सभाओ मे सम्मिलित होना पड़ता था। पहिली सभा नाश्ते से पहिले, दूसरी दोपहर के खाने के पश्चात् और तीसरी शाम को हुआ करती थी। विभिन्न टुक-ड़ियों का सचालन "आन्दोलनकारियों" के हाथ मे था। सारी टुकड़ियां संख्या की दृष्टि से बराबर न थी, प्रत्येक टुकडी मे कम से कम चार और अधिक से अधिक ग्यारह सदस्य होते थे। आरम्भ में मेरी समझ में यह नहीं आया था कि विभिन्न टुकड़ियों की सदस्य सख्या मे ऐसा अन्तर क्यों रखा गया

है किन्तु बाद में मैं समझ गया । उत्तरी चीन से कुछ और कामरेड आने वाले थे । संख्याओं में जो अन्तर था उसको उन्हीं से पूरा करने की योजना थी । साथ ही स्कूलों से जो लोग आने वाले थे उनके लिए भी स्थान रखा गया था । टुकड़ियों का इस प्रकार विभाजन करने में राजनीतिक उद्देश्य है यह स्पष्ट था ।

जब किसी की आत्म-कथा यथाविधि समाप्त हो जाती थी तो उसको 'सार्वजनिक स्वाध्याय' की दृष्टि से उस छोटी टुकड़ी के सामने पढ़ कर सुनाया जाता था जिसका लेखक सदस्य होता था । मैं जिस टुकड़ी में रखा गया था, मुझको मालूम था उसके ११ सदस्यों में से छः आन्दोलनकारी थे । किन्तु मुझको यह पता उनकी आत्म-कथा सुनने के बाद ही लगा कि वे सब देर से पार्टी के सदस्य रहते आये हैं । मेरे कैम्प में सम्मिलित होने के तीन सप्ताह पश्चात् एक दिन शाम को जब आहार समाप्त हुआ तो हमारी टुकडी यथा-पूर्व सांयकालीन शिक्षालय में एकत्रित की गई । मैंने भांप लिया कि आज अवश्य ही कोई असाधारण बात होने वाली है, क्योंकि अन्य अवसरों के प्रतिकूल आज पांचों आन्दोलनकारी हम सबके साथ मिल जुल कर बैठने के बजाय संचा-लक की पंक्ति में, हम शेष सदस्यों की ओर मुंह करके, विराजमान थे और ऐसे अवसरों पर जो साधारण प्रारम्भिक कार्यवाही हुआ करती थी उसको भी तीव्र गति से सम्पादन कर दिया गया था । तब संचालक महोदय ने हम पांचों साधारण सदस्यों को बड़े नाटकीय ढंग से सम्बोधित करते हुए कहा कि "आप लोग जानते हैं कि आप क्या हैं ? आप लोग जन साधारण में से पांच पिछड़े हुए व्यक्ति हैं ।"

हम जनसाधारण में से पिछड़े हुए पांचों व्यक्तियों ने मौन रहते हुए लेकिन विस्मय के साथ संचालक महोदय की ओर देखा और आश्चर्य करने लगे कि अब इसके आगे क्या होने वाला है ।

"और अब आप लोगों को यह भी समझ लेना अच्छा ही है कि हम पार्टी के सदस्य हैं । हो सकता है कि अभी तक पार्टी सदस्य और जनसाधारण के बीच के अन्तर को आप नहीं समझे हैं । दोनों में अन्तर है, यह निश्चत है । बस इतनी बात अवश्य याद रखिये : जब तक आप पार्टी के सदस्य नहीं बनेंगे

तब तक इस संघ में आपका कोई स्थान नहीं है। आप किसी सुविधा के भी अधिकारी नहीं हैं, क्योंकि सुविधायें तो केवल पार्टी सदस्यों के लिए ही हैं। पुरस्कार पाने के लिये आपने क्रान्ति के लिये क्या किया है? कुछ भी नहीं। हमने क्या किया है? हम अपने जीवन का आधा भाग क्रान्ति पर बलिदान कर चुके हैं। यह सब कुछ मैं आप लोगों को क्यों बता रहा हूं? केवल इसलिए कि आप अपने मन से यह बात भुला दें कि आप भी किसी सुविधा के अधिकारी हो सकते हैं। यदि आपको सुविधाय चाहियें तो आपको भी हमारी तरह ही परिश्रम करना होगा। आप लोगों को इसीलिए यहां लाया गया है। आप भी काम करें और पार्टी का सदस्य कैसे बना जाता है यह सीखें। एक दो साल में आप सभी पार्टी के सदस्य हो सकते हैं जब सभी सुविधायें आपको प्राप्त हो सकती हैं बशर्ते कि आप अपने पुराने समाज द्वारा प्रदत्त संस्कारों को तिलांजलि देदें और सम्पूर्ण रूप से "पुनःशिक्षित" हो जांय।"

हम जनसाधारण के पांचों सदस्य एक दूसरे का मुंह देखने लगे। आज से पहिले हमको पार्टी सदस्यों और जनसाधारण के बीच अन्तर है यह किसी ने नियमित रूप से न बताया था यद्यपि इस कैम्प में आने से पहिले भी मुझको इस अन्तर का कुछ आभास अवश्य हो गया था। किन्तु उस दिन से पहिले मैं कभी यह कल्पना भी न कर पाया था कि मैं जनसाधारण में से ऐसा एक व्यक्ति हूं जिसको "पुनःशिक्षा" और आत्म-शुद्धि की आवश्यकता है। मैं उलझन में पड़ गया और हतप्रभ होने का अनुभव करने लगा।

उधर हमारे संचालक महोदय कहते ही चले जा रहे थे: "सम्भवतः आप आश्चर्य कर रहे होंगे कि अभी तक हमने आप लोगों को अपनी आत्म-कथायें पढ़ कर क्यों नहीं सुनाईं। मैं आज के लिये ही उनको उठा कर रखे हुए था। आज हम आप लोगों को उनको पढ़कर सुना देंगे ताकि आपको पता लग जाय कि हमारा क्रान्ति में क्या योग रहा है। यदि आप लोग हमारे जीवन को अपना आदर्श बनालें तो इस क्रान्ति में समुचित उन्नति कर सकते हैं।" इतना कहने के बाद उन्होंने अपनी जीवनी पढ़नी शुरू कर दी। बाद में अन्य पार्टी के सदस्यों ने भी बारी बारी से ऐसा ही किया।

जो कहानियां सुनाई गईं उनको आत्मशिक्षा के नाम पर कम्युनिस्टों को

जिस मदांधता को घोट घोट कर पिलाया जाता है और कम्युनिस्ट जिस कार्य-प्रणाली के लिये प्रसिद्ध हैं, उसका नमूना ही समझना चाहिए। किसी ने बताया उसकी अमुक विशिष्ट अभिरुचि रही थी, तो दूसरे ने कहा कि उसने कभी विद्यार्थी बन कर काम किया तो कभी सौदागर बन कर आगे चलकर उसी ने यह भी बताया कि उसने, छात्र परिषद के साथ जो सम्पर्क बन गये थे, उनसे लाभ उठाकर पीपिंग विश्वविद्यालय के क्षेत्र में किताबों की एक दुकान खोल दी और उसका नाम रखा संस्कृति सहायता सहकारी संस्था। इस दुकान पर वह केवल ऐसी पुस्तकें और पत्र पत्रिकायें बेचा करता था जो कम्युनिज्म के समर्थन में होतीं—उस समय चीन के जिस भाग पर कम्युनिस्टों का अधिकार था और जिसको वह "मुक्त क्षेत्र" कहा करता था उसका साहित्य तो इस दुकान से निस्सन्देह बेचा ही जाता था। यह दुकान छात्र आन्दोलन का केन्द्र बन गई। उत्तरी चीन के स्कूलों में छुप कर काम करने वाले जितने कम्युनिस्ट कार्यकर्ता थे वे इसी दुकान की मार्फत एक दूसरे से सम्पर्क बनाये रहते थे। इस आन्दोलनकारी ने बताया कि वह चुंगकिंग में संघ में भरती हुआ था। जिन दिनों वह पार्टी की सदस्यता प्राप्त करने के लिये परीक्षण-स्थिति में कार्य कर रहा था, उससे एक दिन कहा गया था कि वह चुंगकिंग की कियालिंग नदी पर स्थित लिंग चियांग मान नामक द्वार पर जिससे राष्ट्रवादी सैनिक और पुलिसमैन आया जाया करते थे पोस्टर चिपकाये। पोस्टर बड़ी चमकीली रोशनाई से तैयार किये गये थे और उन पर लिखा था "च्यांगकाई शेक का नाश हो," "अमरीकी साम्राज्यवाद का नाश हो।" उसने अपनी जीवनी में यह भी बताया कि उस समय उसको यह न मालूम था कि दृढनिश्चय और साहस की दृष्टि से यह एक ऐसी नपी तुली परीक्षा थी जिसको उन सभी नये सदस्यों को सम्पादित करना पड़ता था जिनको जासूसी करने वाले गुट में काम करने के लिये चुना जाता था। उसका वास्तविक छद्म कार्य तो इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद ही शुरु हुआ।

पार्टी के सदस्यों की आत्म-कहानियों के सुनने के पश्चात् जनसाधारण के हम पांच सदस्यों को कुछ कहना शेष न रह गया था। मैं नहीं कह सकता कि मेरे अन्य सहयोगियों पर इसका क्या प्रभाव हुआ किन्तु मेरे लिये तो यह सब कुछ एक महान् रहस्योद्‌घाटन से कम न था। भूमिस्थ होकर अथवा छद्‌मवेश में या लुक छिपकर कम्युनिस्ट लोग जो काम किया करते थे और जिसका राष्ट्रवादी सरकार भंडाफोड़ कर सकी थी उसका अर्थ मेरी समझ

में अब कुछ अधिक अच्छी तरह आने लगा था और मुझको खेद होने लगा था कि उस समय इस विषय में राष्ट्रवादी सरकार ने जो रहस्योद्घाटन किया था उस पर मैंने सन्देह क्यों किया था। मैं जिस छोटी टुकड़ी में था उसके कम्यु-निस्ट सदस्य यदि पहले विश्वविद्यालय में जासूसी का काम कर चुके थे तो अब कैम्प में आन्दोलनकारियों का काम कर रहे थे; और इस प्रकार अपने पार्टी कर्त्तव्य को पूरी तरह निभाते रहे थे। छद्म रूप में क्रान्ति के लिये उन्होंने जो कार्य किया था उस पर उनको बड़ा गर्व था, और वे अब सार्वजनिक रूप से उसकी घोषणा कर सकते थे क्योंकि प्रभुता उनके हाथ में थी ; और क्या अब उनको विजय का उन्माद न था ? मैं उनको निहारता था और सोच सोच कर रह जाता था कि ये छः प्राणी तो उन असंख्य पार्टी सदस्यों का एक छोटा सा अंग मात्र हैं जो समस्त चीन में अनेक वर्षों तक गुप्त रूप से कार्य करते और मरते खपते आये थे। ऐसी अवस्था में यह कोई आश्चर्य की बात न थी कि प्रस्थापित शासन-व्यवस्था का पतन इतनी तेजी के साथ हो गया था।

अगले दिन ऊपर के लोगों को पता लग गया कि विगत दिवस हमारे संचालक के हाथों हम पर क्या बीत चुकी थी। यह स्थायी नियम था कि पार्टी के सदस्यों की जीवनियां पार्टी के भीतर ही पढ़ी सुनी जानी चाहिये ; जन साधा-रण को उन लोगों के इतिहास का जिनका पार्टी से देर तक सम्बन्ध रहा हो कानोंकान भी पता नहीं होना चाहिये था। इसलिए हमारे संचालक की इस कार्यवाही के लिये कड़ी आलोचना की गई और उनके आचरण को पार्टी अनुशासन के विरुद्ध ठहराया गया। ऊपर के लोगों ने इस बात को दबाना भी चाहा किन्तु यह दावानल की भांति सारे कैम्प में फैल गई। शाम तक समस्त "जन साधारण" को अपने और पार्टी सदस्यों के बीच के अन्तर का पता लग गया और यह भी बात छुपी न रह सकी कि पार्टी के लोग ऐसी बातों को गुप्त रखा करते हैं। हमारे संचालक महोदय की जो आलोचना हुई वह भी अब सभी कैम्प वासियों की जबान पर थी। अब जब जनसाधारण को अपनी सही स्थिति का पता चल ही गया तो पार्टी सदस्यों ने अपनी उन विशेष सुविधाओं का, जिनसे जनसाधारण को वंचित रखा जाता था, सार्वजनिक उपभोग प्रारम्भ कर दिया। उधर जनसाधारण में भी क्रान्ति-सेवियों की आलोचना करने का साहस उमड़ आया। दोनों गुटों में तनातनी बढ़ गई; पारस्परिक सहयोग

असम्भव होता दिखाई देने लगा।

बाद में मैंने सुना कि ऐसी अवस्था केवल हमारे ही कैम्प तक सीमित हो ऐसी बात न थी; बल्कि पीपिंग के प्रत्येक विश्वविद्यालय, कलकारखाने और दफ्तर में भी अब ऐसी ही दशा हो गई थी। मैंने अपने एक मित्र से बाद में सुना कि पीपिंग विश्वविद्यालय के एक बेचारे सज्जन के लिए तो यह स्थिति इतनी असह्य हो गई थी कि उसने एक दिन परिणाम की अवहेलना करके जोर जोर से चिल्लाकर कह ही डाला कि "तुम पार्टी वाले हमको अपने ही हाल पर छोड़कर इस शिक्षालय से अपना मुंह काला क्यों नहीं कर लेते ?" परिणाम इसका यह हुआ कि उसको "वाद-विवाद की सांस्कृतिक स्वाधीनता" का दुरुपयोग करने के अक्षम्य अपराध में अपनी जान से ही हाथ धोना पड़ा। वह अब राष्ट्रवादियों का गुप्तचर ठहराया गया था।

हमारे कैम्प में पार्टी सदस्यों और जनसाधारण पर नया अनुशासन लागू होने से तनाव कुछ कम हो गया। किन्तु फूट और कलह की गड़गड़ाहट देर तक सुनने में आती रही। बहुत देर तक जनसाधारण के मन में अपनी लघुता का अनुभव कांटे की तरह खटकता रहा।

दूसरा परिच्छेद

स्वाध्याय-रीति

ऐसा प्रतीत होता है कि हम विपर्यस्त युग में आ पहुंचे हैं । कम्युनिस्ट शासन में चीन के पिछले पांच-सहस्त्र-वर्ष के समूचे इतिहास को फिर से लिखा जा रहा है । नए शासक इस कार्य की पूर्ति के लिए उतना ही परिश्रम कर रहे हैं, जितना कि किसी समय चीन की महान दीवार के निर्माण के लिए आवश्यक रहा होगा । इस नए इतिहास में डकैत और उठाई गीरे, जो अपने समय की वंशानुगत सरकारों के विरुद्ध लड़े थे, उनको जन नेताओं का पद दिया जा रहा है, और आज के रहन सहन का तो नया मूल्यांकन हो ही रहा है । इस कैम्प में एक महीने का प्रशिक्षण पाकर अब मैं यह महसूस करने लगा हूं कि पिछले तीन वर्ष जिस कम्बल को मैं ओढ़ता आया हूँ वह वास्तव में "जनता का कम्बल" है । उसी प्रकार पिछले दो वर्ष से जो कपड़े मेरा तन ढाके हुये हैं "जनता के कपड़े" हैं ।

सही मनोरंजन क्या है, मैं महसूस करता हूँ, कि अब यह जानना भी कठिन है । एक दिन हमको थियेटर में एक स्पेशल शो देखने के लिए ले जाया गया । जब पर्दा उठा तो मुख पर गहरा लाल रंग लगाए हुए एक दर्जन सैनिक सचमुच की बन्दूकें और किर्च लिए हुए मंच पर आखड़े हुए और अटैन्शन, एट ईज, वन, टू, थ्री, फोर ड्रिल की सब प्रक्रियाएं करने के पश्चात् अर्ध-चन्द्राकार पंक्ति में दर्शकों की ओर मुंह करके खड़े होगए । सार्जेन्ट ने उनसे कुछ वाक्य कहे जिनका हर बार सैनिकों ने "हां हां" में उत्तर दिया । इसके पश्चात् एक राजनैतिक कमिसार को मंच पर भाषण देने के लिए अभिमंत्रित किया गया । वह ३५ मिनट तक बोलता रहा, केवल एक ही बात का स्पष्टी-करण करने के लिए, कि "अब स्थिति इतनी तीव्र गति से विकसित हो गई है कि हम दक्षिण की ओर कूंच करने को तैयार हैं ।" ज्यों ही उसकी यह वक्तृता समाप्त हुई त्यों ही मँच पर के सैनिकों ने करतल ध्वनि की, और दर्शकों ने भी ऐसा ही किया । पर्दा गिर गया और इस प्रकार आज के कार्य-

क्रम का पहला भाग पूरा हो गया ।

दर्शकों को दूसरा भाग पहले की अपेक्षा अधिक पसंद आया जिसका कारण यह था कि उसमें एक अभिनेत्री थी । यह नाटक एक ऐसी महिला-सेनानी के विषय में था जो लेनिन यूनीफार्म पहने हुए अपने प्रेमी से कहीं गुप्त रूप से मिलने जाती है । प्रेमी कवि है और पार्टी का सदस्य नहीं । लगभग बीस मिनट तक वह अपने प्रेमी को प्रेम वक्तृता का रसास्वादन कराती है और बड़े आवेश में आकर उसका मुंह चूम लेती है; तत्पश्चात् अचानक वह दो कदम पीछे हटती है, बन्दूक निकालती है और उसको गोली मार देती है । अब पर्दा फिर गिरा मानों कि इसका अभिप्राय केवल यही सिद्ध करना था कि पार्टी इतनी सशक्त है और उसके सदस्य इतने ऊंचे चरित्र के हैं । बड़े ज़ोर-शोर से करतल ध्वनि हुई और शाबास-शाबास के नारों से वह स्थान गूंज उठा क्योंकि इससे यह सिद्ध जो हो गया था कि पार्टी के सदस्यों को पार्टी वालों ही से विवाह करना चाहिए । कथानक के अनुसार उक्त स्त्री द्वारा यह इकतालीसवीं हत्या थी और प्रत्येक हत्या का कारण एक ही था; वह अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को पार्टी के प्रति अपनी श्रद्धा में हस्तक्षेप नहीं करने देना चाहती थी । इसलिए इस नाटक का शीर्षक था "इकतालीसवां" ।

जिस समय यह कार्यक्रम चल रहा था एक पुराने पार्टी सदस्य ने मुझको एक कहानी सुनाई जिसका अभिप्राय यह था कि जब कि वात रोग से पीड़ित जमीन्दार अत्यंत अवांछनीय सिद्ध होता है; किसान जब ऐसा करता है तो उससे सुगंध ही फैलती है । पाठक मुझको इस कहानी का उल्लेख करने के कारण असंस्कृत समझ सकते हैं । किन्तु यदि यह बात सच न होती और इस पर एक बड़ा वादविवाद न चल पड़ा होता तो मैं इसका उल्लेख न करता ।

चूंकि इस नाटक का अभिप्राय हमको शिक्षित करना ही था, शो के पश्चात् अभिनेताओं और दर्शकों में वादविवाद चलाया गया । इस वादविवाद के समय ही किसी ने जमीन्दार और किसान वात रोगियों की कहानी सुनाई थी । जिसने यह कहानी कही वह जनसाधरण ही में से था और उसकी राय में यह कहानी असभ्यता और कलुषित मनोदशा की परिचायक थी । उसकी ओर से यह साधारण आलोचना थी किन्तु पार्टी के सदस्यों और आन्दोलन-

कारियों की ओर से इसकी बड़ी जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई।

उनमें से एक ने कहा कि इस प्रकार की आपत्ति सम्पत्तिशाली वर्गगत् धारणाओं का परिणाम है। इस कहानी में जिस भाग को असंस्कृत और कलुषित समझा जाता है वही तो ऐसा भाग है जिसे सम्पत्तिहीन वर्ग बहुत अधिक पसन्द करेगा।

दूसरे ने कहा कि अब समय आ गया है जब क्या चीज बुरी है और क्या भली है इसकी परिभाषा भी बदलनी होगी। नए मूल्यांकन की आवश्यकता है। इसी प्रकार का वादविवाद चलता रहा। सारांश, जैसा कि एक ने कहा, यह था कि क्रान्तिकारियों को अशिष्ट शब्दों का प्रयोग करते समय कोई झिझक नहीं होनी चाहिए। उसने तो हम सब के पुराने समाज के अभ्यस्त कानों को ठीक करने के लिए अशिष्टता का एक पूरा का पूरा वाक्य जोर से दोहरा दिया। उस समय कैम्प की जो महिला संचालिका थी उसने वाद-विवाद को यह कह कर समाप्त कर दिया कि अशिष्टता की आज जो परि-भाषा दी जा रही है वही शतशः व निश्चित रूप से सही परिभाषा है।

उस दिन से कैम्प में कई अशिष्ट शब्द उसी प्रकार और प्रायः उतनी ही मात्रा में प्रयुक्त होने लगे जितना ही "जनता" शब्द हुआ करता था। कैम्प की वे महिला सदस्याएं तो जो अब तक ऐसे शब्दों पर झेंप जाया करती थीं अब अपने प्रत्येक वाक्य में विशेष चाव के साथ इन शब्दों का प्रयोग करने लगी थीं। मुझको इस नई विशिष्ट भाषा का अभ्यस्त होने में और उन पार्टी के सदस्यों के प्रति जो इनका प्रयोग करते थे सहिष्णुता बरतने में कुछ दिन लगे। स्वाध्याय का यह परिणाम था।

× × ×

एक महीने से अधिक कैम्प में रहने के पश्चात भी हम स्वाध्याय रीति को सीखने भर की कोशिश में लगे थे। हमको बताया गया था कि हममें से जो जितना अधिक शिक्षित है उसको नई रीति सीखने में उतनी ही कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। यदि आप सम्पत्तिहीन वर्ग के सदस्य हैं, मजदूर या किसान रह चुके हैं, तो यह समझा जाता था कि आप में नैसर्गिक प्रतिभा है

जिससे आप सहज ही बिना किसी शिक्षक के भी नई स्वाध्याय रीति को समझ सकते हैं। जो शिक्षित व्यक्ति पार्टी का सदस्य होना चाहता था उसको सदस्यता की योग्यता प्राप्त करने ही में एक से तीन वर्ष तक लग जाते थे। इसके प्रतिकूल मजदूरों और किसानों को तीन महीने से छः महीने तक की तैयारी करनी पड़ती थी। यदि किसी अशिक्षित व्यक्ति को पार्टी द्वारा "श्रमिक वीर" अथवा "किसान वीर" की उपाधि दे दी जाती थी तो उसको तुरन्त ही पार्टी का सदस्य बना लिया जाता था।

हम सबसे अधिक भाग्यशाली वे तीन रसोइये जो कभी किसी राज और लोहार के मजदूर रह चुके थे और महिला कमिसार के वे दो अंगरक्षक ही थे जो किसी समय किसान थे। सारा कैम्प उन्हीं से शिक्षा की याचना करता था। सर्वत्र उनका बड़ा सम्मान था जिसका मुख्य कारण यह था कि वे सम्पत्तिहीन थे। कैम्प के "वाल पेपर" का एक विशेष अंक तो केवल "सम्पत्तिहीन वर्ग से शिक्षा" शीर्षक ही से निकाला गया था। इस अंक में कहा गया था (जिसको पढ़कर बहुत सों का बड़ा मनोरंजन हुआ) कि किसान अंगरक्षक महिला कमिसार की "उसी उद्वेग और आवेश के साथ देखरेख करते हैं जो उनको सम्पत्तिहीन वर्ग में जन्म लेने के कारण सुलभ है।" रसोइयों की प्रशंसा करते हुए इस अंक में बताया गया था कि वह अपने कर्तव्य को प्रशंसनीय "वर्ग प्रेम" के साथ सम्पादित करते हैं। इस पत्र के दूसरे अंक में "घोर परिश्रमी एवं गुणी रसोइया कामरेडों के आराम के लिए एक आन्दोलन का सूत्रपात किया गया।" आन्दोलनकारियों की ओर से आह्वान किया गया था कि इन रसोइया कामरेडों की केवल मौखिक प्रशंसा करने ही से काम न चलेगा। हमको अपनी प्रशंसा को मूर्तरुप देना चाहिए और उनके लिए भेंट के रूप में वस्तुएं संचित करनी चाहिए। किसी ने अपना कम्बल दिया, किसी ने तौलिया, किसी ने कलम, किसी ने घड़ी तो किसी ने इस शुभ कार्य के लिए अपनी अंगूठी ही भेंट कर दी। मैंने अपनी साबुन की दो टिकिया ही भेंट कर दीं। कोई भी अपना प्रगति प्रेम और नवीन विद्वता का प्रदर्शन करने में किसी से पीछे नहीं रहना चाहता था।

संचित वस्तुओं को रसोइयों को भेंट करते समय एक बड़ा त्यौहार सा

मनाया गया। रसोइयों ने एक फौजी धुन सुनाई और कुत्तों के भौकने का सांग रचाया। इससे पहले रसोइयों की ओर से हमारे लिए कभी किसी मनोरजन का प्रबन्ध नही किया गया था। "सम्पत्ति विहीन वर्ग से शिक्षा का जो नया आन्दोलन" खड़ा किया गया था अब उसको एक और समारोह द्वारा समाप्त किया गया। कैम्प की प्रत्येक टुकड़ी की ओर से कोई न कोई भेट उपस्थित की गई। बेचारे रसोइये अब तक अपनी आंखो में धुआ भरने के ही आदी थे; उन्होंने स्वप्न मे भी कल्पना न की होगी कि उनका ऐसा सम्मान और कल्याण होगा। समारोह समाप्त हो गया और वे बेचारे धुंआ भरी कोठरी में वापस चले गये। इसके बाद एक बार भी उनका कभी जिक्र नही हुआ। पर मुझे प्रसन्नता थी क्योकि इससे पहले उन्हे अपने काम के लिये ऐसे उपहार पाने का कभी अवसर न मिला होगा।

हा इन रसोइयो वाली कहानी नई स्वाध्याय रीति का एक उदाहरण बताई जाती रही। दूसरे दिन प्रातःकाल हमारे उपाध्यक्ष ने घोषणा की कि उस दिन हमे मार्क्स लैनिन के सिद्धान्त का पहला पाठ पढाया जायगा। दोपहर के पश्चात् जब हम लोग अपनी छोटी टुकड़ी में बडे अध्ययनालय को जा रहे थे तो मैं काफी प्रसन्न था। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि मार्क्स लैनिन सिद्धान्त के इस प्रथम पाठ के लिए मानो मैंने अपने कानों की सफाई कर रखी थी। किन्तु जो कुछ सुना उससे निराशा ही हुई। सारे समय का दो तिहाई भाग तो हमारे उपाध्यक्ष ने हमारी नई स्वाध्याय रीति के प्रति प्रगति पूर्ण अभिरुचि दिखाने की प्रशंसा करने ही मे व्यतीत कर दिया। इससे पहले वह सदा शिक्षित व्यक्तियों का उपहास ही करते रहते थे और अशिक्षित सम्पत्तिहीन वर्ग से शिक्षा प्राप्त करने का महत्व बताते रहते थे। अब हमारी शिक्षा ही उनकी राय मे हमारी प्रशंसा का कारण बन गई। अब हम "बिना किसी कष्ट ही के प्रगतिशील विचारो को ग्रहण करने के पात्र" समझे गए। इसके अतिरिक्त उन्होने कहा कि प्रगतिशील विचारों को ग्रहण करना तो सच्चे प्रगति प्रेमी के जीवन का एक अंग मात्र है। उससे भी अधिक महत्व की बात तो यह है कि इन प्रगतिशील विचारो को प्रगति-शील कार्य द्वारा प्राणभूत बनाया जाए। इधर उधर की बहुत सी बाते करने के पश्चात् वह अपने मन्तव्य पर आ पहुचे और कहने लगे कि एक ऐसी "बात" है जिसके लिए तुरन्त प्रगतिशील कार्यवाही की आवश्यकता है। बात

केवल यह थी कि कैम्प में पर्याप्त मात्रा में सदस्य नहीं थे। यद्यपि उन्होंने भरसक प्रयत्न किया था कि अधिकाधिक संख्या में लोग कैम्प में भर्ती हों, यद्यपि उन्होंने इसके लिए प्रलोभन के रूप में बड़े ऊंचे ओहदे और भारी-भारी तनख्वाहों का वायदा किया था, यद्यपि पार्टी के आन्दोलनकारियों ने दफ्तरों और स्कूलों में अनेक प्रकार से मतपरिवर्तित करने का प्रयत्न किया था पर अब तक इस सब का जो परिणाम निकला था उसको आदर्श नहीं कहा जा सकता था। यह वास्तव में दयनीय बात थी। इस कमी को पूरा करने के लिए अब एक नई योजना बनी : इस कैम्प में चार हजार से अधिक व्यक्ति थे यदि हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने कुछ मित्रों, सगे सम्बन्धियों अथवा स्कूल और दफ्तरों के पुराने परिचितों को प्रभावित कर सकते तो शीघ्र ही कैम्प की संख्या वाँछित अंक तक पहुंच सकती थी "ठीक है न यह बात ?" हमारे उपाध्यक्ष ने हमसे पूछा। इस "सम्मानपूर्ण कर्तव्य" को पूरा करने के लिए हमको एक दिन की छुट्टी का प्रलोभन दिया गया—यह एक ऐसा सौभाग्य था जो इससे पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ था। अन्त में उपाध्यक्ष ने बड़ा जोर देते हुए कहा कि "जनता की सेवा करने का यही एक मार्ग है, और यही मार्क्स लेनिन सिद्धान्त का प्रथम पाठ है।"

इस प्रथम पाठ और एक दिन की छुट्टी का परिणाम यह हुआ कि ऊपर के लोगों ने जितनी सदस्य संख्या की वृद्धि की आशा की थी उसकी एक तिहाई ही प्राप्त हुई। जो नए सदस्य आए उनमें से बहुतसों को अस्वीकृत कर दिया गया क्योंकि कुछ भर्ती करने वालों ने ऐसे उत्साह का परिचय दिया था कि अपनी बूढ़ी नौकरानियों, बूढ़ी भाभियों, अपने ऐसे छोटे भाइयों और बहनों के जो अभी नाबालिग थे, तथा अपने अशिक्षित पड़ोसियों के नाम लिखा दिए थे। रही मेरी बात, मैं तो मार्क्स लेनिन सिद्धान्त के प्रथम पाठ की इस परीक्षा में कोरा ही रह गया—इसके सिवा कोई चारा न था।

× × ×

एक दिन शाम को जब मैं एक मीटिंग में था मुझको कामरेड दरबान द्वारा सूचना मिली कि मुझसे पार्टी के एक पुराने सदस्य मिलने आए हैं। किसी पुराने पार्टी सदस्य से परिचय होना कैम्प में बड़े सम्मान की बात समझी जाती थी इसलिए हमारी छोटी टुकड़ी के अध्यक्ष ने मुझको बड़े

आकस्मिक सम्मान की दृष्टि से देखा और तुरन्त ही बाहर जाने की आज्ञा देदी। मैं तेजी से द्वार की ओर बढ़ा और कमरे के बाहर निकल आया। लम्बे बालों और छोटी दाढ़ी वाला, गद्दीदार पोशाक पहने हुए एक व्यक्ति मेरी ओर बढ़ा और उसने मेरी ओर हाथ बढ़ाया।

"क्या मुझको भूल गए" उसने मुझसे पूछा। "मुझे आशा है कि मेरी दाढ़ी से आप धोखे में नहीं पड़ गए हैं।" क्षण भर के लिए उसकी आंखों में जैसे मुस्कराहट की चमक आ गई, जिससे मैंने उसको पहचान लिया। वह मेरा एक पुराना हाई स्कूल का साथी था। चार वर्ष तक वह और मैं एक ही कमरे में रह चुके थे। पुरानी स्मृतियों की बाढ़ ही आ गई और मैंने कस कर उसका हाथ पकड़ लिया। "मित्र" मैं हर्ष से चिल्ला पड़ा। "कितना पुलकित हो गया हूँ, तुमसे मिलकर आज मैं, तुमको कैसे पता लगा कि मैं यहाँ हूं ? कहते हैं सच्चा कम्युनिस्ट तो अपनी दादी या नानी का भी अभिवादन नहीं करता और तुम हो कि अपने पुराने स्कूल के साथी से मिलने आए हो ?"

उसकी आंखों से मुस्कराहट की चमक लुप्त होगई। "ऐसी बातों के विषय में, मित्र, मज़ाक नहीं करना चाहिए।" उसने कहा ! "इस हास्य प्रेम के लिए तुमको कभी भी भारी मूल्य चुकाना पड़ सकता है।"

"अपनी पार्टी का रोब किसी और पर लगाना" मैंनें कहा। उसकी बाहों को खींचकर पकड़ते हुए और उस पर सिर से पांव तक दृष्टि डालते हुए मैंने पूछा, "तुम फौज में कब से भर्ती हो गए ?"

"१३ अगस्त सन् १९३७ से, जापानियों द्वारा शांघाई पर आक्रमण होने के पश्चात् मैं सुपेई जाकर पार्टी की छापा मार सेना में भर्ती हो गया था। कल ही मैंने सुना कि तुम यहां हो, और अपने नये प्रशिक्षण में अच्छी सफलता पर हो, इसलिए मैं तुमको बधाई देने चला आया।"

"ऐसी बातों के विषय में मज़ाक नहीं करना चाहिए, मित्र," मैंने उसीके शब्दों को व्यंगपूर्ण ढंग से दोहराते हुए कहा। "मैं अभी तक कुछ भी नहीं सीखा हूँ, इसलिए मुझको बधाई देने की आवश्यकता नहीं है। हां शिक्षा से

तुम्हारा मतलब आज्ञापालन हो तो बात दूसरी है। मैं वास्तव में बड़ा आज्ञाकारी हूँ।"

"तुम अपना यह पुराना व्यंग का स्वभाव नहीं छोड़ोगे एं ?"

"छोड़ूंगा ! यदि मैं अपने हृदय में इस सारे पागलपन पर व्यंग न कर पाता तो सब की तरह पागल हो गया होता। इस नर्क में इसकी बदौलत अभी तक जीवित हूँ।"

"शिक्षित व्यक्तियों को आत्म शुद्धि करने के लिए चिरकाल तक कष्ट सहना पड़ता है। मुझको याद है आरम्भ में मैं तुमसे भी कहीं गया बीता था।"

"अब कैसा लगता है तुमको यह सब कुछ ?"

"ओ बारह वर्ष के पश्चात् भी क्या इसका अभ्यस्त न हो जाऊंगा", उसने अपने कंधों को सिकोड़ते हुए कहा।

हम बाहर चले गए और पत्थर की सीढ़ियों पर बैठ गए।

मैंने अपनी जेब से अमरीकी सिगरेटों का एक पैकेट निकाला जो मुझको बिदा के समय मेरे पुराने साथियों ने भेंट किया था। मैंने एक सिगरेट उसको दी। वह स्तब्ध रह गया और सिगरेट लेते हुए कहने लगा "यह कैसी क्रान्ति है जी, कि अभी तक तुमको पीने को अच्छी सिगरेट मिलती है ?"

"मित्र, अपने विशेषणों को सोच समझ कर व्यवहार में लाओ : तुम बारह साल से पार्टी में कैसे रहे हो कि अभी तक यह नहीं समझे कि साम्राज्यवादी अमरीका की कोई वस्तु अच्छी नहीं हो सकती।"

वह जैसे मेरी दृष्टि से बचने का यत्न कर रहा हो अपनी जेबों में कुछ टटोलने लगा। वह दियासलाई ढूंढ रहा था मैंने दियासलाई की सींक जलाई और उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा "हम तो अभी क्रांति के नये कार्यकर्त्ता हैं

तुम जानते ही हो और इसलिए तुम्हारी अपेक्षा तनिक अधिक समृद्ध हैं । अगर बुरा न मानों तो मैं कहूं कि पुराने समाज में मेरी अभी थोड़ी सी पूंजी और बच रही है ।"

मेरे मित्र ने जलती हुई सींक की लौ के ऊपर से मेरी ओर देखा तब मुझको उसकी आंखों के नीचे और मुंह के चारों ओर पड़ी हुई गहरी लकीरों का आभास हुआ । उसकी आंखें बता रहीं थीं कि वह बूढ़ा हो गया है और थक गया है । वह बोला "तुमको देख कर पुरानी कहावत ही चरितार्थ होती है स्वभाव बड़ी मुश्किल से बदलता है । तुम्हारा तीखा व्यंग तुम्हारी तुच्छ सम्पत्तिशाली वर्ग की विशेषता है, समझे ।"

"अच्छा ? किन्तु तुम तो मुझ से इस बात को अच्छी तरह जानते होगे भौतिकवादियों के मतानुसार तो स्वभाव बदलने में कोई देर लगनी ही नहीं चाहिये । अब पता लगा कि १२ वर्ष पार्टी में रहने और स्वाध्याय के पश्चात् भी तुम्हारे विचार अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाये ।"

"यह तो स्पष्ट ही है कि तुम्हारा स्वध्याय सुचारु रूप से चल रहा है ।" मुस्कराते हुए उसने कहा ।

मैंने अपना स्वर बदला, पार्टी की परिभाषा छोड़ कर अब हमको साधारण भाषा ही में बातें करनी चाहिए । बरसों के पश्चात् बिछुड़े हुए दो मित्र मिले हैं, उसी नाते से हमको अपनी बातें करनी चाहिए । ईमानदारी की बात तो यह है कि इस कैम्प में रहते हुए मेरे सामने कई ऐसी समस्याएें आ खड़ी हुईं जिन पर तुमसे विचार विमर्श करना चाहूंगा । मैं वास्तविक स्थिति का पता लगाना चाहता हूँ तथा यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हारी असली राय क्या है ।

"वास्तविक स्थिति, असली राय ?"

"मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा देखने में आता है कि एक पार्टी मेम्बर की भाषा सदा वही होती है जो हम पार्टी की पोथियों और गुटिकाओं में पढ़ते हैं । मैं यह मानने को तैयार नहीं हूँ कि वास्तव में उसकी वास्तविक

भावनायें वे ही हैं।"

"वास्तविक भावनाएं ही सही भावनाएं हों यह आवश्यक नहीं है।"

"हां, हां, मैं जानता हूं 'सही भावना', 'सही झुकाव', 'सही' यह और 'सही' वह क्या होता है। किन्तु तुम भी जानते हो और मैं भी—मैं एक मित्र के नाते पूछता हूँ क्या तुम्हारे मन में अब भी कुछ 'गलत' भावनायें रह गई है ?"

वह रुक सा गया, और कहीं दूर देखता सा प्रतीत हुआ, "हाँ अभी तक अवश्य हैं।" उसने बताया "पर ये मेरी व्यक्तिगत दुर्बलतायें हैं जिसको मैं दूर करने की कोशिश करता रहता हूँ। शिक्षित व्यक्ति को अपना सुधार करने में कभी समस्त जीवन काल की आवश्यकता होती है।

"लेकिन क्या तुम यह अनुभव नहीं करते कि जिनको गलत भावनायें कहा जाता है उन्हीं से तो इन्सान में इन्सानियत आती है ? क्या तुम नहीं समझते कि यदि गलत कही जाने वाली भावनाओं को समाप्त कर दिया गया तो इन्सान-इन्सान ही न रहेगा ?" कुछ देर के लिये वह झिझका और अभी तक मुझसे आंखें बचाते हुए ही, उसने अपनी सिगरेट की राख गिराई और कहना शुरू किया कि

"जिस तरह से तुम स्थिति का वर्णन कर रहे हो वह गलत है ?"

मैंने एक बार महिला कमिसार से सन् १९४५ ई० चीन-रूस संधि के विषय में तर्क वितर्क किया था। मैंने उनसे कहा था कि "आप कुछ भी कहें यह संधि सोवियत रूस द्वारा चीन के विरुद्ध अतिक्रमण का प्रतीक है।" जैसे कि मैंने उसके किसी मर्मस्थल ही को छू दिया, उसने झुंझला कर कहा, "जिस तरह से तुम स्थिति का वर्णन कर रहे हो वह गलत है।" उससे बाद तर्क वितर्क करना व्यर्थ था, क्योंकि वह किसी दशा में भी यह मानने को तैयार नहीं थी कि सोवियत रूस कभी मनसा अथवा कर्मणा अतिक्रमण का दोषी हो सकता है।

अब हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं, जब कि घटनाओं और वस्तु स्थिति का निष्पक्ष भाव से विश्लेषण होना सम्भव नहीं है। नेताओं के वाक्य वेद

प्रमाण हैं; वे जब चाहें किसी वास्तविकता को अवास्तविकता कर दें। उनके अपने व्यक्तिगत निर्णय पर सब कुछ निर्भर होता है। यदि आप कभी कोई ऐसा प्रश्न करलें जिससे नेताओं या पार्टी को असुविधा एवं उलझन में पड़ने की आशंका हो तो उसको वे केवल असंगत कह कर समस्या का समाधान कर दिया करते हैं। जैसे कि समस्या का कोई अस्तित्व ही न था।

इन लोगों का एक और प्रिय वाक्य "भिन्न प्रकार है।" एक बार आई-चिन से जो किसी समय कवि था और आज कल पार्टी के ऊपर के लोगों में से है जिंग हुआ विश्वविद्यालय में भाषण देते समय किसी ने पूछा था कि जिस समय राष्ट्रवादियों का शासन था कम्युनिस्टों ने गृह-युद्ध विरोधी आन्दोलन संगठित किया था। अब पार्टी चाहती है कि गृह युद्ध का प्रसार किया जाय और दक्षिण की ओर प्रस्थान जारी रहे, क्या कम्युनिस्ट अब फिर एक बार गृह-युद्ध विरोधी आन्दोलन संगठित नहीं कर सकते?" यह भूतपूर्व कवि यह बात सुनकर ऐसे कराहने लगा था मानो कि इस मूर्खतापूर्ण प्रश्न पर बड़ा दुःख पहुंचा हो। इस प्रश्न के उत्तर के रूप में उसके पास केवल ये शब्द थे: "आज की स्थिति भिन्न प्रकार की है।"

पीपिंग के "मुक्त" किये जाने से कुछ मास पहिले कम्युनिस्टों ने वहां एक गीत को लोकप्रिय बनाने का यत्न किया था जिसके आरम्भ के बोल थे : "ले जाओ अपना पांच डालर का नोट !" गीत का सारा उद्देश्य राष्ट्र-वादी सरकार की मुद्रा विस्फार युक्त मुद्रा व्यवस्था पर प्रहार करना था। मुक्त होने के पश्चात् जब पीपिंग में जनता-मुद्रा का प्रचलन हुआ तो सबसे छोटा नोट १०० डालर का था। यह स्थिति वास्तव में "भिन्न प्रकार" की थी और यदि कोई सीटी बजा कर, गुनगुनाकर या गाकर कहता था कि "ले जाओ अपना पांच डालर का नोट," तो उसको राष्ट्रवादियों का गुप्तचर कहकर या देशद्रोह आदि अन्य आरोप लगाकर जेल में बंद कर दिया जाता था।

जिन लोगों को विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ हो उनके लिये "स्वाध्याय" बड़ा गंभीर एवं आकर्षक शब्द होता है। इसलिये हममें जो लोग विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर चुके थे उन्होंने कैम्प के अपने आरम्भिक जीवन में बड़ी व्यग्रता और उत्सुकता के साथ कम्युनिस्ट

स्वाध्याय की तैयारियां की। कुछेक तो इतने व्यग्र एवं उत्सुक पाये गये कि उन्होंने अपनी व्यक्तिगत वस्तुओं को बेचकर "रेफ़ेंस की किताबें" खरीद लीं; एक सज्जन तो अपनी लेखनी और रोशनाई के बड़े पात्र को दिखाते हुए इधर उधर घूमते फिरते थे। कुछेक ने इतनी कापियां खरीद लीं कि कालिज में पढ़ते होते तो चार साल तक और कोई कापी खरीदने की जरूरत ही न पड़ती। पार्टी ने स्वाध्याय का जो कार्यक्रम तैयार किया था उसके लिये प्रत्येक कैम्पवासी बड़ी उत्कण्ठा से भर सब प्रयत्न करने के लिये तैयार बैठा था।

किन्तु शीघ्र ही पता लग गया कि स्वतंत्र अध्ययन के लिये समय ही न था। अभी हम कुछ पैम्फलेट और बुलेटिन ही पढ़ पाये थे कि आज्ञा मिली कि कैम्प छोड़ दें। जिसने जितनी अतिरिक्त पाठ्य सामग्री खरीदी थी बेकार ही पड़ी रह गई। हमको बताया गया कि क्रांतिकारी के लिये तो कोई भी स्थान अध्ययन स्थल हो सकता है। केवल पढ़ने और लिखने ही को विद्या समझ लेना तो पुराने समाज के अर्द्धशिक्षित लोगों ही की धारणा थी; नव शिक्षा के लिये तो प्रत्येक प्रक्रिया शिक्षा का माध्यम बन सकती है। सारा विश्व ही एक बड़ा विश्वविद्यालय है! यह स्पष्ट ही था कि किसी पार्टी सदस्य के लिये संसार नाम की वस्तु साधारण सी बात है। कुछ थोड़ी सी नई परिभाषाओं और नए वाक्यों द्वारा कोई पार्टी सदस्य चाहे तो संसार की समस्त समस्याओं का हल ढूंढ निकाल सकता है। यदि कोई पार्टी सदस्य "प्रतिक्रिया" और "जनता" नामक शब्दों को अच्छी तरह समझते तो संसार में उसको जितने ज्ञान की आवश्यकता है प्राप्त हो गई समझी जानी चाहिये। इस पर यदि पार्टी की आज्ञाओं का पालन सीख ले तो फिर तो सोने में सुहागा हो गया। उसका अध्ययन सम्पूर्णता प्राप्त किया हुआ समझा जाना चाहिये।

कैम्प के जीवन के अपने आरम्भिक काल में मैं न जानते हुए भी अध्ययन के विषय में अपनी पुरानी धारणाओं को बनाये रहा; बड़े अध्ययनालय के भाषणों, पार्क की रिपोर्टों और अपनी छोटी टुकड़ी के पारस्परिक वाद विवादों को सुनने के पश्चात् भी मैं यह अनुभव करता रहता था कि अभी तक हमारे स्वाध्याय का श्री गणेश भी नहीं हुआ है। हमारी टुकड़ी के अध्यक्ष ने जब

मुझसे कहा कि मैं "मेरे स्वाध्याय का परिणाम" शीर्षक से एक प्रस्ताव लिखूं तो मुझको आशंका हुई कि मैं निश्चय ही इस परीक्षा में असफल हो जाऊंगा। इसलिये मैंने उनसे पूछा कि जिसका अभी तक श्रीगणेश भी नहीं हुआ उसके परिणाम पर मैं कैसे प्रस्ताव लिख सकता हूँ। इसके उत्तर में उन्होंने बड़े गर्व से कहा कि "कम्युनिस्ट होने के नाते हम परिणाम निकालने में सिद्धहस्त हैं।

वास्तव में 'परिणाम' शब्द अब पुरानी प्रतिक्रियावादी परीक्षा पद्धति ही का दूसरा नाम था। अब चूंकि परिणाम निकालने के लिये भी एक अवधि दी जाती थी, इसमें और पुरानी परीक्षा पद्धति में तनिक भी अन्तर नहीं रह गया था। रही परिणाम के सार की बात, वह कुछ भी हो सकता था, बशर्ते कि उसका आपके अपने विचारों से सम्बन्ध स्थापित किया जा सके। "विचारों से सम्बन्ध," एक बड़े महत्व की बात थी क्योंकि इसी के द्वारा तो यह पता लगता था कि किसके क्या विचार हैं और इस प्रकार ज्ञात हुए विभिन्न विचारों को किस प्रकार एक अपरिवर्तनीय विचार शृंखला में आबद्ध किया जाय।

मुझको कुछ आन्दोलनकारियों के "परिणाम" पत्रों को देखने का अवसर मिला था जिसको देखकर मुझे पता चल गया था कि हमने अब तक क्या सीखा है तथा किस प्रकार मुझको अपना परिणाम पत्र तैयार करना चाहिये। इनको पढ़कर मेरी दूरदर्शिता में अत्यंत वृद्धि हुई और अब मैं जान गया कि गोबर उठाना, घास काटना, फर्श की लीपा पोती करना स्वाध्याय ही का दूसरा नाम है। उत्तरी पूर्व चीन से आने वाले मोटे चावल और सूखी तरकारियों को खाना भी स्वाध्याय ही का अंग था। इस विषय में बात करने का सही ढंग यह था कि "अब तक मैं तुच्छ सम्पत्तिशाली वर्गगत विचारों के कारण इस प्रकार के भोजन को खाने का अभ्यस्त नहीं था, पर अब नया प्रकाश पाया है तो यह खाना भी अच्छा लगने लगा है।" यह सिद्ध करने के लिये कि वास्तव में आपका विचार परिवर्तन हो गया है आपको अनिवार्यतः यह स्वीकार करना पड़ता था कि सम्पत्तिविहीन वर्ग की यह श्रेष्ठता का प्रमाण है कि उसको इस प्रकार का खाना अच्छा लगता है।

इसके पश्चात् आप दूरदर्शिता से काम लें तो यह भी बताना न भूलें कि

यह मोटा झोटा भोजन देकर उत्तरी पूर्वी चीन ने क्राति की सफलता मे बडा योग दिया है जिसके लिये हम अत्यन्त आभारी है । इतना कहने के पश्चात् यदि आप यह भी जोड दे कि इस भोजन का ही प्रताप है कि अब आपका वजन बढ गया है तो बहुत ही अच्छा रहे। क्योकि उससे निर्विवाद रूप से यह सिद्ध हो जाता है कि सम्पत्तिविहीन वर्ग का भोजन सम्पत्ति शाली वर्ग के भोजन की अपेक्षा श्रेष्ठतर एवं स्वास्थ्यकर होता है ।

एक बार हमको ऐसे घुटन्ने दिये गये जो सोवियट रूस से बन कर आये थे । एक कैम्पवासी ने अपने "परिणाम" का इन घुटन्नों ही को लम्बा विषय बना लिया । उसने सिद्ध किया कि इन घुटन्नों को देकर हमारे बडे रूसी भाइयो ने चीन के प्रति बडी अनुकम्पा की है । यह कहने के पश्चात् उसने परिणाम निकला : दुनिया भर के सम्पतिहीन वर्ग एक है क्योकि वे सब एक ही प्रकार के घुटन्ने पहिनते है ।

जो हमने स्पेशल शो देखा था, वह भी स्वाध्याय ही थी, 'वाल पेपर' मे जिस किसी बात की प्रशसा की गई हो वही स्वाध्याय थी । नित्य जिन नये आन्दोलनों का सूत्रपात होता रहता था, वे सब स्वाध्याय ही थे । बड़े अध्ययनालय के भाषण; रिपोर्टो का श्रवण और अपनी अपनी छोटी टुकड़ियों के वाद विवाद स्वाध्याय ही के अंग थे ।

सारी नई बाते और वे सारी पुरानी बाते जिन पर नया दृष्टिकोण रखना सम्भव था स्वाध्याय ही का रूप थी । सक्षेप मे जागते समय हम जो कुछ भी करते, देखते या सुनते थे, स्वाध्याय था । बस नीद ही स्वाध्याय की परिभाषा से किसी तरह बची रह गई थी ।

अपना परिणाम-पत्र तो मैंने तैयार कर दिया; पर यह चिता निरन्तर बनी रही कि न जाने इसके आगे क्या होने वाला है । पर यह जानने में बहुत देर नही लगी ।

तीसरा परिच्छेद

दुम-कटाओ

एक दिन हमको सूचना दी गई कि शीघ्र ही प्रवेश संस्कार होगा जिसमे अनेक महत्वपूर्ण व्यक्ति सम्मिलित होंगे। और रहस्यमय जनरल लिन प्याओ* भी आयेंगे। यह स्वाभाविक ही था कि हम सब उस व्यक्ति को जिसकी अध्यक्षता मे दस लाख सैनिक हों देखने की उत्सुकता प्रकट करे। किन्तु जब हमने उनको देखा तो हम पर जो प्रभाव पड़ा वह अरुचिकर था। बड़ी आग्रह पूर्ण और आकर्षक वाणी मे उन्होने हमको यह अनपेक्षित समाचार सुनाया कि हमारा सारा कैम्प स्वेच्छा से सेना मे भर्ती होने वाला है यद्यपि उनकी यह घोषणा चातुर्यपूर्ण और तर्कसगत दिखाई देती थी पर हम लोगो के दिलों मे अचानक ही भावनाओ का जो समुद्र उमड पड़ा था उसको वह शान्त न कर सके। इससे पहले हम सबका यह विचार था कि दक्षिणाभिमुखी कार्य-टोली का अर्थ ही यह है कि हमसे कोई नागरिक काम कराया जाएगा। यह हम कभी न समझे थे कि हमको सेना मे भर्ती करने के लिए यहा लाया गया है। किन्तु इस अज्ञान का कारण संभवत. यह था कि अभी तक हम कम्युनिस्ट कार्य-प्रणाली से परिचय नही प्राप्त कर पाये थे; उनके तर्क के अनुसार यदि अब तक हमने सेना मे भरती होने की बात नही सोची थी तो अब सोच लेनी चाहिये। यदि कोई अपनी इच्छा से स्वयसेवक होने को तैयार न पाया जाता तो उसको स्वयंसेवक बनाने का दूसरा तरीका भी उनके पास था। यह बात किसी की समझ मे न आई हो तो जनरल का निम्न तर्क ऐसे भोले प्राणी की सहायता कर सकता था :

"आप सब कामरेड क्रांति के लिए ही यहा आये थे न ?"

सैबने जोर से चिल्लाकर उत्तर दिया "ठीक है।" इस शोर का सूत्रपात्र

---

* जनरल लिन प्याओ प्रसिद्ध कम्युनिस्ट जनरल थे। उन्होंने मनचूरिया और उत्तर चीन मुक्त किया था, और बाद मे कोरिया मे भी सघर्ष शुरू किया था।

आन्दोलनकारियों ने किया था। वास्तव मे जो इस उद्घोष से सहमत नही था उसके पास अपना मतभेद प्रकट करने का कोई साधन भी नही था । पहली बात तो यह थी कि इस कैम्प मे रह चुकना ही इस बात का बडा तर्क था कि किसी प्रकार का भी उद्घोष किया जाए उससे हम सब सहमत हो। इसके अति-रिक्त हम सब ही क्रान्ति का अन्न खा चुके थे । "क्रान्तिकारियो के लिए क्रान्ति की आवश्यकताए शिरोधार्य है। जहा कही भी क्रान्ति को आपकी आवश्यकता है वहा आपको जाना ही चाहिए। यह बात ठीक है न ?" उनका तर्क अकाट्य था। पर इतना ही नही। "यदि यह बात सत्य है तो क्रान्ति चाहती है कि आप सब सेना मे भर्ती हो।" परिणाम पूर्व निश्चित और अनिवार्य था। हमारी अवस्था ऐसे व्यक्ति जैसे थी जिसको कोई खोटा सिक्का दे दे और फिर उसकी प्रशसा करने के लिए भी बाध्य कर दे।

"मै यह घोषणा कर रहा हू कि आज से आप लोग निकम्मी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति नही है बल्कि सेना के सास्कृतिक योद्धा है। आज आप लोगो का यह प्रवेश सस्कार सेना मे स्वेच्छा से भर्ती होने का सस्कार भी है। आज से आप शपथ ले रहे है कि आप दक्षिणाभिमुख कार्यटोली के प्रति वफादार है ताकि क्रान्ति के लिए युद्ध कर सके।"

कितना आश्चर्यजनक गद्-गद् करने वाला भाषण था वह। हम सब मुह फैलाए ही रह गए। भाषण के समाप्त होने के पश्चात् कुछ क्षण के लिए खामोशी रही और उसके पश्चात् हमारे उपाध्यक्ष के नेतृत्व मे ऐसे नारे लगने शुरू हुए जिनसे आकाश गूज उठा। "आदेश का अनुकरण करो ! पार्टी की आज्ञा मानो ! माओ त्सी-तुग जिन्दाबाद !" आदि आदि। इस सस्कार को समाप्त होने के बाद वातावरण बडा चिन्ताजनक हो गया। हममे से प्रायः प्रत्येक व्यक्ति जैसे मन मार कर रह गया हो। हम बिना कुछ कहे एक दूसरे की ओर ताकते रह गये।

अब मै और दूसरे वे व्यक्ति जो इस कैम्प में केवल रोजगार की तलाश मे आए थे अचानक सेना के सम्मानित स्वयसेवक बन गए। जब हम लोग मीटिग से लौटे तो हमारे अध्यक्षो ने हमको सफेद बिल्ले दिए। उनके ऊपर काली रोशनाई से लिखा था "चीनी जनता की स्वतन्त्रता सेना।" हमको बडी

सावधानी के साथ यह भी बता दिया गया कि इन विल्लो को कैसे लगाया जाए ।

उक्त योजना को कार्यान्वित करने के लिए कितनी ही सावधानी से काम क्यो न लिया गया हो हम सब के मस्तिष्क मे कुछ खाली खाली सा दिखाई देता था । सारे कैम्प मे खिचाव का सा अनुभव हो रहा था । लोग छोटी-छोटी टुकड़ियों मे बिना किसी मतलब के और खामोशी के साथ घूमते फिरते नजर आ रहे थे । ऐसे वातावरण मे यह अनिवार्य ही था कि आन्दोलनकारी भी कुछ परेशान हो और भावनाओ की दृष्टि से अव्यवस्थित दिखाई दे । उन बेचारो को भी कहा मालूम था कि उन सबको भी अन्य चट्टो-बट्टो की की तरह थैलो मे बन्द किया जायगा । इस घटना से उनको हमारी तरह धक्का लगा था यद्यपि उनमे से कुछ ऐसे अवश्य थे जिनकी अवस्था उस व्यक्ति जैसी थी जो मोटा होने के लिए अपने चेहरे को बर्र से कटवा ले । वे अपने दात जकड-जकड कर कहते थे "यह स्वाभाविक ही है कि हम पार्टी की आज्ञा माने ।" दूसरे लोग इतने दृढ निश्चयी नही दिखाई देते थे ।

हममे से जो लोग आन्दोलनकारी नही थे वे कैम्प छोडकर भाग जाना चाहते थे । कुछ चुपके से खिसक जाना चाहते थे जो कोई आसान काम था ही नही । कुछ ने सोचा कि काम मे ढील डालने की नीति बरती जाय तो काम चल जायगा तो कुछ ऐसे लोग भी थे जो अपने विचारो की अस्पष्टता का बहाना कर रहे थे । सक्षेप मे, सत्य यह था कि इन नकारात्मक साधनो द्वारा प्राय हम सभी लोग इस नए आदेश की अवज्ञा करना चाहते थे पर जैसा कि सदा ही हुआ करता था शासको की अपनी ही विशिष्ट कार्य शैली थी । सबसे पहले उन्होने आन्दोलनकारियो को नए आदेश की वाछनीयता का विश्वास दिलाया । यह विश्वास उनको कैसे दिलाया गया यह हम नही जानते थे । हम तो केवल यही जानते थे कि उन्होने आन्दोलनकारियो को हम सबका नेतृत्व करने के लिए तैयार कर लिया और इस प्रकार हम सब से नई स्थिति को स्वीकार करवा लिया ।

हममे से जो आन्दोलनकारी नही थे उनको अब अव्यवस्थित करने का प्रयत्न किया गया । इस कार्यवाही को "व्यक्तिगत साधन" शीर्षक से जाना

आता था। किसी समय हमको सिखाया गया था कि एकता ही शक्ति है अब प्रत्येक उपाय से हमारी एकता को भंग किया जानें लगा।

हमारी महिला कमिसार स्वयंसेवकों द्वारा होनें वाली अवज्ञाओं का सामना करनें में बड़ी सिद्ध-हस्त समझी जाती थीं क्योंकि वह स्वयं भी किसी समय ऐसे ही स्वयंसेवक आन्दोलन द्वारा यहां आ पहुंची थी। सेना में भर्ती होने के प्रति हमारी अनिच्छा का विश्लेषण करके उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि अभी तक हम लोग पुराने युग की 'दुम' के बोझ से दबे हुए हैं। इसलिए कैम्प के 'वाल पेपर' में "दुम कटाओ आन्दोलन" का श्रीगरोश किया गया।

यह दुम भी कई प्रकार की थी। सबसे प्रथम स्थान "पारिवारिक-दुम" को दिया गया जिसका अभिप्राय यह था कि हममें से बहुत से शायद ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी सुन्दर पत्नी, प्रिय पुत्र, दयालु पिता या प्यारी मां के मोह में पड़कर क्रान्ति की सेवा से मुंह मोड़ रहे हैं। दूसरा स्थान "पुराने समाज की धारणाओं रूपी दुम" को मिला। शायद हममें से कुछ लोग ऐसे हैं जो सेना में इसलिए भर्ती नहीं होना चाहते कि पुराने समाज में उनको कोई सम्मानित स्थान प्राप्त है या पुराने समाज में इसी प्रकार का कोई और सम्बन्ध बनाए हुए हैं। तीसरी श्रेणी में "पुरानी अनुपयुक्त धारणाओं" को रखा गया था। इसमें ऐसे लोग आते थे जो सम्भवतः व्यक्तिगत अरुचि, व्यक्तिगत स्वास्थ्य अथवा सैनिक जीवन को अस्वस्थकर समझने के विश्वास के कारण सेना में भर्ती होना नहीं चाहते थे। जिस किसी नें भी भर्ती होने से इनकार किया उसी को "दुम धारी" ठहराया गया और यह घोषणा की गई कि जो अपनी दुम ज्यों की त्यों बनाए हुए क्रान्ति के लिए युद्ध करने की बात करता है उससे बड़ा क्रान्ति का अपमान करने वाला और कोई नहीं है। ऐसा दिखाई देता था कि अपनी प्रजा के कल्याण के लिए शासक अनेक प्रकार की नई-नई तेज छुरियां तैयार कर रहे थे। यह भी स्पष्ट ही था कि यदि कोई स्वेच्छा से अपनी दुम काटने को तैयार नहीं था तो उसके लिए कोई और प्रबन्ध भी किया जा सकता था।

× × ×

कुछ ऐसे लोग भी थे जो अपनी धारणाओं रूपी दुम को तिलाजंली देने को तैयार न थे, उनके लिए आवश्यक प्रबन्ध किया गया। मेरी छोटी टुकड़ी में पीपिंग विश्वविद्यालय का एक छात्र था जो कानून की शिक्षा पाता था। नाट्य कला में उसको बड़ी पिलचस्पी थी। वह पीपिंग ड्रामा ग्रुप में शामिल हो गया था। उसको उस समय इस बात की कल्पना भी न थी कि नाटक टोली के नाम पर कम्युनिस्टों के गुप्त कार्यकर्त्ताओं की ओर से मुख्य कार्यालय चलाया जा रहा है। कुछ दिन तक उसने बिना कुछ जाने हुये कम्युनिस्टों के लिए ही बड़ी लगन से काम किया। जब गुप्त कार्यकर्त्ताओं ने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी तो उसका स्वप्न टूटा। अब कैम्प में जब गुप्त कार्यकर्त्ता बड़े गर्व के साथ अपनी अतीत की कार्यवाहियों का गुण गान करने लगे तो उसको पता लगा कि जिस समय वह उनके साथ सहयोग किया करता था उस समय भी ये कम्युनिस्ट उसको जनसाधारण का एक भोला सदस्य ही मानते थे। जिस दिन से इस दक्षिणाभिमुख कार्य टोली ने सेना में भर्ती होने का स्वेच्छापूर्ण निर्णय किया उस दिन से कई बार उसने कैम्प छोड़कर चले जाने की कोशिश की किन्तु उसका प्रयास विफल रहा। न केवल उसकी प्रार्थना ही अस्वीकृत हो गई बल्कि उसके कारण उसके परिवार वालों को नई नई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

उसने अपनी आत्म कथा में स्पष्टतः यह लिख दिया था कि उसके पिता एक छोटे से नगर के प्रबन्धकर्ता रह चुके थे और उनका अपना मकान था, और लगभग २० एकड़ ज़मीन भी और वह स्वयं अपने पिता की दूसरी पत्नी की संतान था। जब उनके नगर को कम्युनिस्टों द्वारा मुक्त कर दिया गया तो उनकी ज़मीन और मकान पर नई सरकार ने अधिकार जमा लिया। नये भूमि सुधार आन्दोलन की पूर्ति के लिये उनकी सम्पत्ति उन किसानों को बांट दी गई थी जो पार्टी की सेवा करके आवश्यक योग्यता प्राप्त कर चुके थे। उस के ७० वर्षीय पिता और ५४ वर्षीय माता भाग कर पीपिंग आ गए थे जहां उनको आशा थी कि अपने बेटे के सहारे वे अपना बुढ़ापा काट लेंगे। उनकी इच्छाओं की पूर्ति के लिए बेटे ने विश्वविद्यालय छोड़ दिया यद्यपि कुछ महीनों में ही उसको कानून की डिग्री मिल सकती थी। इस टोली में भर्ती होने का उसका एक आम उद्देश्य रोज़गार पाना था ताकि वह अपने वृद्ध माता पिता का भरण पोषण कर सके। पुराने समाज में इस प्रकार के निर्णय को

उच्च चरित्र का द्योतक और श्लाघ्यनीय बात माना जाता था पर नए समाज में इससे अधिक मूर्खतापूर्ण और हास्यप्रद बात और कोई नहीं हो सकती थी। उसकी मां अपने सैनिक स्वयंसेवक बेटे से मिलने के लिए प्रतिदिन दो बार आया करती थी और अपने बेटे के कन्धे पर मुंह रखकर इतना रोया करती थी कि उससे जनता की यूनीफार्म भी खराब हो गई थी। अपनी मां से उसे पता लगा कि उसके पिता के पास जो एक मात्र फ़र का चोगा रह गया था और उसकी शोक वेशभूषा अब एक गिरवी रखने वाले की दुकान में पहुंच चुकी है क्योंकि खाने पीने का और कोई उपाय शेष नहीं रह गया था।

यह करुण कथा सुनकर उसको कई रात तक नींद नहीं आई थी। इस बीच में कई बार वह महिला कमिसार और कैम्प के सेनानायक से भी मिला और उनसे विनती की कि वे उसको कैम्प छोड़ने की आज्ञा दें, ताकि वह कहीं और कोई काम धंधा ढूंढ ले और अपने वृद्ध माता पिता को भूखों मरने से बचा सके। महिला कमिसार ने उसे याद दिलाया कि माता पिता के प्रति इस प्रकार का प्रेम पुराने समाज की भावना है जिसको नवशिक्षित व्यक्ति को अपनी पीठ पर दुम की तरह नहीं लटकाए रहना चाहिए। उसने आगे चलकर यह भी कहा कि वफादारी, माता पिता के प्रति प्रेम, पातिव्रत धर्म, और न्याय सामन्तशाही युग की अनैतिकता ही के दूसरे चार नाम हैं। और जिस प्रकार नए चीन ने ज़मींदारी प्रथा का अन्त कर दिया है उसी प्रकार इन सबको भी समाप्त कर दिया जायगा। अन्त में महिला कमिसार ने उस को चेतावनी दी कि यदि अब भी उसने अपने आपको ऐसी पुरातन धारणाओं से मुक्त नहीं किया तो नए समाज में उसके लिए कोई स्थान नहीं रहेगा। अब उसने अनुभव किया कि क्रांति में सम्मिलित होना जितना आसान है, उसको छोड़ना उतना ही कठिन है। इसलिये अब उसने इस प्रकार की अनुमति की याचना करना ही छोड़ दिया। इसके प्रतिकूल अब वह यह दावा करने लगा कि वास्तव में वह सच्चा स्वयंसेवक है और पार्टी से थोड़ा सा अतिरिक्त चावल पाने के सिवाय उसकी और कोई इच्छा नहीं है, ताकि वह अपने बूढ़े माता पिता की रोटी का प्रबन्ध कर सके। और यदि पार्टी उसको यह अतिरिक्त पारिवारिक राशन, जो एक सैनिक को मिल सकता है किसी कारण न दे सके तो वह अपने माता पिता को किसी मोहताज खाने में भर्ती करा कर ही संतोष कर लेगा। महिला

कमिसार उसकी यह बात सुनकर उसके सामने ही उसका मजाक उड़ाने लगी क्योंकि उसके कथनानुसार उसने अभी तक क्रान्ति की सेवा करने की योग्यता ही कहां प्राप्त की थी, जो जनता से पुरस्कार पाने की आकांक्षा रखने लगा। उसने असीम धैर्य के साथ अनेक प्रयत्न किए परन्तु कोई ऐसी विधि वह न पा सका जिससे अपने बूढ़े मां बाप को भूख और ठंड से बचा सके। तब एक दिन वह महिला कमिसार से फिर मिलने गया तो उसका धैर्य जाता रहा और उसने बड़े आवेश में आकर कहा, "कि क्या तुम कभी किसी मां बाप की बेटी नहीं रहीं, क्या तुम ऐसी निरी दैत्य हो जिसको एक राजनीतिक मशीन ने इस धरती पर ला पटका है।" इसके पश्चात उसने छोटी टुकड़ी की मीटिंगों में भाग लेना छोड़ दिया और बड़े अध्ययनालय में जाना बन्द कर दिया। अब वह रात भर कैम्प में एक पागल की तरह घूमता रहता था और दिन में कहीं पड़ कर सो रहता था।

हम सभी को यह चिन्ता लगी हुई थी कि अब अवश्य ही इस बेचारे पर कोई संकट आने वाला है और निस्संदेह एक दिन प्रातःकाल जिसकी आशंका थी वह घटना हो गई। मेरा मित्र अपना सिर नीचा किए हुए अध्यक्ष की मज के पास बैठा था, महिला कमिसार ने घोषणा की कि इस चाडांल को, जो क्रान्ति का विरोध करने का पापी है, जनतंत्रात्मक दण्ड दिया जायगा। उसके ऊपर आरोप लगाया गया कि पिछली रात को उसने कैम्प से निकल- भागने की कोशिश की, यद्यपि सौभाग्यवश पकड़ा गया। इस आरोप में कितना सत्य था इसका हमको पता नहीं था क्योंकि इसके पश्चात् हमको उससे बात-चीत करने का कोई अवसर नहीं दिया गया। धीरे-धीरे कैम्पवासियों की भावनाओं को उभाड़ा गया और उस मित्र के विरुद्ध कार्यवाही करने के कारण पाए जाने लगे। एक बार तो सारी सभा में भयंकर खामोशी छा गई तब आन्दोलनकारियों ने बोलना शुरू किया।

उनमें से एक ने कहा कि "इसने पार्टी के विस्तार और उसके द्वारा दी जाने वाली आश्चर्यजनक शिक्षा के प्रति उत्साह प्रदर्शित नहीं किया इतना ही नहीं पिछले कुछ दिन से यह कैम्प से भाग निकलने का षड्यंत्र करता रहा है।"

दूसरे ने कहा "यह अपने कार्य में सदा ही सुस्त रहा है और इसको पार्टी के प्रति उचित धारणाओं का ज्ञान नहीं है।"

तीसरा बोला "उसका बाप पुराने समाज में अधिकारी रह चुका था और अवश्य ही जनता पर अत्याचार करने का अपराधी रहा होगा। यह एक सामन्तशाही जमींदार की सन्तान है। इसकी प्रतिक्रियावादी धारणाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है।"

चौथे ने उस पर एक रखेल का पुत्र होने का आरोप लगाया और कहा "ऐसा सम्मानहीन व्यक्ति भी ऐसा साहस कर सकता है कि अपने आपको नए समाज का अंग समझे।"

पांचवें आन्दोलनकारी ने एलान किया कि उसके पास इस बात का निश्चित प्रमाण है कि गत महायुद्ध में उसने जापानी साम्राज्यवाद के पिट्ठू छात्रों के साथ धनिष्ठता रखी थी और आगे चलकर प्रतिक्रियावादी कोमिन्तांग छात्रों के साथ गहरा नाता रखा है। अपने इन दो पापों के कारण यह स्पष्ट ही है कि उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

छठे आन्दोलनकारी ने जो कुछ कहा वह मानों सत्य और प्रमाण का सर्व श्रेष्ठ नमूना था। "इसका बाप जमींदार था और अपना शहर छोड़ कर भाग आया था जब कि जनता की सरकार को उसकी तलाश थी। इसलिए उसके मां बाप को उसी शहर में मुकदमे और सजा के लिए वापस भेज देना चाहिए।"

भीड़ की उस उमड़ती हुई उत्तेजना और भावनाओं के वातावरण में न्यायालय ने निर्णय कर लिया। मेरे मित्र को उसी दिन उत्तर पर्व चीन में "स्वाध्याय"• के लिए भेज दिया गया और उसके माता पिता को उनके पुराने नगर में मुकदमे और सज़ा के लिए।

× × ×

——जब विकल्प उत्तर पूर्व चीन में "स्वाध्याय" के लिए भेजे जाने की

आशंका हो तो कितने लोग थे जिनको यह साहस होता कि वे स्वतः ही अपनी पुरानी धारणाओं की दुम को न काट लेते। बाल पेपर में उन लोगों की प्रशंसा की जाने लगी जो अपने आप को स्वतः ही अपनी पुरानी धारणाओं के रोग से मुक्त कर रहे थे। उसमें लिखी निम्न कहानियों को पढ़ने के लिए हम लोग एक दिन चारों तरफ खड़े हो गए थे और मूक रूप से उनका अध्ययन करने लगे थेः—

———— ने अपनी नवविवाहिता पत्नीको छोड़ दिया यद्यपि उसके विवाह को अभी एक वर्ष भी न हुआ था क्योंकि उसके प्रति प्रेम रखना पुरानी धारणा का द्योतक था।

———— ने अपनी अनाथ बहिन को देखभाल के लिए मोहल्ले की सरकार के सुपुर्द कर दिया है।

———— ने अपने पिता से प्राप्त हुआ वह धन जिसको वह पापमय समझता था लौटा दिया है क्योंकि वह अपने पिता से स्वयंसेवक न बनने की घूस नहीं चाहता था।

———— ने अपनी मां से मिलने से इंकार कर दिया यद्यपि वह बहुत दूर से चल कर आई थी क्योंकि उसको मालूम था कि वह उसे अपने आंसुओं की घूस देकर सेना में भर्ती होने से रोकना चाहेगी।

इसी प्रकार की कहानियां थीं वे, प्रत्येक अपने आप में एक दुखान्त कथा। और कितनी कहानियां थीं वे उन्हें पढ़ने रहने का साहस मुझ में नहीं था। उपरोक्त कहानियों मे जो रिक्त स्थान थे उनमें दिए गए नामों वाले व्यक्ति या तो अब चीन के प्रधान द्वीप पर हैं या उत्तरी कोरिया में युद्ध के मोर्चे पर। मजेदार बात यह है कि वे अब भी स्वयंसेवक ही समझे जाते हैं। उनमें बहुत से मर भी गए होंगे और निस्संदेह यह जानते पूछते कि यदि उनका बस चलता तो जिस बात के लिए मर रहे हैं उसके लिये कभी मरना न चाहते। इस प्रकार जितने लोग अब तक अपना बलिदान दे चुके हैं उनमें कुछ मेरे मित्र थे कुछ सम्भवतः आपके मित्र भी हों। कृपया जब कभी उनके

विषय में आपके मन में कोई विचार उठे तो उनके प्रति सहृदयता ही दिखाइये, क्योंकि हम जानते हैं कि वे किस प्रकार स्वयंसेवक बनने को बाधित हो गए थे।

चौथा परिच्छेद

रेल-यात्रा

१९४९ ई० के वसंत तक यांग्ट्सी नदी के उत्तर की ओर के देश का सारा भाग कम्युनिस्टों के हाथ पड़ चुका था। उस समय पीपिंग में संधि-चर्चा छिड़ी जिसका प्रकटतः यह उद्देश्य था कि यांग्ट्सी नदी को स्थायी सीमा बना दिया जाय। यदि ऐसा हो जाता तो नदी के उत्तर का भाग कम्युनिस्टों का हो जाता और दक्षिण का भाग राष्ट्रवादियों का। राष्ट्रवादी सरकार के स्थानापन्न अध्यक्ष ली जुग-जेन ने संधि वार्ता के लिए जो शिष्ट मंडल भेजा उसमें कई प्रख्यात निष्पक्ष व्यक्ति शामिल थे। पीपिंग नगर के लोगों ने आरम्भ में संधि चर्चा की बात सुनकर बड़ा उत्साह एवं व्यग्रता प्रकट की, किन्तु शीघ्र ही निराशा उनके सामने आ खड़ी हुई।

एक कम्युनिस्ट अधिकारी हमारे कैम्प में आए और उन्होंने बड़े अध्ययनालय में भाषण देकर संधि चर्चा के विषय में कम्युनिस्टों की "सचाई और हार्दिकता" का उल्लेख किया। उन्होंने हमको यह भी बताया कि किस प्रकार कम्युनिस्टों ने कितनी उदारता से राष्ट्रवादी शिष्ट मंडल के सैर सपाटे और स्वाध्याय का प्रबन्ध किया है। बड़े गर्वपूर्ण विजयोल्लास के साथ, जिसमें हम सबके सम्मिलित होने की आशा की जाती थी, उन्होंने कहा, "राष्ट्रवादी संधि शिष्ट मंडल के सामने केवल दो ही मार्ग हैं: पहिला यह कि वह प्रतिक्रियावादी गुट्ट का अंत तक अनुकरण करता रहे; दूसरा यह कि वह जनता के संयुक्त राजनीतिक मोरचे में सम्मिलित हो जाय; वह मौत चाहता है या जिन्दगी, यह तय करना उसका अपना काम है।"

बहुत से लोगों का यह विश्वास बन चुका था कि संधि-चर्चा के समय कुछ भी क्यों न कहा जाय, युद्ध चलता ही रहेगा। हमको शीघ्र शांति हो जाने का कोई भी चिन्ह न दिखाई देता था। समाचार पत्र कम्युनिस्टों द्वारा

अपनी सेना के पुन: संगठन के समाचारों से भरे रहते थे; बड़े बड़े टाइप के शीर्षकों से उन पत्रों को प्रकाशित किया जा रहा था जो उन सैनिकों द्वारा लिखे बताए जाते थे "जो दक्षिण चीन को मुक्त कराने का दृढ़ निश्चय कर चुके थे। स्कूलों और दफ्तरों में काम करने वाले ऐसे लोगों के नाम से पत्र और तार छापे जा रहे थे जो "स्वेच्छा" से युद्ध का समर्थन कर रहे थे। इस प्रकार के पत्र, तार और घोषणायें जनता के सिर पर ऐसी मंडरा रही थीं, जैसे कि हिम पात के समय वर्फ़ के गोले मंडराया करते हैं। इन पत्रों और तारों को प्रकाशित करने का अभिप्राय यह था कि जनता को यह विश्वास दिला दिया जाय कि जबकि शासक तो नहीं चाहते कि युद्ध जारी रहे जनता की मांग के कारण उनको मजबूर होकर इसको जारी रखना पड़ रहा है।

शांति शिष्ट मंडल के सदस्य पीपिंग होटल में कैदियों की भांति रह रहे थे और कुछ समय पश्चात् ही वे वहां किस लिये आये थे यह भूल जाने को मजबूर कर दिये गये थे। दो बातों के अतिरिक्त उनको अब किसी बात के लिये घूमने फिरने की स्वाधीनता भी न रह गई थी। ये दो बातें थी कम्युनिस्टों द्वारा संचालित एवं निर्धारित सैर सपाटा और कम्युनिज्म का निशुल्क अध्ययन। जनरल चांग चिह-चुंग ने, जो राष्ट्रवादी शिष्ट मंडल के अध्यक्ष बन कर आए थे, एक समाचार पत्र में एक लेख लिख कर इस सारी कार्यवाही का अनुमोदन कर दिया और अपने अतीत के सम्पर्क एवं संगी साथियों के लिए खेद प्रकट किया और कहा कि अपने ३५ साल के सैनिक जीवन में प्रथम बार उनको अवकाश मिल पाया है। उन्होंने अपने इस लेख में यह भी कहा कि अब जब से वह पीपिंग में आये हैं, अनेक बार प्रमोदपूर्ण सैर सपाटे कर चुके हैं और 'पीपिंग आपरा' के सभी प्रसिद्ध अभिनेता और अभिनेत्रियों के अभिनय देखने का आनन्द प्राप्त कर चुके हैं। अंत में अपने इस लेख में उन्होंने माओ त्सी-तुंग के गंभीर शब्द उद्धृत किये : "अब तुमको नानकिंग वापिस जाने की आवश्यकता नहीं। आओ, एक बार फिर यहां राष्ट्रवादियों और कम्युनिस्टों में परस्पर सहयोग कर दिखाएं।"

जिस दिन पीपिंग के समाचार पत्रों में संधि की २४ शर्तें प्रकाशित हुई उसी दिन हमारी कम्पनी के नायक ने हमको सूचना दी कि हमको अगले दिन सुबह कूच करना होगा। अपनी छोटी मोटी व्यक्तिगत समस्याओं को निब-

टाने के लिए हमको उस दिन शाम को एक साथ कैम्प से बाहर जाने की आज्ञा भी मिल गई । बड़ी ममता प्रदर्शित करते हुए उन्होंने तब हमको आदेश दिया कि हम लोग जब लौट कर आएँ तो सबको एक साथ आने की आवश्यकता नहीं । अन्त में उन्होंने नवीन आज्ञाओं के विषय में मुझको अपना मत प्रकट करने के लिये प्रोत्साहित करने की चेष्टा की । मैं अब तक इस प्रकार की चालाकियों से परिचित हो चुका था । फिर यदि मेरे पास वास्तव में उक्त आज्ञाओं के औचित्य के विरुद्ध विश्व को कम्पायमान कर देने वाले कारण भी होते तो भी उक्त आज्ञाओं में तनिक सा भी हेर फेर नहीं होने वाला था; यह बात वह भी जानते थे और मैं भी; मुझको इस प्रकार प्रोत्साहित करने का एक मात्र कारण उनकी यह इच्छा थी कि उनको पता लग जाय कि विचारधारा की दृष्टि से मुझ पर कहां तक भरोसा किया जा सकता है । इस बात को भी वह भी जानते थे और मैं भी । फिर भी मैंने सोचा कुछ देर तनिक जोखिमपूर्ण बिल्ली-चूहे का खेल ही खेला जाय । मैं कहने लगा, "आप तो जानते ही हैं कि मैं तो इस कैम्प में केवल रोज़गार की तलाश ही में आया था; काम कितना भी छोटा क्यों न हो इसकी मुझको विशेष चिंता न थी, क्योंकि मैं तो तनिक सी सुरक्षा ही की खोज में था ।"

"तुमको यहां रहते इतने सप्ताह हो गये और अभी तक तुम्हारे मन में रोज़गार के सम्बन्ध में गलत धारणायें बाकी हैं ।" उन्होंने यह कहते हुए मेरे कंधों पर हाथ रख लिये और आग्रहपूर्ण वाणी से कहने लगे, "छोड़ो भी इन पुरानी बातों को, अतीत अतीत है, अब उसका उल्लेख न करो तो अच्छा ।"

"तो फिर ये लोग मुझको कहां भेज रहे हैं ?"

"मोरचे पर, इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानता ।"

"पर मैं तो उत्तरी चीन का रहने वाला हूं, मैंने तो उत्तर को छोड़ने की बात कभी सोची ही नहीं ।"

यह सुनकर वह मुस्कराये और कहने लगे, "मुझे आश्चर्य होता है कि तुम जैसा पढ़ा लिखा आदमी ऐसी बातें करता है । तुम्हारी टुकड़ी

सदस्य यह रिपोर्ट दे चुके हैं कि तुमने अपना नया अध्ययन बड़ी सफलता से पूरा किया है। फिर इसका कारण क्या है कि तुम अभी तक तंग भौगोलिक दृष्टि की दुम को लटकाये हुए हो ? क्या तुम यात्रा नहीं करना चाहते ?"

"मेरी छोटी बहिन उत्तर ही में है और उसको मेरे संरक्षण की आवश्यकता है।"

उन्होंने अपना सिर ऐसे धीरे धीरे हिलाया मानो कि वह जान बूझकर बेवस होने का स्वांग रच रहे हैं। "अच्छा तो तुम पर एक बोझ यह है जिसको तुम अकेले ही उठाये रहना चाहते हो ? तुम्हारी छोटी बहिन कहीं भी स्वयं काम कर सकती है या स्वाध्याय टोली में सम्मिलित हो सकती है। क्या तुम यह कहावत भूल गये कि विवाह के पश्चात् तो उसको किसी दूसरे ही की हो जाना है ?"

"यह तो सच है, किन्तु जब तक उसका विवाह नहीं होता तब तक तो उसका भार मुझ पर ही है और उसके लिए वर पाना भी तो मेरा ही दायित्व है।"

"तुम ऐसी बात क्यों कर रहे हो जिससे दिखाई दे कि पार्टी अपने सदस्यों को सुखी नहीं रखना चाहती। मैं नगर की सरकार को स्वयं पत्र लिख दूंगा और तुम्हारी बहिन का प्रबन्ध हो जायगा।" (उन्होंने अपने वायदे को कभी पूरा नहीं किया और मैं इतना भोला था कि उस समय यह समझ ही न पाया कि वह केवल गाल बजा रहे थे।)

"किन्तु संघ के प्रति यह अन्याय होगा कि मैं कोई नया दायित्व संभाल लूं। यहां रहकर वास्तव में मैंने कुछ भी नहीं सीखा है। मैं अपने आपको किसी बात के योग्य भी तो नहीं समझता।"

"जाने भी दो, ऐसी भी विनम्रता क्या ?"

"अच्छा, आप ही बताइए, मैंने क्या सीखा है ?"

"अब तक नहीं सीखा हो तो अब सेना म रहकर सीख लोगे । भला यह भी कोई कहने की बात है ?"

"तो क्या सेना कोई विद्यापीठ है ?"

वह हंसे और बोले "हम तो कुछ भी कहीं सीखने के पक्ष में है ।"

"तो बताइये, मैं सेना में क्या सीखूँगा ?"

"तुम जैसे व्यक्ति यदि एक हजार साल भी जियें तो भी कुछ नहीं सीख सकते । इसलिये सेना में क्या सिखाया जाता है और क्या नहीं, इसकी चिंता क्यों करते हो ?"

"अच्छी बात" मैंने उनकी बात मानते हुए कहा "तो मैं मोरचे पर भजा जा रहा हूं ?"

"हां, यह तो मैं तुमको बता ही चुका हूं ।"

"मैं वहां क्या करूँगा ?"

"मैं कह नहीं सकता; संभवतः कोई सांस्कृतिक कार्य !"

"किन्तु सांस्कृतिक कार्य में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं ।"

"किसकी क्या दिलचस्पी है और क्या नहीं, इन व्यक्तिगत बातों का कोई महत्व नहीं । क्या अभी तक तुम यह भी नहीं समझे कि जो संघ की दिलचस्पी है, वही प्रत्येक सदस्य की दिलचस्पी है ?"

"पर मुझको बवासीर की गम्भीर बीमारी है । मैं इतनी दूर पैदल कैसे चल सकता हूं ?"

"मोरचे तक न जाने कितने हस्पताल पड़ेंगे। उसकी चिंता मत करो। संघ तुम्हारी बवासीर का समुचित प्रबन्ध कर देगा।"

मैं भांप गया था कि हमारा बिल्ली-चूहे का खेल समाप्त हुआ चाहता है। इसलिये मैंने जल्दी से पूछा, "अच्छा तो स्टाफ को इतनी शीघ्रता और गुप्त रीति से क्यों रवाना किया जा रहा है?"

"मुझको पता नहीं" यह कहकर उनकी त्योरी चढ़ गई। "तुम अब जाओ और दूसरों के साथ साथ अपनी छोटी मोटी समस्याओं को शाम तक निबटा लो। कल सुबह कूच होना है।"

बहुत देर बाद मुझको अपने अंतिम प्रश्न का उत्तर मिला। स्टाफ को तेजी के साथ और चुपके चुपके कूच कराने का कारण यह था कि शासकवर्ग नहीं चाहता था कि किसी के व्यक्तिगत प्रश्नों और दिलचस्पियों का उसको सामना करना पड़े या उनमें से कोई "भावनागत कठिनाई" लेकर उसके निर्णय को कार्यान्वित किये जाने में बाधा डाले। किसी के स्थानान्तर और यात्रा आदि का निर्णय अमल में लाये जाने के बहुत पहिले ही कर लिया जाया करता था। पर सम्बंधित व्यक्ति को आज्ञा मिलती थी कार्यान्वित किये जाने की घड़ी से कुछ ही समय पहिले। कई बार तो कुछ घंटों का समय ही तैयारी के लिये दिया जाता था क्योंकि अधिकारी नहीं चाहते थे कि किसी को नई स्थिति पर चिन्तन करने का समय दिया जाय। आज्ञा दिये जाने और उसके कार्यान्वित किये जाने के समय के बीच की अवधि क्रांति के नैतिक आदेशों को सुनाने में बिता दी जाया करती थी। या और कोई बात छेड़ दी जाती थी ताकि किसी को कोई प्रश्न करने का अवसर ही न मिले। इस प्रकार की चालें शिक्षित व्यक्तियों ही पर चलाई जाया करती थीं क्योंकि उन्हीं से तो समस्या चिंतन और विश्लेषण की आशंका रहती थी।

अगले दिन सुबह को हमारी बैटेलियन के मेरे सहित ३२ सदस्य दक्षिण जाने वाली एक रेलगाड़ी में लाद दिये गये। उसी दिन सुबह को; शांति प्रस्तावों के प्रकाशित होने के केवल २४ घंटे पश्चात् यह भी घोषणा कर दी गई कि संधि चर्चा भंग हो गई है। अब समाचार पत्रों के शीर्षक पुकार-

पुकार कर घोषणा कर रहे थे कि "चू तेह और माओ त्सीतुंग ने यांग्त्सी नदी को पार करने का आदेश जारी कर दिया है ।"

× × ×

चीन के मुख्य द्वीप के शासकों ने बाहरी दुनियां से स्वतंत्र समाचारों के आदान प्रदान पर जो प्रतिबंध लगा रखा है उसको "बांस का पर्दा" (Bamboo Curtain) कहा जाता है । जो इस उपाधि का प्रयोग करते हैं उनकी राय में लौहपट्ट की अपेक्षा चीन के लिए यही वाक्यांश अधिक उपयुक्त है क्योंकि चीनी कम्युनिस्ट का पर्दा रूसी शासकों द्वारा रूस के ऊपर डाले गए पर्दे की अपेक्षा कम दृढ़ है । ऐसे लोगों का कहना है कि—और यह कहना सर्वथा यथार्थहीन नहीं है—चूंकि चीन का समुद्रतट इतना लम्बा है और चूंकि चीन के बहुत से नागरिक चीन के बाहर दूसरे देशों में रहते हैं जो इस पर्दे की पहुंच के बाहर हैं चीन की सरकार द्वारा डाले गए पर्दे में छेदों का होना अनिवार्य है । किन्तु चीन के शासक बड़ी संलग्नता से उन छेदों को बन्द करने का यत्न कर रहे हैं । और चूंकि मैं इस पर्दे ही से निकल कर भाग आया हूं और चीन और बाहर की दुनियां की तुलना करके यह पता लगा चुका हूं कि बाहर की दुनियां को चीन में होने वाली घटनाओं की कितनी कम जानकारी है मैं चीन पर पड़े पर्दे को बांस का पर्दा कहने को तैयार नहीं हूं । निस्संदेह हमको चीनी मुख्य द्वीप के विषय में यदाकदा कुछ समाचार मिलते रहते हैं किन्तु मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि इस प्रकार के समाचार या तो चीनी मुख्यद्वीप पर प्रकाशित हो चुके होते हैं या कोरी किम्बदन्तियों पर ही आश्रित होते हैं । तानाशाहों के वास्तविक रूप को समझने के लिए इस प्रकार के समाचारों और किम्बदन्तियों को आधार बनाने से स्वतंत्रता प्रेमियों का काम नहीं चल सकता ।

चीन पर पड़े पर्दे के कोनों और किनारों को भी उतना ही कस कर दबा दिया गया है जितना कि उसके केन्द्रीय भाग को । उदाहरणार्थ यदि कोई व्यक्ति शेंकेंग जैसे छोटे सीमावर्ती नगर में (यह नगर कैन्टोन प्रांत और हांगकांग की सीमा पर स्थित है) हांगकांग में प्रकाशित पत्र हाथ में लिए घूमता देखा जाए तो मुख्य द्वीप पर रहने वाले उस के सगे सम्बन्धियों का जीवन ही खतरे में पड़ जाए । चीन के दक्षिण पूर्व समुद्र तट पर स्थित किसी नगर

या गांव में यदि कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो समुद्र पार की या कोमिन्ताग की कोई खबर सुनाता हो तो वह खबर कितनी ही नगण्य अथवा अराजनैतिक हो उस व्यक्ति को राष्ट्रवादी जासूस होने के अपराध में गिरफ्तार कर लिया जाता है। जिन लोगों को इस पर्दे के केवल एक ही ओर की बातों का परिचय है, वे उसके दूसरी ओर होने वाली घटनाओं के विषय में जब भविष्यवाणी करते हैं या कल्पना से काम लेते हैं तो भारी भूल कर सकते हैं। साधारणतया वे यह समझ लिया करते हैं कि बांस-पर्दे को चीन में होने वाली घटनाओं के समाचार को बाहर जाने से रोकने के लिए तथा बाहर के देशों में होने वाली घटनाओं के समाचार को अन्दर आने से रोकने के लिए ही बनाया गया था। उन को इस बात का अभास भी नहीं है कि इस पर्दे को खड़ा करने में एक कहीं अधिक महत्वपूर्ण और भयंकर कारण था : यह पर्दा चीन की समस्त जनता पर पड़ा हुआ है जिस के कारण वह सदा अंधकार में रहती है। यह सच है कि समाचार नियंत्रण इस पर्दे का उद्देश्य था किन्तु बाहर के लोगों को इस समाचार नियंत्रण का परियाप्त ज्ञान नहीं रहता। इस पर्दे के इसी ओर "जनसाधारण" कहे जाने वाले जो अभागे मानवप्राणी रहते हैं उनको न केवल इस पर्दे के छिद्रों द्वारा समाचार मिलना ही असम्भव है बल्कि उन के मन भी उत्तरोत्तर उस की जकड़ में बँधते जाते हैं।

मानव ने अपने इतिहास में अब तक जितनी नृशंसतायें बरती हैं, समाचार नियंत्रण उन में सब से अधिक भयङ्कर है। इस के द्वारा इतिहास को "अनहुआ" किया जा सकता है; सत्य को तोड़ा मरोड़ा जा सकता है और इस प्रकार जनता को धोखे में रखा जा सकता है। ये सब ऐसी कार्यवाहियां हैं जिनसे तानाशाह अपनी स्वच्छन्दता को बड़े प्रभावकारी ढंग से कार्यान्वित कर सकते हैं। चीन के मुख्यद्वीप पर इस समाचर नियंत्रण को लागू करने का काम न्यू चाइना न्यूज एजेन्सी (नव चीन समाचार एजेन्सी) के हाथ में है। सोवियत रूस की 'टास' नामक समाचार एजेंसी को संसार में समाचार निर्माण का सब से बड़ा कारखाना समझा जाता है। "न्यू चाइना न्यूज एजेंसी" एक सरकारी समाचार नियंत्रण समिति है और इस सम्बन्ध में "न्यू चाइना न्यूज एजेंसी" को 'टास' से दूसरा स्थान प्राप्त है।

एक दिन और एक रात की रेल यात्रा के पश्चात् हमको बताया गया कि

अब से हमको चौथी सेना के साथ काम करने वाली न्यूज एजेंसी के एक विभाग में काम करना होगा । हम लोग अपनी अपनी आत्मकथाओं में साहित्यक एवं पत्रकार कला सम्बन्धी अनुभव होने का उल्लेख कर चुके थे। जैसा कि बाद में एक दूसरे से विचार विमर्श करने के पश्चात् हमको पता लगा यही कारण था कि हमको उपरोक्त कार्य के लिये चुना गया। जिस स्टाफ अफसर ने हमारे लिये उक्त आशय की घोषणा की उसने इस बात को बड़े जोर के साथ बताया कि हम "परीक्षणार्थी सम्वाददाता" बनाये जा रहे हैं और यह कि हमको यह समझ लेना चाहिये कि "जनतंत्रीय सम्वाददाताओं" का काम "प्रतिक्रियावादी सम्वाददाताओं" से भिन्न होता है।

हम ३२ "जनतंत्रीय" सम्वाददाताओं को जो इस गाड़ी में सफर कर रहे थे तीन नायकों की अध्यक्षता में तीन अलग अलग टुकड़ियों में बांट दिया गया। हमारे नायक लगभग दस साल से क्रांति की सेवा करते आये थे, और प्रायः इतने ही दिन का उनका पत्रकारिता का अनुभव भी समझा जाता था। हमारे नायकों के ऊपर न्यू चाइना न्यूज एजेंसी का एक विशेष सम्वाददाता नियुक्त कर दिया गया था। इन विशेष सम्वाददाताओं का पार्टी की केन्द्रीय समिति में मान था। हम ३२ "जनतंत्रीय" सम्वाददाताओं को रेल के जिस एक डिब्बे में ठूंस दिया गया था, उसके आधे हिस्से में विशेष सम्वाददाता महोदय अपना डेरा डाले हुए थे। उससे आगे जो डिब्बा लगा था, उसमें उसका कार्यालय समझा जाता था जिसमें बेतार के तार से समाचार भेजने और सुनने का अस्थायी प्रबन्ध था, जिसके प्रयोग का एक मात्र अधिकार उसी को था। जिस क्षण मैंने उसको सबसे पहिले एक रेलवे स्टेशन पर देखा था तभी से मुझको इस बात का आभास हो गया था कि वह बड़ा ही महत्वपूर्ण व्यक्ति है, उसकी ऊनी रूजवेल्ट ❀ पोशाक और आइजन हावर जाकेट भी इसी बात का प्रमाण थी। उसका स्वस्थ, चमकता चेहरा, और रहन सहन इस बात के साक्षी थे कि वह सम्पदाशील अवस्थाओं में रहता आया है और "मजदूर किसान वर्ग में जन्म लेने वाला पुराना क्रांतिकारी"

❀ प्रेजीडेन्ट रूजवेल्ट ने जापान विरोधी युद्ध के समय चीनी सरकार को बहुत सा कपड़ा घायल सिपाहियों के लिए भेंट किया था। इस भूरे रंग के कपड़े से बनी यूनीफार्म "ऊनी रूजवैल्ट पोशाक" के नाम से प्रसिद्ध हुई।

नहीं है। बाद में हमको पता चल गया कि वह डिवीजन स्तर का स्टाफ़ अफसर था जिसको व्यक्तिगन भोजन व्यवस्था एवं व्यक्तिगत सेवायें प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त थी, और वह साहित्यसेवी रह चुका था तथा शंघाई और येनान में लेखादि लिखता आया था। उसको अपना रसोइया, अपने विशेष पहरेदार, अपना ही रेडियो सेवक और व्यक्तिगत ड्राइवर मिला हुआ था।

हमको इस गाड़ी में जिन अवस्थाओं में सोना पड़ता था वे निरी भयावह थीं; दिन भर हम लोग एक दूसरे से सटे मिले एक माल डिब्बे में जहाँ जिसको जगह मिली वहां बैठे रहते थे और रात के समय हम लोग फर्श पर घुटने सिकोड़ कर पड़े रहते थे। हममें से जब कभी कोई अपने पाँव फैलाने की कोशिश करता था तो उसके पाँव किसी दूसरे कामरेड के सिर पर जा पड़ते थे। इसमें ११ स्त्री संवाददाता थीं; उनमें से एक ने हमारी इस यात्रा का विवरण देते हुए कहा था कि हम लोग "ढोल में भरे घास फूस की तरह सटे पड़े थे।" यह स्वाभाविक ही था कि उसके इस विवरण की कड़ी आलोचना की गई और उसके विचारों को "ओज हीन" तथा उसके विशेषणों को "दृष्टिकोण रहित" और "परम्परागत धारण युक्त" ठहराया गया। रेलगाड़ी में जो रंग रूट, नीचे दरजे के पार्टी सदस्य थे उन्हीं पर इस प्रकार की अवस्थायें थोपी गईं थी। जो स्टाफ़ अफसर थे, उनको स्थान एवं सुख की कमी न थी और इसलिये उनको परोपदेश कुशलता सुलभ थी। बार बार वे हमको यही कहकर सांत्वना दिया करते थे कि "कष्ट तो वीरों के लिये अमर रस होता है।" उनका यह नया नारा चीन की एक पुरानी कहावत ही की पुनरावृत्ति मात्र थी—"जो जितना कष्ट पाता है अपने साथियों में वह उतना ही बड़ा गिना जाता है।" मेरी राय में यह प्रतिगामी सामंतशाही धारणा थी। आज की संगति में तो "वीर" का अर्थ "जनतंत्रीय वीर" अथवा सामूहिक वीर था, जिसका व्यक्तिगत वीरता से कोई सम्बन्ध न था।

यदि हम लोग जो इस प्रकार खिचे भिचे पड़े थे वास्तव में "वीर" थे तो जिनको इस गाड़ी में काफी स्थान और आराम प्राप्त था वे "अवीर" थे। किन्तु इस विषय में यदि हम तर्क वितर्क करने अथवा अपनी अवस्था की

अपने नायक या उसकी प्रेमिका※की अवस्था से तुलना करने की धृष्टता करते तो हमको "मिथ्या एकतावाद" के समर्थन करने के आरोप में अपनी बड़ी आलोचना सुननी पड़ती।

एक बार यों ही बातें करते करते हमको पीपिंग छोड़ते समय जो अरुचिकर अनुभव हुए थे उनका स्मरण हो आया। इनसे हमारा अभिप्राय उन "निर्णयों" से जिनको संघ ने हमारे सिर थोप दिया था। हमारे प्रस्थान करने के दिन से पहिली शाम को हमारी छोटी टुकड़ियों की "निर्णय सभायें" बुलाई गई थी जिसमें प्रत्येक को यह बताना पड़ा था कि वह अगले दिन प्रस्थान करने वाले किस कामरेड के विषय में क्या मत रखता है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का जो मूल्यांकन हुआ, जो वास्तव में आंदोलनकारियों के मत ही का दूसरा नाम था, संकलन किया गया। बाद में ये संकलित मत ही संघ के निर्णय के रूप में शिरोधार्य हो गये। (बाद में हमको पता चला कि विभिन्न स्तरों पर आसीन व्यक्तियों के अपने अपने रिकार्ड के रूप में ये "निर्णय" बड़े महत्व की बात थी। जब कोई व्यक्ति विशेष एक स्थान से दूसरे स्थान पर या एक काम से दूसरे काम पर जाता था तो उसका भविष्य बहुत कुछ इन "निर्णयों" ही पर अवलम्बित होता था)

इतनी धीमी आवाज़ में कि दूसरी ओर बैठे आन्दोलनकारी कहीं उसकी बात न सुन लें एक युवती कामरेड ने जो इस यात्रारूपी अग्नि परीक्षा पर आग बबूला हो रही थी हमसे कहना शुरू किया। "ये मुझको 'धनिक परिवार की कुमारी जी,' कहते हैं। उनकी राय में मैं अपने बाप के गंदे पैसे और गोदामों में भरे माल पर पली बढ़ी हूं, और मजदूरों और किसानों के खून से पनपी हूं। उनके अनुसार जब मैं छोटी थी तो मेरे सेवा करने के लिए बाईं ओर नौकर होते थे और दाहिनी ओर दास। यदि कभी मैं उनसे कह दिया करती कि मैं रोमांचकारी कठिन कार्य की खोज में थी और इसीलिए क्रांन्ति में सम्मिलित हो गई थी। तो वे इस पर मेरा जो मज़ाक उड़ाते थे उसको बिना सुने नहीं समझा जा सकता।"

※संघ ने "पत्नी" शब्द को हटाकर उसके स्थान पर "प्रेमिका" शब्द प्रस्थापित कर दिया था।

उत्तर पूर्व चीन से आया एक उन्नीस वर्षीय शरनार्थी कहने लगा—"मेरे न्यायाधीशों ने बड़ी दयालुता से मुकदमे का फ़ैसला किया। पहले तो वे मेरे बाप के विषय को लेकर ही जो कि एक सामन्तशाही जमींदार था राग अलापते रहे। इसके पश्चात् उत्तर पूर्व चीन के स्वातंत्र्य के पश्चात् मैं किस प्रकार पीपिंग पहुँचा इसकी चर्चा करते रहे। उनका तर्क था कि जिस समय वे लोग अपराधियों की गणना कर रहे थे और जब दण्ड देने के लिए सभायें की जा रहीं थी उस समय मैं वहां उपस्थित नहीं होना चाहता था और इसीलिए वहां से भाग आया था। एक कामरेड ने मानो एक बहुत बड़ा रहस्य पा लिया था और इसलिए एक बड़ी व्यंग और आत्मतुष्टि पूर्ण वाणी में कहा यदि मैं पीपिंग के स्वातंत्र्य के पहले पीपिंग को भी छोड़ देता तो क्रान्ति मेरा आकाश तक पीछा करती। पर क्योंकि मैंने अपने दो महीने के स्वाध्याय में कुछ प्रगति करली थी मुझको जनतंत्रीय संवाददाता के रूप में काम करने का अवसर दिया गया। जनता के विरुद्ध जो मैंने पाप किए हैं उनका प्रायश्चित करने के लिए मैं इस यात्रा पर निकला हूँ यही मेरा अंतिम अवसर है; यह कहकर उसने मुझको सम्बोधित किया, "तुम्हारे विषय में क्या निर्णय रहा।"

मैं मुस्कराया। वह देखने में इतना युवा था पर बात पुरखों जैसी कह रहा था। मैंने उत्तर दिया "मन म्लान करने की आवश्यकता नहीं है। मैं जानता हूँ कि यह निरा पागलपन है, पर इसके विषय में मैं और आप कर ही क्या सकते हैं? उन्होंने मेरे विषय में यह निर्णय कर लिया है कि मैं शिक्षित व्यक्ति हूँ और इसलिए शारीरिक श्रम का सम्मान नहीं करता हूँ। उनका विचार है कि यदि मैंने यह सोचा था कि दक्षिण जाने वाली इस टोली में सम्मिलित होकर मैं रोजगार भर पालूंगा तो मेरे भोलेपन की इससे अधिक पराकाष्टा और क्या हो सकती थी; अब मैं समझ गया हूँ कि रोजगार के विषय में मेरी वह भ्रांतिपूर्ण धारणा थी। वास्तव में न तो मेरा कोई परिवार है और न स्वातंत्र्य के पहले मेरा किसी से राजनीतिक सम्पर्क था। इसलिए मेरे भाग्य का निर्णय करनेवाले मुझको केवल अनुत्साही होने सिद्धान्त हीन एवं संघर्षहीन चरित्र और आनन्दपूर्ण जीवन व्यतीत करने का दोषी ठहरा सकते थे। अनुत्साही होने का मतलब उनकी दृष्टि में यह था कि अभी तक मैं पुरानी धारणाओं से मुक्त नहीं हो सका था। मेरे सिद्धान्तहीन

होने से उनका अभिप्राय यह था कि मैं आन्दोलनकारियों और जनसाधारण में जो भेद है उनको नहीं समझता था और इसलिए संघ के सभी सदस्यों को समान दृष्टि से देखने की भूल करता था। मेरे संघर्षहीन चरित्र से उनका तात्पर्य यह था कि जब कभी संघ को अज्ञानी जन साधारण के विरुद्ध कोई कार्यवाही करनी पड़ी तो उसमें मैंने संघ का साथ नहीं दिया। मेरे आनन्द पूर्ण जीवन व्यतीत करने की अभिलाषा के त्रुटि पूर्ण होने का कारण यह था कि मैं वफ़ादार क्रान्तिकारी कामरेड होने की इच्छा नहीं रखता था। अब समझ गए आप ? क्या कर सकते हैं मैं और आप इस विषय में ? आप कुछ भी कहिए या कीजिए आपकी बात सही नहीं हो सकती। पागलपन से बचने का यहां एक ही उपाय है वह यह कि आप अपनी कटुता को उस समय तक दबाए रहिए जब तक कि इसके कारण की गई बेहूदगी पर हँसने का अवसर पा सकें। क्या आप नहीं समझते कि जिनको मेरा पाप बताया जाता है वे निरे परिहास पूर्ण अपराध ही हैं ?"

"नहीं," मेरे युवा मित्र ने कहा।

"सुनिए उन्होंने मेरा जो चरित्र-विश्लेषण किया वह वास्तव में मेरे लिए प्रशंसा की बात थी। उससे पहले मैंने कभी सोचा ही न था कि मुझमें भी इतनी मानवता हो सकती है।"

यह सुनकर वह मुस्कराया और मुझको लगा कि अब उसका जी पहले से अच्छा है। मैंने तब उससे धीरे से कहा, "जब आप हँसे तो मन ही मन में हँसे इस समय यही आपका रहस्य होना चाहिए।"

× × ×

पुराने समाज में संवाददाताओं का काम बड़ा स्वतंत्र और श्रेष्ठ पेशा माना जाता था। साधारण समाचार लिखते समय पत्रकार को किसी राजनीति विशेष से सम्बन्ध रखना आवश्यक न था। यदि वह निष्पक्ष रूप से किसी घटना का विवरण दे देता था तो यह समझा जाता था कि उस ने अपना कार्य सुचारू रूप से कर लिया है। पुराने चीन में संवाददाता को उस की निष्पक्षता के लिए सराहा जाता था और अत्यन्त सम्मानित व्यक्ति समझा

जाता था। किन्तु नए समाज में उस की निष्पक्षता ही उस का अक्षम्य अपराध माना जाता है। दक्षिण को जाते समय इस रेलगाड़ी ही में हम को यह बता दिया गया था कि समाचारों की रिपोर्ट तैयार करने में निष्पक्षता बरतना एक पिछड़ी हुई धारणा का प्रतीक है और पुराने संवाद दाताओं का पुराने शासकवर्ग की ठगी में हिस्सा रहा है। यदि जनसाधारण जागृत नहीं हुआ तो यह उन्हीं का दोष था। रेल गाड़ी के हमारे बड़े स्टाफ अफसर ने कहा था यह पुराने समाज की मूर्खता थी कि वह तथाकथित निष्पक्षता के कारण संवाददाताओं को बेताज के बादशाह कहता था। पुराने प्रकार के संवाददाताओं को नए स्वाध्याय द्वारा आत्मशोधन करना होगा। उन को जागृति प्राप्त करनी है और अपने आप को प्रगतिशील बनाना है। संवाद दाताओं को बेताज का बादशाह समझने की वेहूदगी का हम अन्त करना चाहते हैं। अब आप लोग जनतंत्रीय संवाददाता हैं आप अपने सिरों पर अब नया और सुन्दर जनतंत्रीय ताज पहनिए जो नया शासक वर्ग आप को प्रदान कर रहा है।

उस झटके देने वाली गाड़ी में बैठा हुआ, मैं देर तक उस के शब्दों पर मनन करता रहा। जापान से जिस समय युद्ध चल रहा था, तब तक मैं चुंग-किंगमें था। उन दिनों मुझको एक कम्युनिस्ट पार्टी सदस्य से जो 'न्यू चाइना डेली-नामक समाचार पत्र का संवाददाता था बातचीत करने का अवसर मिला था। अब गाड़ी में बैठा हुआ मैं उस घटना को याद करने लगा। वह बार बार यह आग्रह कर रहा था कि संवाददाताओं को 'सही' समाचार ही भेजने चाहिए। उसकी बात चीत से मुझ को यह विश्वास हो गया था कि "सही समाचार" से उस का अभिप्राय सच्चे समाचार से न था। उस की बात मान ली जाती तो 'सही समाचार" केवल उसी समाचार को कहा जा सकता था जो पार्टी के संचालकों की इच्छा के अनुकूल हो। जैसा कि उस ने मुझको बताया था कोई समाचार सही तभी हो सकता है जब उस में तीन बातें हों अर्थात् उससे सम्पत्तिविहीन वर्ग के दृष्टिकोण का प्रतिपादन होता हो, उसका दृष्टिकोण भौतिकवादी हो, तथा उसकी शैली तर्क-वितर्कात्मक हो। उसीने बड़े गर्वके साथ मुझ को सुनाया था कि वह अपने संवाददाता कार्ड के सहारे किस किस प्रकार और कहां कहां से "समाचार" एकत्रित करता रहा है। इस कार्ड के जोर से, अथवा यों कहिये कि लोगों के इस विश्वास के कारण कि उस का सम्बन्ध

अखबारी दुनियां से है, उस को चुंग किंग की जो इस समय युद्ध कालिक राजधानी थी सभी दफ्तरों, पार्टियों, तथा गुटों ने अन्दर तक जाने आने की सुमिधा प्राप्त थी। एक बार उस ने मुझ से कहा था कि "तुम नहीं समझते कि सरमाये दारों के सम्वाददाता केवल उन्हीं घटनाओं की जानकारी करा सकते हैं जो हो चुकी होती हैं, जब कि जनतंत्रीय सम्बाददाता संसार तक को बदल सकते है।"

इस समय रेलगाड़ी एक बड़े मोड़ से गुजर रही थी; उस में झटका लगने के कारण मानों मेरा वह स्वप्न टूट गया जिसमें कुछ देर से मैं उलझा चला आ रहा था स्टाफ अफसर अभी तक जनतंत्रीय संवाददाताओं की प्रतिष्ठा का वखान करते आ रहे थे। तब उन्होंने कामरेड पु लो की एक बात दोहराई-- यह कामरेड ही कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के एक मात्र ऐसे सदस्य थे जो किसी समय अमरीका में शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। पु लो ने जनतंत्रीय संवाददाताओं का क्या कर्तव्य है, इस विषय पर एक बार भाषण दिया था। कामरेड पु लो ने घोषणा की थी कि "जनतन्त्रीय संवाददाताओं" को जो एक मुख्य बात सदा ध्यान में रखनी चाहिए वह यह कि उनके नित्य प्रति के व्यवहार से पार्टी की नीति ही की घोषणा होती रहनी चाहिए।"

हमारे अफसर ने हमको वह बात भी बताई जो जुंगयेन क्षेत्र के पार्टी पत्र के मैनेजर कामरेड ने बिना किसी संकोच के कभी उनको सुनाई थी "तुम ने कभी सोचा है कि पार्टी ने समाचार पत्र चलाने के लिए इतनी बड़ी पूँजी क्यों फंसा रखी है ?" इस लिए कि इस युद्ध में विजय प्राप्त करने में 'सही' समाचारों का बड़ा योग हो सकता है। सही समाचर से ही सेना का धीरज और युद्धोचित साहस कायम रखा जाता है; और धीरज और साहस ही अच्छे सैनिक की सर्वश्रेष्ठ विभूति है।"

इसके पश्चात उसने औपचारिक रूप से यह घोषणा भी कर दी कि पार्टी की केन्द्रीय समिति संवाददाताओं के कार्य को पार्टी के कामों में अत्यन्त महत्व का काम मानती है और "चूंकि आपका काम इतना महत्वपूर्ण है इस लिये आप जब एक बार जनतन्त्रीय संवाददाता बन जाते हैं तो फिर आप को यह अधिकार नहीं रहता कि आप इस काम को छोड़ कर कोई और काम

करना शुरू करदें । अब आप जब तक जीवित रहेंगे जनतन्त्रीय संवाददाताओं के रूप में ही काम करते रहेंगे । अवकाश ग्रहण; काम से छुटकारा अथवा कार्य परिवर्तन तो अब केवल बहुत ऊँचे पदाधिकारियों की अनुमति के बिना असम्भव है ।"

केन्द्रीय समिति की दृष्टि में हमारा इतना ऊँचा मान है, यह देख सुन कर आश्चर्य हुआ । किन्तु हममें से अधिकांश की तनिक भी यहि इच्छा न थी कि जीवन पर्यन्त केवल एक इसी काम पर मरते खपते रहें । इस अपरिवर्तन शीलता के अभेद्य सिद्धांत की घोषणा से हमारे मन में दुबिधा सी पैदा हो गई और कम से कम मेरे मन में तो उस के कारण निस्सन्देह कुछ प्रश्न उठने लगे । क्या कारण था कि चाओ मुंग-तेह अपना अध्यवसाय परिवर्तन कर सका था क्या वह किसी समय चालाक, कवि, मन्त्री और राजनीतिज्ञ के विभिन्न रूपों में अपने सम्राट के विरुद्ध षड्यन्त्र नहीं करता रहा था और क्या तिस पर भी उसको राष्ट्रीय "हीरो" नहीं माना जाता ? और हाँ, क्या पान चिन-नियेन की भी कहानी ऐसी ही नहीं रही ? एक पौराणिक प्रेम कथा में वह एक वेश्या के रूप में आई और क्या बाद में वही स्त्रियों की ऐतिहासिक प्रदर्शिका नहीं मान ली गई ? मैं स्टाफ अफसर से अपरिवर्तन शीलता एवं परिवर्तन शीलता के इन अभेद्य सिद्धान्तों के विषय में एक प्रश्न पूछना चाहता था । किन्तु मैंने मौन ही को बुद्धिमानी समझा और अपने संवाददाता के नये अनन्त पद पर दर्शनशास्त्रीय ढंग से मनन करने के लिए रेल के डिब्बे के एक कोने में बैठा रहा ।

× × ×

एक दिन प्रातः काल हमारी गाड़ी दक्षिण टाइयान पर ठहरी; हमको वहां गाड़ी को छोड़कर बाहर आना पड़ा क्योंकि हवाई हमले का डर था । हमको इधर-उधर जंगल में फैल जाने की आज्ञा हुई थी, किन्तु समय व्यर्थ न चला जाय इस दृष्टि से हमारे नायक ने हमको यहां ही जनतंत्रीय संवाददाताओं की हैसियत से अपनी पूछताछ का काम शुरू करने को कहा । उनका कहना था कि जनतंत्रीय समाचार संकलन का काम आदेशानुसार सामूहिक ढंग से किया जाता है । "पहिले ही से तुम लोगों को यह बता दिया जायगा कि अमुक विषय पर समाचार संचय करना है । किसी को 'फ्री

लांसिग' की अनुमति नहीं दी जा सकती। जब तुम लोग अपनी-अपनी रिपोर्ट तैयार कर लोगे तो उन रिपोर्टों को तुम्हारी छोटी टुकड़ी के पास सामुहिक अध्ययन और स्वीकृति के लिए भेज दिया जायगा। सब की पूछताछ का अभीष्ट एक ही है, किन्तु यह बात ध्यान में रहे कि तुम लोग जो कुछ लिखोगे उसका तुम्हारे अपने-अपने विचारों से घनिष्ट सम्बन्ध होना चाहिये। यदि आलोचना से बचना चाहो तो पहिले ही से तुम लोगों को अपना एक ही विचार बना लेना चाहिए। इस प्रकार के काम का तुमको कोई अनुभव नहीं है क्योंकि इस विषय में तुम सभी नौसिखिया हो और तुम्हारे दिमागों में अभी बहुत सा कूड़ा करकट भी भरा हुआ है। यही अवसर है जब कि तुम अपने दिमागों की सफाई कर सकते हो।"

अब हम लोगों को तीन-तीन व्यक्तियों की छोटी अस्थायी टुकड़ियों में विभक्त कर दिया गया। मेरी छोटी टुकड़ी के तीन व्यक्तियों में मैं ही अकेला उत्तरी चीन का रहने वाला था। मुझको आज्ञा मिली कि मैं एक महिला आन्दोलनकारी के साथ काम करूँ। यह महिला किसी समय शंघाई के एक बैंक में काम कर चुकी थी। उसकी भाषा चेकियांग प्रान्त की थी जिसके कारण उसकी बातें समझने में मुझको तनिक कठिनाई होती थी। हमारी टुकड़ी का तीसरा सदस्य एक प्रवासी विद्यार्थी था। जो जिग हुआ विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लिए अपने प्रयास से चीन वापस आया था। यद्यपि उसका जन्म फुकियेन प्रान्त में हुआ था, वह थोड़ी सी 'मंडरिन' भी बोल सकता था। उन दोनों ने मुझको दुभाषिये का काम सौंपा।

यह सौभाग्य की बात थी कि हमको रात पड़ने तक अपनी पूछताछ पूरी करने का समय मिला हुआ था। मैं इस बात को इसलिए सौभाग्य की कहता हूं कि इस क्षेत्र में बहुत थोड़े गांव थे। बाकी देर पैदल चलते रहने के बाद हम एक गांव में आ पहुंचे जिसमें बाहर से देखने से जीवन के तनिक भी चिन्ह नहीं दिखाई देते थे। कुत्ते तक के भोंकने की आवाज़ न आती थी। पर कुछ देर चलने के पश्चात् हमने देखा कि गांव के दूसरी ओर से एक टूटे-फूटे छप्पर वाले मकान में खाना पकने का धुंआ उठ रहा है। हम उस झोपड़ी पर पहुंचे और बिना किसी प्रकार का शिष्टाचार दिखाये अन्दर जा धमके। एक बुढ़िया धीमी सी आग पर कुछ पका रही थी। उसने सिर उठाकर देखा और हमारे

इस प्रकार आ धमकने पर आश्चर्य सा प्रकट किया; पर हमारी सैनिक पोशाक देख कर वह स्पष्टतः सहम गई "डरिये नहीं" मैंने उसको समझाते हुए कहा "हम तो आप से पीने के लिए थोड़ा सा पानी मांगने ही आये हैं।"

वह हमारी तरफ देखती रही, जैसे कि उसको मेरे मित्रता पूर्ण शब्दों पर विश्वास ही न हुआ हो । तिस पर भी उसने कुछ गरम पानी तीन प्यालों में डालकर हमको पेश कर दिया । हम उस पानी को चुप्चाप पी गये। इतने में दो पतले-दुबले बच्चे द्वार पर आ खड़े हुए और हमको देखने लगे; उनकी आंखों में झेंप और डर दिखाई देता था और साथ ही कौतूहल भी; हमारी मौजूदगी का अर्थ उनकी समझ में नहीं आ रहा था।

"बुढ़िया", महिला आन्दोलक ने उसको सम्बोधित करते हुए कहना शुरू किया", अब जनता ने अवस्थाओं में परिवर्तन करना शुरू कर दिया है इस स्वातंत्र्य के विषय में तुम्हारी क्या राय है ?"

मुझको महिला आन्दोलक के इन शब्दों का उलथा करने में कुछ कठिनाई हुई। मेरी कठिनाई का मुख्य कारण यह न था कि उसकी भाषा चेकियांग प्रान्त की बोली थी, बल्कि यह कि मेरी समझ में यह नहीं आ पा रहा था कि किन शब्दों में मैं महिला आन्दोलक के शब्दों का वास्तविक अर्थ बुढ़िया तक पहुंचा दूँ ताकि उसको समझने में आसानी हो। उसकी बोली को कई रूप में हस्तगत करके हाथ आंखों के इशारे से कई बार प्रयत्न करने के पश्चात् मैंने महिला आन्दोलक के प्रश्न का अभिप्राय उसको समझा दिया। पहिले तो बुढिया की समझ में नहीं आया कि स्वातंत्र्य से हमारा क्या मतलब है, उसने तो केवल यही सुन रखा था कि लड़ाई चल रही है। इसका उसके लिए वास्तव में क्या अर्थ था ? इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं कि अब सरकार उससे भिन्न-भिन्न सेवायें रुपये पैसे और सामान आदि की अधिकाधिक मांग करेगी ।

स्वभाव से अधैर्यशील व्यक्ति होने के कारण महिला आन्दोलक ने अब स्तब्ध बुढ़िया पर इतने प्रश्नों की झड़ी लगा दी मानो कि वह गरीब कोई ऐसी अपराधिणी हो जिससे अपराध स्वीकार कराने का यत्न करना अनिवार्य हो। "स्वातंत्र्य सेना तुमको कैसी लगती है ? तुमको यह पसन्द है न ?

तुम्हारा प्रतिक्रियावादियों से कभी कोई सम्पर्क नहीं रहा ? तुमको तुच्छ सम्पत्ति-शाली लोगों से कष्ट तो अवश्य पहुंचता होगा ?"

बुढिया ने एक बार उसकी ओर देखा और दूसरी बार मेरी ओर। मैं उसके शब्दों का अनुवाद किया ही चाहता था कि वह बोल पड़ी, "हां, हां, बड़ी अच्छी है। बड़ी अच्छी है।" यह कह कर वह पुनः अपना खाना पकाने में लग गई।

मगर हमारी महिला कामरेड पूछती ही जा रही थी, "कैसे अच्छी है ? क्या इसका सम्बन्ध तुम्हारे अपने विचार से है ?"

"अच्छी है, अच्छी है !" बुढिया बोली। यह स्पष्ट ही था कि वह कुछ भी नहीं समझी थी और हमारी महिला कामरेड के आग्रह पूर्ण प्रश्नों की झड़ी से कुछ-कुछ खीझ सी गई है। वह खाना पकाती रहीऔर "अच्छी-अच्छी" शब्दों को दोहराती रही।

बुढ़िया अपनी धीमी चाल से जब झोंपड़ी में कार्यवश इधर उधर घूमी तो उसकी आग बुझ गई। मैंने अपनी महिला कामरेड को धीरे से आगे को धकेलते हुए कहा, "उसके लिये अब दूसरी आग जलाकर तैयार कर दो।" वह उठी और जैसा मैंने कहा था वैसा करने को आगे बढ़ी। उधर मैंने बुढ़िया से प्रार्थना की कि वह मेरे पास आ बैठे। मैंने ये शब्द बड़े ही मित्रतापूर्ण ढंग से कहे ताकि किसी तरह बुढ़िया का मुंह तो खुले। अन्त में उसकी ज़बान खुली। उसने मुझको बताया कि उसका पति खेतिहर मज़दूर था; और मर चुका है। उसके एक बेटा है, जो अपने बाप की जगह काम करता है। उसके परिवार वालों की अपनी कोई ज़मीन नहीं है। वास्तव में इस झोंपड़ी को छोड़कर, जिससे वे किसी तरह वर्षादि से अपना सिर छिपा लेते हैं, उनके पास अपनी कोई भी चीज़ नहीं है। घर पर चरखा चलाती है, बेटा खेत पर काम करता है। दोनों की मेहनत से जो कुछ प्राप्त हो जाता है, उसी से आजीविका चलती है।

इधर उसकी यह कहानी समाप्त हुई; उधर महिला कामरेड के हाथों से

तैयार की गई आग चहक उठी। बुढ़िया अब मेरे पास से उठ कर अपनी आग के पास चली गई। बुढ़िया ने अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिये हमारी महिला कामरेड को "श्रीमती जी" कह कर सम्बोधित किया, जिससे वह इतनी असंतुष्ट हो गई कि हमको झोंपड़ी छोड़ कर बाहर आना पड़ा। बाहर जाने से पहिले मैंने एक बच्चे के सिर पर हाथ फेरा। बच्चा झेंप कर पीछे हट गया।

अपनी रेल गाड़ी की ओर वापिस जाते समय हमारी महिला कामरेड ने बड़ी झल्लाहट के साथ कहा, "इस बुढ़िया की अवस्था इतनी खराब हो चुकी है कि अब उसको जागृत नहीं किया जा सकता।"

"लेकिन", मैं मुस्कराते हुए कहने लगा, "यह तो तुमको मानना ही चाहिये कि वर्गीय दृष्टिकोण और वर्गीय स्थिति से देखे तो वह बहुत अच्छी है। वह इतनी गरीब है कि कभी प्रतिक्रियावादी हो ही नहीं सकती।"

"वह इतनी अज्ञानी है कि कभी क्रांतिकारी हो ही नहीं सकती।"

"यह कैसी बात कह दी आपने ?"

स्टेशन वापिस आने वालों में हम ही सबसे पीछे रह गये थे। जब हम वहां पहुंचे तो वहां एक मीटिंग हो रही थी जिसकी अध्यक्षता एक छोटी टुकड़ी के नायक कर रहे थे। हम आते ही मीटिंग में शामिल हो गये। वहां तीन व्यक्ति अभी अपनी यह कथा सुना चुके थे कि वे किस प्रकार एक ऐसे घर में हो आये थे जिसके चारों ओर एक उंची पहाड़ी है। वे उस घर के निवासियों से बड़ी अच्छी बातें करके लौटे थे। उक्त घर के निवासियों ने उनको चायऔर सिगरेटें भी पिलाई थी। यह सुनकर नायक उन पर बिगड़ गया और मीटिंग को सम्बोधित करके कहने लगा "इन तीनों व्यक्तियों के अपने दृष्टि कोण में कोई जान नहीं है। इन्होंने एक जमीन्दार के घर आतिथ्य स्वीकार करके अपने आपको भ्रष्ट कर लिया है चूंकि क्रांति का यह आग्रह है कि इसके समर्थक ऐसे सामंत शाही परिवारों से सम्पर्क न रखें, इन तीनों व्यक्तियों ने हमारे सिद्धान्त को गहरा आघात पहुंचाया है।"

महिला आंदोलक ने मेरी बांह छूते हुए मुस्कराकर मेरे कान में कहा, "देखो, हमने आज की अपनी पूछताछ के लिये बड़ा सही विषय ढूंढा था ?" मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। मैं तो उस समय इसी चिंता में उलझा हुआ था कि जनतंत्रीय सम्वाददाता होने के नाते मेरी यह पहली रिपोर्ट किस तरह लिखी जायगी।"

पांचवां परिच्छेद

अनुभव-वृद्धि

जब तक हमारी रेल गाड़ी मध्य चीन स्थित चेंगचो नगर पहुंची, हम सब लोग अपनी अपनी ट्रिप रिपोर्ट लिख चुके थे। जैसी कि आज्ञा थी इन ३२ रिपोर्टों की शैली भिन्न भिन्न थी किन्तु उनमें व्यक्त विचार एक ही। हममें से कुछ लोगों ने अपनी रेल-यात्रा के व्यक्तिगत अनुभव बताए थे—उदाहरणार्थ उस लड़की की बात ही को लीजिए जिसने कहा था कि रेलगाड़ी में हमको घास फूस की तरह भर दिया गया था। उसकी तीव्र आलोचना हुई और उन पर सही विचारधारा से विचलित होने का आरोप लगाया गया। हममें से कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने रास्ते में एक दो किसानों के साथ हुई अपनी बातों को लिख दिया था। हममें शेष लोगों ने जो कुछ लिखा वह इस यात्रा का वैसा ही वर्णन था जैसा कि स्थापित परम्परा के अनुसार होना चाहिए था ऐसी हमको आशा थी।

चूंकि हम लोगों को कुछ दिन तक चेंगचो रुकने की आज्ञा थी हमारी रिपोर्टों पर हमारी छोटी टुकड़ियों की सभाओं में विचार विमर्श हुआ। उस के पश्चात् उन रिपोर्टों को सामूहिक विश्लेषण के लिए बड़े अध्ययनालय में ले जाया गया। हमारी कुछ महिला कामरेड ऐसी भी थीं जो अपने प्रस्तावों को बड़े अध्ययनालय में ज़ोर ज़ोर से नहीं पढ़वाना चाहती थीं। किन्तु उनका बस ही क्या चल सकता था। जो कुछ उन्होंने लिखा था वह ज़ोर से पढ़ा गया और सार्वजनिक आलोचना की कसौटी पर कसा गया और वे बेचारी अपना मन मारकर रह गईं। उनमें से एक ने अपनी उन दो यात्राओं का, जो उसने जिन-पू रेलवे लाइन पर की थीं, बड़े हसरत भरे ढंग से वर्णन किया था। उसने यह यात्रा क्रान्ति के पहले की थी। उस बेचारी को क्या पता था कि उसकी इस हसरत पर इतना लम्बा और तीखा वाद विवाद छिड़ जायगा और उसके निरीह सिर पर आलोचना का इतना बड़ा भार आ पड़ेगा।

बहुत कुछ वाद विवाद होने के पश्चात् छोटी टुकड़ियों के नायकों में से एक ने उससे पूछा "आख़िर इस हसरत शब्द का व्यवहारिक सार क्या है ?" वह बेचारी लड़की एक ऐसे बोझ से दबी जा रही थी मानों कि टूटने को हो। आत्मव्यथा के कारण उसके मुंह से बोल नहीं निकलता था इस-लिए वह नायक के इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकी । उसने अपना सवाल फिर दोहराया और गरज कर बोला कि "इस शब्द का अर्थ यह है कि तुम अपने अतीत को छोड़ने को तैयार नहीं हो— है ना यही बात ? इसका आगे अर्थ यह भी हुआ कि तुम्हारे मतानुसार वर्तमान व्यवस्था इतनी अच्छी नहीं है जितनी कि पुरानी व्यवस्था थी। तुम क्या यह महसूस नहीं करती कि तुम्हारे इस कथन का यह अर्थ है कि तुम अभी तक "जागृत" नहीं हो सकी हो ?"

एक लड़की और थी उसकी रिपोर्ट को भी इसी प्रकार विश्लेषण की कसौटी पर कसकर टुकड़े टुकड़े कर दिया गया था। उसका अपराध यह था कि उसने अपनी रिपोर्ट में मौसम के विवरण पर बहुत कुछ स्थान गंवा डाला था। उसकी आलोचना के समय उसके विरुद्ध एक बात यह कही गई कि उसने अपनी वास्तविक धारणा को व्यक्त करने का साहस नहीं दिखाया । राज-नीतिक चर्चा के स्थान में चन्द्रमा के गुण गाना प्रतिक्रियावादी परम्परा का प्रतीक है। एक टुकड़ी नायक ने पूछा "ऐसी रिपोर्ट लिखते समय तुम्हारे मन में वास्तव में क्या बात थी। इससे यह बात बिल्कुल स्पष्ट नहीं होती कि तुम अमुक बात से सहमत हो और अमुक बात के विरुद्ध।" कौन सा विषय सही समझा जायगा, कौन से विचार सही माने जायंगे, या किस शैली को सही समझा जायगा, यह जानना आसान काम न था। क्योंकि आपकी राय में जो बात सही हो उसको ये लोग भी सही समझें यह आवश्यक न था। उदाहरण के लिए उस कामरेड की बात लीजिए जिसने अपनी रिपोर्ट में लिख दिया था कि "अपनी दक्षिण की इस यात्रा में मुझको नए चीन के जीवन के मनोरंजक पहलू को देखने का अवसर मिला।" टुकड़ी नायक ने यह पढ़कर दो प्रश्न किए "तुमने यह मनोरंजक पहलू इस यात्रा को प्रारम्भ करने से पहले देखा या उसके पश्चात्, यदि बाद में देखा तो पहले क्यों नहीं देख सके थे ?" दूसरा प्रश्न यह था "कि क्या नए चीन का कोई दुःखकर पहलू भी है ?" मैं रेल के डिब्बे की अगली तरफ़ बैठा था और वहां से बड़ी

आसानी से इस कामरेड की मनोव्यथा का पता लगा सकता था। नायक बोलता ही गया; "जनतंत्रीय संवाददाता होने के नाते तुम्हारा केवल एक ही कर्तव्य है वह यह कि क्रान्ति की प्रशंसा की जाए और संग्राम भावना को प्रोत्साहित किया जाए। रही दुखकर पहलू की बात तो उसका तुम उल्लेख ही न करो क्योंकि नये, क्रान्तिकारी चीन में इस नाम की कोई चीज़ नहीं है। क्या यह बात तुमको स्पष्ट हो गई ?"

क्षण भर के लिये मैं, जैसे विवेक शून्य हो गया था, उठा और बोल पड़ा कि "हम सभी नये चीन के अंग हैं। चूंकि हमारी निरन्तर आलोचना होती रहती है, क्या इसी को नये चीन के जीवन का दुःखकर पहलू नहीं कहा जा सकता ?" नायक की आंखें मानों अग्नि बरसा रही थीं : "जिस प्रकार तुमने अपने प्रश्न को रखा है, ग़लत है। यदि नये चीन में दुःखकर पहलू जैसी कोई चीज़ है भी तो उसको दुःखकर नहीं कहा जा सकता; उस को अपनी दुर्बलता या त्रुटि ही मानना चाहिये। "दुःखद" शब्द तुच्छ सम्पत्ति वाले लोगों ही के कोश में पाया जाता है। क्रांति के इस कैम्प में कोई भी दुःखकर बात नहीं हो सकती। क्या इससे तुम सहमत नहीं हो ?"

दूसरी ओर ऐसे व्यक्ति भी थे जिनके नये चीन के "मनोरंजक पहलुओं" ...न की प्रशंसा की गई थी; शर्त केवल यह थी कि वे पार्टी द्वारा बताये गये मार्ग को सदा ध्यान में रखें अर्थात् "सही" विचारधारा से विचलित न हों। जिस रिपोर्ट ने सबसे अधिक प्रशंसा पाई उसका शीर्षक था "मध्य चीन की जनता द्वारा युद्ध मोर्चे का उत्साहपूर्ण समर्थन।" अपने कथन के समर्थन में स्थान स्थान पर उक्त लेखक ने सुचाव के किसानों और मज़दूरों का मत उद्धृत किया। लेखक ने बताया कि एक किसान ने कहा था, "एक बार हम तनिक प्रतिक्रियावादियों से निबट लें, फिर तो बस सुख के ही दिन आजायेंगे। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये यदि हमको बरसों तक भीख मांग कर भी रहना पड़े तो भी कोई बात नहीं।" इस लेखक ने ऐसे नारे का भी उल्लेख किया जिसको अपने कथनानुसार उसने किसानों के एक झुण्ड को बड़े आनन्द के साथ गाते सुना था, "हम अपने दिल, दिमाग़ और जी जान को युद्ध के मोरचे के समर्थन में लगा देंगे।"

इस लेखक ने अपनी रिपोर्ट इतनी होशियारी से तैयार की थी कि यदि इस दक्षिण यात्रा में मैं उसके साथ न होता और अपनी आंखों से वह सब कुछ न देख चुका होता, जो उसने देखा था, तो अवश्य ही उसकी एक एक बात को सही मान लेता।

आरम्भ में मेरी योजना थी कि एक ऐसी रिपोर्ट तैयार करूं जिससे उन किसान शरणार्थियों की दुर्दशा का दिग्दर्शन कराया जा सके जिनको मैंने सदेह दुःख के रूप में रेल की पटरी के साथ साथ स्वल्प सामान को कंधे पर लादे अज्ञात दिशा में घसिटते जाते देखा था। मेरा यह भी इरादा था कि अपनी रिपोर्ट में मैं उस बुढ़िया की उदासीनता और अज्ञान पर भी कुछ प्रकाश डालूं जिससे हम पूछताछ के लिये पहली बार मिलने गये थे। किन्तु "मध्य चीन की जनता द्वारा युद्ध मोर्चे का उत्साहपूर्ण समर्थन" शीर्षक रिपोर्ट और उसकी बड़ी प्रशंसा सुनने के पश्चात् मैंने अपना विचार बदल दिया। अब मुझको अन्य जनतंत्रीय सम्वाददाताओं की भांति यह पता लग गया था कि मुझको "सही" विचारधारा के व्यक्तिकरण की भूमिका के तौर पर निम्न प्रकार के नामों से अपनी रिपोर्ट का श्रीगणेश करना चाहिये; "एक कारखाने के मज़दूर ने मुझसे कहा था ..." या "एक खेतिहर मज़दूर ने मुझको बताया था...।" कुछ समय के पश्चात् इस लेखन पद्धति से मेरा मन ऊबने लगा, किन्तु अब हमारा कर्तव्य यह नहीं रह गया था कि जो कुछ हम करें उसके प्रति रुचि भी दिखायें। प्रत्येक आज्ञा को शिरोधार्य मानकर सही आचरण रखना ही अब हमारा कर्तव्य था।

तिस पर ग़लतियां हो ही जाती थीं, और कई बार तो बड़ी मूर्खतापूर्ण ग़लतियां। जिस लड़की को धनी परिवार की कुमारीजी कहा जाता था, उसने अपनी दूसरी रिपोर्ट में केवल कुछ व्यक्तियों और स्थानों के नाम बदल कर पहली रिपोर्ट की नकल टीप दी, भेद खुल गया और बेचारी को अपनी मीटिंग में भयंकर आलोचना का शिकार बनना पड़ा। उक्त मीटिंग के समाप्त होने से कुछ देर पहिले हमारे प्रमुख स्टाफ़ अफ़सर ने (यह वही सज्जन थे जो रेल गाड़ी का आधा डिब्बा अकेले अपने ही आधिपत्य में किये हमारे साथ चले आ रहे थे) सुझाव पेश किया कि हम लोग एक केह-लि-कुंग विरोधी आंदोलन का सूत्रपात करें। "तुम जानते ही हो," उन्होंने कहना शुरु किया, "केह लि-कुंग

एक प्रख्यात् सोवियट संवाददाता था; वह समाचारों के स्थान पर कपोल कल्पनाओं को संचित करने के लिये प्रसिद्ध था। तुम में से अधिकांश लोग अभी तक इस काम में नौसिखिये हो। इस लिये मेरा सुझाव है कि तुम लोग पर्याप्त लेखन चातुर्य प्राप्त करने से पहले क्रांतिकारी सिद्धान्तों से परिचय और जीवन का कुछ और अनुभव प्राप्त करलो। तुम अपनी रिपोर्ट को स्वयं अपने आप देखी सुनी बातों ही तक सीमित रखो। हम को अभी तक तुम लोगों में से किसी को केह लि-कुंग बनाने की आवश्यकता नहीं है। समझे ?"

मैं अब भी यह न समझ पा रहा था कि वह घड़ी कब आयेगी जब हम अधिक जीवनानुभव प्राप्त कर चुके समझे जायेंगे। प्रत्येक दिन तीन मीटिंग हुआ करती थीं, जिनमें प्रातःकाल, मध्याह्न और सायंकाल प्रायः समाप्त हो जाया करते थे। हमारे नायकों को तो समय की विशेष चिंता थी नहीं। इस लिये हमको कभी कभी यह निश्चय नहीं हो पाता था कि कौन सी मीटिंग कब शुरू हुई या कब समाप्त हुई। अतः जीवनानुभव का अर्थ हमारे लिये केवल यही था कि "स्वाध्याय" करो, विवाद करो, फिर "स्वाध्याय" करो और फिर विवाद करो। "हमारे प्रमुख स्टाफ़ अफसर की संभवतः "जीवनानुभव" के विषय में कुछ भिन्न ही धारणा थी। मुझको इसमें संदेह हो रहा था कि अब तक हम जितना "जीवनानुभव" प्राप्त कर चुके थे, अपनी दिन चर्या में उपयुक्त हेर फेर किए बिना उससे कभी कुछ अधिक उपलब्ध कर सकेंगे। इसीलिये मैंने खड़े होकर कहा कि "हममें से अधिकांश सम्वाददाता जनता से पूछ ताछ करने के लिये अभी तक एक-दो से अधिक बार बाहर नहीं गये हैं। अब हमको अधिक जीवानानुभव प्राप्त करने के लिये कब बाहर भेजा जायगा ?"

"उस समय जबकि संघ को यह विश्वास हो जायगा कि तुम में हमसे अधिक क्षमता है।"

"वह घड़ी कब आयेगी," मैंने आग्रहपूर्वक ढंग से फिर पूछा।

"जब तुम क्रांति की महानता और उसमें अपने कार्य के महत्व के विषय में पूर्णतः आश्वस्त हो जाओगे।"

"इसमे मेरा काम है—?"

"क्राति का समर्थन करना और सघर्ष भावना को प्रोत्साहित करना।" मै तुरन्त ही बैठ रहा। ऐसी स्थिति मे भीरुता ही सर्व श्रेष्ठ नीति हो सकती थी। हम किसी बात की आलोचना करे, हमारे लिये इससे अधिक माप कोई नहीं हो सकता था; हम सबका यही यत्न रहता था कि हम किसी प्रकार आलोचना से वैसे ही दूर रह सके जैसे लोग महामारी से दूर रहा करते है।

× × ×

प्रकटत. हमारे जीवनानुभव के अभाव और चेगचो मे बढती हुई बेचैनी के कारण अधिकारियो को बडी चिन्ता हो रही थी क्योकि केहली-कुंग विरोधी मीटिग के तुरत पश्चात् हमको दो ऐसे कार्यक्रमो को पूरा करने का आदेश हुआ जिनसे हमारा जीवनानुभव बढ सके। उनमे से एक तो यह था कि हम को चुगयुयेन डेली नामक समाचार पत्र के कार्यालय मे ले जाया गया। उस समय यह पत्र मध्य चीन क्षेत्र का अस्थाई मुखपत्र समझा जाता था। और दूसरा काम जो हमको सौपा गया वह "श्रमिक वीरो" के विषय मे रिपोर्ट तैयार करना था।

हमे उक्त पत्र के कार्यालय और प्रेस मे प्रात काल ले जाया गया। वहां पहुच कर सबसे पहले जिस बात पर हमारा ध्यान गया वह यह थी कि वहां कई स्त्रियां अपनी चोलियां खोलकर सार्वजनिक रूप से अपने बच्चो को दूध पिला रही थी। समाचार पत्र चलाने का यह निश्चय ही अनोखा ढंग था। मुझको कोई प्रश्न करने का साहस न हुआ। किन्तु मैने देखा कि इसमे जो महिला आंदोलक थी वे भी यह दृश्य देखकर स्तब्ध हुई दिखाई देती थी। जिस समय हम लोग कारीडर मे चले जा रहे थे, एक कमरे से कुछ लोग निकले और दूसरे कमरे मे चले गये। उनके कमीजो के बटन खुले हुए थे, मूछे लम्बी लम्बी और बाल लम्बे लम्बे थे। जब वे हमारे पास से निकले तो हमें तो भयंकर दुर्गन्ध आई, जो सभवत स्नान न करने के कारण उनके शरीरों और सडे जूतों से उठ रही थी। मैंने पहिले तो यही सोचा कि शायद यह सफाई करने वालों की कोई टोली है; किन्तु बाद मे जब उनसे हमारा परिचय कराया गया तो हमको पता

लगा कि ये ही लोग तो हैं जो समाचार पत्र का संचालन एवं सम्पादन करते हैं। ये सब लोग चीन के "लम्बे प्रस्थान" में भाग ले चुके थे; अब जब उनको "चुंगयुयेन डेली" पत्र का कार्यभार सौंपा गया तब भी वे अपनी पुरानी छापामारी आदतों और रीतियों को न छोड़ सके थे। इस पत्र के कार्यालय में पहुंचते ही नवागंतुकों को यह स्पष्ट हो जाता था कि सफ़ाई और शिष्टता इसके संचालकों की दृष्टि में सम्भवत: प्रतिक्रियावादी समाज ही की विशेषतायें थीं। जो स्त्रियां अपनी चोलियां खोले सार्वजनिक रूप से अपने क्रांतिकारी उत्पादन को दूध पिला रहीं थी, वे इन लोगों ही की प्रेमिकायें थीं।

उक्त समाचार पत्र का प्रत्येक संस्करण एक ताव का होता था जिसके चार पृष्ठ बन जाते थे। कार्यालय विभिन्न विभागों से विभूषित था—उदाहरणार्थ, नगर उपनगर, ग्राम उपग्राम, साधारण यातायात साधन, सामाजिक सेवा, पृष्ठ भूमि की सामग्री, संस्कृति आदि शीर्षकों से अलग अलग व्यवस्था की गई थी। प्रत्येक विभाग में दस से अधिक व्यक्ति काम करते थे। इनके साथ साथ प्रूफ़ पढ़ने वाले, और बेतार के तारों का काम करने वाले अलग थे। आरम्भ में मुझको लगा कि इतना बड़ा 'स्टाफ' आवश्यक है; किन्तु बाद में मुझको पता लग गया कि समाचार पत्र संचालन तो उन सब लोगों की गतिविधि का केवल एक ही अंग था। जो लोग उक्त पत्र को चलाते थे, उनको नया चीन समाचार समिति के मध्य चीनस्थ मुख्य कार्यालय और मध्यचीन पुस्तक प्रकाशन भवन का भी काम करना पड़ता था: इसके अतिरिक्त इन्हीं लोगों को मध्य-चीन क्षेत्र में नगर और गांवो की जनता का संगठन भी करना पड़ता था। समाचार पत्र तो स्थानीय अधिकारियों के लिये आदेशादि जारी करने का माध्यम मात्र था। यह देखकर मैं तनिक खिन्नमन होकर याद करने लगा कि किस प्रकार मुझको पीकिंग विश्वविद्यालय में दो काम एक साथ करने के कारण बरख्वास्त कर दिया गया था।

हम अपने क्वार्टर वापिस आये तो आज्ञा मिली कि हम समाचार पत्र कार्यालय जाने के अपने अनुभवों को लेखनी वद्ध करें और दिखायें कि उससे किस प्रकार हमारे जीवनानुभव में वृद्धि हुई है। समाचार पत्र के कार्यालय में हमने एक एक व्यक्ति को दो दो काम करते देखा था, और जिस शारीरिक दुर्गंध का जो अनुभव किया था, उसका मैंने जानबूझकर कोई जिक्र नहीं किया, क्योंकि मुझको मालूम था कि यदि मैं अपनी रिपोर्ट में कुछ ऐसी बात लिखनें

की भूल कर बैठीं तो अवश्य ही उसी कारण मेरी तीव्र आलोचना की जायगी।

अगले दिन हम लोग नानकिंग के स्वातंत्र्य उत्सव में भाग लेने के लिये गये। इस उत्सव में "श्रमिक वीर" भी भाग लेने आये थे; हमको आज्ञा हुई थी कि हम उन वीरों से भेंट करें। उत्सव समाप्त होने के पश्चात हम बड़ी उत्कण्ठा के साथ उन 'वीरों' पर मानो टूट पड़े—हम सब कितने व्यग्र हो रहे थे अपने जीवनानुभव में अभिवृद्धि करने के लिये ! हमने अनेक प्रकार के प्रश्नों की बौछार शुरु करदी; जिसका परिणाम यह हुआ कि बेचारे कुछ गड़बड़ाये और सहमे हुए दिखाई देने लगे। उनमें से एक तो कह भी उठा कि "हमको अभी तक संघ ने यह बताया ही नहीं कि हम लोग आपको क्या उत्तर दें। इसलिये आप जनतंत्रीय संवाददाताओं को हम क्या बतायें यह हम नहीं जानते। निस्संदेह, स्वाधीनता सेना के आप कामरेड जो कुछ हमको सिखाना चाहें हम खुशी से सीखने को तैयार हैं।"

एक महिला संवाददाता आग्रह करने लगी, "स्वाधीनता सेना और श्रमिक वर्ग अलग अलग तो हैं नहीं—दोनों एक ही बड़े सुखी परिवार के सदस्य हैं—इसलिये आप लोग हमारे प्रश्नों का उत्तर क्यों नहीं देते ?"

यह सुनकर इन श्रमिक वीरों के नायक ने पूछा, "तो क्या आप लोगों के पास आवश्यक अधिकार पत्र हैं ?"

"कैसा अधिकार पत्र ?" उक्त महिला ने उसके प्रश्न को सुनकर प्रश्न किया। "क्या आप को नहीं मालूम कि" श्रमिक वीरों को विदेशी या जनतंत्रीय संबाददाताओं से बात करने की आज्ञा नहीं ? आपके पास अधिकारियों द्वारा दिया गया इस आशय का कोई पत्र हो तो बात दूसरी है ?"

निश्चय ही हमारी जानकारी में ऐसी कोई बात न थी; इसलिये हम उन वीरों से उत्तर पाने का पुण्य अर्जित न कर सके। हमारी छोटी टुकड़ी का नायक हमको उस आशय का सरकारी पत्र देना अथवा यह बताना भूल गया था कि हमको ऐसी किसी पत्र की आवश्यकता है। मुझको यह देख कर तनिक

संतोष हुआ कि हमारा नायक कुछ परेशानी में पड़ गया है। उसकी परेशानी का विशेष कारण यह था कि चीफ़ अफ़सर को पता लग गया था कि किस प्रकार हम लोग अपने जीवनाभुव में अभिवृद्धि करने के स्वर्ण सुयोग को गंवा बैठे थे।

× × ×

मध्य चीन एक ऐसा क्षेत्र है जो पश्चिम में जिंग लिंग पर्वत से पूर्व में जिन पू रेलवे लाइन पर स्थित यांगफू नामक नगर तक फैला हुआ है। इसके दक्षिण में यांग्ट्सी नदी है और उत्तर में पीली नदी। इसमें लगभग २२० नगर हैं जिनकी जनसंख्या लगभग साढ़े पांच करोड़ है। इसी क्षेत्र में छापामारों के भयंकर युद्ध के वातावरण में लि जियेन-नेन और एक नेत्र वाला अजगर कहा जाने वाला ल्यू पेइ-चेन नामक प्रसिद्ध कम्युनिस्ट सेना नायक पले बढ़े थे। संघ के लिये यह एक संकटग्रस्त स्थान बन गया था, जिसका कारण यह था कि "स्वातंत्र्य" के पश्चात् भी छापामार अपनी अनियमित कार्यवाहियों में अभी तक ऐसे संलग्न थे, मानो उनको यह पता ही न हो कि राज बदल गया है। यहां का जनसाधारण इतना उद्धत्त और हठी था कि उनकी भूमि पर जो भी कदम रखता उसी को वह कर आदि देने से इनकार करता था—उसको स्वातंत्र्य अस्वातंत्र्य की तनिक भी चिंता न थी।

मध्य चीन के पांच प्रान्तों में हम तीन रेलवे लाइनों पर सफर करते हुए इधर से उधर घूम चुके थे। पीपिंग से दक्षिण की ओर हम ज्यों ज्यों बढ़ते गये त्यों त्यों मौसम अधिकाधिक गरम और बरसाऊ होता नज़र आया। समाचार पत्रों में मध्य चीन की जनता की आये दिन प्रशंसा रहा करती थी क्योंकि उनको बड़ी शीघ्रता से जागृति प्राप्त हुई समझी जाती थी। लेकिन अब विभिन्न नगरों का भ्रमण करने के पश्चात् हमने जो कुछ देखा जाना, वह इससे सर्वथा भिन्न था। अब हम अपनी आंखों से देख चुके थे कि साधारण जनता हमारी स्वातंत्र्य सेना की यूनिफ़ार्म देखकर स्पष्टतः आश्चर्य में पड़ जाती थी। मैं जन्म से उत्तर वासी हूं। उत्तर के नगरों और गांवों में ग़रीब लोगों का जीवन कैसा है इसका मैं आवश्यकता से अधिक अनुभव कर चुका हूं। किन्तु मैं भी मध्य पूर्व चीन के किसानों की गरीबी को देखकर स्तब्ध रह गया।

जब हम लोग शान तुंग प्रान्त में पहुंचे तो हमको ढूंढने पर भी कोई जवान आदमी देखने को न मिला था; खाने पीने की चीजों की यहां जितनी कमी देखने में आई उसका उदाहरण हमारे देखे हुए अन्य किसी स्थान में शायद नहीं मिल सकता था। ईंधन बटोरने, पानी ढोने, खेती करने तथा अन्य ऐसे ही भारी श्रम वाले कामों को करने का दायित्य स्त्रियों और बूढ़े पुरुषों ही का है, ऐसा प्रतीत होता था। उनमें से कुछ तो इतने निर्धन पाये गये कि वे पेड़ों के पत्ते खाकर और मांड पीकर ही अपना काल यापन करते थे। उनके लिये भर पेट भोजन प्राप्त करना ऐश्वर्य की बात मालूम होती थी। छोटे नगरों में भैंसों का प्रायः ऐसा ही अभाव था जैसा टैक्सियों का। गांवों में कुछ मरियल मुर्गियों के अतिरिक्त कोई भी जानवर देखने को न मिलता था। बच्चे इतने दुबले मांदे दिखाई दिये कि मुझको तो लगता था जैसे उनकी सूरतें पुकार पुकार कर कह रही हैं कि इन देहों ने जो कष्ट सहे हैं, वे बाढ़ या सूखे से अधिक भयंकर थे।

हम लुंगाई रेलवे द्वारा सुचाव से होकर निकले। सुचाव के दूसरी ओर रेलवे लाइन के साथ शरणार्थी किसानों का और तांता लगा नज़र आया। ये लोग सुपेई की ओर जा रहे थे; उनमें से कुछ अपने खेती के औजारों और अपनी फुटकर चीजों और दरी चारपाई आदि को अपनी अपनी पीठ पर लादे हुए थे। युद्ध और गरीबी के कारण वे अपनी जमीन को छोड़कर भागे जा रहे थे। खाने पीने की सामग्री के अभाव के कारण वे अपने औजारों को एक एक करके बेचने को वाध्य हो रहे थे; इस प्रकार उनको जो कुछ मिलता था, उससे वे खल आदि खरीद कर अपना पेट भरने की कोशिश करते थे। अपने हाड़ मांस के पंजर को चालू रखन के लिये अपने औजारों को बेचने में उनको जो शारी-रिक और मानसिक कष्ट हुआ होगा उसकी हम कल्पना ही कर सकते थे। उनके पास ले देकर यही तो स्थायी सम्पत्ति रह गई थी।

इस क्षेत्र में जनसाधारण को असंख्य समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। उन्हें सिर ढकने के लिये स्थानाभाव और भुखमरी जैसे कष्टों को तो सहन करना पड़ ही रहा था, उनके अतिरिक्त उनको अब सैनिक मोरचे को बनाये रखने के लिये असह्य कर का भार सहन करना पड़ रहा था। इस सब के ऊपर आये दिन उनको स्वातंत्र्य सेनाओं के स्वागत और विदाई के

लिये भारी बलिदान करना पड़ता था। अभी उसको जनरल ल्यू पेई-चेन की उस दस लाख सेना के विदाई आदि संस्कारों से जो नये मोरचे के लिये दक्षिण की ओर गई थी छुटकारा भी न मिल पाया था कि उसका स्थान ग्रहण करने के लिये जनरल लिन पियाओ की दस लाख सेना वहां आ धमकी और अब उसके स्वागत सत्कार का श्रीगणेश हो गया। विदाई और स्वागत के इन संस्कारों में उसको अधिकाधिक खाद्य सामग्री, रुपये पैसे, और अपने काम धंधे से हाथ धोये रहना पड़ता था। इस पर मजेदार बात यह थी कि संघ द्वारा इस प्रकार उसको अपने जनता होने के कर्तव्य को पूरा करने का यह विशेष अवसर दिये जाने के प्रतिकार स्वरूप उससे धन्यवाद की भी आशा की जाती थी। शासकों की ओर से अब बड़े गर्व के साथ कहा जाता था कि इन बीसियों लाख सैनिकों की यह हलचल आठ हजार मील के प्रसिद्ध "लम्बे मार्च"※ से भी अधिक महत्वपूर्ण है; तथा संसार के इतिहास में इतने बड़े पैमाने पर सैनिक हलचल कभी नहीं देखी गई। उत्तर-पूर्व से उठकर उत्तरी चीन और मध्य चीन होती हुई थंग्ट्सी नदी के किनारे तथा उसके पार तक इस चालीस लाख सेना ने जो विजय प्राप्त करके दिखाई है, वह अद्वितीया है।" पर इस गौरव एवं श्रेय का मध्य चीन की गरीब जनता को क्या लाभ था? किसी प्रकार राम राम करके वह अभी पिछले दिनों की भयंकर बाढ़ से बची थी; अब उसके सिर पर यह नई मानवी बाढ़ का पहाड़ आ टूटा!

चीन की जनता अपने वीरोचित धैर्य के लिये प्रसिद्ध है, किन्तु धैर्य की तो आखिर कोई सीमा होती है। अब उस सीमा का उल्लंघन हो चुका था! मरता क्या न करता। पर उसके लिये जनता को भारी मूल्य चुकाना पड़ा; भुखमरी और सेनाओं के इस निर्मम आवागमन का अंतिम विरोध करने में बहुत से नर नारियों को अपने प्राणों से खेलना पड़ा। चेंगचो और लोयांग के स्वातंत्र्य प्राप्त करने के पहिले कुछ महीनों में दंगे और डकैतियां आये दिन की बात बन गई थी। इस प्रकार की कुछ घटनाओं को हम अपनी आंखों से

※ सन् १९२७ में राष्ट्रवादियों से विग्रह होने के पश्चात् कम्युनिस्टों ने उत्तर की ओर प्रस्थान किया; और ऐनान प्रान्त में जाकर आश्रय लिया यहां उन्होंने अपनी पहली सरकार कायम की। इस सामूहिक प्रस्थान को "लम्बा मार्च" कहते हैं।

स्वयं देख चुके थे, इसलिये हमने जो कुछ सुना उस पर अविश्वास करने का हमारे पास कोई कारण न था, यद्यपि जिस कामरेड ने लोयांग की ७ डकैतियों की रिपोर्ट तैयार की थी उसकी "गलत विषय" चुनने के आरोप में कड़ी आलोचना की गई। अपनी रिपोर्ट में उसने परिणाम के रूप में यह लिख दिया था कि इन डकैतियों को उकसाने वाले राष्ट्रवादी थे। पर इससे भी उसको कोई मदद न मिली और उसकी रिपोर्ट स्वीकार न कराई जा सकी।

छोटे गांवों में शासकों को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा वे और भी अधिक गंभीर थी। वहां जनता ने कर चुकाने और नये "जनतंत्रीय" नोटों और सिक्कों को लेने से बिल्कुल इन्कार कर दिया। उच्चाधिकारियों को जिस बात पर विशेष परेशानी और सिर दर्दी हो रही थी, वह यह थी कि इन छोटे गांवों में जिन पार्टी सदस्यों को सरकारी अफसर बनाकर भेजा जाता था वे बहुधा बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से कहीं गायब हो जाते थे।

× × ×

इस प्रकार पार्टी सदस्यों के गायब हो जाने की कहानियां तो हम सुनते ही आये थे; इसलिये एक दिन चेंगचों में हमारे नायक ने मुझको आज्ञा दी कि मैं इस विषय में नागरिक यातायात विभाग के मंत्री से भेंट करूं। मैंने अपने नायक से पूछा कि "क्या वास्तव में आपको यकीन है कि मेरे लिये पूछताछ का यह उपयुक्त विषय होगा ?" उसने बड़ी तीखी नजरों से मेरी तरफ देखा और कहा कि "तुम्हारा सबसे पहिला कर्तव्य संघ के प्रति है। या तुमको इससे मतभेद है ?" मैंने कोई मतभेद प्रकट न किया ? किन्तु मुझको याद था कि श्रमिक वीरों से भेंट करने का हमारा प्रयास मिट्टी में मिल गया था। इस लिये मैंने उनसे कहा कि "यदि आप मेरी इस बात को अनुशासन का उल्लंघन न मानें तो मैं आपको याद दिला देना चाहता हूं कि इस बार आपको मुझे भेंट करने के लिये आवश्यक अधिकार पत्र देना होगा"। वह फिर मेरी आलोचना करने ही को थे। किन्तु ऐसा लगा जैसे कि वह समझ गये हों कि इस समय ऐसा करना उचित न होगा। इसलिये उन्होंने मुझको एक पत्र दे दिया !

मैं उक्त मंत्री के कार्यालय में पहुंचा तो मुझको यह देखकर आश्चर्य

हुआ कि अधिकृत जनतंत्रीय संवाददाता होने की हैसियत से मेरा बड़ा आदर सत्कार किया जा रहा है। मुझको एक पहरेदार ने मंत्री महोदय के कार्यालय में पहुंचाया। मेरे अपने पास आने के उद्देश्य की जानकारी हो जाने के पश्चात् वह मेरे प्रति मित्रवत् आचरण करने लगे। "हां यह सच है," उन्होंने बताया कि "आस पास के नगरों और गांवों से हमारे बहुत से पार्टी सदस्य गायब होते जा रहे हैं। और यह बात हमारे लिये बिवाई वाले पाँव की भांति कष्टकर सिद्ध हो रही है। कल ही की बात है कि मुझको खबर मिली कि गत सप्ताह सिनयांग में हमारे ग्यारह स्टाफ़ अफ़सरों की हत्या हो गई है। अब हम यह पता लगाने में असमर्थ है कि इन हत्याएं कराने में किसका हाथ है।"

मैंने यह बात अपनी जनतंत्रीय नोटबुक में नोट ली और उनसे पूछा "आपकी राय में इसका कारण क्या है ?"

"बात वास्तव में यह है कि संघ के लिये यह समस्त क्षेत्र ही आपद केन्द्र है। इसका पहिला कारण तो आप यह समझिये कि इस क्षेत्र का जनसाधारण बड़ा हठी है और अपने स्वातंत्र्य का उतने उत्साह के साथ स्वागत नहीं कर सका जितने उत्साह से कि अन्य क्षेत्रों के जनसाधारण ने किया है। यहां की प्रायः सभी स्त्रियाँ और बच्चे तक भी बंदूकें चलाना जानते हैं और आप को पता लगेगा कि बीस साल या उससे अधिक की जिस की आयु है वह व्यक्ति आवश्य ही किसी न किसी प्रकार का सैनिक अनुभव प्राप्त कर चुका है। इसके अलावा यहां "गुप्त भ्रातृ संघ" का बड़ा जोर है। यह स्पष्ट ही है कि उन को क्रांति से विशेष ममता नहीं है फिर पास पड़ोस में डाकुओं के अनेक झुण्ड है। ये लोग छोटी छोटी सैनिक टुकड़ियों की भांति अपना संगठन किए हुए हैं और हमारे विरुद्ध संग्राम करते समय जिस पहाड़ी पर भी अधिकार कर लेते हैं उसी को अपनी राजधानी समझ बैठते हैं। हम को अब पता चल रहा है कि उन को उन की गढ़ियों से बाहार निकाल फैंकना हमारे बस की बात नहीं है। इस के अतिरिक्त असंख्य नौसिखे उन डाकुओं के झुण्ड में हैं जो आस पास के प्रान्तों में लूट मार कर के लूट पाट का सामान अपने साथ लेकर चुपके से फिर अपने खेतों में जा कर काम करने लगते हैं। कहने को तो ये डाकू नौसिखे हैं किन्तु अपनी कार्यवाही बड़ी सफाई से करते

हैं । उन का निराकरण करन के लिए न तो हमारे पास समय है और न सुविधाएं ही । वास्तव में एक दृष्टिकोण से, हम उनको दोष भी क्या दे सकते हैं । इस क्षेत्र की जनता वास्तव में इतनी गरीब है कि हम उन पर आये दिन जो कर लगाते रहते हैं उन को वह अदा नहीं कर सकती । इसलिए मेरा अनुमान है कि उस को कहीं न कहीं से तो आजीविका प्राप्त करनी ही पड़ती है ।"

किसी मन्त्री के मुख से ऐसे शब्द सुन कर मैं अवश्य ही अपनी नोट बुक से सिर उठाकर आश्चर्य भरी दृष्टि से देखने लगा हूंगा । उन्होंने भी यह अनुभव कर लिया होगा कि इस प्रकार का निष्पक्ष वक्तव्य देकर और अपने व्यक्तिगत मत को प्रकट कर के दो भारी भूलें कर बैठे हैं । उन्होंने गला साफ करने का प्रयत्न किया, कागजों को इधर उधर अदला बदला और कहा " हां यह हो सकता है कि संघ के इन लघु बैरियों की वास्तविक शक्ति उतनी न हो जितनी कि भूलवश मैं बता गया हूं । आप अपनी रिपोर्ट में यह नहीं कहिएगा कि मैं स्थिति को गम्भीर मानता हूँ । आप को यह मानना ही पड़ेगा कि यह तो एक निरी अस्थायी समस्या है जिस को हम प्रतिक्रियावादियों पर विजय प्राप्त करने पर और स्थानीय शासन सम्बन्धी समस्याओं पर पूरा पूरा ध्यान दे कर अवश्य ही हल कर लेंगे । हम को मालूम है कि ये उपद्रव कोमिन्तांग की ओर से संगठित किए जा रहे हैं ताकि यांग्ट्सी नदी को पार करके हम दक्षिण की ओर न बढ़ सकें । आप यह भी जानते ही हैं कि ये डकेत अभी तक हमारे चंगुल से इसलिए बचे हुए हैं कि उन का पीछा करने के लिए हमारे पास पर्याप्त मात्रा में स्थल सेना नहीं है । जैसे ही हम को कुछ ऐसी सेना प्राप्त हो जाएगी और जनता में जागृति बढ़ेगी, ये समस्यायें स्वतः ही विलुप्त हो जाएंगी । आप मेरे इस स्थिति विश्लेषण से सहमत हैं या इस से मतभेद रखते हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "आप का विश्लेषण अक्षरशः सत्य है ।"

"और आप यह भी न कहेंगे कि यहां की स्थिति गम्भीर है, ठीक है न ?"

"अपनी रिपोर्ट को उपयुक्त बनाने के लिए मुझको यह तो लिखना ही होगा कि मध्य चीन की जनता बड़ी लगन और उत्साह के साथ हमारे सैन्य

मोर्चे का समर्थन कर रही है। इसी बात को लेकर हमारे एक कामरेड ने बड़ी सुन्दर रिपोर्ट तैयार की थी। आप के शब्दों से उस की रिपोर्ट की स्पष्ट पुष्टि हो जाती है।

"ठीक," यह कह कर उन्होंने मुझ को क्षण भर के लिए घूरते हुए देखा और मुस्करा पड़े।" सम्भवतः सिनियांग के ११ अधिकारियों के हनन का कारण जनता का कर भार न था। कर तो वास्तव में जनता के कल्याण के लिए ही लगाए जाते हैं और जनता उनको अदा करने को अपना सम्मानपूर्ण कर्तव्य समझती है। सम्भवतः उन अधिकारियों से कर सँचय में कहीं एक दो साधारण भूल हो गई थी, बस। वास्तव में यह कहना भी गलत है कि उन्होंने कोई भूल की! ठीक है न यह बात?"

मैंने कहा, "बिलकुल ठीक"। मैंने उनको धन्यवाद दिया और उन से बिदा लेकर उन के कमरे से बाहर निकल आया। उन्होंने पीछे से मुझको सम्बोधित करते हुए कहा "सौभाग्यशाली हो आप।"

बाहर जाते समय मैं उस संतरी से बात करने के लिए रूक गया जो मुझ को मन्त्री महोदय के कमरे में ले गया था। मैंने उससे कुछ प्रश्न पूछे: "तुमको अपना काम कैसा लगता है, क्रान्ति में योग की दृष्टि से तुम्हारा क्या स्थान है?" आदि आदि। मैंने उस को एक सिगरेट देते हुए पूछा, "सिनियांग में जो ११ स्टाफ अफसर गायब हो गए थे उन के विषय में तुम को कुछ मालूम है क्या?"

"अवश्य" उसने उत्तर दिया, "अन्तर केवल यह है कि यह बात सिनियांग की नहीं है और न ही वह गायब हुए"

"मैं आप का मतलब नहीं समझा," मैंने उस की सिगरेट जलाते हुए कहा। "बात यह सिनियांग से पांच मील की दूरी पर स्थित एक गांव की है। वे गायब नहीं हुए थे मार दिए गए थे। वे अधिकारी एक छोटे नगर का शासन-भार संभालने जा रहे थे। रास्ते में रात हो गई और वे सिनियांग के पास के उक्त गांव में ठहर गए। वहां वे रात को सो रहने के लिए जगह

चाहते थे। एक किसान के परिचित व्यक्ति ने उस के परिवार से इनका परिचय करा दिया। इस परिवार के विषय में यह बात प्रसिद्ध थी कि स्वातंत्र्य सेना का कोई भी कामरेड जब उस के यहां आता था तो उसके यहां बड़ा आदर सत्कार पाता था। कई बार ऐसा भी हुआ था कि आधी से एक दर्जन तक सैनिक एक साथ उसके यहां रात भर के लिए अतिथि बन कर रहे थे। कम से कम यह तो सभी का मत था कि इस परिवार के यहां ऐसे लोगों की बड़ी आवभगत हुआ करती है। जिस व्यक्ति ने इन अधिकारियों का उक्त परिवार से परिचय कराया था उसने उसकी राजनीतिक विश्वसनीयता का भी आश्वासन दिया था इसलिए उनमें से किसी को भी यह आशंका न थी कि कोई दुर्घटना हो सकती है। यही उनकी भूल थी, समझे? वे निश्चित होकर सोगए और अपने एक छोटे से सेवक को पहरे के लिए बैठा दिया। कुछ देर के बाद वह छोकड़ा सो गया। तब प्रातःकाल तक क्या हुआ? उस परिवार ने एक पाउडर का प्रयोग किया। ११ के ११ कामरेड और वह छोकड़ा अनन्तकाल के लिए सोगए।

"ता मा ती" मैंने कहा, "निश्चय ही यह किसी राष्ट्रवादी जासूस का काम होगा।"

"किसको भुलावे में डाल रहे हैं आप?" सन्तरी ने कहा, "यह उन अधिकारियों की अपनी ही करनी थी जो उनको भरनी पड़ी। एक अजनबी घर में ऐसे किसी गांव में रात में बिना कुछ लोगों को पहरे पर छोड़े सो रहना बुद्धिमानी की बात नहीं है। वे इतने मूर्ख थे तभी तो यह सब कुछ भुगतना पड़ा।"

"तुम्हारा ऐसा कहना सही रवैये का परिचायक नहीं है, तुम जानते हो ना?"

"अच्छा जी? यह बात है, मैंने तो समझा था कि आप कोई भले आदमी हैं। अपनी सिगरेट वापस लेने का इरादा है क्या, कामरेड?"

"नहीं, नहीं ठहरिये," मैंने जल्दी से कहा और मन में मैं अपने आप को

मूर्ख समझ रहा था, वैसा ही मूर्ख जैसा कि कोई अपने व्यंग के न समझे जाने पर अपने आपको समझा करता है।" बात यह है कि आये दिन इस वाक्य के कानों में भरते रहने के कारण मुझको भी इसको इस्तेमाल करने की आदत पड़ गई है।"

"हां मैं समझता हूं आपका मतलब क्या है। आजकल जमाना ही ऐसा आगया है कि किसी का भी भरोसा नहीं किया जासकता।"

"तो फिर कैसे मारे गए थे हमारे आदमी बताओ ना ?" मैंने पूछा।

"पेट में चाकू भोंके जाने से।"

"कबकी बात है, कुछ अंदाज है तुमको ?"

"अवश्य एक सप्ताह पहले, या ठीक ठीक कहूं तो आठ दिन पहले।"

"मन्त्री महोदय को इसका पता कब लगा ?"

"कल"

"और तुमको ?"

वह मुस्कराया, "कोई चार दिन पहले और कैसे लगा पता मुझको, यह भी एक कहानी है। उक्त परिवार का एक छोटा सा धंधा था समझे ? स्वातन्त्र्य आया और उसका धंधा चला गया। अब करने को कुछ न था। जो कुछ घर में जोड़-बटोर कर रखा था उस पर ही निर्वाह होने लगा। जिस व्यक्ति ने उन अधिकारियों का परिचय कराया था उसका इस परिवार से द्वेष था। क्यों था यह मैं नहीं जानता। पर उसके द्वेष का कोई भी कारण रहा हो उसने देखा कि बदला लेने का स्वर्णावसर है। वह उसके यहां अतिथि के रूप में सैनिकों और अतिथियों को भेजता ही रहा। आप जानते ही हैं कि कुछ सैनिक कैसे हुआ करते हैं। शीघ्र ही इस परिवार का भंडार समाप्त हो

गया और उसके स्थान पर हमारे प्रति घृणा पैदा हो गई। मेरा अनुमान है कि यह परिवार अपनी भोजन सामग्री समाप्त होने के पश्चात् किसी न किसी को मारने पर तुला था। बस ये ग्यारह अधिकारी ठीक समय पर आ पहुंचे। अपने अपने दृष्टिकोण की बात है। आप चाहें तो इसे गलत समय भी कह सकते हैं।"

मैंने कहा, "तुम जानते हो सिनियांग तक बड़ा लम्बा रास्ता है। तब तुमको मंत्री० महोदय से तीन दिन पहले ही यह बात कैसे मालुम होगई ?"

उसने मेरी ओर देख कर पलक मारी और बोला "मुझको पता रहता ही है।"

मैं इस बातूनी संतरी से अभी अपनी बातचीत जारी रखना चाहता था। वह आदमी क्या था सोना था। कम्युनिस्ट सेना में उसके जैसे थोड़े ही व्यक्ति होंगे जो टालमटोल के विना अपने मत की बात इतने स्पष्ट रूप से कह दें। इसलिए मैंने उसको अपने साथ पेय का निमन्त्रण दे दिया। क्षण भर के लिये मुझे ऐसा लगा जैसे कि उसकी आँखों में मेरे प्रति सन्देह उमड़ आया है। पर तब वह हंस पड़ा। "मैं समझा ! ऐसा लगता है जैसे तुम मुझसे ही भेंट करने आये हो और हम दोनों ही कुछ घंटे का अवकाश चाहते हैं।"

"अच्छी बात है, चलो मंत्री महोदय से पूछ लें ?"

मंत्री महोदय ने उस संतरी को कुछ देर मेरे साथ रहने की छुट्टी की अनुमति दे दी। जैसे ही उसकी जगह काम करने को दूसरा आदमी आगया हम चेंगचो के दूसरी ओर एक पीछे की गली के एक रेस्टोराँ में चले गए।

यह संतरी कभी खेतीहर मजदूर था। बाद में वह चेंगचो आगया था और कुछ दिन इधर उधर भटकने के बाद क्रान्ति में सम्मिलित हो गया था। चेंगचो के स्वातंत्र्य प्राप्त करने के समय तक वह क्रान्ति में आधे वर्ष का योग ही दे पाया था। किन्तु वह अच्छा हृष्ट पुष्ट और प्रायः अशिक्षित

व्यक्ति था। इसलिए उसको जनतंत्रीय संतरी का दायित्वपूर्ण पद दे दिया गया था। उसके अक्षर अज्ञान के पीछे कृषिकोचित नैसर्गिक सूझबूझ का भंडार था जो शहर के अनुभव के कारण और भी तीव्र होगई थी। उसको सुधार और पुनः शिक्षा की आवश्यकता थी, यह स्पष्ट था और मेरे मन में यह जिज्ञासा थी कि अब तक किस प्रकार वह आलोचना की मार से बचा रहा।

सड़क पर चलते हुए मैंने उससे पूछा कि "क्या तुम प्रत्येक ऐसे व्यक्ति से जो तुमसे प्रश्न करे ऐसी ही स्पष्टता के साथ बातें करने लगा करते हो?"

"नहीं, केवल ऐसे ही लोगों से जो मेरी बात को समझ सकते हों।"

"यह तुमने कैसे जान लिया था कि मैं ऐसा आदमी हूं जो तुम्हारी बात समझ लेगा?"

"मैं एक मील से देख कर यह बता सकता था कि तुम्हारा क्रान्ति में ठौर ठिकाना नहीं है।"

"अच्छा तो यह बात है?"

"फिर सुनिए। पहिली बात तो यह है कि अनुभवी कामरेड किसी से प्रश्न पूछते समय उसको अमरीकी सिगरट पेश नहीं करते। दूसरी बात यह कि जिस तरह के प्रश्न तुम पूछ रहे थे, उस तरह के प्रश्न कभी नहीं पूछे जाते—हां साथ में एक दो बड़े लोग हों तो बात दूसरी है। तीसरी बात यह कि तुम तो एक पंचवर्षीय वालक को भी धोखे में नहीं डाल सकते। तुम में वह चीज है ही नहीं।"

मुझ से बिना हंसे न रहा गया। उसके मन में मेरे सांसारिक समझ के अभाव के प्रति तो तिरस्कार दिखाई दिया, उससे अधिक प्रशंसा की बात मेरे लिए कोई न हो सकती थी। "पर तुमको यह पता कैसे लग गया कि मैं तुम्हारे विरुद्ध जासूसी करने नहीं आया हूं।" उसकी विचार श्रृंखला को उस दिशा में झुकाने का यत्न करते हुए तथा इस आशा से कि मेरा और सम्मान-

पूर्ण अपमान हो मैंने उससे आग्रह करते हुए पूछा।

"अभी तक उनके यहां इतने पात्र ही कहां जमे हैं, जो ऐसी बात करने की सोचेंगे ?"

"तो क्या किसी ने भी अभी तक "सही रवैया" न रखने के कारण आलोचना नहीं की ?"

"एक दो बार अवश्य ऐसा हुआ है। किन्तु उसके पश्चात्, मैं बोलने से पहिले यह यकीन कर लिया करता हूं कि मैं किस प्रकार के व्यक्ति से बात कर रहा हूं।"

"तो क्या तुमने मुझको विश्वासपात्र समझने में जल्दी नहीं की ?"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता, यद्यपि एक क्षण भर के लिए मुझे अवश्य ऐसा लगा था कि मैं गलती कर बैठा हूं।"

"तुमको यह कैसे यकीन होगया कि मैं तुमको गलत रवैये और भ्रांतिपूर्ण विचारों के आरोप में न फंसवा दूंगा ?"

"इसलिये कि आपने ऐसी कोशिश की तो मेरे हाथों आपके दो टुकड़े जो हो जायेंगे। समझे आप ?"

"इसमें मुझको कोई संदेह नहीं।"

"लो हम अपने निर्दिष्ट स्थान पर आ ही पहुंचे !" मेरे मित्र ने कहा, "मेरी प्रिय जगहों में से एक यह है।"

हम कुछ समय तक अपने पेय पदार्थ की चुस्की लेते रहे। कुछ देर पश्चात् वह बोला, "तुम उत्तरवासी हो !"

"हां मैं पीकिंग का रहने वाला हूँ।"

"तुम इतने बड़े शहर में रहने वाले हो और फिर भी ऐसे मूर्खतापूर्ण प्रश्न करते हो ?" पीकिंग शब्द उसके लिये जादू से कम न था; इसलिए उस की समझ में यह बात आती ही न थी कि उस बड़े शहर का रहने वाला भी इतना भोला हो सकता है। मैं मुस्कराया और उसको अपनी बात समझाने की कोशिश करते हुए कहा, "तुम तो जानते ही हो कि मैं विश्व-विद्यालय से निकला स्नातक हूं। हम लोग कितने ग़ैर हाजिर दिमाग होते हैं यह बात भी तुमसे छिपी नहीं है। हम वास्तव में नहीं जानते कि संसार में हो क्या रहा है।"

"तुम्हारा इससे कोई नुकसान नहीं; संसार में भली बातें होती ही कितनी हैं जिनको जानने की चिंता की जाय। मेरी आकांक्षा थी कि मैं भी लिख पढ़ सकता..."

जब मैंने इसका कारण पूछा तो मुझको पता चला कि यद्यपि उसमें चातुर्य और संस्कृति का अभाव था पर रंग-मंच से उसका गहरा लगाव है। उसने बताया कि शिक्षा के अभाव के कारण वह नाटक के बहुत से गूढ़ तत्वों को शायद नहीं समझ पाता। उसने अनेक नाटक देखे थे, जिनसे उसको बड़ी प्रेरणा मिली थी और जिनको उसने बड़ा सराहा था, पर अपने ऐसा करने का कारण बिना जाने ही। वह मुझसे पीकिंग के विषय में नाना प्रकार के प्रश्न करने लगा। उस समय मुझको लग रहा था मानो वह एक जिज्ञासु बालक है। मैंने पीकिंग के विभिन्न नाटकों के विषय में अनेक बातें उसको सुनाई। उसने तब मुझसे विश्व-विद्यालय और रात्रिकाल में होने वाले मनोविनोद के साधनों तथा अन्य मनोरंजक विषयों की जानकारी चाही तथा अन्य अनेक प्रश्न किये। "जब स्थिति सुधर जायगी, और मैं पीपिंग आया और आप वहां हुए तो क्या इस ग्रामीण को उस स्थान का भ्रमण करा सकोगे ?"

मैं उससे फिर चेंगचो के आस पास की स्थिति के विषय में पूछताछ करने लगा। उसने अब मुझको जो कुछ बताया उसको सुनकर पत्थर भी खून के आंसू बहा सकता है। उसमें से एक कहानी जो मुझको विशेष रूप से याद है एक-होनान-प्रांत के सैनिक के विषय में है। जिस समय वह दक्षिण की ओर कूच करने वाली सेना में मार्च करता चला जा रहा था, उसको अपने घर की याद सताने

लगी। वह अपनी वृद्धा माँ के दर्शन करने को आतुर था। पिछले ९ वर्षों से उसकी अपनी मां से भेंट नहीं हुई थी। किन्तु संघ का यह अटूट सिद्धान्त था कि जब तक समस्त दक्षिण चीन "स्वतंत्र" न हो जाय तब तक कोई भी अपने घर वापिस जाने का नाम न ले सकेगा। दक्षिण के कूच के दिनों में संघ को इस सिद्धान्त को सैनिकों के मन में बैठाने की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आवश्यकता महसूस होने लगी। जैसे ही किसी सैनिक का नगर या गांव रास्ते में पड़ा वह सेना से भाग निकलने की योजना बनाने की उधेड़ बुन में लग जाता था—वह भाग निकलना चाहता किन्तु ऐसी तरकीब से कि उसको इस प्रयत्न के दुष्परिणाम न भोगने पड़ें। किसी को उस पर संदेह न हो, इस दृष्टि से उसने अपने उच्चाधिकारियों को हर प्रकार से यह विश्वास दिलाने की कोशिश की कि संघ की प्रत्येक आज्ञा उसके लिए शिरोधार्य है, तथा यह कि उसकी राय में माता और गांव का मोह निरी पोंगापन्थी है। दक्षिण जाने वाली टुकड़ी के "बुलेटिन" में उसकी कहानी और विचारधारा को आदर्श मानकर प्रकाशित कर दिया गया और उसके क्रातिकारी निश्चय और उत्साह को इतना सराहा गया कि दूसरों के लिए वह एक उदाहरण बन सके।

कुछ संयोग की बात थी कि उसकी टुकड़ी उसके जन्मस्थान से होकर निकली। बड़ी चालाकी से उसने ऐसा प्रबन्ध किया कि उसको और उसके अन्य आठ साथियों को उसी के घर में ठहराया गया। ये लोग उसके घर में दाखिल हुए और उसकी वृद्धा माता को आज्ञा दी गई कि वह उनके पांव धोने के लिए पानी गरम करे। यह उसने किसी को कानों-कान भी खबर न होने दी थी कि यह उसका अपना ही घर है। आज ९ वर्ष पश्चात् पहली वार उसको अपनी मां के दर्शन हुए; अब उसकी उत्तेजना, तनाव और आशंका इतनी बढ़ चुकी थी कि उसको अपने आपको नियंत्रण में रख सकना असम्भव सा हो रहा था। यह वह जानता था कि उसकी मां को इसकी कल्पना तक भी न थी कि वह अपने बेटे को भी जीवित देखेगी, या क्रान्तिकारी यूनिफार्म वाले जिन सैनिकों को उसके सिर पर थोप दिया गया है, उनमें से एक उसका अपना बेटा भी होगा। जब उसको यकीन हो गया कि अब कोई खतरा नहीं है वह चुपके से अपनी मां के पास गया और उसके कान में अपना परिचय दे दिया; पर साथ ही उसको चेतावनी भी दे दी कि वह किसी प्रकार भी इस भेद को न खोले। मां की आंखों में सुख के आंसू उमड़ रहे थे और वह अपनी

प्रसन्नता को छिपा न पा रही थी, जिसके कारण खाना बनाने में उसके हाथ पांव फूलने लगे; यहां तक कि कुछ कामरेडों को इस पर संदेह भी होने लगा। पर बेटा यथापूर्व सायंकाल की वाद विवाद सभा में भाग लेता रहा और किसी को भी असलियत का पता न चल सका।

अगले दिन प्रात: काल जब कूच करने का समय आया तो ये नौ सैनिक कूच के स्थान पर मौजूद न थे। कम्पनी के कमिसार ने तुरंत गांव की तलाशी का आदेश जारी कर दिया। तलाशी लेने वाले जब उक्त बुढ़िया के घर में पहुंचे तो उन्होंने आठ सिर आठ धड़ों से अलग पड़े पाये। बुढ़िया और उसके बेटे का कहीं पता न था।

मेरे मित्र, जनतंत्रीय संतरी, ने अपने गिलास पर से सिर उठाकर मुझसे कहा "मेरी राय में यह कार्यवाही बेटे की न थी। मेरी राय में बुढ़िया ही ने यह काण्ड रचा था। नर्क में गिरना और उन आठ व्यक्तियों में सम्मिलित होना मेरे लिये समान रूप से तिरस्कार की बात है, किन्तु मुझको प्रसन्नता है कि किसी को तो आज घूसा तानकर खड़े हो जाने का साहस हुआ। लोगों ने बुढ़िया को बाघ आदि नामों से सुशोभित किया। अच्छा नाम था वह, क्योंकि उससे स्पष्ट होता है कि जनता में बाघ की जीवट आज भी शेष रह गई है। सब लोग भेड़ ही नहीं हैं। तनिक उस घृणा की भी तो कल्पना कीजिये जिससे शक्ति पाकर एक बुढ़िया आठ जवानों के सिर काट कर फेंक सकती है! इस पर किसको आश्चर्य न होगा, समझे ?" यह कह कर उसने अपनी पिस्तौल पर हाथ फेरा और बोला, "यह सौभाग्य की बात थी कि मुझको यह मिल गया। अमरीका वाले पिस्तौलों के बारे में बहुत कुछ जानते हैं, और अच्छी पिस्तौलें बनाते भी हैं। उनकी बनाई पिस्तौल हाथ में हो तो आत्मरक्षा का आश्वासन रहता है।"

हम इधर उधर की बातें करते हुए १५ मिनट तक और रेस्टोरां में बैठे रहे। मैंने कहा मुझको अभी मंत्री महोदय के साथ हुई भेंट की रिपोर्ट भी लिखनी है। हम उठ खड़े हुए। मेरे मन पर उस मित्र की बताई ये कहानियां सुनकर बड़ा बोझ सा आ पड़ा था। मेरे क्वार्टर तक हम प्राय: पैदल ही पहुंचे। मुझसे विदा लेते हुए उसने मुझसे हाथ मिलाया। उसके चेहरे पर रूखी सी

हंसी थी । "भूलना नहीं, कभी हम दोनों पीपिंग में मिलेंगे," उसने कहा, "और हां एक परामर्श भी देता चलूं । कभी किसी अज्ञात निवासस्थान पर सोना पड़े और यह यूनिफार्म पहिने हुए हो तो बिना दो चार सचेत पहरेदारों की देख भाल के ऐसा न कर बैठना ।

संतरी ने मुझको सिनयांग में गायब हुए अधिकारियों के विषय में जो कुछ बताया वह मंत्री महोदय से प्राप्त की गई संक्षिप्त जानकारी से मेल न खाता था । पर अपनी रिपोर्ट तैयार करते समय मैंने उन दोनों में से किसी भी बात को इस्तेमाल नहीं किया । मुझे याद पड़ता है कि मैंने अपनी रिपोर्ट में राष्ट्रवादियों द्वारा फैलाई गई अफ़वाह का उल्लेख किया और बताया कि सिनयांग में इस प्रकार की कोई घटना नहीं हुई । मैंने अपने कथन के समर्थन में नागरिक यातायात विभाग के मंत्री, संतरी और आधे दर्जन लोगों के, जिनमें से अधिकांश कल कारखानों में और खेती पर काम करने वाले मजदूर थे, वक्तव्यों को उद्धृत किया । अपनी रिपोर्ट के अंत में मैंने लिखा कि मध्य चीन की जनता की ओर से युद्ध मोर्चे को सम्पूर्ण समर्थन प्राप्त है ।

छठा परिच्छेद

अगतिवादी पैदल यात्रा

मेरे बातूनी संतरी से बात करने के कुछ समय पश्चात् एक दिन प्रातः-काल हमारे चीफ स्टाफ अफसर ने हम ३२ जनतंत्रीय संवाददाताओं को एक-त्रित किया और कुछ ही घंटे में अपनी दक्षिण वाली यात्रा को प्रारम्भ करने का आदेश दे दिया। बड़ी जल्दी में हम रेलगाड़ी में सवार हुए; हमारा नेता अपने आधे डिब्बे पर अधिकार कर बैठा और हम ३२ व्यक्ति शेष दूसरे हिस्से में जा बैठे। मैं चेंगचो छोड़कर दक्षिण की ओर जाना नहीं चाहता था विशेषतः इसलिए कि मुझको अब इस क्षेत्र में संघ के लिए उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों और संकटों से परियाप्त परिचय हो गया था। रेल के डिब्बे के एक कोने में भिचा हुआ बैठा मैं मन ही मन उन सब बातों पर चिन्तन कर रहा था जो मुझको मंत्री महोदय ने गुप्त-भ्रातृ-संघ नामक संस्था की दुर्दम्य शक्ति और इधर उधर घूमने फिरने वाले डाकुओं के विषय में बताई थीं। यद्यपि मेरे मन में जनसाधारण के साहस के लिए प्रशंसा थी पर मुझको यह याद करके चिन्ता भी होने लगी थी कि इस क्षेत्र में स्त्रियां और बच्चे भी संघ के सदस्यों पर गोली चला सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर निस्संकोच चलाएंगें। हमारे आगे स्वातंत्र्य सेनाए जा चुकी थीं। हम उनके अनुगामियों में से थे। कितना भयावह सिद्ध हो रहा था यह अनुगमन !

सुचांग के दक्षिण में एक रेलवे स्टेशन पर जिसका नाम लोहो था हमारी गाड़ी एक बड़े झटके के साथ रुक गई। हमको गाड़ी छोड़कर बाहर आ जाने की आज्ञा हुई। बाहर पहुँचने पर हमको सूचना दी गई कि उस स्टेशन के आगे रेल की पटरी उखाड़ दी गई है। हमारे समुदाय में एक छात्र था जो मलाया से लौटा था। जिस समय हमको यह समाचार दिया गया उस समय वह मेरे निकट ही खड़ा था। बड़े व्यंग के साथ उसने धीरे से मुझसे कहा, "ऐसे प्रदेश में जहां चारों ओर शत्रुओं की भरमार हो किसी ऐसे अज्ञात

रेलवे स्टेशन पर लाकर पटके जाने से अधिक अच्छा उपाय घबड़ाहट को दूर करने का कोई नहीं हो सकता।"

मैंने भी उसके कान में धीरे से कहा, "ऐसा प्रतीत होता है कि सिनियांग से उन ११ आदमियों के गायब हो जाने की कहानियों को आप भी सच नहीं मानते, क्यों ठीक है ना ?"

"आप बिल्कुल ठीक कहते हैं।"

"वे कहानियां क्या थीं कपोलकल्पनाओं का निरा पुंज ही तो।"

"छोड़िये भी इन बातों को" उसने मेरी ओर देखते हुए कहा। "आपने मंत्री महोदय से भेंट करने के पश्चात् जो रिपोर्ट लिखी थी उस पर मैंने विश्वास कर लिया था कि आपका ऐसा विचार है ?"

मैं मुस्कराया। "जो कुछ उसम कहा गया था वह सत्य नहीं था, क्या यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी उसमें ?" मैंने उससे पूछा।

"नहीं इतना स्पष्ट तो नहीं था। आपने तो अपनी ओर से बड़ी ही सुन्दर कृति तैयार की थी। आवश्यकता से अधिक या कम कोई भी बात न थी।"

"पर आपको यह पता लग ही गया था कि मैं झूठ बोल रहा हूँ ?"

"मैं इसी बात को यूं कहूँ कि एक दो बातों को आपने व्यर्थ ही खींचा ताना था।"

हमारे चीफ़ स्टाफ अफसर इस रेल की पटरी को उखाड़ने वाले प्रति-क्रियावादियों की धूर्तता के विषय में कुछ कह रहे थे। हमारी टोली के शेष सब लोग घबड़ाहट के साथ उनकी बातें सुन रहे थे। मेरे पास जो कामरेड थे मैंने उनसे धीरे से पूछा, "क्या और लोगों को भी यह बात मालूम हो गई है कि यह आपद्ग्रस्त क्षेत्र है ?"

"मैं कह नहीं सकता, सम्भवतः उनमें से कुछ तो यह बात अवश्य ही जानते हैं।"

"मैं देखता हूँ कि आपकी रिपोर्ट में तो यहां की जनता द्वारा सेना को प्रदान की जाने वाली सहायता और समर्थन के विषय में भूरि भूरि प्रशंसा ही थी।"

"हां एक दो बात के विषय में मैंने अवश्य अतिशयोक्ति कर दी थीं।" यह सुनकर वह आनन्दित सा हुआ दिखाई दिया।

उधर हमारे चीफ़ स्टाफ़ अफसर अभी तक प्रतिक्रियावादियों ही के विषय पर अपना भाषण जारी रखे हुए थे। अपने भाषण के अन्त में उन्होंने कहा कि अगली आज्ञा मिलने तक हमको लोहो ही में ठहरे रहना पड़ेगा। इसके तुरन्त पश्चात् हमारी छोटी टुकड़ियों के नायकों ने अपनी अलग अलग सभाएं बुलालीं। दोपहर के पश्चात् और सायंकाल को हम स्थिति पर वाद-विवाद करते रहे और प्रतिक्रियावादियों की बर्बरता की आलोचना चलती रही। उधर रसोइया अपनी चलती फिरती रसोई को रेलवे स्टेशन के भीतर उठा ले गया था जहां वह हमारे लिए शाम का खाना तैयार कर रहा था। हमारे रेडियो आपरेटर ने चेंगचो से बातें की और आगे के लिए क्या आज्ञा है यह जानना चाहा; हमारे चीफ़ स्टाफ़ अफ़सर ने चुंग युयेन डेली के लिए एक अत्यन्त प्रशंसात्मक कहानी लिख भेजी जिसमें यात्रा के सारे संकटों का सामना करके हमने क्रान्ति के प्रति जो प्रेम प्रदर्शित किया है उसकी प्रशंसा की गई थी। अन्त में उन्होंने एक छोटी सी खबर इस आशय की भी जोड़ दी कि जनता बड़े उत्साह से हमारे संकटों में हमारा हाथ बंटा रही है। बात वास्तव में यह थी कि लोहो श्मशान की भांति निस्तब्ध था। मुझको इस निस्तब्धता के पीछे रोष दिखाई देता था जिसके कारण मैं दुखी था। रेलवे स्टेशन पर जिन सैनिकों को पहरे के लिए खड़ा किया गया था, वे ऐसे "सचेत पहरेदार" नहीं दिखाई देते थे जिनकी हमको लोहो में सोते समय आवश्यकता थी।

विभिन्न टुकड़ियों के नायकों ने हमारी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए निश्चय

किया कि हम सब लोग रेलगाड़ी ही में सोएं पर हमारा रसोइया रेलवे स्टेशन ही में सोने पर तुला हुआ था, क्योंकि वह अपने बर्तन आदि से हाथ नहीं धोना चाहता था। अगले दिन प्रातःकाल जब हम नाश्ते की प्रतीक्षा कर रहे थे तो रेलवे स्टेशन में कोलाहल मचा, पहरेदार जोर जोर से चिल्लाने लगे, हम में से कुछ लोग दौड़ कर वहां पहुंचे तो अन्दर जाकर क्या देखते हैं कि रसोइये महाशय कमरे के बीच में धराशायी हैं और उनकी देह से जो रुधिर निकला था अब सूखने लगा था। रात में उस पर कई बार चाकू का प्रहार हुआ दिखाई देता था। इस रोमांचकारी घटना की विचित्रता यह थी कि पहरेदारों में से किसी को भी इसका पता न था। न उन्होंने हाथापाई की कोई आवाज सुनी और न कोई कराहट। हम लोग आश्चर्य करने लगे थे कि कहीं पास पड़ोस के ग्रामीणों ने तो यह काम नहीं किया। हम तो यहां तक भी कल्पना करने लगे थे कि संभवतः ग्रामीणों और पहरेदारों के परस्पर षड़यन्त्र द्वारा ही यह कांड रचा गया था।

तुरंत एक मीटिंग बुलाई गई जिसमें हमारे चीफ स्टाफ़ अफ़सर ने हमको बताया कि अब समय आगया है जब कि हमको जनतंत्रीय स्वातंत्र्य सेना के अनुशासन के प्रति तनिक सी भी भूल चूक न करनी होगी। इस अनुशासन के दो शब्द केन्द्रीय महत्व के बताए गए। एक सावधानी और दूसरा गोपनीयता। सैनिक अनुशासन की भित्ति इस धारणा पर आश्रित थी कि जनसाधारण अभी तक जागृत नहीं है और इसलिए उसका अधिकांश भाग राष्ट्रवादियों की ओर से जासूसी करता है यद्यपि जनतंत्रीय सेना और संघ के प्रति मित्रता का ढोंग रचता है। इसलिए हमारे लिए साधारण जनता से व्यक्तिगत सम्पर्क निषिद्ध कर दिया गया यहां तक कि अब हम किसी के हाथ का दिया हुआ भोजन या जल भी स्वीकार नहीं कर सकते थे क्योंकि भोजन और जल द्वारा सैनिकों को विष देकर मारने की अनेक घटनाएं हो चुकी थीं। हमको आदेश हुआ कि यदि हमको साधारण जनता से कभी थोड़ा बहुत आदान प्रदान करना पड़े तो उस समय हमको किसी का विश्वास नहीं करना चाहिए। अधिकतम् सावधानी बरतनी चाहिए और प्रति क्षण विश्वासघात की आशंका रखनी चाहिए। जनतंत्रीय स्वातन्त्र्य सेना को जनता से सुरक्षा पाने का सर्व श्रेष्ठ उपाय यह बताया गया कि जनता और सेना में कोई सम्पर्क ही नहीं होना चाहिए।

जब यह सभा समाप्त हुई तो हम लोगों को सोवियट सरकार की ओर से जारी किया गया एक खरीता अध्ययन के लिए दिया गया। उधर रसोइए का मृत शरीर दफना दिया गया और हमको चेंगचो से आज्ञा दी गई कि हमारी सुरक्षा को दृष्टि में रखते हुए अब यह निश्चय किया गया कि शीघ्र ही लोहो से होकर दक्षिण की ओर जो सेना जाने वाली है हमको उसी की किसी इकाई का अंग बना दिया जाए। इस प्रकार हम जनतंत्रीय सम्वाददाताओं को अपने जीवनानुभव को बढ़ाने का एक नया अवसर मिलेगा ऐसा कहा गया। इसके अतिरिक्त यह आश्वासन दिया गया कि दक्षिण यात्रा में हमारी सुरक्षा का यह सर्वश्रेष्ठ उपाय होगा।

हमको जो सोवियट खरीता दिया गया था वह वास्तव में एक लेख था जिसका शीर्षक था "लाल सेना की विशेष गोपनीयता और सतर्कता"। इसका लेखक रूस के सैनिक न्यायालय का एक जज था और इसमें १९३६ के उस सुरक्षा नियम का स्पष्टीकरण किया गया था जिसमें सैनिकों को अपने सैनिक अनुभवों के विषय में बात न करने का आदेश था। स्थान स्थान पर इस बात पर जोर दिया गया था कि सैनिकों को किसी भी दशा में पार्टी के लिए ली गई अपनी सैनिक शपथ के प्रतिकूल कोई बात नहीं करनी चाहिए। इस खरीते में सैनिकों के लिए यह आह्वान था कि वे क्रान्ति के शत्रुओं और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियावादियों से अपने आपको सदा बचाएं और कम्युनिस्ट विरोधियों की ओर से किसी क्षण भी षडयंत्र हो जाने की आशंका रखे और किसी भी कम्यु-निस्ट विरोधी के प्रति ममता न बरतें। इस खरीते में यह भी बताया गया था कि इस सुरक्षा नियम को किस प्रकार कार्यान्वित किया जाए। इसका उल्लं-घन करने वाले के लिए भयंकर दण्ड का विधान था।

मैंने इस खरीते पर अपने मलाया वाले मित्र के साथ व्यक्तिगत रूप से विचार विमर्श किया। इससे पहले रूसी समाजवाद के विषय में अपर्याप्त ज्ञान होने के कारण हम यह समझते आए थे कि "प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यकता-नुसार उपलब्धि और योग्यतानुसार कर्तव्य" का सिद्धान्त वास्तव में सत्य है। गोपनीयता और सावधानी के विषय में इस रूसी खरीते को पढ़ने के पश्चात् हम दोनों को यह पता लग गया कि केवल कहने सुनने के ही लिए पार्टी के वाक्य सुन्दर एवं आदर्शात्मक हैं किन्तु व्यवहार में उनका एक मात्र अर्थ जनता

का दमन और जनता और सेना में नए वर्ग भेद की स्थापना है। हम दोनों ही का यह विचार था कि समाजवादी शासकों और फ़ासिस्ट तानाशाही में केवल यही अन्तर है कि समाजवादियों की ओर से फ़ासिस्टों की अपेक्षा जनता पर अधिक हिंसा की जाती है। सुन्दर वाक्य छलपूर्ण है और समाजवाद का सिद्धान्त निरी विडम्बना। व्यवहारिक दृष्टि से समाजवाद एक भयंकर स्वप्न के सिवाय कुछ नहीं।

अगले दिन प्रातःकाल हमारे चीफ़ स्टाफ़ अफ़सर ने एक भाषण दिया। "इसमें सन्देह नहीं कि आप लोग अपने आपको भाग्यशाली समझते होंगे कि उत्तर पूर्व से यांग्ट्सी नदी तक आपको पैदल यात्रा नहीं करनी पड़ी और लगभग दो तिहाई सफ़र रेल में ही तय कर सके। प्रति दिन आप लोग दृढ़तर होते जा रहे हैं और क्रांति की ओर अग्रसर होने में अधिकाधिक उन्नति करते जा रहे हैं। आपका व्यवहार और विचार दोनों ही दृढ़तर एवं उन्नततर होते जा रहे हैं। आज संघ आपसे यह आशा करता है कि आप अपनी इस प्रति-क्रियावादी धारणा को छोड़ दें कि पैदल चलने की अपेक्षा रेल से सफ़र करना अधिक अच्छा है। सफर करने के लिए रेलगाड़ी का सहारा लेना पुराने समाज की परम्परा थी। अब तक आपको केवल इसलिए रेलगाड़ी से सफर करने दिया गया कि हम आपको शारीरिक और बौद्धिक दृष्टि से अभी नए सिद्धान्त को ग्रहण करने के लिए दुर्बल समझते थे। अब संघ आपको इतना शक्तिशाली और प्रगतिशील समझता है कि आपसे नए सिद्धान्त को कार्यान्वित करने का भरोसा कर सकता है। वास्तव में मार्क्स-लेनिन का यह पहला सिद्धान्त है कि आप क्रान्ति के हेतु पैदल चल कर नया अनुभव प्राप्त करें। आप सच्चे मन से अपनी सुदृढ़ टांगों द्वारा नए क्रान्तिकारी आचरण द्वारा अपने सच्चे कामरेड होने का प्रमाण दें। लोहो से सिनियांग लगभग १३० मील है। हम चार दिन में यह यात्रा समाप्त कर देना चाहते हैं—केवल तीस मील प्रतिदिन की ही तो बात है। एक साधारण सैनिक के लिए यह आराम करने की अपेक्षा सुगमतर काम है। मुझको विश्वास है कि यदि जनतंत्रीय संवाद-दाताओं को हम क्रान्ति के लिए वही काम करने की अनुमति न दें जो जनतंत्रीय सैनिक करते आ रहे हैं तो आपको निश्चय ही ऐसा लगेगा जैसे कि आपके साथ धोखा हुआ है।"

आँदोलनकारियों ने हमारा नेतृत्व किया और हमने स्वेच्छा से सर्वसम्मति द्वारा पैदल चल पड़ने का निश्चय कर लिया। हमने दूरदर्शिता बरती और इस बात का जिकर तक न होने दिया कि लोहो के आगे जब रेल की पटरी ही नहीं रही तो हम चाहते तो भी रेलयात्रा कैसे कर सकते थे। जहां तक मेरा अपना सम्बन्ध था मेरे दिमाग में तो बराबर १३० मील की वह यात्रा और प्रतिदिन तीस मील का पैदल सफ़र चक्कर काट रहे थे। अब मेरी हार्दिक कामना यही थी कि भगवान करे कि मेरे पांव भी उतने ही प्रगतिशील सिद्ध हों जितना कि मेरा मन था ताकि मैं संघ की सेवा कर सकूं।

हमारे चीफ़ स्टाफ़ अफ़सर के भाषण के पश्चात् "बोझा कम करो" के आन्दोलन का सूत्रपात किया गया। यदि कोई व्यक्ति स्वेच्छा से अपने पुराने सामान से हल्का नहीं होना चाहता था तो उसकी सहायता के लिए दूसरा प्रबंध था। अभी तक मेरे पास जो पुराना सामान था जिसमें चमड़े के एक जोड़ी अतिरिक्त जूते भी थे वह अब इस नए आह्वान के अनुकूल स्टेशन के पहरेदारों को अर्पित कर दिए गए। हमारे नायकों को यह जानकर बड़ा क्रोध आया कि हममें से बहुत से व्यक्ति विशेषतः स्त्रियां अपने पुराने नागरिक वस्त्रों को अभी तक अपने पास रखे हुए थीं। उनकी राय में शोख़ चोगे शारीरिक दृष्टि से भार थे और जो स्त्रियां उनको अभी तक परिधान परि-वर्त्तन के समय प्रयोग करती थीं वे अनुशासन और क्रान्ति की दृष्टि से विचार अस्पष्टता की अपराधी थीं। बहुत कुछ आलोचना किए जाने के पश्चात् हम सब ने स्वेच्छा से अपने समस्त अवांछनीय भार का परित्याग कर दिया।

शाम को चेंगचो से सैनिक टुकड़ी आगई और लोहो के रेलवे स्टेशन पर हम जनतंत्रीय संबाददाताओं से उसकी भेंट हुई। कहने को यह सैनिक टुकड़ी "गैर-सैनिक यातायात टोली" थी। उसका वास्तव में क्या काम था यह मैं कभी नहीं समझ पाया था। यह टोली युद्ध करने वाले सैनिकों का तो एक अंग नहीं थी यह स्पष्ट था फिर भी उसका हरेक व्यक्ति अपने पास छोटा बड़ा अस्त्र रखता ही था। इन अस्त्रों को लगाए रखने का अभिप्राय यह बताया जाता था कि उनसे उनको अपने काम को पूरा करने में सहायता मिलती है। मुझको सन्देह था कि उनका उस समय एकमात्र काम यही था कि वे हम जैसे निरस्त्र लोगों की टुकड़ियों को भयंकर क्षेत्र में ले जा सकें। उनमें से

कुछ व्यक्ति स्वातंत्र्य के पश्चात् उत्तर चीन में नगरपतियों के पद पर रह चुके थे। दूसरे ऐसे व्यक्ति थे जो किसान संघों में काम कर चुके थे और शेष व्यक्ति संतरी और सैनिक थे। ये सभी व्यक्ति देर से क्रान्ति की सेवा करते रहे थे और मज़दूर वर्ग से उठकर संघ में इस पद तक पहुँचे थे। तुरंत ही यह भांप कर कि हम सभी शिक्षित व्यक्ति हैं जो कुछ दिन पहले ही क्रान्ति में सम्मिलित हुये हैं उन्होंने स्पष्ट रूप से यह प्रकट कर दिया कि हमारे प्रति उनके हृदय में कोई सम्मान नहीं है; उन्होंने हमारी तीव्र आलोचना प्रारम्भ कर दी और कहा कि हम अभी स्वल्प सम्पत्तिशाली वर्ग की धारणाओं से मुक्त नहीं हुए हैं। उनके एक स्टाफ़ अफ़सर ने मेरी तो एक घंटे तक तीव्र आलोचना करके पूरी पूरी खबर ली।

अगले दिन प्रातःकाल हम कूच करने के लिए तैयार हो गए और अपने अपने नियत स्थान पर जा खड़े हुए। इस प्रकार दक्षिण में यांगट्सी नदी की ओर हमारे प्रस्थान का श्रीगणेश हुआ। हमारा स्टाफ़ अफ़सर मेरे बिल्कुल सामने की पंक्ति में था—वही स्टाफ़ अफ़सर जिसने पहली रात को मेरी तीव्र आलोचना की थी। उसके साथ साथ जो दूसरा कामरेड चल रहा था वह उसको एक जनतंत्रीय सम्वाददाता के साथ हुई अपनी बातचीत का व्यौरा देता जा रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि ये लोग हम नवागंतुकों को ऐसा कूड़ा करकट समझते थे जो संघ के यंत्रचक्र में बाधा बनकर अड़ गए हैं और इस प्रकार क्रान्ति की गति को अवरुद्ध किए हुए हैं। अब उस व्यक्ति ने जिसने पहली रात को मेरी खबर ली थी मेरे विषय में बातचीत शुरू कर दी। उसके साथी ने कहा "यह कोई बहुत ही पढ़ा लिखा व्यक्ति मालूम होता है।"

"पढ़ा लिखा? भाड़ में जाए वह। इस सौर्य मंडल में इनसे अधिक पतित कोई व्यक्ति नहीं हो सकता।"

"हो सकता है, किन्तु यह न भूलिए कि पीपिंग के सबसे पहले क्रान्तिकारी विश्वविद्यालय के वे छात्र ही थे जिन्होंने चार मई का आंदोलन प्रारम्भ किया था।"

"तो आप उनको क्रान्तिकारी समझते हैं ? यदि वास्तव में वे क्रान्तिकारी थे तो वे येनान क्यों न आए ? और अध्यक्ष माओ तो कह ही चुके थे कि इन लोगों की शिक्षा से प्रतिक्रिया की गंध आती है। इन्होंने क्रांति के लिए कभी कुछ नहीं किया । हां अपनी उदारवृत्ति के अनुकूल यदाकदा कुछ सुझाव अवश्य पेश करते रहे हैं।"

"हां ! यह तो सच है।"

"इनमें केवल इतनी ख़राबी हो सो बात नहीं है। इन सबकी स्थिति उस घास जैसी है जो दीवार की मुंडेर पर उग आया करती है। जिस दिशा की हवा चलती है उसी दिशा में यह मुड़ जाती हैं। जब इनको यह मालूम हो गया कि हम अग्रसर होते जा रहे हैं तो ये हमसे आ मिले; पर उससे पहले नहीं। क्या तुम यह समझते हो उस समय जब मार्ग में खतरा था इनमें से कोई भी व्यक्ति क्रान्ति के लिए अपनी गर्दन कटवा सकता था ? ओ ! नहीं साहब, इनको अपनी गद्देदार कुर्सियों और अध्ययनशालाओं की जो चिन्ता थी। ये तो केवल सुझाव ही रख सकते थे। हां बस इतना ही था कि ये क्रान्ति विरोधी नारों द्वारा हमारी निन्दा नहीं करते थे।"

"यदि यह मान भी लें कि यह बात सच है तो भी हमको इनकी आवश्यकता तो है ही—क्यों मेरी बात ठीक है ना। इतना लम्बा चौड़ा देश हमारे पास है कि हम पुराने कामरेड अकेले ही उसको अपने वश में नहीं रख सकते।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमको उनकी आवश्यकता है । पर पहले इनको सुधारना होगा और मैं शपथ लेकर कहता हूँ कि यदि इनमें से कोई मेरे हाथ में पड़ गया तो मैं उसका कायाकल्प ही करके छोड़ूंगा।"

उस समय मुझको लगा जैसे कोई मेरी बाहँ पकड़ कर ध्यान आकर्षित कर रहा है। वह येंग चिंग विश्वविद्यालय के पत्रकार विभाग की छात्रा थी। उसका चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था और वह मुझसे धीरे से किन्तु आग्रह के साथ कह रही थी कि इन लोगों का भ्रम निवारण करना चाहिए। मैंने

सिर हिला कर इंनकार किया, क्योंकि मैं जानता था कि वादविवाद करने से हमारी स्थिति और भी खराब हो जायगी। वर्षों से उनको यह शिक्षा मिलती आई थी कि शिक्षित-वर्ग निकम्मा और घृणास्पद है। वे इतने दिन से संघ में रहते आए थे कि वे हमको नवागंतुक एवं निरे जनसाधारण ही समझें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं; उनको भय था कि कहीं अवसर मिलने पर हम उनकी पीठ में छुरा ही न भोंक दें। इस विषय में उनकी पक्षपातपूर्ण धारणाएं इतनी दृढ़ हो गई थी कि उनको दूर करना सम्भव न था। मैं सड़क पर लेफ्ट राइट करता हुआ चला जा रहा था। मन में मेरे यह प्रश्न उठ रहा था कि क्या वास्तव में अब भी मेरे अन्दर चीते का कोई अंश जीवित रह गया है ?

× × ×

लोहो से कोई ८ मील के फ़ासले पर हम एक 'पैदल यात्रा प्रोत्साहन केन्द्र' पर ले जाये गये। इस स्थान का संचालन 'सैनिक संस्कृति टोली' करती थी; वहां छोटी सी कैम्प फायर थी और जल्दी में तैयार किया गया एक मंच। हम लोग कुछ देर के लिए वहां रोक दिये गये और पीने के लिए कुछ चाय पानी पा सके। तब हमारा संघर्ष-साहस बनाये रखने के लिए 'सैनिक संस्कृति टोली' की एक छोटी टुकड़ी ने कुछ छोटे-छोटे अभिनय प्रसंग प्रदर्शित किये और 'यांगको' नाच दिखाया। उनमें से एक यंत्रवत् घड़ियाल बजा रहा था, दूसरा ढोल, तो शेष सदस्य एक छोटा सा 'मार्चिंग' गीत गा रहे थे। उन्होंने भड़कीले वस्त्र पहने हुए थे।

उनके गाने बजाने और नाचने का प्रमुख उद्देश्य प्रचार था; प्रत्येक बात प्रचार की भावना से ओत प्रोत थी, क्योंकि संघ ऐसा कोई भी अवसर हाथ से नहीं निकलने देना चाहता था जिससे हमारा ज्ञान बढ़े। मार्च की महिमा सिखाने के केन्द्र विचित्र स्थानों में पाये जाते थे। उनमें से कुछेक तो बीहड़ जंगल में रखे गए थे। किन्तु इनके संचालक सदा ही प्रत्येक उस सैनिक टोली के कल्याण के लिए जो उधर आ निकलती अभिनय और संगीत का प्रदर्शन करने को तैयार रहते थे। पद की दृष्टि से डिवीजन और उसके स्तर पर उनको सांस्कृतिक टोली कहा जाता था। डिवीजन के नीचे के स्तर पर उन्हीं का नाम प्रचारक मंडली रखा गया था। प्रत्येक युद्धरत सैनिक टुकड़ी के

पास अपनी अलग अलग प्रचार मंडलियां थीं। यहां तक कि जो सैनिक वास्तव में गोलियां छोड़ने और खाने में लगे थे वे भी इन मंडलियों से मुक्त न थे। अधिकांश टोलियों और मंडलियों में विश्वविद्यालय की छात्रायें काम करती थीं; जब तक संघ उनके विवाह का निश्चय नहीं कर देता था, तब तक इन लड़कियों को पेशेवर प्रचारक ही समझा जाता था। जिनके विवाह का निर्णय हो जाता था, उनको इस स्थान को छोड़ देना होता था।

चाय पानी और प्रचार की पर्याप्त मात्रा प्राप्त करके उपर्युक्त मात्रा में प्रोत्साहित होने के पश्चात् हमने दक्षिण की ओर मुंह फेरा और कूच प्रारम्भ कर दिया। वास्तव में मेरा यह विश्वास था कि हम में से उन व्यक्तियों के लिए जो शिक्षित थे एक दिन में ३० मील पैदल चलना संभव नहीं है। मैंने इस आशय का एक वाक्य भी अपने मुंह से निकाल दिया जिसको हमारे स्टाफ अफसर ने सुन लिया। उसने मुड़कर मेरी तरफ देखा और अपने वाणी रूपी कोड़े से मेरी अच्छी तरह खबर ली। उसकी राय में मैं पिछड़ी भावनाओं को व्यक्त करके दूसरों का साहस तोड़ने का पाप कर रहा था। संवाददाताओं में से उन लोगों ने जो आन्दोलनकारी थे, इसी बात को पकड़ लिया और मेरे पीछे पड़ गए। बाद में घटनाओं द्वारा यह सिद्ध हो गया कि बात मेरी ही ठीक थी। हम जिस रफ्तार से आगे बढ़ रहे थे, वह घातक थी, विशेषतः स्त्रियों के लिए। एक एक करके बेचारी स्त्रियां इसमें से निकलने लगीं। बाद में कुछ पुरुष भी ढहने लगे। बीस मील पैदल चलने के पश्चात् हमारे पांव के तलुवे छालों से भर गए थे। अब दूसरों के साथ साथ चलते रहने का एक मात्र तरीका यही रह गया था कि हम किसी प्रकार अपने पैरों को घसीटते और डोलते हुए आगे बढ़ते रहे। यह देखकर अधिकारियों ने हमारी आलोचना की और हमको कम्युनिस्टों द्वारा प्रचालित नये नृत्य का मज़ाक उड़ाने का दोषी ठहराया। मैं गिर पड़ना नहीं चाहता था। फिर भी आगे कदम बढ़ाना दूभर होता जा रहा था। मेरे पांव के छाले फूटने लगे थे, जिससे पांव प्रायः भीगे से रहते थे। उधर मेरा बवासीर रोग और भी अधिक उग्र रूप धारण करता जा रहा था। एक दो मील किसी प्रकार दांत भींचता हुआ मैं और चला किन्तु अन्त में-जिस समय हम एक तालाब के पास से गुज़र रहे थे, मैं पंक्ति में से निकलकर एक ओर ढह पड़ा।

मेरे साथ के एक पुराने कामरेड पर भी ऐसी ही बीती। हम दोनों लंगड़ाते हुए पानी के पास पहुंचे और ठंडे पानी में अपने पांव डालकर बैठ रहे। मुझको याद नहीं पड़ता कि इससे पहिले भी मुझे कभी इस प्रकार फिर से जान में जान आने का अनुभव हुआ था। उस समय उस ठण्डे जल को प्राप्त करना मानों भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करने के समान था। हमारे पांव पानी में लटके हुए थे, और कामरेड और मैं आपस में कुछ बातचीत कर रहे थे। हम अपनी यात्रा पुनः प्रारम्भ करने वाले ही थे कि हमने दो स्त्रियों और एक पुरुष को सड़क पर लंगड़ाते हुए अपनी ओर आते देखा। वे भी उस तालाब को पाकर अत्यन्त कृतज्ञ हुए दिखाई दिए। मुझको यह देख कर कुछ कम सन्तोष नहीं हुआ कि उन दोनों स्त्रियों में से एक वह महिला आदोलनकारी भी थी जिसने मेरे पैदल चलने के प्रति अनुत्साहित होने की भारी आलोचना करके मुझको पिछड़ा हुआ व्यक्ति ठहराया था। जब इन तीनों ने भी पर्याप्त आराम कर लिया तो हम पांचों अपनी यात्रा के लिए फिर उठ खड़े हुए। यह अर्द्धमध्यान्होत्तर काल की बात है। अभी हमको दस बारह मील की यात्रा और तय करनी थी, तभी कहीं रात को विश्राम स्थान पर आराम करने का अवसर मिलने की आशा थी। अब हमारा कदम ढीला पड़ रहा था पर फिर भी हमारा सफर अब बहुत बुरा न कट रहा था; हम दस मिनट चलते थे, तो पांच मिनट आराम करते थे।

लगभग एक घण्टे के बाद हमारे पीछे कोई सात आठ मील प्रति घन्टे की रफ्तार से हांफती हुई सी एक मोटर ट्रक आ गई। ड्राइवर नें हमको देख कर अपने दांत चमका दिए और अपने कन्धे मटका कर चलता बना। उसकी ट्रक में भारी भारी थैले भरे थे और थैलों पर लगभग छः कामरेड चढ़े बैठे थे। १५ मिनट पश्चात् उसी प्रकार की एक और ट्रक आई। ड्राइवर ने चिल्लाकर हमसे कहा "अगली में"। ऊपर बैठे कामरेडो ने अपने हाथ हिलाकर हमारा अभिवादन किया और ट्रक झूलती-झटकती पास से निकल गई। आधे घंटे बाद जब हम लोग आराम करने की बारी आने पर सड़क के किनारे बैठ गये तो एक तीसरी ट्रक घर्र घर्र झर-झर करती हमारे पास आ खड़ी हुई। ड्राइवर ने अपना सिर बाहर निकाला और अपने दांत चमकाने लगा।

"क्या बात है" उसने पूछा। "क्या तुम अपने ट्रूप यूनिट से भटक गये हो ? तुमको जाना कहां है ?" जब हमने बताया कि हमको सिनयांग जाना है तो उसने हमको अपने थैलों पर बैठने के लिये आमंत्रित किया।

हम पांचों किसी तरह जोर लगा कर अपने आपको ट्रक के ऊपर खींच ले गये और थैलो पर धरे गये। तब मैंने चिर कालिक कामरेड से पूछा, "क्या पैदल यात्रा में फिसड्डी रहने वालों को एकत्रित करने के लिये इस प्रकार हमेशा ही ट्रक भेजे जाया करते हैं ?"

"कभी कभी" उसने जवाब दिया। "ऐसा प्रायः तभी होता है जब कूच करने वालों में नए लोग हुआ करते हैं।"

"क्या इसलिए कि वे कहीं निकल न भागें ?" मैंने पूछा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया और थैलों के ऊपर टटोलते हुए एक आराम देह जगह पर बैठ गया। एक थैले का मुँह ऊपर से खुला था। मुझको उत्सुकता हुई कि देखूं इसमें क्या है। मैंने सोचा था कि इन थैलों में कुछ खाने पीने का सामान होगा या अन्य कोई सैनिक सामग्री। पर मुझको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनमें राष्ट्रवादी सरकार के करेंसी नोट भरे थे। मैंने कहा कि जब सेना को खाद्य तथा अन्य आवश्यक वस्तुएं चाहिएं तो यह करेंसी नोट मोर्चे पर भेजने का क्या फायदा है।

चिर कालिक कामरेड ने उत्तर दिया, "ये कोमिन्तांग के लिए हैं।"

"कोमिन्तांग के लिए ? मेरी समझ में नहीं आया।"

"बात यह है कि हम जब किसी क्षेत्र को स्वतंत्र करा देते हैं तो वहां पहुंचते ही पुराने करेंसी नोट इकट्ठे कर लिया करते हैं और उनके स्थान में जनतंत्रीय नोट जारी कर दिया करते हैं।"

"पर उससे इन नोटों को मोर्चे पर भेजने का क्या सम्बन्ध है।"

"हम इन पुराने नोटों को इकट्ठा करके मोर्चे पर ले जाते हैं ताकि उनसे राष्ट्रवादी क्षेत्रों में चोर बाजार से सामान खरीदा जा सके। ज्यों ज्यों शत्रु का प्रशासनिक क्षेत्र घटता जाता है त्यों त्यों वहां नोटों की संख्या बढ़ती जाती है। इस प्रकार यदि हमको सामान मिले और राष्ट्रवादियों को मुद्रास्फीति तो इससे हमारा काम आसान हो जाता है। इतनी सी बात है, समझे ?"

"और धूर्तता की भी इसमें क्या कमी है" मैं अपने मन ही मन सोचने लगा। लगभग दस मिनट बाद ट्रक रुक गया। ड्राइवर कूदा और पास के एक फार्म से दो बाल्टी पानी ले आया। अब ड्राइवर ने गाड़ी के पहिए और मोटर को धोना शुरू कर दिया। हर दस पन्द्रह मिनट के पश्चात् इसी प्रक्रिया की पुनरावृत्ति होने लगी। हम पैदल चलते हुए जितने समय में जितना सफ़र तै कर चुके थे अब ट्रक में बैठकर उतने समय में उतना नहीं कर सके।

"बड़े आश्चर्य की बात है कि ट्रक इतनी मंथर गति से चल रहा है ?"

"तो क्या आप ने किसी से कहीं भेंट करने का समय नियत कर रखा है जो आप इतनी जल्दी में हैं।" उसने धिक्कारते हुए कहा।

"नहीं तो मैं तो सिर्फ़ जानना ही चाहता था।"

"यह ट्रक सोवियट सरकार की ओर से चीनी जनता को विशेष उपहार के रूप में मिला है।"

"तो क्या यही कारण है कि इस ट्रक को हर दस मिनट के बाद ड्राइवर को धोना पड़ता है ?" मैंने उपहास करते हुए कहा।

"क्या तुम समझते हो कि इस प्रकार तुम अपने वाक्चातुर्य का प्रमाण दे रहे हो ? पैदल चलने का इरादा है क्या ?"

"नहीं, बिल्कुल नही; मेरा शंकासमाधान हो चुका है। जीवन में पहिली बार मैं एक रूसी ट्रक पर सवार हुआ हूँ; अपने बन्धु राष्ट्र के औद्योगिक

उत्पादन के विषय में यथा सम्भव जानकारी करने की इच्छा थी, बस !"

"मैं तुमको एक बात और बता दूं। ये ट्रक साइबेरिया के शीत कालिक जलवायु के लिए बने थे। मध्य चीन के मौसम में काम करने का इनको अभ्यास नहीं। यहां एंजिन और टायर बहुत जल्दी गरम हो जाते हैं—समझे !"

"हाँ, समझ गया।"

"यद्यपि ये ट्रक उतने अच्छे नहीं चलते जितना कि उनको चलना चाहिए हमको इनके लिए अपने बड़े बन्धु के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए क्योंकि ये सोवियट रूस की मैत्री के प्रतीक हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ न होने से तो कुछ होना अच्छा ही है। अपना भोदूपन छोड़ो और निश्चित होकर बैठो।"

उस दिन रात को नौ बजे हम जेतसई नामक गांव में घुसे। वहां कूच के और लोग पहले ही से मौजूद थे। हममें से जो लोग ट्रकों में बैठ कर आए थे उनको अप्रगतिशील होने की आलोचना सुननी पड़ी। अपना प्रगति-प्रेम सिद्ध करने के लिए हमने स्वेच्छा से प्रतिज्ञा करली कि जब तक अनिवार्य ही न हो जाए हम लोग ट्रकों का प्रयोग न करेंगे।"

अगले दिन अप्रगतिशील व्यक्यिों की संख्या दुगनी हो गई। अब कई आन्दोलनकारियों का भी यह मत हो गया कि कभी कभी अप्रगतिशील होना भी बुरी बात नहीं। चौथे दिन शाम को हम लोगों के सिनयांग पहुंचने तक हमारी टुकड़ी के प्राय: सभी लोग उन रेंगती हुई, लड़खड़ाती ट्रकों पर सवार हो चुके थे।

× × ×

हमारे चीफ़ स्टाफ़ अफ़सर अपने आपको रूस के अमरीका आलोचक ईलिया एहरनबर्ग नामक पत्रकार का चीनी संस्करण समझते थे। उनके पास दो चित्र सदा ही देखने को मिलते थे—एक चित्र ईलिया एहरनबर्ग का था जिसमें रूसी पत्रकार को समुद्र किनारे खड़े पाइप पीते हुए दिखाया गया था; दूसरा चित्र उनका अपना था, जिसमें उनको स्वयं समुद्र के किनारे खड़े

पारस्परिक सम्बन्ध को शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति का साधन मात्र समझा जाता था। आगे चलकर तो कुछ चिरकालिक कामरेड इस प्रकार के सम्बन्धों को भी निरी उच्छृंखलता ही समझने लगे थे।

किन्तु विवाह के विषय को लेकर संघ में दो प्रकार के विचार उत्पन्न हो गये थे। इसलिये उन दोनों में सामंजस्य स्थापित करने के प्रयासं में संघ ने 'पति' और 'पत्नी' शब्दों ही को उड़ा दिया था। दोनों ही शब्द उसकी दृष्टि में सामन्तशाही युग के प्रतीक थे। अब पति पत्नी जैसा सम्बन्ध रखने वाले स्त्री पुरुषों के लिये 'प्रेमी' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा था। किन्तु पुराने समाज में पति पत्नी का जो कर्त्तव्य समझा था, जैसे संतानोत्पति तथा पारिवारिक जीवन, उसको भी तिलांजली दे दी गई थी। अब संघ के आदेशानुसार विवाह-व्यवस्था का महत्व घटते-घटते यह रह गया था कि दो स्त्री पुरुष यदा-कदा सहवास कर लिया करें। इसके अतिरिक्त समय में दो 'प्रेमी' एक साथ नहीं रह पाते थे। क्योंकि अब उनका एक मात्र कर्तव्य क्रांति के लिए ही जीना, क्रांति के लिये ही कार्य करना, और क्रांति के लिये ही मरना रह गया था।

कुछ शिक्षित बालायें अपने राजनैतिक आदर्शों से अभिप्रेरित होकर अपने क्रांतिकारी स्वर्ग की खोज में येनान जा पहुंचीं थीं। अपने जागरण के आरम्भिक काल में उनको ऐसे चिरकालिक कामरेडों से विवाह करना पड़ा क्योंकि संघ का आग्रह था कि जो लोग क्रांति की सेवा करते करते विशिष्ट स्थान एवं महत्व प्राप्त कर चुके हैं उनको ऐसा पुरस्कार मिलना ही चाहिये। यह सौभाग्य पार्टी के उच्चस्तर के व्यक्तियों ही को प्राप्त था। इन कामरेडों में से अधिकांश व्यक्ति किसान मजदूर वर्ग के थे, और प्रायः सभी आयु में उन बालाओं के मुकाबले में बूढ़े थे जिनको उनके साथ विवाह बन्धन में जकड़ा गया। उस क्षेत्र की देहाती स्त्रियों को भी इसी प्रकार 'प्रेमी' बनने को फुसला लिया गया। यदि आरम्भ में वैवाहिक जीवन की दृष्टि से उनको निराशा हुई तो आगे चलकर इतना संतोष तो अवश्य हुआ कि उनके पुरुष-प्रेमी अब संघ में इतने ऊंचे पदों पर जा पहुंचे हैं।

जिस समय हम लोग क्रांति में सम्मिलित हुए उस समय भी संघ में

स्त्रियों का अभाव था। इसलिये नवागन्तुको में मौन रूप से परस्पर यह समझौता सा हो गया था कि वे विवाह को अशिष्टतात्मक एवं अरुचिकर व्यवस्था मान लें। उस क्रांतिकारी स्वर्ग में, हम रसोई के धुएं और बच्चों के कोलाहल एवं चीत्कार से मुक्त हो गये। क्या हमारे लिए कृतज्ञ होने का यह पर्याप्त कारण न था? नवागन्तुकों में से यदि कोई व्यक्ति स्थायी या अस्थायी रूप से किसी का 'प्रेमी' हो जाता था तो अनुशासन भंग करने के आरोप में वह हम सब की आलोचना का भागी बनता था। मैंने इसी आशय की एक दो बातें अपने चीनी ईलिया एहरनबर्ग के सामने रखी और उनका मत पूछा। उन्होंने बताया कि "संघ में स्त्री सदस्यों के प्रति पुरुष सदस्यों जैसा ही व्यवहार रखा जाता है। अन्तर है तो केवल यह कि उनके साथ कभी-कभी सहवास कर लिया जाता है। हमारे संघ में जो 'प्रेमी' है वे कामरेड पहिले है, और 'प्रेमी' बाद में। इसके अतिरिक्त यदि किसी की कोई भावना है या कोई किसी के प्रति व्यक्तिगत लगाव रखता है तो उसको क्रांति-विरोधी ही कहा जायगा क्योंकि इस प्रकार की भावनाओं और सम्बन्धों में क्रांति को गौण स्थान देने का अदम्य लालच सन्निहित रहता है। वर्ग-संघर्ष के विश्वास को क्षण भर के लिए छोड़ देना भी अनुशासन को भंग करना है। हमको तो सदा सम्पत्तिविहीन वर्ग के दृष्टिकोण ही को दृढ़ बनाते रहना है; सही श्रमिक धारणाओं को पालना है, और उदारता-विरोधी विचारों को पोसना है। 'प्रेम' के विषय में सही धारणा वही है जो निश्चित विचारधारा से मेल खाती हो और जिसका आधार यह विश्वास हो कि प्रत्येक बात में 'संघ' ही प्रधान है। वह पुरानी परम्परा जिसके अन्तर्गत धनिक पुरुष धनिक परिवार की और निर्धन पुरुष निर्धन परिवार की स्त्री ही से विवाह करता था अनैतिक सामन्तशाही समाज की विशेषता थी; साथ ही पुराने समाज में पु ष की योग्यता और स्त्री की सुन्दरता सराहने की जो प्रवृत्ति पाई जाती थी, वह व्यर्थ की बकवास थी। आज तो प्रत्येक क्षेत्र में, विशेषतः विवाह का जहां तक सम्बन्ध है, संघ ही का निर्णय सर्वोपरि है।"

मैंने तनिक धृष्टता की और पूछा कि "क्या वास्तव में आप ऐसी अनर्गल बातों पर विश्वास रखते हैं? वह तनिक खाँसकर और विनम्रता दिखाते हुए बोले "मुझसे ऐसा प्रश्न करना तुम्हारी भूल है।" इस पर मैंने और भी बड़ी धृष्टता करदी और कह बैठा कि "ऐसा लगता है जैसे कि आप ऐसे

न्यायाधीश हैं जिनको दण्ड-विधान की धारायें, उपधारायें कण्ठस्थ हों, और जो उनको सावधानी और कृत्रिम आवेश के साथ दोहराना भर जानता हो। यह सुनकर वह मुस्कराये और बोले कि "मुझको अपनी भाषण कला को तनिक सुधारना पड़ेगा।" अब वह अधिक मैत्रीपूर्ण दिखाई दिये और पूछने लगे कि "क्या पुराने समाज में भी प्रेमी-प्रेमिकायें हुआ करते थे ?" जब मैंने इनकार किया तो यह सुनकर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ।

"मेरी भी एक प्रेमी है," उन्होंने बहुत ही धीमे स्वर में मुझसे कहा। कुछ देर के लिए हम दोनों ही मौन हो गये और उस निस्तब्धता में हमको झोंपड़ी के भीतर सोये हुए व्यक्तियों के भारी सांस उच्छ्वास की ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। हम खुले द्वार-मार्ग में बैठे थे। व्योम में चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण आभा बखेर रहा था; प्रकाशपुंज झोंपड़ी में उमड़ पड़ रहा था; बाहर दृष्टि डाली तो सारा गांव और बाहर का मैदान उसकी हल्की नीली-रजत रश्मियों मे भरा दिखाई दिया। सारा दृश्य बड़ा ही शांतिपूर्ण था। "उसका चित्र देखना चाहते हो ?" उन्होंने झेंपते हुए मुझसे पूछा। उन्होंने अपनी सामने की जेब से एक छोटी सी किताब निकाली और उस किताब में से एक चित्र निकालकर हम लोगों की ओर बढ़ा दिया। उनकी 'प्रेमी' वास्तव में बड़ी शोभायुक्त सुन्दरी थी। "क्या सुन्दर नहीं है वह ? मुझको उसके साथ रहने के बहुत अवसर नहीं मिले। काम के कारण मुझको सारे चीन में इधर से उधर घूमते रहना पड़ता है। जब मैं उसको तुंगपेई में जहां वह एक समाचारपत्र में काम करती थी मिला था, तब भी मुझको और उसको आपस में बातें करने और प्रेम करने का बहुत ही थोड़ा अवसर मिल सका था। हो सकता है, एक दिन ऐसा भी होगा जब हमारा भी अपना कोई घर और संभवतः मृदुल परिवार होगा; हो सकता है ऐसा भी एक दिन आयेगा, जब हम भूल जायेंगे—इन सब बातों को ! जब तक वह दिन नहीं आता तब तक क्रांति ही में रत रहना होगा।"

तब उन्होंने हमको एक छोटी सी घटना सुनाई जो गत जापान विरोधी युद्ध के दिनों में येनान में हुई थी। चेकियांग विश्वविद्यालय की एक छात्रा कम्युनिस्टों के आदर्श-पूर्ण क्रांति-कारी प्रचार से इतनी प्रभावित हो गई थी कि उसने विश्वविद्यालय को छोड़ दिया था और नाना प्रकार की ठोकरें खाती और

मुसीबतें सहतीं येनान नामक क्रांतिकारी स्वर्ग में पहुंच गई थी। कुछ दिन पश्चात् ही उसको एक चिरकालिक कामरेड से मिला दिया गया। संघ ने निर्णय किया कि उसी से उसका विवाह होना चाहिये। संघ का निश्चय था, इसलिए इस कालिज की छात्रा के लिए शिरोधार्य था। मन में उसके इस वृद्ध गंवार के लिए अरुचि थी, किन्तु उसके मन में इतना सुदृढ़ क्रांति-प्रेम था कि उसको दबा गई। उनके प्रेम-पट्टे का एक आदेश यह था कि वे सप्ताह में सात दिन संघ के लिए कार्य करते रहे और शनिवार को शाम के समय उस सैकड़ों कन्दराओं में से किसी एक में जिनमें उन दिनों जन साधारण को रहना पड़ता था वे प्रेम कर लिया करें। उस चिरकालिक गंवार कामरेड के लिए प्रेम का केवल एक ही अर्थ था, जब वह पूरा हो जाता था, वह तुरंत अपने आपको निद्रादेवी की गोद के हवाले कर लिया करता था। बेचारी यह कालिज में पढ़ी यौवना अभी तक विवाह और प्रेम के विषय में बहुत सी पुरानी धारणाओं को अपने मन में घर दिए हुए थी; इसलिए प्रत्येक शनिवार उसके लिए अत्यन्त असंतोषजनक एवं अप्रिय दुर्दिन दिखाई देने लगा।

एक शनिवार को जब शाम के समय वह अपनी कन्द्रा की ओर जा रही थी तो उसको एक सोते को पार करने के लिए पुल पर से होकर जाना पड़ा। आकाश में चन्द्रमा अपनी छटा लुटा रहा था और अपने सौन्दर्य-सम्मोहन को चहुं ओर फैला रहा था; चारों ओर फैले पड़े खेत बड़े ही सुन्दर दिखाई दे रहे थे। अनायास ही उसको अपना अतीत याद आने लगा। उसके आँखों में आंसू उमड़ आए और वह अपनी साम्प्रतिक अधोगति की अतीत से तुलना करने लगी। इतना ही नहीं; भविष्य उसको वर्तमान से भी अधिक भयंकर दिखाई देने लगा। वह अपनी कन्द्रा में गई जहां पहुंच कर उसने अपने प्रेमी से सैर को चलने का अनुरोध किया। उसको आशा थी कि शायद छिटकी हुई चांदनी उसके मन को पिघला सके और वह वास्तविक प्रेमी में परिवर्तित हो सके।

"किस लिए तुम सैर के लिए जाना चाहती हो?" उसने चिढ़ कर उस युवती से पूछा। मैं निरन्तर सप्ताह भर काम करता रहता हूं, जिस रात को मुझको कुछ मनोरंजन और निद्रा मिलने की आशा है, उसी रात को तुमने सैर की रट लगानी शुरू कर दी।"

"पर मैं तो तुमको चन्द्रमा दिखाना चाहती हूं," उस युवती ने किसी तरह अपने आंसुओं को रोकते हुए कहा ।

"जहन्नुम में जाये तुम्हारा चांद, यह खल की भेली की तरह ही तो चौकोर है । छोड़ो इन मूर्खतापूर्ण बातों को और जो बुद्धिमानी की बात कर सकती हो करो ।"

प्रेम के ढोंग का शीघ्र ही भण्डाफोड़ हो गया। गंवार भाई कुछ क्षण पश्चात् ही पुनः निद्रा की गोद में चले गए और कालिज की वह निरीह छात्रा रात भर बैठी हुई रोती रही । प्रातःकाल होने से कुछ समय पूर्व वह उठी और निम्न पंक्तियों का एक संदेश अपने प्रेमी के लिए छोड़ गई :

"मैंने किया व्याह उससे जो नहीं जानता प्यार क्या है ।
उसके लिए चन्द्रमा खल की एक चौकोर टिकिया है ।
मुझको तुम्हारे शनीचर से अब नहीं सरोकार,
प्रकृति प्रदत्त बसन्त से हैं अब मेरा प्यार ;
जो हजार अशर्फियों से कहीं बढ़िया है ।"

चिन्र कालिक कामरेड ने संघ से शिकायत की और उक्त युवती को दण्ड दिये जाने की प्रार्थना की । किन्तु संघ के भरसक प्रयत्न करने पर भी वह अपने प्रेमी के पास वापिस जाने को तैयार न हुई । अन्त में यह मामला स्वयं अध्यक्ष माओ के सामने पेश किया गया—संभवतः ऐसे ही बीसियों और मामले भी इस समय उनके सामने थे । कहीं क्रांति की सेविकाओं में भावात्मक असंतोष न फैल जाय और पुरुष-सहवास की भूख की वे शिकार न बन जांय, इसलिए स्वयं अध्यक्ष माओ ने गंवार भाई की ओर से उक्त कालिज युवती के पास निम्न पंक्तियां लिख भेजीं :

"वसंत पुष्प और हेमंत चन्द्रमा की
चाह है कोरी भावुकता,
व्योम और वसुंधरा ह,
दो सजी-धजी चौकोर टिकिया,

सर्दी से कांपता हे गात जब तो
पुष्प औ' चन्द्र ढक सकते हैं क्या तेरा तन
पेट में धंधकती हो जब क्षुधा ज्वाला बन
तो अर्शाफियों से है अच्छी खल की ही टिकिया''

× × ×

जब हम चिकुंग पर्वत के निकटस्थ जिंग टियेन नामक गांव में पहुंचे तो हमको पता चल गया कि हमारी यात्रा का अभीष्ट वुहान नगर है। उस समय हमारी संवाददाता टोली को छोटी छोटी टुकड़ियों में विभक्त करने की आज्ञा मिली। हम में से चौबीस व्यक्तियों को विभिन्न सैनिक टुकड़ियों के साथ काम करने को भेज दिया गया। मझ समेत आठ व्यक्तियों को चीनी ईलिया एहरन बर्ग के साथ वुहान के स्वतंत्र हो जाने तक उक्त जिंग टियेन नामक गांव में ही ठहरे रहने की आज्ञा हुई। मुझको यह जान कर प्रसन्नता हुई कि मुझको उन आठ व्यक्तियों में सम्मिलित कर लिया गया है और यह कि उक्त नगर पर नई सरकार की स्थापना होने के पश्चात् हमको हैडक्वार्टर में काम करना होगा। हम में से पांच व्यक्ति कुछ दिनों पहले ही पार्टी के सदस्य बना लिये गए थे। सदस्य बननें से पहले वे कूच के समय एक टुकड़ी में आंदोलनकारियों का काम करते आये थे। हमारी इस नई टोली में येनचिंग विश्वविद्यालय की दो लड़कियां और मैं ही ऐसे व्यक्ति थे जिनको जनसाधारण कहा जा सकता था।

वुहान के स्वातंत्र्य की प्रतीक्षा में जिंग टियेन में रहने के दिनों में हमको बारह ऐसे नियम पढ़ने पड़े, जिनके अनुसार नगर में प्रवेश करने और बस जाने के पश्चात् हमारा अनुशासन होना था। ये नियम पीत सागर सेना के अध्यक्ष की ओर से जारी किए गए थे जो इस समय वुहान के स्वातन्त्र्य संग्राम में जुटे हुए थे। एक नियम के अनुसार सेना और पार्टी के प्रत्येक सदस्य को देशी विदेशी समाचारपत्रों के संवाददाताओं से बातचीत करना मना था : उस समय एक उच्च सैनिक अधिकारी के विषय में यह चर्चा सुनी जाती थी कि उसने पीपिंग के स्वतन्त्र होने पर नगर के विषय में समाचार पत्रों को कुछ व्यक्तिगत बातें बता दी थीं। उन बातों का सैनिक या राजनैतिक मामलों से कोई सम्बन्ध न था। तुरन्त ही उस

बेचारे को अपनी "असंगत वक्तृता" के कारण तीव्र आलोचना और डाट फटकार का शिकार बनना पड़ा था । इसी प्रकार शंघाई के वर्तमान मेयर जनरल चेन ली की भी आलोचना की गई— उनके ऊपर भी "असंगत वक्तृता" का ही आरोप था । अब यह वक्तृता-निषेध सारे संघ पर लागू हो गया ।

एक दूसरा नियम था जिसकी मेरे मन पर बड़ी गहरी छाप पड़ी । उसमें कहा गया था "विदेशियों की रक्षा करो, उनका अनादर न करो । जो विदेशी संघ की आज्ञाओं से संतुष्ट हों उन विदेशियों के व्यक्तित्व का आदर करो और उनके प्रति विनम्रता का व्यवहार करो, किन्तु जो व्यक्ति खुले आम कानून का उल्लंघन करे या ध्वंसात्मक आचरण करे उनको गिरफ्तार करो ।" इन नियमों के विषय में जो वादविवाद हुए उनके दौरान में एक बार किसी ने यह पूछा कि क्या विदेशियों की रक्षा करने के आदेश का केवल यही अभिप्राय है कि उनका अनादर न किया जाय । एक दूसरे व्यक्ति ने पूछा कि व्यक्तित्व और विनम्रता का सही अर्थ क्या है । हम लोगों ने इन दोनों शब्दों को इतनी देर से नहीं सुना था कि अब वे हमको नये शब्द दिखाई देने लगे थे ।

वुहान में पहुंचने के पश्चात् हमारे रहन सहन पर भविष्य में जो प्रतिबन्ध लगने वाले थे उनसे मुझको बड़ी निराशा हुई । हम न तो सड़क पर अकेले चल सकते थे, न वुहान के किसी नागरिक से बात कर सकते थे और न ही किसी मित्र से मिलने जा सकते थे और यदि ड्यूटी के समय कोई मित्र सड़क पर दिखाई दे जाय तो उससे अकेले बातचीत करने की भी अनुमति न थी । सार्वजनिक भोजनालयों में भोजन करने पर भीं प्रतिबन्ध था । वुहान में मुझको कैम्प में खराब चावल खाकर ही जीवन व्यतीत करना होगा इस आशंका से मैं कांपने लगा था । कई दिन तक हम इन नियमों का अध्ययन करते रहे और उनको हमें कण्ठस्थ करा दिया गया । अपनी मीटिंगों में बड़ी बारीकी से इस पर विचार-विमर्श किया—इस डर से कि कहीं उनको कार्यान्वित करने में भूल न हो जाए ।

एक दिन दो आंदोलनकारियों ने एक समाचार पत्र में से एक लेख पढ़कर

सुनाया। इस लेख में उन सैनिकों के अनुशासन की प्रशंसा की गई थी जिन्होंने जनसाधारण के घरों की सफाई के आंदोलन में भाग लिया था। कहीं अपने प्रगति-प्रेम में हम उनसे पीछे न रह जाएं, उन दोनों आंदोलनकारियों ने हमसे आग्रह किया कि हम भी वैसा ही करें। उस दिन दोपहर बाद हम आठों व्यक्ति झाड़, कुदाल और झाड़नों से सुसज्जित होकर एक ग्रामीण के सहन में जा धमके। इरादा हमारा यह था कि हम जनसाधारण को अपने घरों की सफाई करने में सहायता पहुंचायें। दुर्भाग्य से यह ग्रामीण और उसका परिवार अभी जागृत नहीं हो पाए थे। वे लोग दौड़ कर अपने घर में घुस गए और दरवाजों और खिड़कियों पर ताले लगा लिए। हमको उनके आतंकित होने की चिन्ता न थी। हम अपना काम करते ही रहे। जो सूखी सड़ी घास और राख, टूटी फ़ूटी ईंटें, और पुराने चिथड़े इधर उधर पड़े हुए थे, उनको तेजी से एकत्रित कर लिया गया। हम इस कूड़े करकट को पास के एक नाले में फेकने ही वाले थे कि एक बुढ़िया ने अपने घर की एक खिड़की खोली और घबड़ाई हुई आवाज में चिल्ला कर कहने लगी। "अरे तुम···तुम इन बेकार चीज़ो का क्या करोगे ?" एक आंदोलनकारी ने बड़ी प्रसन्न मुद्रा से अपना हाथ हिलाकर उत्तर दिया, "हमको इनकी कोई जरूरत नहीं, हम जानते हैं कि ये बेकार हैं। हम तो उनको बाहर फिकवा देने में ही आप लोगों की सहायता करना चाहते हैं।" हम बड़े आनन्दपूर्वक नाले में कूड़ा करकट फेंकते जा रहे थे। वह बुढ़िया क्या कहती है इसकी हमको चिन्ता न थी।

जब हम वापस लौटे तो आन्दोलनकारियों ने हमारे भंडार अधिकारी को अपनी कार्यवाही का पूरा पूरा विवरण दे दिया। हमको आशा थी कि इस प्रगतिशीलता की अवश्य प्रशंसा की जाएगी। वह हमारी ओर ऐसे देखने लगा जैसे उसे हमारी बात पर विश्वास ही न हो और तब कुछ बड़बड़ाता हुआ कहने लगा, "तुम भी निरे लाल भुजक्कड़ हो, मैं पिछले दस वर्ष से क्रांति के लिए काम करता आया हूँ। मैंने जनसाधारण के घरों की सफ़ाई करने की जैसी मूर्खतापूर्ण बात कभी नहीं सुनी। पुराने समय में हम क्रांति के लिए बन्दूकों और संगीनों से लड़ा करते थे। तुम कैसे कामरेड हो जो यह समझ बैठे हो कि अपने प्रगतिशील विचारों झाड़ुओं और झाड़नों से ही जनता को आतंकित कर दोगे। वास्तव में सृष्टि, उल्टी होती नज़र आ रही है।"

भंडार अधिकारी क्रोध में आए और एक ओर खिसक गए । एक आन्दोलनकारी ने मुझको सम्बोधित करते हुए कहा, "इसकी बात पर ध्यान न दो, यह औंधी खोपड़ी का आदमी है ।"

किन्तु शाम के समय जो मीटिंग हुई उसमें चिरकालिक कामरेडों की उपस्थिति में इस घटना पर वाद-विवाद किया गया । उन्होंने हमारी आलोचना की कि हमने गांव वालों की मूल्यवान वस्तुओं को व्यर्थ ही गंवा दिया । सूखी सड़ी घास और राख से वे अपने कपड़े रंगने का काम ले सकते थे । सहन में पड़ी प्रत्येक वस्तु किसी न किसी काम आ सकती थी । यह कौनसी बुद्धिमानी की बात थी कि हमने उसे निरा कूड़ा करकट ही समझा । आंदोलनकारी खामोश बैठे थे । जिस समय यह स्पष्टीकरण किया जा रहा था उनके चेहरे मुरझाए हुए थे । कुछ देर पश्चात् उनमें से एक बोला, "अध्यक्ष माओ ने ठीक ही कहा था कि हम शिक्षित व्यक्तियों की क्रांति के लिए कोई विशेष उपयोगिता नहीं है ।"

सातवां परिच्छेद

स्वर्ग में विग्रह

एक दिन हमने सुना कि वुहान को भी मुक्त कर लिया गया है। हमारे चीनी ईलिया एहरनवर्ग ने इस घटना को लेखनीबद्ध करना प्रारम्भ कर दिया और अन्य हम सब व्यक्ति इस विजय के उपलक्ष में एक सभा का आयोजन करने में लग गए। वुहान के स्वातंत्र्य के आठ दिन पश्चात् हम एक ऐसे टूटे फूटे ट्रक पर सवार होकर जिसमें बड़े बड़े सन्दूक रखे थे उस शहर में दाखिल हो गए। जिस समय हम शहर के बाहरी भाग में पहुंचे सूरज छुप रहा था और मेंह पड़ रहा था—मूसलाधार बारिश दिन भर पड़ती रही थी और अभी तक रुकी नहीं थी। हम काष्ठवत् ट्रक में बैठे रहे। अपने भीगे कपड़ों में बैठे हम अपने भाग्य के प्रति मलिन विचारों से व्यथित थे। ज्यों ज्यों हम सर्वथा निर्जन सड़कों पर आगे बढ़ते गए, त्यों त्यों हम निरुत्साहित होते गये। दो मास तक निरंतर पैदल चलते चलते हम प्राय: यह भूल से गए थे कि शहर कैसा होता है। तिस पर भी वुहान के दर्शन करके हमारे मन में उल्लास उत्पन्न नहीं हुआ।

हम शुएनकुंग होटल के सामने जाकर रुके। इस समय अस्थायी रूप से मध्य चीन में यह होटल ही नव चीन समाचार एजेंसी का मुख्य कार्यालय बना हुआ था और स्वातंत्र्य सरकार के अन्य कई कार्यालय भी वहीं स्थित थे। हम ट्रक से नीचे उतरे और अपने तन और वस्त्रों का पानी निचोड़ते हुए होटल में दाख़िल हुए। होटल की लाबी आदमियों से खचाखच भरी थी। कहीं शोर मच रहा था तो कहीं लोग तेजी से इधर उधर आ जा रहे थे। बाहर शहर में जो कुछ देखा था होटल उसका बिलकुल विपरीत चित्र बना हुआ था। होटल के एक बाबू को आज्ञा हुई कि वह हमको ऊपर ले जाए ताकि हम अपने भीगे कपड़े बदल सकें। जब हम लाबी के उस ओर के किनारे से गुज़रे तो हमको यह देख कर आश्चर्य हुआ कि शेष चौबीस जन-तंत्रीय संवाददाता एक बड़े आवेशपूर्ण वाद विवाद में संलग्न हैं। मलाया

का भूतपूर्व छात्र जो मेरा मित्र हो गया था उस समय भाषण दे रहा था और बड़े आवेश के साथ एक समाचार पत्र को हिला रहा था।

अपने कपड़े बदलने और कुछ गरम चाय पीने के पश्चात् हम नीचे उतरे और अपने सहयोगियों में जा मिले। वादविवाद छोटी टुकड़ी के किसी नायक को लेकर चल रहा था और ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी किसी बात से बहुत से संवाददाता रुष्ट हैं। हमको पता लगा कि वुहान के स्वतंत्र होने के तुरन्त पश्चात् ही नव चीन समाचार एजेंसी का मुख्य कार्यालय चेन चो से हटाकर वुहान ही ले आया गया था और जिस दिन हम आठ नवागंतुक वहां पहुंचे उसी दिन दोपहर के बाद चांग च्यांग डेली नामक सरकारी पत्र का पहला अंक निकाला गया था। इसके बाद हमको यह भी मालूम हुआ कि किसी छोटी टुकड़ी के एक नायक ने उन लेखों और प्रस्तावों में से कुछेक को जो हम लोगों ने दक्षिण यात्रा पर लिखे थे स्थानों और व्यक्तियों के नाम बदल कर अपने नाम से छाप दिया था, और इतना ही नहीं उनके लिए जो पुरस्कार मिलना था वह भी प्राप्त कर लिया था। जिन लोगों ने कल्पना की थी कि क्रांति स्वर्ग ही का दूसरा नाम है उनको यह विश्वास नहीं हो सकता था कि उस के कैम्प में ऐसी भ्रष्ट बात हो सकती है। यहां हमने जो कुछ देखा उससे ऐसा प्रतीत होता था मानों पुराने समाज का भूत बिना किसी के देखे हुए स्वर्ग में आ धमका है। कुछ आंदोलनकारियों ने इस लज्जाजनक कहानी को फैलने से रोकना चाहा, किन्तु मेरे मलय मित्र ने जनतंत्रीय प्रकाशन नियमों का अध्ययन कर रखा था और उसका यह विश्वास था कि उस भ्रष्ट नायक की करतूत का भंडा फोड़ करना उसका अधिकार है। चांग च्यांग डेली के अगले अंक में उसने एक छोटा सा आलोचनापूर्ण लेख लिख दिया जिस पर कुछ आन्दोलनकारियों ने उसकी निन्दा की और उससे घृणा करने लगे। चंद चांदी के टुकड़ों के लिये ऐसा भी क्या लालच, यह उनका कहना था।

होटल लाबी में जिस दूसरे व्यक्ति की आलोचना हुई वह ज़ेचुवान टुकड़ी का नायक था। उसके ऊपर तथा कथित पूंजीवादी आदतों के कारण विवाह करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। प्रकटतः इसी कारण वह असंतुष्ट था। उसने कामदेवता द्वारा प्रदत्त प्रवृत्तियों को संतुष्ट करने का कोई

और साधन ढूंढ निकाला जिसका निस्संदेह यह अर्थ लगाया गया कि वह संघ के निर्णय का उल्लंघन करने का यत्न कर रहा है । कुछ कामरेडों ने अपना यह कर्तव्य समझा कि धनिक वंश की कन्या के प्रति उसका जो झुकाव था उसकी ओर वे ध्यान आकृष्ट कराएं क्योंकि राजनीतिक दृष्टि से उसका ऐसा करना अस्पष्ट था । उसका उस धनिक वर्गीय बाला के प्रति आकृष्ट होना अथवा उसके प्रति चिंता प्रकट करना उसके कर्तव्य की परिधि के परे की बात थी । हमारे नायक ने उक्त आलोचना में लगाए गए अभि-योगों की सत्यता से इनकार किया और हमको चेतावनी दी कि हमको यह नहीं भूलना चाहिए कि वह दस साल से क्रांति की सेवा करता रहा है और इस कारण नए कामरेडों द्वारा की जाने वाली आलोचना से ऊपर है ।

सभा विसर्जित हुई पर मैं लाबी में ही रुका रहा और चांग च्यांग डेली नामक पत्र को पढ़ता रहा । उक्त अंक में हमारे चीनी ईलिया एहरनबर्ग द्वारा लिखित एक लम्बा लेख छपा था जिसका शीर्षक था 'दीप्तमान-सूर्य' और चन्द्रमा सदा के लिए जनता के हैं" । यह विचित्र संयोग की बात थी कि यही लेख मैं पीपिंग की मुक्ति के पश्चात् पीपल्स डेली नामक पत्र में पढ़ चुका था । अन्तर केवल यह था कि यहां वहां कुछ स्थानों और व्यक्तियों के नाम बदल दिए गए थे और कहीं कहीं कुछ नए वाक्य जोड़ दिए गए थे । उदाहरणार्थ पीपल्स डेली में जो लेख छपा था उसमें कहा गया था कि "विजयी लाल झंडा पीपिंग की तीन सहस्र वर्ष पुरानी ज़ू चिन दीवार पर गाड़ दिया गया।" अब उसके स्थान में यह वाक्य था "विजयी लाल झंडा वुहान की भव्यशाली चांगहाई दीवार पर गाड़ दिया गया ।"

मैं इस लेख को समाप्त ही करने वाला था कि लेखक महोदय मेरे पास आए और बोले "अच्छा आप मेरा लेख पढ़ रहे हैं ! कैसा लगा यह आपको ?"

मैंने सिर उठाया और कहा "बहुत अच्छा; पर यह तो वही लेख है जो 'पीपल्स डली' में पहिले ही प्रकाशित हो चुका था । हां एक दो परिवर्तन अवश्य कर दिए गए हैं ।"

"पर लेख तो दोनों ही अवसरों के लिए उपयुक्त है यह तो आप जानते ही हैं न ?" यह कह कर वह मुस्करा दिए । उधर उनको किसी ने आवाज दी थी इस लिये वह इस बहाने वहां से खिसक गए ।

कुछ दिन पश्चात् हमारे ऊपर देख रेख रखना उनके लिए संभव न रहा । अब वह सैनिक सरकार की ओर से संस्कृति और शिक्षा के उप मंत्री के उच्चतर पद को प्राप्त कर चुके थे । कई महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य थे और अनेक जनतंत्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधि । बाद में मंत्रियों की एक साधारण सभा में भाग लेने के लिए वह पीपिंग गए । पीपिंग जाने के लिए उन्होंने बड़ा लम्बा रास्ता चुना और शंघाई जाकर अपनी अमरीकन जीप के बदले में एक ब्यूक सीडान ले ली ।

वुहान का शासन प्रबंध करने के लिए जो अधिकारी आए वे स्टाफ़ अफ़सर थे और चार झुंडों में विभक्त थे । एक झुंड उत्तर चीन के शेनपेई क्षेत्र से आया था, दूसरा उत्तर-पूर्व चीन से, तीसरा मध्य चीन से । चौथे झुंड में दक्षिण जाने वाली टोली के स्टाफ़ अफ़सर ही थे जिनका नेतृत्व जनरल लिन पियाओ कर रहे थे । जब इन लोगों की वुहान में भीड़ लगने लगी तो उनके रहने के लिए होटलों, स्कूलों और दफ्तरों में जगह पाई जाने लगी । एक बड़ी विकट समस्या यह उत्पन्न हो गई थी कि जितने स्टाफ़ अफ़सर थे उतने पद नहीं थे । वुहान का शासन प्रबन्ध करने के लिए केवल एक झुंड के ही अफ़सर काफ़ी हो सकते थे । प्रत्येक झुंड का यही सुन्दर स्वप्न था कि किसी प्रकार हमको ही शासन संचालन का सौभाग्य प्राप्त हो । जब यह स्वप्न भंग हो गया तो विग्रह का श्रीगणेश हुआ । मध्य चीन से आने वाले अधिकारी घटनास्थल के निकट थे इसलिए स्वतन्त्रता के पश्चात् वे सहज ही अधिकांश पदों पर आरूढ़ हो गए थे और वे अपने स्थानों को दूसरों को देने के लिए बिल्कुल इच्छुक न थे । बड़े वादविवाद और गुप्त चालों के पश्चात् इस समस्या का एक हल निकाला गया । मध्य चीन के कुछ अधिकारियों ने अपने स्थान उत्तरपूर्व चीन से आने वाले अधिकारियों को देने की स्वीकृति दे दी । क्योंकि उत्तरपूर्व से आने वाले उक्त अधिकारियों की क्रांति के लिए अधिक सेवाएं नहीं-हैं ऐसा माना गया । लिन पियाओ के अधीनस्थ अधिकारियों में से कुछेक को कुछ दफ्तरों में भर दिया गया और शेष लोगों को सैनिकों की टुकड़ियों अथवा

भूमि सुधार टोलियों के साथ लगा दिया गया। उधर दक्षिण जाने वाली टोली के लिए तार द्वारा यह सूचना आ चुकी थी कि वे चेंचो ही में ठहर जाएं और अपना स्वाध्याय जारी रखें।

किसको कौन सा मकान मिले, कितना आराम प्राप्त हो और कितनी सुविधाएं दी जाएं इस विषय को लेकर स्टाफ़ अफ़सरों में कितने ही विग्रह हुए। किसी समय शासकों ने बहुत से युवकों को क्रांति को ऐसा स्वर्ग बता कर, जहां प्रत्येक को उन्नति करने का अवसर मिलेगा, अपनी ओर आकृष्ट किया था। अब उन युवकों की आशाओं पर तुषार पात हो चुका था। पर अब वे कर भी क्या सकते थे? निकल भागने का तो कोई अवसर न था। क्रांति का कैम्प उनके लिए भयंकर कारागार बन चुका था। शासक वर्ग नित्यप्रति उनकी आलोचना करता रहता था और साम्प्रतिक असंतोषजनक स्थिति का उन्हीं को जिम्मेदार ठहराता था। संघ को सर्वशक्तिमान भगवान समझने की उन्होंने भूल जो की थी। ऐसे अव्यावहारिक विचारों को अब छोड़ना होगा क्योंकि यह स्वल्प सम्पत्तिशाली वर्ग ही को शोभा देते हैं और इन विचारों के कारण उनकी अपनी प्रगति रुकी हुई है। "क्रान्ति के व्यवहार को समझो" यह अब नया नारा था। जब किसी को कोई निराशा होती थी तो उससे आग्रह किया जाता था कि वह उसको क्रांति का व्यवहार समझ कर स्वीकार कर ले।

यद्यपि नव चीन समाचार एजेंसी पर पीपिंग का नियंत्रण था, उसका संचालन चौथी सेना का प्रचार विभाग ही करता था। हममें से दो संवाददाता जिनका सम्बन्ध इस एजेंसी से था, शो एन कुंग से हट कर एक आफिस बिल्डिंग में चले गए और प्रचार सचिवालय के सम्पर्क में रहकर काम करने लगे। किन्तु शीघ्र ही एजेंसी और सचिवालय में विग्रह रहने लगा। एजेंसी के भीतर भी विभिन्न कार्यालयों में पारस्परिक संघर्ष चलने लगा, और स्वयं कार्यालय ही में एक ओर स्टाफ अफ़सरों और दूसरी ओर चिरकालिक कामरेडों और नए कामरेडों में झगड़ा रहने लगा। हम नवागंतुकों को जो बात विशेषतः खटकती थी, वह यह थी कि यद्यपि योग्यता होने के कारण चांग च्यांग डेली नामक पत्र के लिए रिपोर्टिंग का काम हमको करना पड़ता था, उसका श्रेय दूसरों को मिलता था।

चिरकालिक कामरेड प्रायः कुछ भी न करते थे क्योंकि वे निरक्षर भट्टाचार्य थे तिस पर भी रिपोर्ट और लेख उन्हीं के समझे जाते थे। ऐसी ही स्थिति प्रचार सचिवालय, ब्यूरो और सैनिक सरकार के अन्य विभागों में भी थी।

इन पारस्परिक संघर्षों की तुलना छापामारों की लड़ाई से की जा सकती थी, और छापामारी लड़ाई की परम्परा के अनुसार हमको निरंतर ही अपने कार्यालयों और क्वार्टरों को बदलते रहना पड़ता था। वुहान में ही मुझको अपने कार्यालय को आठ बार इधर से उधर उठाना पड़ा था। स्थानांतर करते रहने का प्रधान कारण काम करने की जगह साज सज्जा और सुविधाओं के विभाजन संतुलन को बनाए रखना था ताकि वे लोग जो क्रांति सेवा का पुण्य अर्जित कर चुके थे संतुष्ट रह सकें। जब बड़े-बड़े विषयों पर इस प्रक्रिया द्वारा संतुलन स्थापित हो जाया करता था तो बहुत से छोटे-छोटे झगड़े खड़े हो जाया करते थे जिससे संघ की कार्य कुशलता में विघ्न पड़ता ही रहता था। ऐसा लगता था जैसे कि संघ समुद्र का एक ऐसा किनारा था जिसको संघर्ष रूपी लहरें कभी आराम न लेने देती थीं।

छोटी छोटी बातों को लेकर जो बड़े बड़े झगड़े पैदा हो जाया करते थे। उनसे सबसे अधिक कष्ट होता था उस कामरेड को जिसके ऊपर स्थानान्तरण और यातायात का प्रबन्ध करने की ज़िम्मेदारी हुआ करती थी। वह किसी टुकड़ी के एक स्थान विशेष पर पहुंचने से पहले निवास अथवा कार्यालय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पहले पर्यवेक्षण करता, उसका मानचित्र तैयार करता। तब व्यक्ति विशेष के क्रांति सेवा को ध्यान में रख कर यह निश्चय करता था कि उसको इतना स्थान, इतना सामान और इतनी सुविधाएं उपलब्ध की जानी चाहिए। इतना ही करने से काम चल जाता ऐसी बात न थी; उसकी योजना पर तब देर तक वादविवाद भी होता था और उसमें एक बार, दो बार, तीन बार, चार बार यहां तक कि कभी कभी पांच पांच बार संशोधन किए जाते तब कहीं जाकर अन्तिम रूप से सबकी स्वीकृति मिलती। कुछ चिरकालिक कामरेड अपनी अतीत की क्रांति सेवा के उपलक्ष में अन्य निम्न कोटि के व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक अच्छी जीवनावस्थाओं की खोज करते थे। किन्तु उनकी इच्छा पूरी हो जाती तो उनसे

समानता का दावा करने वाले दूसरे कामरेडों की मांगों का तांता बंध जाता—क्योंकि वे भी सुख के उपभोग में दूसरों से पीछे नहीं रहना चाहते थे। किसका कितना बड़ा कमरा है, और उस कमरे में कितनी खिड़कियाँ है, इस विषय को लेकर सबसे अधिक झगड़ा हो जाया करता था। झगड़ों के कारणों में दूसरा नम्बर कमरों के परदों और फर्नीचर का होता था। यदि किसी रेजीमेंट के अफसर को स्प्रिंगदार मैट्रेस एक सोफ़ा और दो 'विकर' कुर्सियां मिल जातीं, तो दूसरे रेजीमेन्ट का अफ़सर जब तक ये ही सब चीजें न पा लेता, तब तक रूठा रहता, और संघ से समानता के व्यवहार का आग्रह करता रहता। कभी कभी इस प्रकार के विग्रह किसी के कमरे में कुछ सामान हटाये जाने पर भी सुलझ जाया करते थे।

एक दिन मैं एक चिरकालिक कामरेड से बातें करन लगा। वह अपने दफ्तर में हुई एक घटना पर बड़ा खिन्न हो रहा था। बात यह थी कि डिवीज़न के एक उपमंत्री को अपने कमरे में एक आइस बक्स मिल गया। किन्तु उसी के जैसे छः अन्य उपमंत्री थे; जब उनको इसका पता लगा तो उन्होंने संघ से समानता के व्यवहार की माँग की। अब चूंकि इस आइस बक्स के सात टुकड़े नहीं किए जा सकते थे और जिसके हिस्से में यह शुरू में आ गया था, वह इसको छोड़ने को तैयार न था, संघ को अन्य छः उपमंत्रियों के लिये भी एक-एक आइस बक्स खरीदना पड़ा। यह सौभाग्य की बात थी कि उस समय वुहान में एक विदेशी व्यापारी था जिसके यहां ये छः आइस बक्स मिल गये। यह व्यापारी अभी तक बुहान में इस आशा से टिका हुआ था कि संभवतः स्वातंत्र्य के पश्चात् उसका व्यापार फिर जम जाय। स्वातंत्र्य के आरंभिक दिनों में सभी प्रकार का कारोबार ढीला पड़ गया था। यह सौदागर अपनी दुकान बंद करने की सोच ही रहा था कि तब अचानक उसको छः आइस बक्सों का सरकारी आर्डर मिल गया। आर्डर पाया तो मानो उसने सुख पाया; अब उसने चार बक्स तो अपने गोदाम ही से निकालकर पेश कर दिये और शेष दो के लिए अपने दलाल के पास हांगकांग में तार भेज दिया। सातों ही उपमंत्रियों की सरकारी पैसे का इस प्रकार अपव्यय करने के लिए कड़ी आलोचना की गई; पर उनमें से किसी ने भी अपना आइस बक्स लौटाने की उदारता न दिखाई।

जिस चिरकालिक कामरेड ने मुझको यह कहानी सुनाई, वह अन्त में बड़ी कटुता के साथ कहने लगा, "जब हम लोग येनान के आस-पास छापामारी लड़ाई में लगे थे, उस समय यदि किसी को एक कम्बल मिलता था तो वह कभी उसका अकेले ही प्रयोग करने की बात तक भी न सोचता था। वह उसको दूसरे को अर्पित करता तो; दूसरा तीसरे को; अन्ततोगत्वा कम्बल ऐसे किसी कामरेड को मिल जाया करता था जो दुर्बल या घायल होता। किन्तु अब तो गंगा उल्टी बहने लगी है। अब हममें से तीन कामरेडों को कोई कम्बल मिल जाय तो हम में से एक उसके एक किनारे को पकड़ कर बैठ जाता है; तो दूसरा दूसरे किनारे को; यहां तक कि तीनों में गाली-गलौज और मारपीट होने की नौबत आ जाती है। अंत में कम्बल को तीन बराबर टुकड़ों में बांट कर ही दम लिया जाता है। जैसे कि एक तिहाई कम्बल से बड़ा कोई वरदान किसी को प्राप्त ही नहीं हो सकता।"

जन साधारण और सरकार के बीच भी विग्रह था। स्वातंत्र्य के दिनों में स्वयं हम लोगों से "चांग च्यांग डेली" के लिये ऐसे लेख लिखवाये गये थे जिनमें बताया गया था कि कहां किस कारखाने के मजदूरों ने अपने कारखाने और कहां किस स्कूल के छात्रों ने अपने स्कूल को क्रांति विरोधियों द्वारा ध्वंस होने से बचाया। जनता को यह दिखाने के लिए कि उनके क्षेत्र में स्वातंत्र्य सेना उन्हीं के निमंत्रण पर आई है, और मजदूर और छात्र तो पहिले ही से उसके आगमन की प्रतीक्षा में थे, और क्रांति चाहते थे इस प्रकार का प्रचार करना आवश्यक भी था। किन्तु बाद में हमको इस प्रकार के किसी लेख अथवा कहानी का प्रयोग करने की आज्ञा न रही। जनसाधारण ने तो, चाहे वह गांव में था या नगरों में, जनतंत्रीय करेंसी नोटों को स्वीकार करने से साफ़ इनकार कर दिया। व्यापारियों पर जो भारी कर लगाये जा रहे थे, वे उससे जी चुराने लगे थे। चोर बाजार में 'येन' नामक चांदी के सिक्कों की उत्तरोत्तर मांग बढ़ती जा रही थी। कुछ समय पहिले उसकी कीमत यदि जनतंत्रीय सरकार द्वारा ३५० इकाइयां निर्धारित की गई थी; तो चोर बाजार से उस चांदी के टुकड़े की १००० इकाइयां प्राप्त हो जाती थीं। इसके कारण जो मुद्रा विस्फीति हुई उससे जनसाधारण को बड़ा कष्ट सहना पडा।

अपनी "नवीन जनतंत्रता" (New Democracy) नामक पुस्तक में अध्यक्ष माओ ने लिखा है कि "अर्थशास्त्र का आधार राजनीति है; जिस प्रकार

की राजनीति होती है उसी प्रकार का अर्थशास्त्र बन जाया करता है।" किन्तु यह स्पष्ट ही था कि अब वुहान की आर्थिक स्थिति राजनीतिक नियत्रण से बाहर होती जा रही थी। इसके सामने कुछ समय के लिए तो शासक भी किंकर्तव्य विमूढ से होकर खडे रह गये थे।

अब नया शासक वर्ग जन साधारण को धूर्तो का गुट्ट मानने लगा। वुहान के शासन प्रबन्ध चलाने वालों के कानों मे मानो चहु ओर से चादी के सिक्को ही की झनकार आती रहती थी। पर वे चोर बाजारी करते हुए किसी को भी न पकड पाये। अत मे कई सस्कृति-टोलियो को इस पाप का पता लगाने का काम सौपा गया। उन्होने अपने ही कुछ कामरेडों को हथकडिया पहिना कर नगर की सडकों पर इधर-उधर घुमाया ताकि जनता मे यह विश्वास पैदा किया जा सके कि वास्तव मे सरकार कुछ अपराधियो को पकड सकी है। उसके जलूस के आगे एक बडा लाल झण्डा होता, और पीछे "पापी" अपने चोर बाजारी के "दुष्कृत्यो" पर खेद प्रकट करते चलते। बन्दूकों से सुसज्जित पहरेदार निम्न सरकारी नारा बुलन्द करते जाते · "चादी के येन को हम कभी न लेगे।" सडको पर जहा तहा मजदूरो और छात्रो की टोलिया नाच और स्वांग रचती चलती उनकी इस गति विधि का एक मात्र उद्देश्य "चादी के येन" को स्वीकार करने के पाप का भंडा-फोड करना ही था। "चाग च्यांग ~~डेली~~" जनता द्वारा नई सरकार के प्रति इस प्रकार श्रद्धा प्रदर्शित करने पर कृतज्ञता एव प्रशसा प्रदर्शित करता रहता। यह खेद की बात थी कि इतना बड़ा प्रचार करने और डोंडी पीटे जाने के बाबजूद जनता जागरण से दूर ही पडी नजर आती, चादी के येन की चोर बाजार मे मांग बढती ही जाती थी। अब तक उसकी कीमत जनतत्रीय मुद्रा की १००० इकाइया थी, तो प्रचार और विजय दुदुभि के पश्चात् उसकी कीमत ३५०० तक पहुच गई।

मुझको एक अन्य कामरेड के साथ वुहान के अर्थ मत्री से भेट करने के लिये भेजा गया। मैंने उनसे निम्न प्रकार भेट प्रारम्भ की "ऐसा प्रतीत होता है कि जनसाधारण को कागजी मुद्रा पर कोई भरोसा नही रहा है। आपका इस स्थिति पर क्या मत है?"

मत्री महोदय ने उत्तर दिया, "पुरानी कागजी मुद्रा मे और जनतत्रीय

कागजी मुद्रा में मौलिक अंतर है। आज न केवल मुद्रा का प्रचलन ही पहिले की अपेक्षा बढ़ गया है; वरन् आज की मुद्रा में ऐसी संघर्षात्मक जीवट है जो पुरानी मुद्रा में कभी नहीं मिलती थी। दोनों मुद्राओं में परस्पर यही मौलिक भेद है।"

कुछ भी हो वुहान की जनता का कष्ट ज्यों का त्यों बना हुआ था।

आठवां परिच्छेद

अस्पताल

सघ के चिरकालिक कामरेड इतने वर्षो तक कन्दराओ और जगली पड़ावो मे रह चुके थे कि उनको नागरिक जीवन के विषय मे कुछ भी जानकारी न थी। वे लोग भी जो शहरो से आए थे नागरिक जीवन को प्राय विस्मृत कर चुके थे। पिछले दस-बीस वर्षो से क्रान्ति की सेवा करते रहने ही का यह परिणाम था। नगरो के प्रति इस समय जो विरोधात्मक व्यवहार था उनका बहुत कुछ श्रेय भी आरम्भिक दिनो के प्रचार को ही था। वर्षों से नगर विरोधी प्रचार करते और सुनते रहने के पश्चात् उनकी यह धारणा बन गई थी कि नगर वास्तव मे पाप और भ्रष्टाचार के स्थान है। अब जब कि स्वातन्त्र्य सम्पूर्णता प्राप्त करने को था और सघ को क्योकि अब बडे नगरो मे जाकर काम करना था यह आवश्यकता हुई कि पुराना रवैया बदला जाए। अब नगरो को स्वाध्याय का विषय बनाया गया और सघ की ओर से अपने अनुयायियो को आदेश दिया गया कि वे अपने आपको नागरिक जीवन के अनुरूप बनाए। किन्तु जिन कामरेडो के विचार और धारणाए छापामारी युद्ध की छाप पा चुके थे उनके लिए इस नीति परिवर्तन से बड़ी उलझन पैदा होगई। यह जान कर कि अब उनको बड़े बडे पदो पर रह कर शहरों का शासन प्रबन्ध करना होगा उनका सिर चक्कर सा खाने लगा। अनेक प्रकार की गल्तिया की गई। आर्थिक व्यवस्था बिगाड़ने से लेकर, कालीनो को कम्बलो की तरह ओढने और शौचालय के पात्रो को हाथ मु ह धोने के काम मे लाने तक, सभी प्रकार की भूले देखने मे आई। किन्तु नेताओं को इसकी चिन्ता नही थी, उनको चिन्ता केवल यह थी कि उनके अनुयायियो की क्रांति से आस्था न टूटे।

• •

जिन क्षेत्रो मे विशेषज्ञता की आवश्यकता थी वहाँ भी यही नीति बरती गई। औषधि के क्षेत्र मे इस पर जिस प्रकार अमल किया गया उसकी

मुझको आज भी सजीव स्मृति बनी हुई है। एक दिन मैं बीमार पड़ गया था जिसके कारण मुझको वुहान के एक अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। यह बड़ा अच्छा अस्पताल था और उसमें प्रायः सभी प्रकार के आवश्यक यंत्रादि मौजूद थे। अब उसको चलाने की जिम्मेदारी १६ चिरकालिक कामरेडों को सौंपी गई। एक सेना का प्रतिनिधि बना तो एक प्रबन्धक। दो डाक्टर थे और शेष १२ कामरेड स्टाफ अधिकारी कहलाते थे। अस्पताल के काम करने वाले डाक्टरों, नर्सों और अन्य कर्मचारियों की संख्या २३० थी। वे सब इन्हीं कामरेडों की आज्ञा पर चलते थे। उनको कामरेडों से अलग रखा जाता था; और उनका नाम अस्थायी कर्मचारी सूची में लिख दिया गया था। प्रतिक्रियावादी शिक्षा और प्रशिक्षण के कारण, उनकी निगरानी रखी जाने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि चारों ओर अनिश्चितता का वातावरण छा गया और अस्पताल की कार्यकुशलता छिन्न भिन्न होने लगी। उनका वेतन एक चांदी के येन का ६० प्रतिशत था। प्रशासक का मत था कि जनतंत्रीय सरकार की ओर से निर्धारित किया गया यह वेतन बिल्कुल उचित है। उनके मतानुसार तो चांदी के येन के लिये चलने वाली चोर बाजारी ही बस अनुचित थी।

मैंने सोचा कि चूंकि अस्पताल में कोई पहिचानता नहीं है, मैं उच्च श्रेणी का कामरेड ही क्यों न बन जाऊं और देखूं कि कहां तक उस ढोंग के सहारे आगे बढ़ा जा सकता है। मेरे अस्पताल में भरती होने के अगले दिन प्रशासक जो अपने से नीचे के लोगों को बड़ी डाट फटकार बताया करता था मुझसे मिलने आया। मैंने उसको बड़े अभद्र ढंग से संबोधित करते हुए कहा कि "किस नामाकूल व्यक्ति ने तुमको यह कह दिया है कि तुम अस्पताल चलाना जानते हो?" मेरी अभद्रता से अचम्भित होकर उसने अस्पताल की प्रवेश सूची पर निगाह डाली और मेरे नाम के आगे "नवचीन समाचार एजेंसी का संवाददाता" शब्द लिखे देखे। उसको मेरे जनतंत्रीय संवाददाता बनने की कहानी की पृष्ठभूमि न मालूम थी, इसलिए वह मेरे पद को देखकर बड़ा प्रभावित हुआ और सोचने लगा कि शायद मैं कोई उच्च श्रेणी का कामरेड हूं और यहां पूछताछ के लिये आ पहुंचा हूँ।

पहिले तो उसने मुझसे अस्पताल की असंतोषजनक कार्यपद्धति पर खेद

प्रकट किया। फिर उसने मुझको अपनी सफाई देनी शुरू की। उसने मुझको बताया कि पुराने स्वातन्त्र्य क्षेत्र में उसको एक छोटे से अस्पताल को ही चलाते रहने का अवसर प्राप्त हुआ था। पर उस अस्पताल में न तो कोई सामान था और न कोई उचित प्रशिक्षणयुक्त स्टाफ ही। उसकी सहायता करने के लिये उस अस्पताल में केवल दो ऐसे व्यक्ति थे जो अभी तक अपना प्रशिक्षण पूर्ण करने में लगे हुए थे। वुहान का यह अस्पताल वास्तव में उसकी क्षमता से वाहर की बात है---"यहां मैं कैसे अकेले २३० प्रतिक्रिया-वादियों और चार बड़े बड़े भण्डारों की देख भाल कर सकता हूं ?" उसने तब अपनी आवाज को धीमी करते हुए कहा कि "यहां तो मैं अपने १५ काम-रेडों के अलावा किसी का भी भरोसा नहीं कर सकता। इसीलिये मैंने फिर से सारी औषधियों की सूची तैयार करने की आज्ञा दी है, ताकि उनको तोड़ फोड़ से बचाया जा सके।" उसका अनुमान था कि यदि प्रतिदिन १४ घंटे काम किया जाय तो दो मास में यह कार्य सम्पादित किया जा सकता है। सबसे बड़ी उलझन उसकी राय में यह थी कि दो डाक्टर कामरेडों में से एक को छोड़कर किसी अन्य व्यक्ति को बड़े अस्पताल में काम करने का अनुभव न था; फिर जिसको इसका अनुभव प्राप्त था वह अपनी कुछ पुरानी समाजगत धारणाओं के कारण औषधियों की सूची बनाने को तैयार न था।

मैंने उच्च श्रेणी के कामरेडों के तर्ज से उसकी आलोचना की और कहा "क्रांति के वास्ते, इस काम के लिये जन-साधारण को जागृत एवं संचालित करो। यदि पुराने समाज में से कुछ ऐसे व्यक्ति मिल जांय जो जनसाधारण में से हों और डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त कर चुके हों तो उनको यह काम सौंपो। उनमें से कुछेक तो अवश्य ऐसे होंगे जिन पर उनकी प्रतिक्रियावादी शिक्षा के बावजूद भरोसा किया जा सकता है। जनसाधारण को जागृत एवं संचालित किये बिना और उसकी सहायता लिये बिना क्रांति की सेवा न हो सकेगी।" मैं उसको उपदेश देता ही गया, "औषधियों का रजिस्टर आदि तैयार करना साधारण काम है जो जन साधारण ही से लेना चाहिए। तुमको तो अस्पताल का प्रशासक होने के नाते किसी दूरदर्शितापूर्ण योजना ही पर अपना ध्यान केन्द्रीभूत करना चाहिये।" उसने सिर हिलाया और स्वीकार किया कि अब तक स्थिति पर उपयुक्त मनन न करने पर उसको खेद प्रकट करना चाहिये।

एक महिला कामरेड मुझ प्रभावशाली जनतंत्रीय संवाददाता के दर्शन करने के लिए आई। मैंने शिकायत की कि रात भर मुझको पानी नहीं मिला और रोगियों की सेवा शुश्रुसा का उपयुक्त प्रबन्ध नहीं है। "कामरेड" उसने मुझको सम्बोधित करते हुए कहा, " कुछ समय तक और इन सब बातों को सह लीजिए। कुछ दिनों ही में स्थिति सुधर जायगी। हम सब लोग औषधियों की सूची बनाने में इतने व्यस्त हैं और कुछ करने की बात सोच भी नहीं सकते। उस काम को पूरा कर लें तो सब बातें बड़ी ही सुगम हो जायेंगी।"

जब मैं घूमने फिरने लायक हुआ तो वह मुझको सूची बनाने का काम दिखाने के लिए औषधि भंडार में ले गई। कमरों में बड़े बड़े संदूक और छोटी बड़ी शीशियां भरी पड़ीं थी। जिस प्रकार कामरेड लोग सूचियां तयार कर रहे थे, उसको देख कर मैं समझ ही न पाया था कि हंसूं या रोऊं। किसी को यकीन हो या न हो, किन्तु मैंने अपनी आंखों से देखा कि कामरेड लोग बोतलों के लेबल उतार कर फेंकते जाते थे और औषधियों को बोतलों और रंग के हिसाब से महत्व और गौणता की पदवी देते जा रहे थे। उनके पास चार साइज की बोतलें थीं और पांच रंग की औषधियां थीं, अर्थात् लाल पीली नीली सफेद और काली। उन्होंने बड़ी आशा एवं आशंका भरी दृष्टि से जनतंत्रीय संवाददाता की ओर देखा। वे प्रशंसा अथवा सांत्वना की प्रतीक्षा में थे। मैंने उनकी बड़ी कठोर आलोचना की और उनसे कहा कि "आप लोग बोतलों के लेबल फाड़कर क्रांति ही का गला घोंट रहे हैं।"

प्रशासक बड़ी विनम्रता से मुझसे कहने लगा, "हम तो केवल साधारण स्थिति ही से अवगत होना चाहते हैं; बाद में उसको हम अधिक शुद्धता के साथ टीप टाप लेंगे।" उसके पश्चात् उसने मेरे कान में धीरे से कहा, "हमारी सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि हममें से कोई भी व्यक्ति अंग्रेजी नहीं पढ़ सकता। हमको बाईं ओर से दाईं ओर को लिखे गये लेबलों के विषय में पता ही नहीं लगता कि उनमें क्या लिखा है। एक कामरेड ने साम्प्रतिक सूची निर्माण विधि सुझा दी थी; पर मैंने नहीं। आप जानते हैं कि दस पांच बुद्धुओं में एक आध तो चतुर व्यक्ति भी मिल ही जाया करता है। हां, हां! विदेशी भाषाओं को समझने वाला केवल डाक्टर कामरेड है; पर वह हमसे

सहयोग नहीं कर रहा है। और वह भी तो केवल जर्मन और जापानी भाषा ही समझता है।"

संघ में सीखी वाक् पटुता का प्रयोग करके मैंने उनको लेबलों को दवाओं की बोतलों ही पर लगे रहने देने को रजामंद कर लिया। मुझको जितनी अंग्रेजी आती थी उसका प्रयोग करके जितनी सूची अंग्रेजी से चीनी भाषांतरित कर सकता था मैंने कीं। बाद में जब मैं अस्पताल छोड़कर बाहर आया तो मैंने चतुर्थ सेना के एक डाक्टर से अस्पताल की कल्पनातीत स्थिति का उल्लेख किया। "स्वाध्याय स्वाध्याय और स्वाध्याय", इन शब्दों के साथ उसने मुझको उत्तर देना शुरू किया, जिसकी मुझको तनिक भी आशा न थी। "स्वाध्याय से चाहे तो गंवार किसान भी डाक्टर बन सकता है। यदि जो कुछ तुम कह रहे हो सच है तो इसका मतलब केवल यही है कि इस समय अस्पताल की जिम्मेदारी जिन कामरेडों पर है, उनको स्वाध्याय का पूरा अवसर नहीं मिला। ज्यों ज्यों उनका स्वाध्याय बढ़ेगा स्थिति भी सुधरती जायगी। असल बात तो यह है कि जो डाक्टर बनते हैं, उनके विचार सही होने चाहियें।"

जब सूची निर्माण का समाचार उच्च श्रेणी कामरेडों को मिला तो वे अस्पताल के विषय में बड़े परेशान हुए। अब उन्होंने एक आज्ञा जारी कर दी जिसके अनुसार अस्पताल में काम करने वालों को प्रत्येक आपरेशन करने या महत्वपूर्ण औषधि का प्रयोग करने से पहिले उच्च श्रेणी कामरेडों की अनुमति लेना आवश्यक हो गया। किन्तु इससे स्थिति और भी बिगड़ गई। एक पथरी रोग का रोगी केवल इसलिए मर गया कि उसका आपरेशन करने की अनुमति समय पर न मिल सकी थी। अस्पताल की स्थिति की अनेक बार समीक्षा की गई और बहुत बार विचार विमर्श किया गया, किन्तु प्रशासक अपनी जगह से न हटाया जा सका क्योंकि पथरी के रोगी की मृत्यु को दुर्घटना घोषित कर दिया गया था।

जो चिरकालिक कामरेड डाक्टर औषधियों की सूची तैयार करने में सहयोग नहीं देता था, वही ऐसा व्यक्ति था जो रोगियों की बड़ी चिंता करता था। प्रति दिन प्रातः काल निश्चित समय पर वह मुझको देखने आता, मेरी

परीक्षा करता और मुझसे मेरी अवस्था के विषय में पूछताछ करता था। उसके पश्चात् वह दूसरे रोगियों के पास जाता और वहां भी ऐसा ही करता। बहुत दिनों में पहिली बार मुझको यह एक ऐसा चिरकालिक कामरेड मिला जो अपने सहमानवों के प्रति इतनी गहरी सहानुभूति रखता था। जिन १६ कामरेडों के हाथों में इस समय यह अस्पताल था, उनमें केवल वही शिक्षित वर्ग का सदस्य रह चुका था, और वही एक मात्र ऐसा व्यक्ति था जिसने वास्तव में डाक्टरी की शिक्षा पाई थी और जो रोग और रोगियों के विषय पर प्रतिगामी डाक्टरों से भी विचार बिमर्श करने में आना कानी न करता था। दूसरा कामरेड डाक्टर तो परचून की एक दुकान में बाबूगिरी करता था, और केवल "स्वाध्याय" द्वारा ही क्रांति का डाक्टर बन बैठा था।

प्रारम्भ में हमारे पारस्परिक सम्बन्ध केवल वैसे ही थे जैसे एक कामरेड के दूसरे कामरेड के साथ हुआ करते हैं। प्रशासक ने उससे कह छोड़ा था कि मैं चिरकालिक पार्टी सदस्य हूं और यह कि जब तक मैं वहां रहूं तब तक वह कोई ऐसी भूल न कर बैठे कि मुझको अपने उच्च श्रेणी सहयोगियों से उसकी रिपोर्ट करने का अवसर मिल जाय। डाक्टर को कुछ समय बाद ही पता लग गया कि मैं शिक्षित वर्ग का सदस्य हूं और इसलिये वह मेरी विशेष चिंता और परवाह करने लगा। उसने मुझको अपनी थरमस बोतल दे दी; यद्यपि उसमें पानी को गरम तो नहीं रखा जा सकता था, उससे रात के समय लगने वाली प्यास की मेरी समस्या अवश्य सुलझ गई थी। कभी कभी वह मुझको नमक लगा अंडा या ऐसी ही कोई अन्य मूल्यवान खाद्य वस्तु ला दिया करता था; उसको पता था कि मुझको रोगियों को दी जाने वाली अज्ञात् शाक सब्जियों का विशेष चाव न था। साधारण भोजन से भी शरीर के लिये अधिक से अधिक लाभ कैसे प्राप्त किया जाय कभी कभी वह मुझको यह विधि भी बता जाया करता था।

उसने मुझको बताया कि उसके पिता किसी कम्पनी में मंडी का पता रखने वाले की हैसियत से काम करते थे; कम्पनी से उनको जो प्राप्ति होती थी इतनी न थी कि उससे परिवार का जिसमें एक पत्नी, और तीन बच्चे शामिल थे भरण पोषण हो सके। इसलिये मिडिल स्कूल पास करने के पश्चात् डाक्टर कामरेड को एक समाचार पत्र के कार्यालय में प्रूफ़ रीडरी

करनी पड़ी। जो कुछ समय बच रहता था, उसमें अध्ययन करके वह पीपिंग के प्रमुख चिलू विश्वविद्यालय में रोग निदान और चीर फाड़ की डिग्री प्राप्त करने के लिये दाखिल हो गया। यह दुर्भाग्य की बात थी कि इधर उसकी डाक्टरी शिक्षा समाप्त हुई, और वह अपने गांव में वापिस आया तो उधर जापानियों ने देश पर आक्रमण कर दिया। वह छापामारों में भरती हो गया और जापानियों के विरुद्ध युद्ध करने लगा। जिस समय वह छापामारों में था उसका कम्युनिस्टों से सम्पर्क हो गया, जिन्होंने उसको संघ में प्रवेश करने के लिये प्रोत्साहित किया। उन्होंने उसकी मर्म भावनाओं को उकसाया और उसका मन पिघलाने को निम्न प्रकार की बाते कहीं, "स्वातंत्र्य क्षेत्र में सहस्रों घायल सैनिक अपने बिस्तरों पर पड़े पीड़ा से कराह रहे हैं। वे तुम्हारी ओर आंख लगाये हुए हैं।"

किन्तु जब वह स्वातंत्र्य क्षेत्र में पहुंचा तो उसको निराशा का मुंह देखना पड़ा; क्योंकि अब उसको आदेश दिया गया कि वह घायल सैनिकों का ध्यान छोड़ दे और प्रचार टोली में अधिनायक के कार्य ही को महत्व दे। उसने अनेक बार संघ से अनुनय विनय की और बताया कि यदि वह अपने क्षेत्र में काम करे तो क्रांति के लिये प्रचार टोली में अधिनायक का कार्य करने की अपेक्षा कई गुना अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है। संघ का ऐसा मत न था। इसलिये उसको प्रचार टोली से छुट्टी न मिली। येनान से संघ के प्रस्थान करने के पश्चात् ही उसको सेना में डाक्टरी करने का अवसर मिला। किन्तु उच्चाधिकारी आये दिन उसको कोई न कोई राजनीतिक काम सौंपते रहते थे, जिससे उसको अपने डाक्टरी खोज और उपचार कार्य में नित्य नई बाधायें पड़ती रहती थी। उसको राजनीतिक कामों से घृणा थी; पर वह उनसे बचने के लिये कर ही क्या सकता था?

सम्भवतः यह सोचकर कि एक जनतंत्रीय संवाददाता से उक्त प्रकार की बातें करने में वह सीमा से बाहर चला गया है, उसने अन्त में यह और कह दिया: "किन्तु अब तो मुझको इसकी आदत पड़ गई है। जब से इस अस्पताल में आया हूँ तब से खोजादि करने का अधिक अवसर मिलता रहा है। अब तक जैसे आपरेशन अन्यत्र कहीं देखने का अवसर न था, वैसे कई आपरेशन भी यहां देख चुका हूँ। यदि पुराना स्टाफ यहां कुछ दिन और रहे तो उससे

मैं बहुत कुछ और भी सीख सकता हूँ। उनमें से अधिकांश लोग बाहर शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं, इसलिये उनकी जानकारी अधिक आधुनिकतम है।"

उसको बहुत अच्छी अंग्रेजी न आती थी। किन्तु वह सदा ही उस भाषा को सीखने और सुधारने का यत्न करने को तैयार रहता। एक बार वह अंग्रेजी बातचीत की एक नई पुस्तक खरीद लाया और मुझसे मदद चाही। मैंने उससे कहा कि मेरी अपनी अंग्रेजी बहुत अच्छी नहीं है। मैंने उसको सलाह दी कि वह बातचीत करने की क्षमता प्राप्त करने का प्रयत्न छोड़ कर पारिभाषिक शब्दों और वाक्यों को सीख ले तो अधिक अच्छा हो; क्योंकि उनसे उसको अपने काम में मदद मिलेगी। मैंने यह भी कहा कि उसको प्रतिगामी डाक्टरों से इस विषय में काफी सहायता मिल सकती है। क्षण भर के लिये जैसे वह द्विधा में पड़ गया हो; पर तब उसने धीमे स्वर में मुझसे कहा, "प्रतिगामी डाक्टरों से बार बार मिलना मेरे लिये अच्छा नहीं है। क्योंकि जब भी मैं उनसे मिलता हूँ तब ही मेरे कामरेड मेरी आलोचना करने लगते हैं। प्रशासक तो मेरी इस बात को सैद्धान्तिक भूल ठहराते हैं।"

वह मेरी ओर देखने लगा, मानो मेरी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में हो। किन्तु जब मैंने संघ की इस प्रकार निन्दा करने पर उसकी आलोचना न की तो मानों कि उसके मन से भारी बोझ उतर गया। उस घड़ी से हम कामरेडी की परिधि से पार निकल कर मित्र बन गये। उसके पश्चात् तो वह और मैं बहुधा ऐसे विषयों पर परस्पर विचार विमर्श करने लगे जिनको मेरे क्रांति में सम्मिलित होने के दिन से निषिद्ध समझा जाता रहा था।

× × ×

एक दिन दोपहर बाद मैं भर नींद सोया हुआ था। उस समय मेरे मित्र ने मुझको जगा लिया। उसके चेहरे पर खिचाव और रोष देखा उससे मुझे आश्चर्य हुआ। वह मेरे पलंग की पट्टी पर बैठा था और कह रहा था, "मुझको तुमसे बहुत जरूरी बात करनी है।" कुछ देर वह रुका और फिर बोल उठा, "मैं यहां से प्रस्थान किया चाहता हूँ।"

क्रांति के कैम्प में मानवी भावनाओं को कोरी भावुकता समझा जाता

था ; यदि आप वहां प्रवेश करलें तो किसी को उल्लास न होता था ; और वहां से चल दें तो किसी को दुःख न होता था । जब चिरकालिक कामरेडों को एक स्थान से दूसरे पर जाना होता था तो वे एक दूसरे से विदा लेना या एक दूसरे का अभिवादन करना आवश्यक न समझते थे । किन्तु मेरे हृदय में अभी तक पुराने समाज के अवशेष विद्यमान थे, इस लिये इस कामरेड के उक्त निश्चय पर मुझको खेद हुआ । मैंने उससे पूछा, "तुम यहां से क्यों जाना चाहते हो ? तुम तो अच्छा भला काम करते रहे हो ! तुम अब कहाँ जाओगे और क्या काम करोगे ?"

उसने अपना सिर हिलाया, "तुमको मेरी सौगंद यदि तुम किसी से मेरी बात कहो ।"

मैंने उसको निश्चिन्त रहने को कहा और मैं आश्चर्य करने लगा कि आखिर वह इतना घबड़ाया हुआ क्यों है ।

"मुझको कहीं जाने की आज्ञा मिली है, ऐसी बात नहीं है । मैं तो तिलांजलि दे रहा हूँ इसको ।"

"क्या कर रहे हो तुम ?" मैंने पूछा ।

"मैं क्रांति को तिलांजलि दे रहा हूं । आज रात को ही मैं वुहान से प्रस्थान करने वाला हूं ।"

"पर ऐसा तुम कैसे कर सकते हो ? क्या तुम नहीं जानते कि संघ क्रांति का परित्याग करने वालों के साथ कैसा बर्ताव करता है ?"

"हां मैं जानता हूं । वे शिकारी कुत्तों की तरह मेरा पीछा करेंगे और जब मैं उनके हाथ पड़ जाऊंगा तब वे मुझको पुनः शिक्षा, स्वाध्याय और आत्मशुद्धि के कैम्प में बन्द कर देंगे । पर यदि वास्तव में मेरा प्रारब्ध ऐसा ही है तब भी मैं यत्न करने से न चूकूंगा ।"

"किन्तु इसी समय क्यों ?" मैंने उससे पूछा ।

"केवल इसलिए कि मुझमें अब सहन करने की शक्ति नहीं रह गई हार्बिन से चलने से पहिले मेरे उच्चाधिकारियों का अनुमान था कि मैं दक्षिण को प्रस्थान करने की आज्ञा सुनकर आना कानी करूंगा। इसलिये उन्होंन मुझको वहान के अस्पताल का प्रशासक बनाये जाने का प्रलोभन दिया। किन्तु जब मैं यहां आगया तो मैंने देखा कि अनेक प्रकार के ऐसे गुट्ट काम कर रहे हैं जो एक दूसरे को छकाने की चिन्ता में रहते हैं। जिनका परिणाम यह हुआ कि मुझसे जो वायदा किया गया था, पूरा न किया गया। उन्होंने मुझसे किये गये वायदे को पूरा न करने का कारण यह बताया कि अभी बहुत सी बातें करने को हैं जब वे पूरी हो जायगी तब स्थिति सुधर जायगी; और चिरकालिक कामरेडों को प्रसन्न किया जा सकेगा। उन्होंने अब मुझको अस्पताल के प्रबंध विभाग का एक अंग बना दिया और फिर वायदा किया कि जैसे ही स्थिति सुधरेगी तैसे ही मुझको प्रशासक बना दिया जायगा। मुझको प्रशासक बनने का विशेष चाव न था क्योंकि अस्पताल में परिखोज आदि का जितना काम करने का अवसर था, उससे मैं सन्तुष्ट था। किन्तु मेरे अन्य १५ सहयोगी मुझसे प्रसन्न न थे क्योंकि मुझको संघ से डाक्टर का वेतन मिलता था, जो सुविधा उनको प्राप्त न थी। और मैं मीटिंगों के अतिरिक्त उनसे कभी मिलता न था।

"कल ये लोग स्वास्थ्य विभाग में गये और मेरे विरुद्ध चार आरोप लिखा आये जो इस प्रकार हैं: (१) "यह अपने आपको हमसे श्रेष्ठतर समझता है (२) यह प्रतिगामी डाक्टरों से मित्रता रखता है (३) यह उदारता प्रदर्शित करने का अपराधी है, अर्थात् हमारे पीछे हमारी आलोचना करता है और (४) शारीरिक श्रम के प्रति इसका रवैया गलत है; इसने औषधियों की सूची तैयार करने में सहयोग नहीं दिया।" स्वास्थ्य विभाग ने निश्चय किया कि मैं अब स्वास्थ्य विभाग में एक बाबू की जगह काम करूं। जब आज प्रातःकाल मैंने यह बात सुनी तो मैं क्रोध से पागल हो उठा और दलील और शिकायत करने के लिये स्वास्थ्य विभाग में पहुंचा। मैंने अध्यक्ष से कहा कि मैं बाबूगिरी करने का शौक नहीं रखता हूं। यह सुनकर अध्यक्ष हंसने लगा और कहने लगा कि बाबूगिरी भीख मांगने से तो अच्छी ही है। मैंने उससे कह दिया कि "भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारी क्रांति, मैं चला।" उसने इस पर उत्तर दिया तुम्हारी मर्जी, सम्भवतः तुम्हारे मार्ग

से हट जाने से क्रांति अधिक द्रुत गति से आगे बढ़ सकेगी। "जब यह बात है तो मैं चल दूंगा। मैं क्रांति के मार्ग में बाधा बन कर खड़ा होने वाला कौन हूं।"

अपनी कथा समाप्त करते करते वह क्रोधवश कांपने लगा। मैंने उससे शांत रहने को कहा, "इन लोगों से निबटने का सबसे सही तरीका यह है कि कभी आवेश में न आओ और क्रोध में आकर अपना विवेक न खोओ। अब हमको जो कुछ करना चाहिये वह यह है कि किसी भरी सार्वजनिक सभा में इन सबकी खरी आलोचना की जाय।"

मुझको ऐसी आशा भी न थी, किन्तु क्या देखता हूं कि उसकी आंखों से आंसू बह रहे हैं। "दस साल से अधिक होगए, तब से मैं इस मूर्खतापूर्ण क्रांति के पीछे चीन के विभिन्न भागों में मारा मारा फिरता आ रहा हूं और वेहूदा आदेशों का पालन करता चला आ रहा हूं। इस अस्पताल में पहुंचने तक तो मैं प्रायः यह भी भूल गया था कि मैंने अपने युवाकाल में क्या शिक्षा पाई थी। इस आशा से कि एक दिन किसी अस्पताल में बैठकर मुझको सह-मानव प्राणियों की सेवा करने का अवसर मिलेगा, मैंने खून पसींना एक करके काम किया। किन्तु परिणाम क्या निकला मेरे लिये इस सब का?— स्वास्थ्य विभाग में बाबूगिरी।"

मैं उसके उद्‌गारों और कटुता से पिघल उठा। पर फिर भी मैंने उसको अपने निश्चय पर पुनः विचार करने का परामर्श दिया। "क्रांति, क्रांति, क्रांति ही की रट सुनने को मिलती है यहां," वह बिगड़ते हुए बोला। "क्या है आखिर यह क्रांति ? क्या यह अपने ही हाड़ मांस को खा खा कर मोटा होने वाला दानव नहीं है ? उत्तर पूर्व के जेपिंग नामक स्थान में जो कुछ हुआ उसे भी सुन लो। कोमिन्टांग को पछाड़ने के लिए संघ ने अपने नागरिक स्टाफ़ के राजनीतिक कार्यकर्ताओं, स्थानीय कामरेडों और यहां तक कि स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों को भी युद्ध में झोंक दिया था। मानों ये नर प्राणी जान ही न रखते हों; उनको बेदर्दी के साथ कोमिन्टांग की चुनी हुई सैनिक टुकड़ियों की गोलियों से बिछवा दिया था। जो कुछ हुआ उसको नर संहार ही समझना चाहिए। पाँच हजार ऐसे व्यक्ति उस युद्ध में खेत रहे या घायल

हुए जिनको किसी प्रकार का भी सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त न था। यह मेरी आंखों देखी कहानी है । मैं वहां मौजूद था । मेरा सौभाग्य था यह कि एक टांग में चोट खाकर ही मैं बच गया ।

उसने मुझको अपना परिचय-पत्र दिखाया, जिसमें "तीसरी श्रेणी" की घायल होने की उसकी सनद भी दर्ज थी । इस पत्र के दूसरी ओर जनरल ज़ूतेह का प्रवचन छपा था जिसमें उक्त संग्राम में मरने और घायल होने वालों की प्रशंसा की गई थी । "जनता के लिए खून बहाना बडे सम्मान की बात है," जनरल के ये शब्द भी उस पर अंकित थे । उसने तब अपना परिचय-पत्र वापस ले लिया और कहा, "सम्मान का यह अर्थ वास्तव में विचित्र है और इसको पाने के लिए चुकाया जाने वाला मूल्य भयंकर; विशेषतः इसलिए कि जो कुछ हम देख रहे हैं यदि वह ही नया समाज है तो यह समाज उन्हीं के रुधिर मांस पर पनपता और पलता है जो इसकी स्थापना के लिए प्रयत्न करते रहते हैं ।"

मैं अवाक् रह गया । मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि उसको सांत्वना देने के लिए मैं क्या कहूं या करूं । वह शून्य मुद्रा लिए अपने आंसू सूखने तक कुछ क्षण वहीं मेरे पलंग की पट्टी पर बैठा रहा । अंत में वह वहां से उठा और अपने लम्बे चौड़े हाथ से मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया । "सावधान रहना", इन शब्दों के अतिरिक्त कुछ भी मेरे मुंह से न निकल सका ।

उसके प्रस्थान करने के दो दिन पश्चात् मैंने एक महिला कामरेड से प्रसंग-वश उसको मेरे पास बुला लाने को कहा, जिसपर वह बोली "ओह वह; उससे भूल हो गई; वह गिरफ्तार हो चुका है ।"

नवां परिच्छेद

प्रचार मंत्रालय

जब म अस्पताल से बाहर आया तो हम उन आठ संवाददाताओं को जिनको वुहान में रहने का आदेश था, जिनमें मैं भी था, नवचीन समाचार एजेंसी से बदल कर विभिन्न सरकारी विभागों में शामिल हो जाने की आज्ञा हुई। हमारी टोली के अन्य सदस्यों में से शेष २४ को विभिन्न सैनिक टुकड़ियों में अथवा गांवों में नये कृषि सुधार आन्दोलन को लोक प्रिय बनाने के लिये काम करने की आज्ञा हुई। जब हमने उनसे बिदा लेने के लिये हाथ मिलाये तो उनके चेहरों पर निराशा और निरुत्साह के बादल छाये हुए दिखाई दिये। यह स्पष्ट ही था, कि ये लोग अभी तक अपनी धारणाओं से मुक्त नहीं हो सके थे। मैं बाद में उनसे न तो कभी मिल सका और न उनके विषय में कोई जानकारी ही हासिल कर सका। उन पर क्या बीती मुझको पता नहीं।

मेरे साथ जिन अन्य दो संवाददाताओं को प्रचार मंत्रालय में भेजा गया था उनको अब विभिन्न कार्यालयों में काम करने के लिये चुना गया। इस प्रकार चिर कालिक कामरेडों के बीच में मैं अकेला ही रह गया—मेरे इन नवीन साथियों में से कोई तीन साल तक क्राँति की सेवा कर चुका था तो कोई बीस वर्ष तक।

जब प्रचार मंत्रालय में पहुंचा तो मुझको पता लगा कि अब से मुझे जो काम सौंपा जाने वाला था, उसको "निम्न सांस्कृतिक स्तर" के चिरकालिक कामरेड करने में असमर्थ थे और योग्य चिरकालिक कामरेड अपनी मर्यादा के बाहर समझते थे। आरम्भ में हमको जो काम करना पड़ा, उसको विनम्रतावश ही "दफ्तरी काम" कहा जा सकता था। अधिकांश कामरेड छापामार रह चुके थे; किसी दफ्तर की कार्य-पद्धति मे

उनका सम्बन्ध ही क्या रहा था जो वे उसको समझ सकते । खरीता क्या होता है, फाइल किसे कहते हैं, पत्रव्यवहार किस वस्तु का नाम है, आरम्भ में तो उसको इनमें से किसी बात का भी पता न था । जब जिसके मनमें जो बात उठी उल्टी सीधी कर डाली; उसके बाद क्या होगा, क्या कार्य पद्धति और क्रम अपनाया जायगा, इस बात को समझने सोचने की मानो किसी को आवश्यकता ही न थी । आज्ञायें बहुधा मौखिक होती थीं, या फटे सड़े कागजों पर बुरी तरह लिखी हुई । यह स्वाभाविक ही था कि सर्वत्र फूहड़पन अयोग्यता और अव्यवस्था का बोलबाला था । जब सारा प्रशासक स्टाफ़ शहर में आ बसा तब कहीं सरकारी तौर पर "योग्यता आन्दोलन" का सूत्रपात किया जा सका । अब "कार्यशैली" शब्द एक ओर जहां सभी वालपेपरों और समाचारपत्रों में दिखाई देने लगा तो दूसरी ओर प्रायः प्रत्येक व्यक्ति की ज़बान पर उसी का जिक्र रहने लगा ।

"कार्य शैली" आन्दोलन का उद्देश्य विशेषतः उन चिर कालिक कामरेडों का कल्याण करना था जो अभी तक अपनी छापामारी के दिनों की आदतों को नहीं छोड़ पाये थे । किन्तु ये आदतें अधिकाँश कामरेडों में इतनी गहरी जड़ें पकड़ गईं थी कि किसी आन्दोलन का सूत्रपात करने अथवा नारे का प्रयोग मात्र करने से अयोग्यता नहीं दूर की जा सकतती थी । प्रत्येक विभाग में, अध्यक्ष को छोड़कर केवल एक या दो व्यक्ति ऐसे होते थे जिनको विशेष कार्य भार अथवा पद प्राप्त थे । दफ्तरों के शेष कार्यकर्ता तो जैसे किसी काम को करने की आवश्यकता आ पड़ती वैसे ही काम करने में जुट जाते । माओत्सी तुंग ने अपने "उदारवादिता" नामक ग्रंथ में ऐसे कामों को जिनको उदारवादी किसी महत्व का नहीं मानते न करना पाप बताया था । इसलिये जब किसी के पास कुछ करने को न होता तो वह ऐसे कामरेड की सहायता करने के प्रयत्न में जुट जाता जो किसी काम विशेष में लगा होता । उसको इस नये काम की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक न था । जब किसी के पास भी व्यस्त रहने के लिये कुछ काम न होता तो कामरेड लोग दफ्तरों ही में सो जाया करते क्योंकि उससे आगे चलकर कार्यक्षमता में अभिवृद्धि होने की आशा थी; कुछ कामरेड लोग धीरे धीरे सीटी बजाकर अथवा स्वातंत्र्य संग्राम के गीत गाकर दूसरों का साहस बढ़ाने का यत्न करते । जब कभी कामरेड रसोइये की सहायता की आवश्यकता बताई जाती तो दफतरों में

काम करने वाले कामरेड अपना अपना काम छोड़कर रसोईघरों की ओर दौड़ पड़ा करते। ऐसी महिला कामरेड जो "प्रेमी" भी थी और दफ्तरों की कार्य-कर्ता भी, अपने बच्चों को दफ्तरों ही में दूध आदि पिलाती और पाखाना पेशाब कराने के लिये बैठा दिया करतीं। सारी इमारत में जहां देखिये वहाँ ही बच्चों के लंगोट, कच्छे आदि सूखते मिलते। बच्चे कूदते फांदते कभी दफतरों में आ धमकते तो कभी दफतरों के बाहर। पर क्योंकि इन सब बातों का सम्बन्ध ऐसे चिरकालिक कामरेडों से था जो देर तक छापामारी का काम कर चुके थे, इसलिये दुर्गन्ध को दुर्गन्ध न माना जाता; किसी के रंग बिरंगे आंतरिक वस्त्र का खुले आम हवा में फरफराना अशिष्टतापूर्ण न माना जाता; और अयोग्यता अब अयोग्यता न मानी जाती थी।

देर तक पर्वतों में, खेतों में अथवा युद्ध के मोरचों पर जीवन व्यतीत करते रह चुकने के कारण अधिकांश कामरेडों को समय के महत्व का बिल्कुल ज्ञान शेष न रह गया था। एक दो मिनट का जिक्र करना, पश्चिमी देशों के उन पूंजीपतियों की आदत बताई जाती थी जो श्रमिकों का शोषण करते रहते हैं। "योग्यता" और "कार्य शैली" आँदोलनों के पश्चात् ऊपर के लोगों की ओर से आज्ञा हुई कि प्रत्येक विभाग में अवश्य ही कोई न कोई कार्य-पद्धति और समय तालिका होनी ही चाहिये। प्रायः सभी कामरेड इस बात से सहमत थे कि समय तालिका और कार्य-पद्धति आवश्यक हैं—किन्तु जहाँ तक कागजी कार्यवाही का सम्बन्ध था वहीं तक। उसको कार्यान्वित करने की आवश्यकता का अनुभव किसी ने नहीं किया था। ऐसा करना पश्चिमी देशों की बर्बरता का अनुकरण मात्र बताया जाता था। दीवार पर लगी घड़ी इसलिये ठीक समय नहीं देती थी कि उसमें समय पर चाबी न लगती थी, और चाबी लगाना अथवा घड़ी को सही समय से मिला देना किसी विशेष योग्यता प्राप्त कारीगर का काम समझा जाता था। फिर जब समय का पता सूरज को देखकर और पेट की आवाज़ सुनकर ही लग सकता हो तो घड़ी की चिन्ता करने से लाभ भी क्या था?

विभिन्न विभागों के अध्यक्ष अपने अपने दफतरों के कामों को अपने बच्चों और प्रेमियों के बीच लेट बैठकर शयनागार ही में समाप्त करने का यत्न किया करते। छोटे पैमाने के अधिकारी आपस में गप्पें मारने अथवा ताश

खेलने ही में समय बिताते रहते। मजेदार बात यह थी कि इस सबके बावजूद न तो विभागाध्यक्ष और न छोटे संचालक ही कभी यह समझते कि वे क्रांति की सेवा करने में कुछ कमी कर रहे हैं। यदि उनमें से कभी किसी की सेवाओं की आवश्यकता पड़ती तो ये लोग बिना इस बात का ध्यान रखे कि कब कहां और क्या काम करने को कहा जा रहा है, अपने नये पार्कर ५१ फाउंटेन पेन निकाल कर कागजों पर कुछ न कुछ घसीटने को अथवा अपनी नई हाथी दाँत की मुहरों को किसी पत्र, कागज, अथवा खरीते पर ठेपने के लिये बैठ जाया करते। यदि कभी कोई व्यक्ति किसी अधिकारी को भरी नींद से रात को भी उठा लेता तो भी वह अधिकारी बड़ी ही खुशी के साथ, विशेषतः यदि काम महत्वपूर्ण होता तो, अपनी लेखनी अथवा मुहर का अपने शयनागार ही में प्रयोग प्रारम्भ कर देता।

गरमी के दिनों में पुरुष कार्यकर्ता बिना कमीज पहिने ही दफतरों में दाखिल हो जाया करते। पाँव में स्लीपर हुए तो अच्छा, वरना नंगे पांव ही काम चल जाता था। उनके पाजामे और पतलून तो घुटनों से ऊपर मुड़ी और चढ़ी होती ही थी। स्त्रियां नंगे पांव और झीनी 'अंडर वीयर' पहिने हुए दफतरों में आ धमकती। प्रातःकाल सभी लोग दांतन अथवा ब्रुश का काम अपने अपने हाथों की उंगलियों से लेते; साबुन और कंघे का तो जिक्र ही क्या है। यदि सुबह का समय हुआ और कोई कमीज़ पहिने हुआ तो दोनों आस्तीनों ही से तौलिये का काम ले लिया जाता। सूरज छुपने के बाद प्रायः सभी पुरुष बिल्कुल नंगे हो जाते और खुले स्नानागारों में नल के नीचे या वैसे ही पानी में लेट कर तथा एक दूसरे पर पानी फेंक कर बच्चों जैसे सुख का अनुभव करते। कुछ कामरेड जिनको गरमी का मौसम अच्छा न लगता था, अपने कमरों को छोड़कर बाहर खुले मैदान में अखबारों का बिस्तरा बनाकर आ लेटते।

सर्दियों में जिस पर जितने कपड़े होते उन सभी को वह हर समय पहिने रहता और रद्दी कागजों और पुरानी मेज कुर्सियों के सहारे बराबर आग जारी रखता। उनमें शायद ही ऐसे व्यक्ति हों जो सारी सर्दियों में एक बार भी स्नान करते अथवा कपड़े बदलते। यदि कोई कामरेड कभी आपके बिस्तरे पर आ बैठता तो निश्चय ही उसकी देह से एक दो जूं गिर कर आपके बिस्तरे

पर क्रीडा करने लगती। इस नए समाज मे जू पालन सम्मानपूर्ण कार्य बन गया था। वास्तव मे जू को अब क्रातिकारी जतु कहा जाने लगा था। जो दूसरो की अपेक्षा तनिक अधिक प्रगतिशील होते वे तो इधर उधर घूमती हुई एक दो जू को उठाकर अपने कपडो मे प्रश्रय दे दिया करते थे। वे अपने इन पालतू जतुओ पर बडा गर्व करते थे। और ठीक भी था, क्रातिकारी जतुओ को प्रश्रय दिए बिना कोई सच्चा क्रातिकारी हो भी कैसे सकता था?

× × ×

नए कार्यालय मे मेरी सबसे पहिली मुठभेड सेक्रेट्री विभाग के अध्यक्ष से हुई। यद्यपि उसका जन्मस्थान कैटन था, वह 'मैंडरिन' भाषा बडे सहज ढग से बोलता था। वह बीस वर्ष से अधिक समय तो क्राति की सेवा करने मे लगा चुका था, फिर भी अपने रहन सहन और कार्यप्रणाली की दृष्टि से कुछ बातो में एक छात्र जैसा ही दिखाई देता था। जब उसको पता लगा कि मैं पीकिंग विश्वविद्यालय का छात्र रह चुका हू, उसने मेरे प्रति बडी रुचि दिखाई और बातचीत करने के लिए मुझको अपने कमरे मे बुला ले गया। मैं उसकी घूमने वाली दफ्तरी कुर्सी पर बैठा और वह सोफा पर, जहां से अपने नगे पाँव को कभी वह फैलाकर लेटता हुआ सा दिखाई देता तो कभी बडे ही अनौपचारिक ढग से पालथी मारकर बैठ जाता। उसने मुझको बताया कि पीकिग विश्वविद्यालय ही उसका अपना भी सरस्वती-मदिर रहा था। बहुत दिन से पीपिग से अलग रहने के कारण, उसने उसके विश्वविद्यालय और नगर के प्रति बडी जिज्ञासा प्रदर्शित की और मुझ से अनेक विषयो पर अनेक प्रश्न पूछे, जिससे यह स्पष्ट था कि उक्त नगर उसको अच्छा लगता था। "क्या अब भी लोग उत्तरी समुद्र पर बर्फ जम जाने के पश्चात् स्केटिग करते हैं? क्या बसत मे पीपिग के पुराने महल की इमारते अब भी उतनी ही सुंदर दिखाई देती है जितनी हमारे दिनो मे दिखाई दिया करती थीं? क्या आइहो पार्क मे गाय की प्रस्तर प्रतिमा अभी तक वही खडी है, या सघ ने उसको वहा से हटवा दिया?" अब तक मैं अनेक भावनाशून्य आकृतिया देख चुका था तथा अपनी बातचीत मे सदा ही सावधानी बरतते रहने का आदी हो गया था। इस लिए पहली बार ऐसे मित्रतापूर्ण एव मानवी भावनाओं से ओत प्रोत व्यक्ति से मिल कर मुझको अब असीम आनन्द का अनुभव होने लगा। क्राति मे इतने दिन तक रहने के पश्चात् भी उसका व्यवहार

अभी तक विकृत नहीं हुआ था; न ही स्पष्टतः उसको इस बात की चिन्ता थी कि वह अपने से छोटे दर्जे के क्रांतिकारी से बात चीत कर रहा है; यहां तक कि उसने मुझसे यह पूछा तक भी नहीं कि मैं क्रांति में कब सम्मिलित हुआ था।

उसने मुझको बताया कि सेक्रेट्री-विभाग अभी नया ही है, और फिलहाल यह प्रचार सचिवालय का साधारण काम करेगा और साथ ही सचिवालय और अन्य सरकारी विभागों के बीच सम्पर्क बनाये रहने में सहायता करेगा। अभी तक इस विभाग में उस समेत चार व्यक्ति ही थे; किन्तु शीघ्र ही उनको एक थियेटर, एक फ़िल्म, एक संस्कृति, एवं नृत्य टीम और एक सैनिक बैंड का निर्देशन करना होगा। इनमें से कुछ टोलियां तो पहले ही सचिवालय के नेतृत्व में आ चुकी थीं, अन्य टोलियां अभी तक दूसरे एक विभाग ही का अंग बनी हुई थी पर शीघ्र ही वे भी उन्हीं के पास आ जायेंगी ऐसा विश्वास था।

उसने जिस समय इस "दूसरे विभाग" का जिक्र किया तो उसकी आवाज़ में रोष का कम्पन है, ऐसा मुझे लगा। वह कहने लगा, "मैं इन लोगों को अच्छी तरह जानता हूं। इनसे क्रांति को कोई लाभ नहीं हो सकता। हमको इनके विरुद्ध सतत प्रयत्न करते रहना होगा। वे क्रांति के मार्ग में रोढ़े हैं और अपनी खुशामद और अयोग्यता से क्रांति की गति को अवरुद्ध किये हुए हैं। ये वे लोग हैं जो सदा ही सभाओं में जबान चलाने को तैयार रहते हैं और फिर गलत बात कहने पर माफी मांगते नहीं थकते। ये लोग रात भर बिस्तरे में करवट बदलते हुए यही सोचते रहा करते हैं कि किस प्रकार अमुक भूल पर परदा डाला जाय या किसी और के माथे मढ़वा दिया जाय। नए समाज के लिए कोई रचनात्मक कार्य कैसे किया जाय यह सोचना इनकी समझ के बाहर की बात है। इनका सबसे बड़ा दावा यह है कि ये इतने लम्बे समय से क्रांति से सम्बन्धित रहे हैं। देर तक क्रांति में काम कर चुकने को अब ये जिम्मेदारी से बचने और बड़ी बड़ी व्यक्तिगत सुविधायें प्राप्त करते रहने का एक साधन समझते हैं। इनको इस बात का ज्ञान ही नहीं कि क्रांति का भविष्य इस बात पर निर्भर है कि क्रांतिकारियों में कितनी योग्यता है न कि इस बात पर कि अमुक व्यक्ति कितने दिन से उसमें तेली के बैल की तरह चक्कर काटता रहा है। बात तो दर असिल यह है कि इनको क्रांति की

हम क्रांति के अनेकों ऐसे पहलुओं पर बात चीत करते रहे जिन पर आज से पहले मुझको जबान खोलने की भी हिम्मत नहीं हुआ करती थी। अन्त में जब मैं उसके कमरे से निकला तो मुझको प्रसन्नता का अनुभव हुआ क्योंकि पहली बार अब मुझको एक ईमानदार आदमी के आधीन रह कर काम करने का अवसर मिल रहा था। उत्तर से आने वाले कुछ नये कामरेडों के साथ मैंने उसके विषय में विचार-विमर्श किया। उनमें से कुछ मेरी बात सुन-कर प्रसन्न हुए और साथ ही उन्होंने मेरे लिये सौभाग्य की कामना की। कुछ ऐसे व्यक्ति थे जो यह सुनकर कि अभी तक क्रांतिकारी कैम्प में भी पूंजीवादी प्रवृत्तियां और स्वार्थ मौजूद हैं और यह कि अभी तक चिरकालिक कामरेडों के विरुद्ध कार्य करने की आवश्यकता है, निराश हुए। जब आन्दोलन कारियों ने सुना कि मैंने नये कामरेडों से ऐसी बातें की है तो उन्होंने मेरी कटु आलोचना शुरू कर दी और मुझको स्वल्पसम्पत्ति शाली वर्ग की आदतों का जहर फैलाने का अपराधी ठहराया।

मैं अपने नये अध्यक्ष की प्रशंसा कर रहा था, तो एक चिरकालिक काम-रेड ने जो वहां मौजूद था मुझको तुरन्त रोक दिया। उसने कहा "यह सच है कि यह कामरेड देर से वफादारी के साथ काम करता आया है; उसका अनुभव भी उत्तम रहा है और उसकी संस्कृति भी उच्च स्तर की है। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि उसे अपने सहयोगियों के साथ मिलकर काम करना नहीं आता। उसने ६ वर्ष तक रेजीमैन्ट के स्तर पर काम किया, फिर भी उसको वहां से आगे नहीं बढ़ाया जा सका। जानते हो इसका कारण क्या है ? संघ के साथ उसका मूर्खतापूर्ण विग्रह। उसका सिर फिर गया है। वह जानता है कि हठधर्मी से कोई लाभ नहीं। पर फिर भी वह आन्तरिक सुधार की बात करता रहता है, और अपने मूर्खतापूर्ण आदर्शों की, जिन्हें वह क्रांति के आदर्श मानने लगा है रट लगाये रहता है। क्राँति के प्रति जो व्यवहार होना चाहिए वह उसको स्वीकार्य नहीं है। जब तक वह ऐसा करता रहेगा तब तक वह जहां है वहां एड़ियां घिसता रहेगा और इस प्रकार उसकी आलोचना किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी।"

× × ×

मेरी बदली होने के एक सप्ताह पश्चात् मैंने यह अफवाह सुनी कि मेरी

बदली फिर होने वाली है। इस अफवाह के अनुसार मेरे अध्यक्ष को मोर्चे पर भेजे जाने की बात थी, और उनके स्थान में पर्सनल इन्चार्ज की नियुक्ति की बात कही जा रही थी। मुझको यह नहीं मालूम था कि अब मैं वहीं भेजा जाऊंगा। किन्तु मैं यह जानता था कि प्रचार सचिवालय में मेरे स्थान पर नये अध्यक्ष के स्टाफ का ही कोई सदस्य नियुक्त किया जायगा। मुझको जो दुःख हुआ उसको मैं छिपाए न रह सका क्योंकि मुझको पता लग गया था कि मेरे अध्यक्ष के बदले जाने का एक मात्र कारण वह राजनैतिक सौदा था जो पर्सन्ल चीफ और मन्त्री महोदय की सहायक महिला कामरेड के बीच हो चुका था। मेरे अध्यक्ष संघ में आन्तरिक सुधार करने का आन्दोलन करते रहे थे, इस कारण महिला कमरेड उनसे अप्रसन्न थी और इसीलिए उनको यहां से हटाया जा रहा था। मेरे अध्यक्ष के विरुद्ध पर्सनल चीफ का व्यक्तिगत रोष था। मैंने निश्चय किया कि जहां तक सम्भव होगा मैं ऊपर तक यह बात पहुंचाऊंगा और इस अन्यायपूर्ण स्थिति की आलोचना करता रहूंगा। मैंने यह सोच लिया था कि यदि इस प्रकार इस मामले में न्याय न किया गया तो मैं अगली सभा में खुले तौर पर शिकायत करूंगा चाहे इसका कोई भी परिणाम क्यों न हो।

इसी उद्देश्य को दृष्टि में रखकर मैं प्रचार विभाग के उपमंत्री से मिला। मैं उनके कमरे में आंधी की तरह जा धमका और बड़े आवेशपूर्ण शब्दों में मैं उन लोगों की निन्दा करने लगा जिन्होंने एक गुट बनाकर मेरे अध्यक्ष की बदली कराई थी। मेरे आवेशपूर्ण उद्‌गार सुनकर उपमन्त्री को आश्चर्य हुआ और उसने कहा—"किन्तु तुम्हारे अध्यक्ष वास्तव में अपने सहयोगियों और उच्च अधिकारियों के लिए एक व्याधि बन गए हैं। मेरी उनसे सहानुभूति है और वास्तव में मैं भी उन सभी बातों को करना चाहता हूं जो वे करना चाहते हैं। किन्तु कितना अच्छा होता कि वे इस स्थिति के प्रति ऐसी शत्रुता का परिचय न देते। संघ के विरुद्ध सदा आन्दोलन करते रहने से वह अपने क्रांतिकारी आदर्शों को संपादित नहीं कर सकते। आन्तरिक सुधार के लिए खामोशी के साथ काम करते रहने की आवश्यकता है। वे जिस प्रकार कार्य करते रहे हैं उससे तो कई बार ऐसा लगता है जैसे कि वे पूँजीवादी समाज में सरकारी वकील हों।"

"किन्तु वही तो एक ऐसे कामरेड हैं जिनमें इस तथाकथित स्वर्ग के अंधकारपूर्ण कोनों की ओर ध्यान आकर्षित करने का साहस है। केवल वही एक ऐसे व्यक्ति हैं जो स्वार्थ को स्वार्थ और भ्रष्टाचार को भ्रष्टाचार मानते हैं।"

"हां वही एक ऐसे सुधारक हैं जो आए दिन कोई न कोई व्याधि उत्पन्न करते रहते हैं;" उपमन्त्री ने मुस्कराते हुए और अन्यमनस्क होते हुए कहा।

"किन्तु यह तो बताएं कि इसके अतिरिक्त सुधार करने के और उपाय क्या है। संघ ने आन्दोलन द्वारा ही तो अब तक इतने लोगों का मत परिवर्तित किया है और इतनी विजय प्राप्त की है।"

"हां बाहर के लोगों का मत परिवर्तन और बाहर की दुनिया म विजय," उपमन्त्री ने मेरी भूल सुधारते हुए कहा।

"तो फिर आप किस प्रकार भ्रष्टाचार को कम या दूर करने का प्रयत्न करना चाहते हैं ? या आप इस बात से इन्कार करते हैं कि यहाँ भ्रष्टाचार का बोलबाला है ?"

यह सुनकर उनकी आंखों में लाली आ गई और वह तुनक कर बोले—"मैं नहीं मानता कि तुमको मुझसे इस प्रकार के प्रश्न करने का कोई अधिकार है।"

उनके रोश को देखकर मैं भी उत्तेजित हो उठा और मैं अपने आपको सही शब्द पाने में असमर्थ महसूस करने लगा। फिर भी मैंने किसी प्रकार कह ही दिया "लेकिन उसकी ईमानदारी में किसी को क्या संदेह हो सकता है।"

"निस्सन्देह वह ईमानदार आदमी हैं।"

"वे सच्चे मन से क्रातिकारी आदर्शों में आस्था रखते हैं।"

"यह भी मान लिया," इस वाक्य को उसने ऐसा कहा कि मानो अचानक

ही उसकी आवाज़ कुछ बेजान हो गई हो।

"तो फिर उससे छुटकारा क्यों पाना चाहते हैं ?"

"मैं उससे छुटकारा नहीं पा रहा हूं;" यह कहकर वह उठा और खिड़की के पास जाकर बाहर की ओर देखने लगा और बोला "मैं इस विषय में कर ही क्या सकता हूं ?"

"मेरा क्या होने वाला है, मुझको आप कहां भिजवा रहे हैं।" यह सुन कर वह मेरी ओर मुड़ा और मेरी आंखों में आखें डाल कर कहने लगा—"तुम यहीं रहोगे तुम्हारे वर्तमान अध्यक्ष के स्थान में जो व्यक्ति आ रहे हैं वही तुम्हारे अध्यक्ष होंगे।" वह अपनी मेज पर चला गया और खखारते हुए कुछ कागज इधर-उधर करने लगा : "जिस तरह का काम तुम कर रहे हो वह मुझको अच्छा लगता है। जो लोग बदल कर यहां लाए जा रहे हैं उनकी अपेक्षा तुम मेरे लिए अधिक लाभदायक सिद्ध होगे। मैंने प्रार्थना की है कि तुम यहीं रह कर पूर्व समाज के विषय में प्रचार कार्य करते रहो। यह काम ऐसा है जिसको चिरकालिक कामरेड बिल्कुल नहीं कर सकते क्योंकि उनको नागरिक जीवन का कोई ज्ञान नहीं है।"

"आप मेरे पुराने अध्यक्ष के लिए भी ऐसी व्यवस्था क्यों नहीं कर सकते ?" मैंने पूछा :

उसने तनिक खीझ सी दिखाते हुए कहा—"इसलिए कि मैं उनकी बदली की दरख्वास्त को छू भी नहीं सकता हूं। यह मेरी पहुंच के बाहर की बात है।"

जब मैं उसके कमरे से निकलने लगा तो उसने मुझको आवाज दे कर वापस बुला लिया और कहने लगा "हां संयोगवश एक बात और बता दू। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं व्यक्तिगत रूप से और न सभाओं में ही किसी से यह कहता फिरता कि मुझको वर्तमान स्थिति में अमुक बात अन्याय-पूर्ण दिखाई देती है"। यह कह कर वह फिर खिड़की के पास चला गया और

मुझको सलाह देते हुए बोला—"इससे किसी को लाभ भी तो नहीं है।"

उपमंत्री के शब्दों पर विचार करने के पश्चात् मैंने यह निश्चय कर लिया कि मैं अपना आलोचना के दूसरे भाग पर अमल नहीं करूंगा। कुछ समय के पश्चात् मुझको यह पता लग गया कि मरे पुराने अध्यक्ष अपनी नयी नियुक्ति को स्वीकार नहीं कर रहे थे और उसके स्थान में संघ से यह प्रार्थना कर चुके थे कि उनको स्वास्थ्य सुधार के लिए चिकुंग पर्वत पर आराम करने दिया जाय। मैं उनसे एक बार फिर मिला। अब मैंने उनको पहले की अपेक्षा कहीं अधिक शर्मीला और अपने प्रति खिचा हुआ सा पाया, पर उनकी अब भी मुझको यही सलाह थी कि मैं यथापूर्व क्रांति के लिए अधिक से अधिक कार्य करता रहूं। मुझको यह पूछने का साहस नहीं हुआ कि उनकी बदली क्यों हो रही थी और स्वयं उन्होंने तो मेरी बातचीत के दौरान में इस बात पर कोई प्रकाश डाला ही नहीं।

× × ×

मेरे नये अध्यक्ष की शिक्षा प्रारम्भिक पाठशाला तक की ही थी। वह एक निर्धन परिवार का था, और क्यांग्सी प्रान्त में क्रांति में भर्ती हुआ था। जिस समय कम्युनिस्टों की सेना अपना लम्बा मार्च कर रही थी उस समय रास्ते में ही उसने किसी से विवाह कर लिया था और शीघ्र सरकारी क्षेत्रों की चालाकियों से उसको जानकारी हो गई थी।

कार्यकुशलता नामक चीज उसमें नहीं थी किन्तु ऊपर के लोगों को किस प्रकार प्रसन्न रखा जाय और नीचे के लोगों को किस तरह डांटा डपटा जाय यह उसको अच्छी तरह आता था। उसे उच्च अधिकारियों से यह पूछने के लिये तैयारी करने में कई कई दिन लग जाते थे कि क्या वह उनके आराम और सजावट के किये कुछ फूल या कुछ कुर्सियां ला सकता है। किन्तु यदि कोई उसे पत्र या सूचना लिखने को कहता तो उसका चेहरा लज्जा से लाल सा हो जाया करता था और कुछ क्षण के लिए बाहर जाकर शोर मचाकर इस काम के लिये अपने किसी अधीन कर्मचारी को बुला लिया करता था।

जिन तीन कार्य-कर्ताओं को वह अपने साथ दफ्तर का काम करने

के लिए लाया था वे दफ्तर म भ। अपनी छापामारी आदतों को अपन साथ ले आये थे। जब कभी कोई उनसे किसी काम के लिए कहता तो वे चुपके से दफ्तर से गायब हो जाया करते थे : इसलिए बहुधा मुझको अपने काम के अतिरिक्त उनका काम भी पूरा करना पड़ता था। कई बार तो मेरे सिर पर चार चार व्यक्तियों का काम एक साथ आ पड़ा करता था। मैं उपमन्त्री के लिए जो काम करता था उसमें बहुधा इसलिए विघ्न पड़ जाया करता था कि मेरे नये अध्यक्ष के लिए टेलोफोन आता रहता था, जबकि वह हजरत ऊपर के कमरे में आराम किया करते थे। पहले तो मैं दौड़कर ऊपर जाकर उसको टेलीफोन की सूचना दे आया करता था, जिस पर वह मुझको टेलीफोन करने वाले का नाम पूछने के लिए वापस भेज दिया करता था। और इस पर मुझको एक बार फिर ऊपर जाकर यह कहना होता था कि अमुक व्यक्ति टलीफोन कर रहा है। इतना ही नहीं। यदि वह टेलीफोन करने वाले की बात को महत्वपूर्ण समझता तो मुझको उसे लिख लेने का आदेश कर दिया करता था। जिसका मतलब यह था कि मुझको फिर वापस आकर संदेश लिख कर दुबारा उसके पास वापस जाना पड़ता था। जब कि मैं ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर दौड़ता रहता था, वह मौज से अपने सोफ़े पर बैठा हुआ अपने अन्य चिरकालिक सहयोगियों से गपशप करता रहता था या "एण्ड क्वाइट फ्लोज़ दी डान" नामक पुस्तक के पन्ने बदलता रहता था। ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी यह पुस्तक कभी समाप्त ही न होगी। वह अपने आप तो कभी दफ़्तर में आता ही न था। कुछ दिन तक इस प्रकार का कटु अनुभव करने के पश्चात् मैंने यह निश्चय कर लिया कि अब इस बेहूदगी को सहन नहीं करना चाहिए। इस लिए मैंने एक सभा में उसकी आलोचना की और बताया कि उसका रवैया पुराने समाज के नौकरशाहों से भी अधिक खराब है। जब वह सभा चल रही थी तो मैंने उसके चेहरे पर रोष का कोई चिन्ह नहीं पाया। बल्कि इसके प्रतिकूल उसने यह स्वीकार कर लिया कि यदाकदा उससे अवश्य भूल हो गई होगी। किन्तु सभा समाप्त होने के पश्चात् उसकी आंखें मुझ पर आग बरसाने लगी और ऐसी आग जिससे मुझको उसकी अपनी प्रति शत्रुता के विषय में मुझको तनिक भी भ्रम नहीं रहा। उसकी आदतों मे तो कोई सुधार हुआ ही नहीं। अगले दिन मैंने भी प्रतिशोध की भावना से काम किया और टेलीफोन करने वाले को यह कहकर टाल दिया कि वह अपने दफ्तर म नहीं है और यदि किसी टेलीफोन करने वाले ने मुझसे अपनी बात

लिख लेने को कहा तो मैंने ऐसे बातचीत की जैसे कि मैं कोई अशिक्षित गंवार चपरासी हूं। पर मेरे ऐसे नकारात्मक विरोध का उसको तुरन्त पता चल गया जिसके लिए उसने मेरी तीव्र आलोचना की।

पार्टी के विवाहित सदस्यों को प्रत्येक शनिवार को 'मनोविनोद' का अधिकृत अवसर मिलता था। मेरे इस अध्यक्ष की 'प्रेमी' निश्चित समय पर प्रत्येक शनिवार को वहां अवतीर्ण हो जाया करती थी। उसकी शिक्षा भी प्रारम्भिक पाठशाला से अधिक नहीं थी। परन्तु उसको दो बातों पर बहुत गर्व था—वह चार वर्ष तक क्रांति की सेवा कर चुकी थी और उसका पति एक अध्यक्ष था। जब उसका एक बच्चा पैदा हुआ तो उसको मेरे ही विभाग में एक छोटे से दफ्तर में काम करने के लिए भेज दिया गया, ताकि उसको अपने बच्चे की देखभाल करने के लिए अधिक समय मिल सके। आकृति और प्रतिभा की दृष्टि से वह एक साधारण स्त्री थी किन्तु उसके 'प्रेमी' के अधीन जो लोग काम करते थे उनके प्रति उसका रवैया अहंकार और कृत्रिम दया का रहता था। मुझको उससे अनेक बार मिलने का अवसर मिला। जब भी मैं उससे मिलता था वह मुझसे अपने व्यस्त रहने की बात कहा करती थी। कभी कभी वह मुझ से क्रांति पथ पर मेरी प्रगति के विषय में भी प्रश्न कर लिया करती और बड़ी दया दर्शाती हुई कहती, "काश मेरे पास तुम्हारे प्रगतिशील बनने के काम में सहायता करने का समय होता।" कभी कभी वह मुझको यही आश्वासन देती कि यदि कभी ऐसा समय आया कि जब उसको इतना व्यस्त न रहना पड़ा तो वह अवश्य ही मेरे विचारों को उन्नत कराने में इतनी सहायता कर सकेगी कि मैं भी संघ में उसके ही स्तर का सदस्य बन सकूं—पर यह प्रायः असम्भव ही था कि उसको कभी फुरसत मिलेगी क्योंकि वह कहती थी "ऐसा लगता है कि संघ का काम मेरे बिना चल ही नहीं सकता। पर यदि कभी मुझको तुम्हारी सहायता करने का अवसर मिला भी तब तक मैं और मेरा प्रेमी निस्संदेह कहीं और ऊपर जा पहुंचेंगे। पर यह निश्चय समझिए कि मैं अपने प्रेमी के मातहत लोगों को आगे बढ़ाने में मदद करना कभी नहीं भूलूंगी।"

दसवां परिच्छेद

जुआ और भ्रष्टाचार

जब मैंने सुना कि मेरे अध्यक्ष ने मेरे नकारात्मक विरोध की बात आलोचना सभा में रखने के बजाय मेरी रिपोर्ट कर दी है और इसलिए अब मेरे विषय में सरकारी जांच शुरू हो गई है तो मुझको बड़ी चिन्ता हुई और मेरा धीरज टूटता दिखाई देने लगा। मेरे विरुद्ध जो आरोप लगाए गए थे उनमें पांच बातें कही गई थीं, जो इस प्रकार थीं—अध्यक्ष के प्रति अवज्ञा, पुराने समाज के पक्ष में विषवमन, संघ की निन्दा, कामरेडों के पारस्परिक सम्बन्धों में विकार उत्पन्न करने का प्रयत्न और नये कामरेडों में क्रांति और नये समाज के प्रति उदासीनता का बीजारोपण। मुझको पता नहीं था कि मेरे ऊपर लगाए गए आरोपों को अब किसी अदालत में पेश किया जायगा, या मेरी गतिविधि के विषय में कुछ और जानकारी कर लेने के लिए इसको कुछ समय के लिए और गुप्त रखा जायगा। न ही मुझको यह मालूम था कि मुझको इन अपराधों के लिए कोई दंड भोगना पड़ेगा या नहीं।

जिस दिन मुझको अपने विरुद्ध अध्यक्ष द्वारा लगाये गये आरोपों का पता चला, उससे पहले दिन मैंने एक नए कामरेड से बात चीत की थी। उस नए कामरेड ने मुझसे पूछा था कि "वह कौन सा नियम है जिसके अनुसार संघ का एक उच्च अधिकारी तो हार जीत की बाजी लगा कर जुआ (माह-जोंग) खेल सकता है पर जिसमें जनसाधारण के लिए इस खेल को निषिद्ध कर दिया गया है।" इस पर मैंने उत्तर दिया था कि "नए समाज में भी पुराने समाज की ही वर्ग भेद है।। नए समाज का यह वर्ग भेद जो कई प्रकार से पुराने वर्ग भेद तरह से भी अधिक तीव्र है-- पहले तो संघ और जन साधारण के बीच देखने को मिलता है और बाद में संघ के भीतर चिरकालिक कामरेडों और नए कामरेडों के पारस्परिक सम्बन्ध में दृष्टिगोचर होता है। संघ के भीतर जो वर्ग भेद है—जिसके अनुसार बड़े छोटे का दर्जा तय किया जाता है वह वास्तव में बीज

रूप में एक नई जाति पाँति का सूचक है। ये विशेषाधिकार क्रांति में लगे कार्य-काल के अनुपात से मिलते हैं।" संघ और जनसाधारण के बीच पाये जाने वाले अन्तर के विषय में मैंने कहा था कि "ऐसा प्रतीत होता है मानो सरकारी अधिकारियों को तो होली जलाने की छूट है और जन साधारण को अपना दिया तक जलाने की अनुमति नहीं ।"

मेरे इन शब्दों पर नये कामरेड को बहुत आश्चर्य हुआ था क्योंकि प्रश्न एक विशिष्ट विषय को लेकर पूछा गया था । मुझसे उसका स्पष्ट रूप में समाधान किए बिना नहीं रहा गया था । मेरा अब तक का यह अनुभव रहा था कि जब भी मैंने किसी की शंकट का ससाधान स्पष्ट रूप से करने का यत्न किया तो नये कामरेडों में क्रांति के प्रति भावना रूपी अग्नि मन्द पड़ गई और आन्दोलनकारियों की मेरे प्रति क्रोधाग्नि तीव्रतर हो गई । मेरी बिल्कुल यह नीयत नहीं थी कि नये शासन को उलटने के लिए कोई कार्यवाही की जाय क्योंकि मेरी अपनी स्थिति पहले ही इतनी डांवाडोल थी कि मैं और जोखिम नहीं उठाना चाहता था । किन्तु यह बात निर्विवाद थी कि मैं उन लोगों में से था जिनको वास्तव में अधिकारियों की उद्घोषित नीति और व्यवहार के बीच पाये जाने वाले अन्तर पर बहुत चिन्ता थी । इस स्थिति को स्वीकार कर लेने पर कोई हानि है ऐसा भी मैंने कभी नहीं माना था । जो कुछ भी मैंने कहा था सच ही था और मैं अपने पुराने अध्यक्ष की तरह यह मानने लगा था कि किसी समस्या को या स्पष्ट वास्तविकता को स्वीकार करने से इन्कार करने भर से काम नहीं चल सकता । मैंने निश्चय कर लिया कि मेरे विरुद्ध की गई जांच का कुछ भी रूप या परिणाम क्यों न हो, मैं अपने पुराने अध्यक्ष की सलाह पर पूरा अमल करूंगा और अपनी बात पर डटा रहूंगा ।

मुझको एक ऐसे चिरकालिक कामरेड के दफ्तर में बुलाया गया जो तथा-कथित स्वाध्याय और शिक्षाविभाग का अध्यक्ष था । मेरे विरुद्ध लगाए गये आरोपों का उल्लेख करने के पश्चात् उसने विनम्रतापूर्ण शब्दों में चेता-वनी दी कि अफ़वाहें फैलाकर धैर्य और साहस को कमजोर करना और आपस में मनमुटाव पैदा करना अनुशासन की अवहेलना करना है । मेरे सिर में मानों जूं जमी थी मैं कह बैठा, "यदि मैंने कोई असत्य बात कही है तो मैं उसके लिए संघ द्वारा कठोरतम दंड पाने को तैयार हूं और आश्वासन देता हूं कि

इसके विरुद्ध ओंठ तक नहीं हिलाऊंगा।"

"मैंने यह कभी नहीं कहा कि तुम झूठ बोलते हो।"

"तो फिर मुझे यहां बुलाया क्यों गया है ?"

"केवल इसलिए कि मैं तुमको यह चेतावनी दे दूं कि कुछ ऐसी बातें जिनके विषय में ज़बान खोलना उचित नहीं।"

"सत्य के विषय में अब कोई बात न कही जाय, यही न।"

उसने बड़ी असंतोषभरी दृष्टि से मेरी ओर देखा—"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि कभी कभी सत्य के विषय में भी बकझक करना गलत हुआ करता है।"

मैंने बिना किसी आवेश के कहा—"मैंने सत्य के विषय में कभी बकवास नहीं की है। अनुचित बात करने के जितने भी उदाहरण मेरे विरुद्ध दिए जा सकते हैं उनमें से किसी में भी कोई ऐसी बात नहीं मिलेगी जो साधारण प्रश्न के साधारण उत्तर से भिन्न हो। मैं इस बात को बिल्कुल साधारण समझता हूं कि जो कोई नया कामरेड पुराने समाज को छोड़कर हम में आकर मिलता है और कुछ नई नई बातें देखता है तो उसे उन पर आश्चर्य होना चाहिए। यह हो सकता है कि संघ के जीवन में इस प्रकार की जिज्ञासा को सत्य द्वारा संतुष्ट करने की बात साधारण नहीं मानी जाती, किन्तु व्यक्तिगत दृष्टि से मेरा यह विश्वास है कि यदि इन कामरेडों को क्रांति के कुछ पहलुओं के विषय में सावधान कर दिया जाय तो उससे अन्त में क्रांति का अधिक भला होगा चाहे उसका मतलब यही क्यों न हो कि उनके स्वर्ग के स्वप्न भंग हो जांय।"

"तो तुम यह बात स्वीकार करते हो कि तुमने नए कामरेडों का साहस और धैर्य भंग करने का यत्न किया है ?"

इस प्रश्न का उत्तर देने के बजाय मैंने अपनी मुख्य बात को फिर छेड़ दिया—"क्या सत्य से धैर्य और साहस को हानि हुआ करती है ?"

मेरी बात सुनकर उसका असंतोष बढ़ता जा रहा था और वह कहने लगा—"कामरेड ! कभी कभी घटनाओं और स्थिति के विषय में ऐसे भावानुवाद करने आवश्यक हो जाते हैं जिससे संघ को सहायता मिले। यदि इस विषय में अभी तक तुम्हारी सामन्तवादी भावनाएं बनी हुई हैं तो कम से कम तुम अपनी जबान तो बन्द रख सकते हो, समझे।"

"समझा। संघ में अब तक मेरा अनुभव यही रहा है कि स्वार्थ ही को जीवन का मूल मन्त्र मानना चाहिए।"

वह जैसे भभक उठा और कहने लगा, "जनतन्त्रीय संवाददाता होने के नाते तुम्हारा तो यह भी अनुभव रहा है कि सिद्धान्तों का विचारों से सम्बन्ध होना चाहिए, और सत्य के लिए ही सत्य की खोज करके कोई ऐसी बात नहीं करनी चाहिए, जिससे कामरेडों और जन साधारण पर हानिकारक प्रभाव पड़े।"

मैंने आत्म-रक्षा को दृष्टि में रखते हुए कहा—"मेरे विचार में मेरी बातचीत से कोई हानिकारक प्रभाव नहीं होना चाहिए।"

"कल जो तुमने उस नए कामरेड से यह कहा था कि जब कि सरकारी अधिकारियों को होली जलाने की छूट है, साधारण जनता को दिया तक जलाने की अनुमति नहीं; इसका तुम्हारी राय में क्या असर हो सकता है ?"

अब अचानक मुझको कुछ बेचैनी का अनुभव होने लगा और मैं सोचने लगा कि कहीं इस कामरेड ने ही तो मेरे खिलाफ चुगली नहीं खाई। मेरे लिए तो यह एक और नया सबूत मिल गया था कि क्रांतिकारी कैम्प में सच्चा मित्र पाना असम्भव है और इसलिए अपनी बात चीत में अधिक सतर्क रहना आवश्यकक है। मैंने अब अपने उक्त प्रश्नकर्ता से कहा—"नये कामरेड जुआ

विषयक नियम से कुछ गड़बड़ में पड़े नजर आते थे । इसीलिए मैंने उसके बारे में जो जानता था उनको बता दिया था ।"

"और क्या तुमने उसको यह नहीं कहा कि तुमने अपनी आंखों से उक्त नियम का अनेक बार खंडन होते देखा है । उदाहरणार्थ, तुमने यह कहा था कि तुमनें अपनी आंखों से अधिकारियों को जुआ खेलते देखा था ।"

"हां, पर यह बात तो सच ही थी ।"

"नामुमकिन"

"मेरा आपसे मतभेद है । यह सच है कि मैंने अपनी आंखों से स्टाफ अधिकारियों को जुआ खेलते देखा है ।"

"पर तुमको मालुम है वे कौन हैं ।" उसने मुझसे बड़ी चातुर्यपूर्ण वाणी में पूछा ।

"निस्संदेह मैं जानता हूं वे कौन है ।" मैंने उत्तर दिया और मैं यह समझा ही नहीं कि मैं उसके जाल में फंसता जा रहा हूं ।

"क्या तुम मुझे अपने साथ ले चलोगे और दिखा सकोगे कि अधिकारी वास्तव में जुआ खेलते हैं । यदि तुम ऐसा कर सके तो मैं समझूंगा कि तुम सच बोलते हो और तुम्हारे विरुद्ध लगाए गए आरोप रद्द कर दिए जायंगे ।"

मैंने कहा कि "यह तो न्यायोचित बात है," पर इतना कहने के पश्चात् मैंने अनुभव किया कि अब मुझको मेरे बिना जाने हुए ही एक जासूस के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है । पर यदि मैं इन्कार कर देता हूं तो मेरे विरुद्ध शुरू की गई पूछताछ जारी रहती जिसका परिणाम मेरे लिए घातक हो सकता था, क्योंकि मेरा नया अध्यक्ष मेरा बैरी बन गया था । अब मैं यह बात

अच्छी तरह से जान गया था कि मैं जाल में फंस गया हूं । पर मुझको यह भी संशय होने लगा कि जिस समय मैं उनको अपने साथ घटनास्थल पर ले जाऊं उस समय यदि अधिकारी वास्तव में जुआ खेलते न पाये जांय, तो मेरा क्या होगा ।

मैं उनको अपने साथ एक ऐसे होटल में ले गया जहां चिरकालिक कामरेड दक्षिण की यात्रा करने से पहले आराम करने के लिए लाकर रखे जाते थे । वैसे तो चिरकालिक कामरेडों से मेरा अस्पताल में परिचय हो चुका था । उक्त व्यक्तियों को मैं अस्पताल और होटल में जुआ खेलते देख चुका था । जब मैं जीने से होकर उक्त अधिकारी को साथ लिए हुए आगे बढ़ता चला जा रहा था मुझको एक साथ पाप का अनुभव और ग्लानि हो रही थी । मैं सोच रहा था कि यद्यपि वे व्यक्ति मेरे मित्र नहीं हैं, पर क्या मैं अपनी जान बचाने के लिए ही उन्हें नहीं फंसा रहा हूं । एक प्रकार से मेरे व्यवहार ही से यह मेरी इस धारणा की पुष्टि हो गई थी कि क्रांतिकारी कैम्प में सच्चे मित्र का पाना असम्भव है ।

मैंने एक द्वार खटखटाया और वहां से मैं एक छोटे कमरे में दाखिल हुआ । यह देखकर कि मैं कौन हूं एक चिरकालिक कामरेड हमको वहां ले गया । मैंने अपने साथी का उस व्यक्ति से परिचय कराया और उसके मित्रों आदि के स्वास्थ्य के विषय में पूछताछ की । उसने हमको बताया कि इस समय वे कहीं वुहान में गए हैं । "मेरा मन उनके साथ जाने को नहीं हुआ । मैं दक्षिण को प्रस्थान करने की प्रतीक्षा में हूं । प्रतीक्षा करते करते मन ऊब उठता है । यहां हाथ पर हाथ रखे बैठा हूं कुछ करने को है ही नहीं । पर मैं शिकायत नहीं कर रहा हूं ।" यह कहते हुए वह मुस्करा दिया और मुझको सिगरेट पेश करने लगा ।

यह देख कर कि उसके अतिरिक्त कमरे में कोई नहीं था मेरे मन में बहुत घबड़ाहट पैदा हुई । फिर मेरे आचरण की जांच पड़ताल करने वाला व्यक्ति मेरे साथ था । इस अधिकारी को मुझे किसी प्रकार संतुष्ट करना ही था । इसलिए मैंने इस चिरकालिक कामरेड से कहा—"मैंने सुना है कि आज कल कई लोग जुए में भी काफी रुपया पैसा खो चुके हैं ।" यह बात

कहते हुए मैं अपने भाव ऐसे बनाए रहा जैसे कि मेरी इस बात के पीछे कोई रहस्य छुपा हुआ न हो। मेरी यह बात सुनकर जैसे वह तो बिखर ही पड़ा : "भाग्य ने मेरा साथ कभी नहीं दिया और दूसरे लोग हैं जो मानों भाग्य पर सवारी किये हुए हैं। पिछले सप्ताह ही मैं अपनी बची खुची पूंजी का आधा भाग खो चुका हूं। वास्तव में यही कारण है कि मैं अपने मित्रों के साथ घूमने फिरने नहीं गया। और रात मैं थोड़ा पैसा अवश्य जीत गया था पर जो कुछ खो चुका हूं इससे उसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती।"

यह कह कर वह उदास मन हो बैठ गया और अपने ओंठ चबाने लगा। तब मैंने अपने साथी अधिकारी की ओर देखा। वह उदासीन भाव से पुराने कामरेड से कहने लगा—"क्या आपको यह नहीं मालूम कि जुआ खेलना अनुशासन के विरुद्ध है।"

चिरकालिक कामरेड इस स्थिति को नहीं समझा और बोला—"क्या हुआ यह तो साधारण मनबहलाव की बात है।"

उस बन्द हवा वाले कमरे में मेरा मन मिचलाने लगा; मैं खड़ा हो गया और कुछ बहाना करके होटल से बाहर चला गया। मुझको आत्म-ग्लानि हो रही थी।

बाद में मुझको पता लगा कि मेरे विरुद्ध लगाये गए आरोपों की जांच बन्द हो गई।

पीकिंग की मुक्ति के तुरन्त पश्चात् पीकिंग विश्वविद्यालय के एक प्रोफ़ेसर ने ल्यू-शाओ-ची से जिनका चीन में माओ-त्सी-तुंग के बाद दूसरा स्थान है लम्बी बातचीत की ये प्रोफ़ैसर मनोविज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान थे और इस समय वे व्यक्तिगत रूप से इस बात का पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि पार्टी का एक सदस्य फटी हुई सूती यूनिफार्म पहनने में गर्व का अनुभव क्यों करता है। इसके पीछे क्या मनोवैज्ञानिक कारण छिपा है। इसके साथ ही वे यह भी जानना चाहते थे कि अधिकारियों में भ्रष्टाचार के चिन्ह क्यों पाए जाने लगे हैं। अपनी बातचीत के दौरान में

उन्होंने यह कहा कि भौतिक सामग्री को प्राप्त करना साधारण मानव का स्वभाव है। उनका मत था कि अब देर तक अधिकारी वर्ग गरीबी की अवस्था में नहीं रहना चाहेगा और अब तक यदि वह व्यक्तिगत कष्ट सहन करता रहा था तो उसका कारण केवल भारी प्रचार और लौह नियंत्रण ही था। उनका अनुमान था कि जिस समय नियंत्रण ढीला पड़ जायगा, तो नीति द्वारा या आवश्यकता के कारण अधिकारी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से साधारण अवस्था प्राप्त कर लेंगे। तब वे जीवन में अच्छी रहन सहन की सामग्री पाने की चेष्टा करने लगेंगे और यदि कानूनी ढंग से उनको सफलता न मिली तो वे उसको पाने के लिए गैर कानूनी साधन अपना लेंगे। ल्यू-शाओ-ची ने उनके मत का खंडन किया। उसके लिए ऐसा करना स्वाभाविक भी था। उसने प्रोफेसर को आश्वासन दिया कि पार्टी सदस्यों को सदस्य बनाने से पहले ही इतनी सुन्दर शिक्षा और दीक्षा मिल चुकी है कि संघ में भ्रष्टाचार की आशंका करना ठीक नहीं।

उक्त प्रोफ़ेसर की भविष्यवाणी सत्य उतरी थी अब मैं देख रहा था। उदाहरण के लिए तथाकथित भूमि-सुधार आन्दोलन में नित्यप्रति निम्न प्रकार का व्यवहार देखने में आता था। लोग किसी जमीदार के घर को घेर लेते थे और उसको पकड़ कर बाहर निकाल लेते थे जहां एक खुली सभा में उस पर मुकदमा चलाने का स्वांग रचा जाता था। गवाही देने के लिए पार्टी के आन्दोलनकारी इकट्ठे हो जाते थे, भाषण दिये जाते थे और जनता की भावनाओं को भड़काया जाता था। यहां तक कि अन्त में सारी सभा एक स्वर से अभागे जमींदार की मृत्यु की मांग करने लगती थी। इसके पश्चात् जमींदार को भीड़ के हवाले कर दिया जाता था जो लाठी डंडों से पीटकर उसे समाप्त कर देती थी। उसको इस प्रकार मृत्यु-दंड देने के पश्चात अधिकारी एलान करते थे कि अब उसकी जमीन किसानों की हो चुकी है। दूसरी ओर उन पार्टी सदस्यों को जिन्होंने उसके मुकदमे के दिन भारी परिश्रम किया था उसका रुपया पैसा और ज़ेवर दे दिया जाता था। और आन्दोलनकारियों को उसके कपड़े, मेज, कुर्सी और चारपाई आदि वस्तुएं मिल जाती थीं।

शहरों में भ्रष्टाचार दावानल की तरह फैला और अब उसको छिपाये रखना असम्भव हो गया। यहां तक कि ऊपर के लोगों को भी अन्त में उसके

अस्तित्व को स्वीकार करना पड़ा। अधिकारियों ने अब कुछ लोगों को कठोरतम दंड दिया ताकि उनके उदाहरण से दूसरे लोगों के दिल में कुछ डर पैदा हो। पर अभी वे इस स्थिति को व्यक्तिगत दोष कहकर टालते गये। किंतु व्यक्तिगत दोषों की मात्रा इतनी बढ़ गई कि 'तु ंगपे डेली' नामक समाचार-पत्र को इसके विषय में लम्बे चौड़े लेख लिखने पड़े। उक्त समाचार पत्र के लिए यह कोई कम लज्जा की बात नहीं थी कि उसके एक भ्रष्टाचार विरोधी अग्रलेख लिखने के तुरंत पश्चात् ही उसके अपने कार्यालय में भ्रष्टाचारी और घूसखोरी के उदाहरण पाये गये।

भ्रष्टाचार का श्रीगणेश उन दफ्तरों में हुआ जिनका सम्बन्ध रुपये पैसे से रहता था। उदाहरण के लिये प्रत्येक विभाग के वे अधिकारी जिनके पास रुपये पैसे का काम था भ्रष्टाचार के अपराधी पाये गये। वित्त सम्बन्धी प्रायः सभी अधिकारी चिरकालिक कामरेड थे। वे प्रायः अशिक्षित थे, जिनको रुपये पैसे के विषय में न तो कोई अनुभव था और न कोई योग्यता ही। पर क्योंकि वे संघ में देर से सेवा करते आये थे, वे इस प्रकार क्रांतिकारी योग्यता प्राप्त कर चुके थे; इसलिए रुपया पैसा उनको सौंप दिया गया था। पर जब धन अकारण ही गायब होने लगा और यह पता लगा कि या तो भारी अव्यवस्था है या खुली धोखा धड़ी तो अधिकारियों को चिन्ता होने लगी। मैं ऐसी कुछ सभाओं में मौजूद था जहां ऐसे मामलों की जांच पड़ताल की गईं। मैंने देखा कि प्रायः वित्त सम्बन्धी सभी अधिकारी एक विशिष्ट पद्धति का अनुसरण करते आये हैं।

मेरे अपने विभाग के वित्त अधिकारी पर घूस लेने का आरोप था। उसके कमरे में असाधारण फर्नीचर, उसकी अमरीकन खाकी यूनिफार्म, वाटरप्रूफ घड़ी और चमकता हुआ जूता और अमरीकी .४५ पिस्तौल, पहले ही से पुकार पुकार कर उसके समृद्ध होने की घोषणा कर रही थीं। जाँच पड़ताल के समय उसने यह स्वीकार किया कि उसने यह सब चीजें चोर बाजार से खरीदी थीं। क्रांति में उसका अब तक जो योग रहा था, उसको देखते हुए उसका चोर बाजारी करना कोई पाप नहीं समझा गया। किन्तु एक बात ऐसी थी जो इससे कहीं भयंकर पाप मानी गई। प्रचार मन्त्री ने केन्द्रीय अधिकारियों से एक नयी बिल्डिंग बनवाने की अनुमति चाही थी और अनुमति

पा भी ली थी। इसके विषय म ब्यौरा बनाने का काम वित्त अधिकारी के ऊपर छोड दिया गया था। वह तुरन्त ही एक ठेकेदार के पास गया और उससे कहा कि नयी बिल्डिग पर जो रुपया लगने वाला है यदि उसका २० प्रतिशत उस को अर्थात वित्त अधिकारी को मिल जाय तो यह ठेका उसको मिल सकता है। पहले तो ठेकेदार अनमना दिखाई दिया पर बाद मे मान गया। बिल्डिग पूरी नही बन पाई थी कि उस वित्त अधिकारी ने डिस्काउंट के रूप मे उससे १० प्रतिशत की और माग की, जब तक विल्डिग बन नही गई तब तक ठेकेदार ने इस विषय मे किसी से कुछ नही कहा। उसके बाद उसने सघ मे दरख्वास्त दे दी और मुकदमे की याचना की। वित्त अधिकारी ने अपने ऊपर लगाये गय सभी अभियोगो को स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लिया और कहा कि वह इन सभी के लिए क्षमा याचना करना चाहता है। निर्णय करने के लिए एक सभा बैठी और सभा के निर्णय और जांच पडताल के सम्बन्ध मे प्राप्त हुए सारे कागजो को रक्षा विभाग के पास भेज दिया गया। हमने उसको फिर कभी नही देखा। और न ही मै यह जान सका कि उसको क्या दड मिला—क्योकि यह तो सैनिक भद ठहरा दिया गया था। पर यदि उसकी 'तीव्र आलोचना' हुई तो भी क्या हुआ। आखिर उसने जो कुछ किया उसका दायित्व सघ पर ही था, क्योकि यदि सघ उसके हाथ मे इतनी बड़ी धन राशि न छोडता और इतनी सुविधाए प्रदान न करता तो यह सब कुछ देखने को न मिलता, और न ही उसको आज गोली का शिकार होना पड़ता।

एक भिन्न प्रकार के भ्रष्टाचार का उदाहरण हमको उस समय दिखाई दिया जब हमने एक सैनिक को हाथ पाव बधे हुए रक्षा विभाग की ओर ले जाये जाते देखा। मने एक सनिक से पूछा जो यह प्रदर्शन देख रहा था—"यह क्या मामला है ?"

यह सैनिक मेरा प्रश्न सुनकर हस पड़ा और कहने लगा—"यह पट्ठा कही रात मे एक वेश्या की खोज में गया था पर अपने साथ पैसा ले जाना भूल गया था। जिस घर में वेश्या रहती है उसके मालिक ने उसका बैज पहचान लिया और उसकी करतूत का बिल मेरे अध्यक्ष के पास भेज दिया।"

एक महिला कामरेड ने जो मेरे विभाग में काम करती थी और उस समय मेरे साथ थी इस कहानी को झूठा बताया। वह कहने लगी—"मैं इस सैनिक को जानती हूं, यह बड़ा वफादार कामरेड है और इसके पास पैसा भी है। कल रात यह दूसरे कामरेडों के साथ एक वेश्या के घर में गया था। उसका साथी तो लौट आया पर यह वहीं ठहरा रह गया क्योंकि उसको एक वेश्या की आत्म-कथा बहुत मनोरंजक प्रतीत हुई। इस वेश्या ने उसको बताया था कि उसके वेश्या होने का कारण एक पूंजीहीन वर्ग की समस्या ही थी। उसको नहीं मालूम था कि उसके वहां इस प्रकार ठहरने से उसके बिल की रकम बढ़ जायेगी। इस बिल को वह अदा नहीं कर सका जिस पर वेश्यालय का मालिक क्रुद्ध हो गया और उसने यह बिल हमारे अध्यक्ष के पास भेज दिया। यह सैनिक आज जो कुछ दंड भोग रहा है उसका कारण केवल यह है कि वह एक असहाय बाला की आत्म-कथा को सुनने के लिए तैयार हो गया था। मैं कहे देती हूं कि यह रजिस्ट्रीशदा वेश्यालय पुराने समाज के सबसे अधिक अंधकारपूर्ण कोने हैं, और एक न एक दिन अवश्य बन्द करने पड़ेंगे।"

ग्यारहवां परिच्छेद

वर्गों का पुनः वर्गीकरण

आखिर वह दिन आ गया जब कि प्रचार मंत्रालय का सारा स्टाफ अपनी नई इमारत में, जो उसके लिए अभी बनाई गई थी, चला गया। मैं उन चार स्टाफ अफसरों में से था जो सचिवालय को चलाते थे। मुझको अधिकांशतः प्रचार कार्य करना पड़ता था जिनकी उपमंत्री को आवश्यकता थी। उसके अतिरिक्त मुझको अपने उन अन्य तीन साथियों का कार्य करना पड़ता था जो यद्यपि स्टाफ अफसर तो थे संवाददाताओं का काम करने में असमर्थ थे। बाद में मुझे सेना और पार्टी के समस्त सदस्यों के लिए मनोरंजन की व्यवस्था करने का काम भी सौंप दिया गया।

मेरे नये अध्यक्ष के बारे में चाहे कुछ भी कहा जाय किन्तु यह स्वीकार करना पड़ता था कि वह अपने अफसरों को खुश रखने के काम में दक्षता प्राप्त किए हुए था। क्योंकि हमारा कार्यालय मंत्री महोदय के स्वागतालय का काम करता था, इसलिए उसने उसके साथ ४ कमरों का एक बहुत अच्छी तरह सजा धजा सूट और हस्तगत कर लिया था जिसमें कुछ गमले, उत्तम ढंग की प्रकाश व्यवस्था और लम्बे-लम्बे शानदार पर्दे लगे थे। इस प्रकार उसने मन्त्री महोदय को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था। इस कमरे को देखने से पुराने समाज के सजे-धजे कमरों की याद आती थी और मेरी फटी हुई मैली यूनिफार्म उसके ऊपर एक विचित्र व्यंग सा करती थी।

उपमंत्री ने शुष्कता दिखाते हुए एक दिन कह दिया था कि उक्त कमरे को देखने से ऐसा प्रतीत होता है मानो उसको प्रेमालाप के लिए तैयार किया गया है। किन्तु मंत्री महोदय ने उपमंत्री की इस टिप्पणी को अनसुनी कर दिया और अध्यक्ष की पसन्द की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

हमारा कार्यालय बहुत लोकप्रिय बनता जा रहा था । चिरकालिक कामरेड बहुधा वहीं आकर अपनी वाद-विवाद की सभाएँ किया करते थे । उनमें से अधिकांश मेरे सहयोगी थे । मैं भी उनकी सभा में चला जाया करता था । यद्यपि क्रांति में मेरा कोई विशेष योग नहीं रहा था । इस कमरे की शान और छटा देख कर उनमें से बहुत से अपने गन्दे बालों और कपड़ों की ओर से सचेत से हो गये, इसलिए यहां आने से पहले उनमें से बहुत से अपने बालों में वैसलीन लगा लिया करते थे, जूतों को चमका लेते थे, और पतलून पर इस्तरी कर लिया करते थे । मुझको यह देख कर काफी मनोरंजन हुआ करता था कि किस प्रकार यह मंजे मंजाए छापा मार धीरे-धीरे पूंजी वादियों की आदतों को अपनाते जा रहे हैं, और शहरी रहन-सहन के माया जाल में फंसते जा रहे हैं ।

२० साल तक निरन्तर क्रांति की सेवा करते रहने के पश्चात् चिरकालिक कामरेडों ने वक्तृता की एक नई शैली पैदा कर ली थी जिसको वे "वाद-विवादोचित भाषण कला" कहने लगे थे । चाहे वाद विवाद हो रहा हो, स्वाध्याय हो या आलोचना चल रही हो, इन कामरेडों का बोलने का तरीका हमेशा एक ही रहता था । बिना किसी सूचना के जब जिसके मन में आया खड़ा हो गया और बिना किसी भूमिका के अपना मत प्रकट कर दिया और अपने पक्ष के समर्थन में जहां आवश्यकता हुई जल्दी से एक, दो, तीन, चार करके बातों को गिना दिया । किसी भी विषय पर बातचीत चलती हो उनका शब्द-भंडार सीमित ही रहता था और वे थोड़े से सही शब्दों के अतिरिक्त और किसी भी शब्द का प्रयोग नहीं करते थे । इस प्रकार की वक्तृता का एक मात्र उद्देश्य यही दिखाई देता था कि प्रत्येक वक्ता अपनी वाणी द्वारा यह प्रदर्शित कर सके कि कहां तक वह नई नीति या नये नियम के अनुकूल विचार रखता है । तदनुसार वर्षों तक ऐसी ही प्रक्रिया को बार-बार दोहराते रहने के कारण इन लोगों की वक्तृता ऐसी रटी रटाई हो गई थी कि विवश होकर एक बार स्वयं माओत्सीतुंग को उनकी आलोचना करनी पड़ी थी । उन्होंने ऐसे वक्ताओं की दुकान पर काम करने वाले या दवा बेचने वाले उन लोगों से तुलना की थी जो बिना सोचे समझे एक दो, तीन, चार, दवाओं को मिलाते रहते हैं । किन्तु देर तक किसी को जिस बात की आदत रही हो उसे वह आसानी से नहीं छोड़ सकता। जितनी ही तेजी और जोश के साथ चिरकालिक कामरेड एक, दो, तीन,

चार करके अपनी बातों को गिनता उतने ही जोर से उसका समर्थन होता और उसको अत्यन्त प्रभावकारी वक्ता ठहराया जाता। कुछ दिन के पश्चात् मैंने भी उनकी शैली से परिचय प्राप्त कर लिया और उन समस्याओं की जानकारी भी जिन पर वे विचार-विमर्श किया करते थे। इस प्रकार मैं भी एक धारा-प्रवाह वक्ता माना जाने लगा।

× × ×

हमारी वाद विवाद सभाओं में अब एक नया विषय उत्पन्न हो गया। यह विषय था समाज के विभिन्न वर्गों का पुनः वर्गीकरण। ये समस्याएं क्रांति का ही स्वाभाविक परिणाम थीं। शासन-सूत्र ग्रहण करने से पहले वर्तमान शासक वर्ग उस समय के "शासक वर्ग" के विरुद्ध निरन्तर आन्दोलन करता रहा था। अब जब वह स्वयं ही शासक वर्ग बन गया तो उसको अपनी नीति में परिवर्तन करने की आवश्यकता हुई। इस नयी आवश्यकता की पूर्ति उन्होंने "वर्गों के पुनः वर्गीकरण" द्वारा की।

अब सम्पत्ति-विहीन क्रांतिकारियों में कल कारखानों में काम करने वाले मजदूर अग्रगण्य थे। बेचारे किसान और खेतों में काम करने वाले मजदूर जो क्रांति के लिए अपना खून पसीना एक करते आये थे। अब एक अर्ध-सम्पत्ति हीन वर्ग के प्रगति-विमुख विशेषणों से आभूषित किये जाने लगे। "प्रगतिशील" विद्यार्थी और "जनतंत्रीय" अध्यापक जो अब तक जोर से लाल झँडे हिलाते आये थे और क्रांति के समर्थन में अपना गला फाड़ चुके थे, स्वल्प सम्पतिशाली, और दुर्बल प्रवृत्ति के ऐसे लोग माने जाने लगे जिनको सुधार और पुनः शिक्षा की आवश्यकता थी। वे पूंजीवादी जो रुपये पैसे से क्रांति का समर्थन करते आये थे, अब राष्ट्रवादी समाज के पूंजीवादी वर्ग के सदस्य ठहराये गये और इसलिये अन्ततोगत्वा विनाश के अधिकारी। इस नीति-परिवर्तन के पश्चात् पुराने "प्रगतिशील" व्यक्तियों को पता लगा कि क्रांति में उनका वास्तव में क्या स्थान है। जहां वे आ पहुंचे थे वहाँ से अब पीछे हटने का कोई अवसर उनको प्राप्त न था, क्योंकि क्रांति के प्रति खेद प्रकट करना, या उससे हटने का उल्लेख भर करना भयंकर तिक्रियावादी पाप समझा जाता था जिसकी घोरतम आलोचना अनिवार्य थी।

अब जिस पद्धति को अपनाया गया वह नितान्त निर्मम थी। पार्टी कभी कोई भूल कर ही नहीं सकती थी, क्योंकि उसके संचालक देवता थे इसलिए जो कुछ वे करते थे ठीक ही करते थे। उनकी इस सर्वोपरि बुद्धि और सर्वशक्तिमान धारणा पर कोई प्रतिबन्ध न था। जब उच्च शासकों के पास शक्ति नहीं थी तो वे कहा करते थे कि "एक चीनी का दूसरे चीनी को नुकसान पहुंचाना पाप है।" जब उनको कुछ शक्ति मिली पर इतनी नहीं कि मन-मानी कर पाते तो उनका नारा यह बन गया था कि हमको "एक संयुक्त सरकार की स्थापना करना है।" इस नये नारे का उद्देश्य उन लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करना था जो अपने आपको निष्पक्ष और बीच का मार्ग ग्रहण करने वाले मानते थे। जब पार्टी के हाथ में सारे शक्ति सूत्र आगये तो प्रत्येक व्यक्ति को जो क्रांति के लिए सक्रिय रूप से कार्य नहीं करता था या पार्टी की आये दिन बदलते रहने वाली नीतियों से मतभेद रखता था, प्रतिक्रिया-वादी ठहराया जाता था और यदि उसे पुनः शिक्षा के योग्य नहीं समझा जाय तो उसको नष्ट कर देना चाहिये ऐसी धारणा बना दी गई थी। गैर कम्युनिस्ट क्षेत्रों में कम्युनिस्टों का समर्थन करने वाले व्यक्ति की प्रशंसा की जाती थी। जिन क्षेत्रों में कम्युनिस्टों का आधिपत्य था, उनमें कम्युनिस्टों का समर्थन करने वाले को इसलिए बुरा भला कहा जाता था और दण्ड दिया जाता था कि वह क्रांति में आंशिक रूप से ही सहायता देता आया है।

सन् १९४९ ई० में पीपिंग में चीन की जनतंत्रीय केन्द्रीय सरकार की ओर से जो मौलिक कानून जारी किया गया उसकी पहली धारा में कहा गया था कि वर्तमान सरकार "एक ऐसा जनतंत्रीय अधिनायकवाद है जिसका नेतृत्व मजदूर वर्ग करता है और जिसकी नींव मजदूरों और किसानों की पारस्परिक मैत्री पर रखी गई है।" मैंने एक बार उपमन्त्री से पूछा कि "मजदूर वर्ग के नेतृत्व" वाक्य का क्या अर्थ है। मेरे इस प्रश्न पर मानो कि उसको बिजली छू गई और यह समझकर कि मैं कोई दूसरा प्रश्न न कर बैठूं वह बोल उठा—"तुमको शायद यह जानकर आश्चर्य हो रहा है कि माओत्सी-तुंग जो किसी समय अध्यापक और पीपिंग विश्वविद्यालय में एक पुस्तकालय के कर्मचारी रह चुके थे, कैसे मजदूर बन गये। यही बात है न? बात दर असल यह है कि जिस समय आप मजदूर वर्ग की पार्टी में सम्मिलित हो जाते

हैं उस समय आप स्वतः मजदूर वर्ग के सदस्य हो जाते हैं और इस प्रकार पार्टी की दृष्टि से आप मजदूर बन जाते हैं चाहे पहले आप किसी भी वर्ग से सम्पर्क क्यों न रखते हों ।"

क्रांति में जो भी सम्मिलित होता था उसको "पुनः वर्गीकरण" सभाओं में जाना पड़ता था । इन सभाओं में जो कोई सम्मिलित होता था उसका वर्ग निर्णय करने में अपनी भावनाओं और छोटी टुकड़ी के अध्यक्ष की इच्छाओं का बड़ा महत्वपूर्ण प्रभाव रहता था । आप जितने अधिक गरीब हों उतना ही अधिक अच्छा आपका वर्ग है, ऐसा इन सभाओं का नियम था । यदि किसी समय आप इतने अकिंचन थे कि आपके खाने के लिए न भोजन था और न पहनने को कपड़ा तो निश्चय ही आप सर्वोपरि सम्पत्ति विहीन वर्ग के सदस्य ठहराए जाते थे और उचित सम्मान पाते थे । यदि नये वर्गीकरण के समक्ष भी आप सम्पत्ति विहीन वर्ग के ही सदस्य थे और यदि आप अभी नियमित रूप से पार्टी के सदस्य नहीं बनाये गये थे तो कुछ दिन बाद आपको पार्टी का सदस्य बना लिया जायगा और भविष्य में शुद्धीकरण आन्दोलन में आपको विशेष लाभ होगा ऐसा आश्वासन दिया जाता था ।

एक बार किसी का वर्ग निश्चय हो जाने पर सदा के लिए उसका स्थान निश्चय हो गया ऐसी बात न थी । वर्गों का बारबार पुनः वर्गीकरण होता रहता था । कई बार सभाएं बुलाई गईं और यह तय करने के लिए बाद विवाद हुए कि किस व्यक्ति विशेष को कौनसी मौलिक शर्तें पूरी करनी चाहिए कि उसका वर्ग निश्चित रूप से निर्धारित किया जा सके । इसके लिए बहुत सी प्रश्नावलियां भी जारी की गई । किन्तु यदि आज एक प्रश्नावली ठीक समझी जाती तो कल दूसरी और इस प्रकार कोई निश्चय ही न हो पाता । इस सम्बन्ध में सबसे अधिक उलझन यह थी कि इस समय केन्द्रीय सरकार और स्थानीय अधिकारियों के बीच गुप्त रूप से तनाव चल रहा था । स्थानीय अधिकारी कई बार ऐसी आज्ञा और नियम जारी कर देते थे जो केन्द्रीय सरकार के आदेश और नियमों का खंडन करते थे । जब जब ऐसा होता तो सम्बन्धित व्यक्ति उलझन में पड़ जाते कि कौन सी आज्ञा मानें और किस की अवहेलना करें । माओत्सी-तुंग ने अपना नया जन-तंत्र (New Democracy) नामक पुस्तक में छात्रों, बैंक कर्मचारियों और

दफ्तरों के बाबुओं को स्वल्प सम्पत्तिशाली वर्ग का सदस्य ठहराया था चाहे उनके पास अपनी कोई सम्पत्ति हो या न हो। टुन ज़ु ज़िया (जो मध्य चीन में लिन-पियाओं का मुख्य सहकारी था) अपनी एक रिपोर्ट में जो उसने जन-तन्त्रीय प्रतिनिधि सम्मेलन के सामने पेश की थी इन लोगों को सम्पत्ति-हीन वर्ग का सदस्य ठहरा चुका था। यह स्वाभाविक ही था कि शिक्षित कामरेडों में टुंग की परिभाषा अधिक प्रिय मानी गई। पर ऐसा करना केन्द्रीय सरकार की अवज्ञा करना था। इसलिए "पीपल्सडेली" नामक सरकारी पत्र में नई नीति को "नगर पहले गांव बाद में" नारे द्वारा व्यक्त किया गया। पर अगले दिन लिन पियाओं ने अपने नाम से "यांगट्सी रिवर डेली" नामक पत्र में अपनी नीति को "गांव पहले नगर बाद में" नारे द्वारा घोषित किया।

हमको यह मालूम था कि स्थानीय अधिकारी और केन्द्रीय सरकार में तनाव है, किन्तु हमको यह मानना पड़ता है कि इस तनाव को बहुत ही गुप्त रखा गया था। एक नियम ऐसा था जिससे इस प्रकार के मत भेद को प्रकाशित करना निषिद्ध कर दिया गया था। मैं जिस समय क्रांति की सेवा कर रहा था उस समय मुझको केवल इन्हीं दो मतभेदों का अनुभव हुआ था जिनका मैं उल्लेख कर रहा हूं। साधारणतः नियम यह था कि अपने स्तर से ऊपर के स्तर की आज्ञा माननी चाहिए। इस प्रकार सबसे अधिक अधिकार-पूर्ण बात सबसे ऊपर के स्तर अर्थात् केन्द्रीय सरकार की होनी चाहिए थी। इस प्रकार की शक्ति-श्रृङ्खला सिद्धान्त की दृष्टि से तथाकथित "जन तन्त्रीय केन्द्रीयकरण की जान मानी जाती थी पर सिद्धान्त को क्रियान्वित करते समय उसके गुण और दोष दोनों ही सामने आते हैं। यदि कहीं इस श्रृङ्खला की एक कड़ी भी टूट जाय तो फिर सारी ही श्रृङ्खला विनष्ट हो सकती है।

इस प्रकार हमारी वर्गीकरण की सभाएं प्रायः बिना किसी परिणाम पर पहुंचे ही समाप्त हो जाती थीं। एक ओर माओ के समर्थक होते थे तो दूसरी ओर टुन के और दोनों के विचारों में सामंजस्य नहीं हो पाता था। इस प्रकार हम बिना वर्गीकरण प्राप्त किये ही क्रांति की सेवा करते रहे।

अब क्योंकि कम्यूनिस्ट चीन में शासक वर्ग का पद ग्रहण कर चुके थे,

उनको यह चिन्ता हो गई कि उनको एक सम्मानित सरकार के रूप में स्पष्ट मान्यता मिले और इसलिए उन्होंने संघ की प्रतिष्ठा को बढ़ाने की आवश्यकता अनुभव की। तदनुसार विभिन्न स्तरों के अध्यक्षों द्वारा आदेश जारी कर दिया गया कि अधिकारियों और कर्मचारियों को सरकारी काम करते समय आत्म-सम्मान और आत्म-गौरव के साथ रहना चाहिए। "आत्मगौरव आन्दोलन" का प्रभाव माओत्सी-तुंग पर भी हुआ जिनकी एक सभा में इसलिए आलोचना की गई थी कि वे राजकीय उत्सवों के समय भी अपने कोट के कालर के बटन खुले रखते हैं। जब नई आज्ञा जारी हो गई तो माओत्सी-तुंग के उन पुराने चित्रों के स्थान पर जिनमें उनके कालर के बटन खुले थे नये चित्र लगाये गये जिनमें उनके कालर के बटन बन्द थे।

अनिवार्यतः महिला कामरेड साल में एक बार गर्भवती हो जाया करती थीं। इसलिए आवश्यकतानुसार उनकी यूनिफार्म को ऐसा रखा गया था कि वह उनके परिवर्तनशील शरीर के उपयुक्त हो, और उनकी पतलून में पेटी या बटन हो या न हों इस विषय में कोई कठोर नियम नहीं निर्धारित किया गया था। आत्म-गौरव का जो आन्दोलन चल रहा था, महिलाओं की यूनिफार्म उनके अनुकूल नहीं थी और इससे शासकों को यह चिन्ता थी कि किस प्रकार इस समस्या का कोई सन्तोषप्रद हल पा लिया जाय कि ऐसी स्त्रियों की चाल ढाल से गौरव भी झलके और उनको असुविधा भी न हो। कुछ सभाएं हुई जिनमें कुछ लोगों ने यह सुझाव रखा कि यदि स्त्रियों के लिये चोगे का विधान कर दिया जाय तो यह समस्या हल हो सकती है। इस प्रस्ताव का विरोध करने वालों का मत था कि चोगा पुराने समाज की सम्पत्तिशाली-वर्ग की वेशभूषा का प्रतीक है। कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्होंने जनतन्त्रीय यूनिफार्म और स्कर्ट के सामंजस्य ही में महिलाओं की इस प्रधान समस्या का हल देखा। किन्तु इस प्रस्ताव का विरोध उन लोगों ने किया जो स्कर्ट (साये) को सामन्तशाही पसन्द का प्रतीक मानते थे। अन्त में लेनिन की नेवी (नाविक) यूनिफार्म स्वीकृत हो गई और उनमें बटन की एक पंक्ति और रख दी गई ताकि ज्यों ज्यों महिलाओं का शारीरिक विस्तार हो त्यों त्यों वे अपनी ड्रेस को ढीला करती रह सकें।

साधारणतः संघ का सांस्कृतिक स्तर नीचा था। इससे दुनिया क्रांति के

विषय में यह भ्रम कर सकती थी कि उसके संचालकों को आत्म-गौरव नाम की किसी बात से परिचय नहीं है। इसलिए साधारण सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा करने के लिए संघ की ओर से नवचीन पुस्तक भंडार द्वारा ऐसी पुस्तक-माला प्रकाशित की गई जिसका पढ़ना स्टाफ अफसरों के लिये अनिवार्य कर दिया गया। इस पुस्तकमाला की १२ पुस्तकें थी। उनके लेखकों में कोई भी अमरीकन या अंग्रेज नहीं था क्योंकि अमरीका और इंग्लैंड दोनों ही प्रति-क्रियावादी जहर का श्रोत माने जाते थे। किन्तु उनके लेखक चीनी भी नहीं थे क्योंकि चीनी लेखकों के विषय में अभी तक अधिकारियों को यह विश्वास था कि वे चीन के पांच हजार वर्ष के इतिहास को न तो समुचित रूप से लेखनीबद्ध कर सकते हैं और न कनफ़्यूसियस के सिद्धान्तों और प्राचीन चीनी संस्कृति में कोई संशोधन ही कर सकते हैं। इसलिए वे सभी पुस्तकें सोवियट रूस में लिखी गई और हमारे कल्याण के लिए चीनी भाषा में अनूदित की गई।

इस विषय में हमारे अध्ययन की सबसे पहली कड़ी लियानचेव की "समाज विकास का इतिहास" नामक पुस्तक थी। इस पुस्तक में सबसे पहले परिच्छेद का शीर्षक था "बन्दर अभियोग" जिसके अन्तर्गत उस अमरीकन अध्यापक का उल्लेख किया गया था जिसने यह कह दिया था कि मानव जाति का विकास बन्दर से हुआ है। उस परिच्छेद में आगे चलकर बताया गया था कि उसकी शहर में तुरन्त ही प्रतिक्रिया हुई, और धार्मिक संस्थाओं द्वारा उक्त अध्यापक पर यह आरोप लगाया गया कि उसने भगवान की निन्दा की है। यह बताने के बाद लियानचेव ने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसमें उसने कहा था कि पश्चिमी देशों ने जान बूझ कर धर्म का इसलिए आविष्कार किया था कि वे जनता पर सम्पत्तिशाली वर्ग का आधिपत्य बनाये रखना चाहते थे। उनके इस तरीके से यह सिद्ध हो गया कि धर्म वास्तव में जनता के लिए अफीम का काम करता है और सम्पत्तिशाली वर्ग उसको अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए औजार के रूप में इस्तेमाल करता है क्योंकि सम्पत्तिशाली वर्ग में जनता को मानव प्राणी के विकास के विषय में सत्य को बतलाने का साहस नहीं है। वह यह नहीं कह सकता कि वास्तव में मानव का विकास बन्दर से हुआ है।

इस नव स्वाध्याय में सैनिको और सरकार के स्टाफ अफसरों को भाग लेने का आदेश हुआ। सैनिक पत्र-पत्रिकाओं में नित्य प्रति अत्यधिक स्तम्भों में

यही बतलाया जान लगा कि किस प्रकार मानव का बन्दर-पिता से उदय हुआ। जो राजनैतिक कमीसार थे वे रात दिन सैनिकों को यह समझाने में अपना सिर खपाने लगे कि वे अर्थात् सैनिक वास्तव में बन्दर ही की सन्तान हैं। यह सच था कि सैनिकों की शिक्षा-दीक्षा बहुत ऊंचे दरजे की न थी परन्तु इस पर भी वे यह मानने को तैयार नहीं थे कि उनके पिता पितामह निरे बन्दर ही थे और यह कि वे अब तक पिता पितामहों के नाम पर वास्तव में बन्दरों ही का सत्कार करते आये थे।

चिरकालिक कामरेडों ने भी जो अब स्टाफ अफसर बने हुए थे इस नई शिक्षा के प्रति उचित प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। इसके दो कारण थे। पहला तो यह कि संघ सदा ही उनसे कठोरतर कार्य कराता आया था और दूसरा यह कि जब कभी वे नये शिक्षित कामरेड से बात करते तो शिक्षाभाव के कारण अपने आपको उनके मुकाबले में कमजोर ही पाते थे। तीसरा कारण यह था कि इस नये साँस्कृतिक विषय पर वे अपने अज्ञान को प्रदर्शित करके दूसरों की नजरों में नीचा नहीं होना चाहते थे। संघ की ओर से उनको स्वाध्याय समुदाय में सम्मिलित करने के लिए अनेक बार आह्वान करना पड़ा और चेतावनी देनी पड़ी, तब कहीं वे नये स्वाध्याय को ग्रहण करने लिए तैयार हुए।

मेरे स्वाध्याय समुदाय में १४ चिरकालिक कामरेड थे। उनमें से केवल दो ही ऐसे थे जिनको प्रारम्भिक शिक्षा से आगे का कुछ ज्ञान था। शेष किसान वर्ग के व्यक्ति थे और उनके लिए यह समझना उतना ही कठिन था कि बन्दर से इन्सान कैसे बना, जितना कि यह समझना कि इन्सान भी बन्दर बन सकता है। फिर भी उनका रवैया सैनिकों के रवैये से कुछ अच्छा था। वे स्टाफ अफसर थे और देर से पार्टी के अनुशासन को मानते आये थे इसलिए संघ की ओर से जो कुछ आज्ञा होती उसको वे शिरोधार्य मानने को तैयार रहते थे। उधर क्योंकि जब स्वाध्याय समुदाय बन ही गया था तो वे कर्तव्य वश यह कहने लगे थे कि इस मनोरंजक समस्या परविचार विमर्श करने से वास्तव में उनका सांस्कृतिक धरातल ऊंचा हो जायगा।

वे अब इस बात में दिलचस्पी दिखाने लगे कि हममें से वे लोग जो विश्व विद्यालय केछात्र रह चुके थे इस समस्या के विषय में क्या मत रखते हैं। उनकी

राय मे शिक्षित वर्ग का सदस्य होने के कारण इस क्षेत्र मे विशेषज्ञ था। मैंने खेद प्रकट किया और कहा कि "मानव विकास के विषय मे मैं विशेषज्ञ नही हू और इसलिए आपके विभिन्न प्रश्नो का उत्तर देने मे असमर्थ हूं।" उनको जीव शास्त्र का कोई ज्ञान नही था और मेरा अपना ज्ञान भी इस विषय मे बहुत ही सीमित था। पर फिर भी वे मुझसे अनेक प्रश्न करते रहते थे और जिसका परिणाम यह हुआ कि जब एक के बाद दूसरा प्रश्न मुझ पर बरसने लगता तो मैं स्वय ही गड़बडा जाया करता। उन बेचारो की समस्याओं को तीन श्रेणियो मे विभक्त किया जा सकता है। (१) क्या किन्ही विशेष परिस्थितियो मे इन्सान भी बन्दर बन सकता है? (२) यदि इन्सान का उदय बन्दर से हुआ है तो बन्दर का उदय कहा से हुआ? (३) आज हम जो बन्दर देखते हैं क्या वे कभी इन्सान बन सकेंगे?

सघ की ओर से पहले सवाल को बेहूदा कह कर टाल दिया गया और उस पर वाद-विवाद करने की आज्ञा नही रही। दूसरे प्रश्न का उत्तर देने के लिए एक विशेषज्ञ को बुलाया गया पर उसके पारिभाषिक शब्दो को सुनकर सबसे अधिक उलझन चिरकालिक कामरेडो को हुई। एक दिन जब यह विशेषज्ञ "सेल" शब्द का उल्लेख कर रहा था तो उनमे से एक अचानक खडा हो गया और पूछने लगा—"कि यह 'सेल' क्या बला है?" विशेषज्ञ ने अपनी उगली के इशारे से एक वृत सा बनाया और बोला—"उदाहरण के लिए अडे को देखिये। वह भी एक सेल है।" इससे उस चिरकालिक कामरेड का काम सरल हो गया और वह तुरन्त यह परिणाम निकाल बैठा कि जिस प्रकार आदमी का उदय बन्दर से हुआ है उसी प्रकार बन्दर का उदय अडे से हुआ है। अब चिरकालिक कामरेड विशेषज्ञ की कुछ परवाह किये बिना आपस मे यह बहस करने लगे कि बन्दर अडों से कैसे पैदा हो सकता है। अधिकाश अडे मुर्गियो से पैदा होते हैं और अधिकाश मुर्गिया अडो से। उनका यह तर्क वितर्क सुन कर मैं बडी मुश्किल से अपनी हसी रोक सका, विशेष कर उस समय जब कि वे सहस्रो वर्ष पुरानी बात फिर उठाने लगे कि अडा पहले था या मुर्गी। किन्तु कोई भी व्यक्ति सतोषजनक ढग से इस विकासात्मक योजना मे बन्दर का स्थान निर्धारित नही कर सका।

विशेषज्ञ ने तीसरे प्रश्न का उत्तर यह कह कर दिया कि जीव-विज्ञान

सम्बन्धी कुछ ऐसी परिस्थितियां अवश्य हैं जिनमें बन्दर का इन्सान बन सकता है। पर क्योंकि उन परिस्थितियों को अब पैदा नहीं किया जा सकता, बन्दर इन्सान नहीं बन सकता। कुछ कामरेड जिनकी सहज बुद्धि काफी तीव्र थी इस स्पष्टीकरण से सन्तुष्ट नहीं हुए और उन्होंने इसका व्यवहारिक महत्व स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। दूसरे कुछ ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने विशेषज्ञ को उन परिस्थितियों की परिभाषा या विस्तृत विवरण देने को बाध्य करने की चेष्ठा की क्योंकि वे इस विषय में स्वयं कुछ प्रयोग करना चाहते थे। यह संयोग की बात थी कि एक अर्थाधिकारी के पास एक पालतू बन्दर था। इस स्वाध्याय का श्रीगणेश होने से पहले कोई इस बेचारे जानवर की ओर आंख उठा कर भी नहीं देखता था। अब उक्त अर्थाधिकारी ने इस बन्दर को अगली स्वाध्याय सभा में लाना स्वीकार कर लिया। जिस समय शोर मचाता हुआ वह जानवर कमरे में दाखिल हुआ तो कामरेडों में जिस उत्तेजना और जिज्ञासा का संचार हुआ उसका उल्लेख करना कठिन है। कामरेड लोग इस बन्दर के चारों ओर आ घिरे और एक दूसरे को कोहनी मार-मार कर पीछे हटाने की कोशिश करने लगे ताकि उक्त पशु को अधिकाधिक गौर से देख सकें। उन्होंने बहुत ही गम्भीरता-पूर्वक ढंग से उसका अवलोकन किया और उसके चारों अवयवों और दुम को छू कर देखा। उनमें से कुछ आश्चर्य करने लगे कि न जाने वे स्वयं कब उनकी अपनी दुम गायब हो गई थी। दूसरों को यह देखकर विस्मय होने लगा कि उनके अपने चेहरों पर बन्दर के चेहरे की जैसी झुरियां क्यों नहीं हैं। कुछ ऐसे प्राणी थे जो उसी समय उस वन्दर को इन्सान बनने के लिए फुसलाने लगे। कुछ कामरेड गम्भीरता पूर्वक उन जीव-विज्ञान सम्बन्धी परिस्थितियों की कल्पना करने लगे जिनमें उनके विशेषज्ञ के कथनानुसार बन्दर वास्तव में इन्सान बन सकता है। उपस्थितलोगों में एक व्यक्ति ने तो यहां तक कह डाला कि थोड़ी देर इस बन्दर को डराया धमकाया जाय तो मुमकिन है कि वह इन्सान बनना स्वीकार कर ले। उसकी यह बात सुनते ही प्रायः सभी कामरेड उछलने कूदने लगे और चिल्ला-चिल्ला कर पीटने की धमकी देकर बन्दर को इन्सान बनने का आव्हान करने लगे। यह सब कुछ देख कर बन्दर बहुत ही प्रसन्न हुआ और अपने मानव देहधारी स्वामी की नकल करने लगा। उस समय किसी ने सुझाव रखा कि यदि तूफान और बिजली कड़कड़ाये और उस समय इस बन्दर को बाहर छोड़ दिया जाय तो वह अवश्य ही इतना घबड़ा जायगा कि उसको विवश होकर इन्सान बनना ही पड़ेगा। अब सब बड़े सन्तोष के साथ तूफान की प्रतीक्षा

करने लगे। अन्त में जब यह तूफान आया तो कोई भी अपेक्षित विकासात्मक परिणाम दृष्टिगोचर नहीं हो सका। हां गरीब बन्दर बुरी तरह से भीग अवश्य गया। पर भीगना तो ऐसी घटना है जो इन्सान और पशु दोनों के लिए समान रूप से हो सकती है।

संघ ने तब आग्रह किया कि उसके सदस्यों को बन्दर इन्सान कैसे बना जैसी छोटी समस्या पर इतना समय नहीं खोना चाहिए अपितु उनको अपना ध्यान उस श्रमयुग पर केन्द्रीभूत करना चाहिए जिसमें बन्दर इंसान बन सका था। बन्दर का उदाहरण क्रांतिकारियों के लिए श्लाघ्य है ऐसा बताया गया और यह आदेश किया गया कि स्टाफ़ अधिकारी बन्दर की तरह घोर परिश्रम करके उच्चतर स्तर प्राप्त करें। पर बहुत से कामरेड अभी ऐसे थे जो बन्दर के विषय में अभी तक दिलचस्पी बनाए हुए थे। इस लिए उसकी आपस की बात चीत का मुख्य विषय देर तक बन्दर ही बना रहा। अब उन्होंने इस छोटे से पशु का नया मूल्यांकन जो कर लिया था। उस दिन तक जबकि संघ ने इस विषय की चर्चा को नियमित रूप से समाप्त ही न कर दिया बन्दर हमारे चिरकालिक कामरेडों के समुदाय का प्रिय पुत्र सा बना रहा।

११ वां परिच्छेद

अमरीकी साम्राज्यवाद और रूसी चांद

युद्ध के विभिन्न मोर्चों से जो रिपोर्ट आई थीं इन सब में यह दावा किया गया था कि बन्दर के विषय को लेकर जो स्वाध्याय किया गया उससे सभी सैनिक सही विचार की ओर अग्रसर हुये हैं।" किन्तु हम लोग जो प्रचार मंत्रालय में काम करते थे अपने अनुभव और जिस तेजी के साथ संघ ने इस विषय को त्याग दिया था उससे जानते थे कि यह इतना सफल नहीं रहा है जितना कि इसको होना चाहिए था। स्वाध्याय में जो यह कमी रह गई उसको पूरा करने के लिए एक नये विषय को लेकर स्वाध्याय शुरू किया गया। इस स्वाध्याय का विषय था अमरीका, उसका युद्ध प्रेम और साम्राज्यवादी प्रवृति किन्तु अमरीका वासियों में जो जीवट और अमरीका की वैज्ञानिक प्रगति में जो ओज है उसका कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया।

इस नये स्वाध्याय का श्रीगणेश ५ अगस्त १९४९ ई० को तब हुआ जब अमरीका के स्टेट डिपार्टमैण्ट की ओर से एक श्वेत पत्रिका प्रकाशित की गई। इस पत्रिका के प्रकाशन से चीन के शासकों को अमरीका के विरुद्ध प्रोपेगेंडा करने का एक नया अवसर मिल गया। पहले भी कुछ दिन से वे चीनी जनता में अमरीका के विरुद्ध विषवमन करते आये थे। साधारणतः वे किसी एक अज्ञात अमरीकन के कुकृत्य को १५ करोड़ बार बढ़ा चढ़ा कर पेश करते थे। यदि कोई अमरीकन सैनिक शराब पिये हुए पाया गया और उसका आचरण अवांछनीय-देखा गया तो चीन के शासक अपनी प्रजा को उसका यह अर्थ बताते थे कि उक्त सैनिक स्वयं प्रेजीडेंट ट्रूमेन के आदेश पर ही ऐसा किया है। नव चीन समाचार समिति ने उक्त श्वेत पत्रिका को "अमरीका द्वारा चीन को सहांयता देने से इन्कार" शीर्षक से प्रकाशित किया। और विभिन्न समाचार पत्रों में इसकी निन्दा में छः लेख प्रकाशित कराये।

बाद में मुझको पता चला कि उन्होंने श्वेत पत्रिका के वाक्यों और अर्थों को अपनी इच्छानुसार तोड़ मोड़ दिया था। कहीं उन्होंने कुछ वाक्यों को निकाल दिया था तो कहीं कुछ नये वाक्य जोड़ दिये थे और कहीं कुछ वाक्यांशो को उनकी संगति से अलग करके छापा था। उक्त लेखों को प्रकाशित करने का एक मात्र उद्देश्य यह था कि तथाकथित अमरीकन साम्राज्यवादी दोषों को सामने रख कर उसकी निन्दा की जाय। उस समय अमरीका के विदेश मंत्री श्री डीन अचेसन थे। उन्होंने उक्त श्वेत पत्र में किसी स्थान में कहा था—"मेरा विश्वास है कि चीन में जनतन्त्रीय व्यक्तिवाद का पुनः उदय होगा।" चीन के शासकों को ऐसा भय हुआ कि कहीं चीन के वे शिक्षित लोग जो यद्यपि प्रकटतः संघ से सहमत हैं पर अपने मन में इसके विपरीत धारणा बनाए हुए हैं और इस प्रतीक्षा में हैं कि "आगे चलकर देखें क्या होता है," इस वाक्य को वर्तमान शासन के विरुद्ध अपना नारा ही न बना लें। यह सच है कि संघ में अधिक से अधिक संख्या में शिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता थी और संघ अपने कार्य के लिये अत्यधिक संख्या में शिक्षित व्यक्तियों का इस्तेमाल करता आया था। किन्तु अब वह यह महसूस करने लगा था कि इन शिक्षित व्यक्तियों का एक गुट बन सकता है जिससे उसकी राजनैतिक शक्ति को खतरा पैदा हो सकता है। तदनुसार संघ ने यह कोशिश करनी शुरू की कि कुछ भी हो अमरीका के पक्ष में सहानुभूति नहीं उत्पन्न होने देनी चाहिये। इसलिए "जन तन्त्रीय व्यक्तिवाद" की तीव्र आलोजना की जाने लगी और उसको प्रतिक्रियावादी नारा बताया जाने लगा। संघ का यह आग्रह था कि सच्ची जनतन्त्रीय शासन प्रणाली "जन तन्त्रीय केन्द्रीयवाद" द्वारा ही सम्पन्न की जा सकती है।

श्री सू मूंग-युंग को जो किसी समय लू जिन के प्रतिद्वन्दी रह चुके थे, और अब अमरीका सम्बन्धी विषय के विशेषज्ञ माने जाते थे, अमरीका विरोधी भाषण देने और संघ सदस्यों के धैर्य को बढ़ाने के लिये विभिन्न कार्यालयों में भेजा गया। एक दिन हमारा सारा विभाग उनका भाषण सुनन गया। उन्होंने अपना भाषण बड़े पंडितोचित पाखण्ड के साथ प्रारम्भ किया और कहा कि "अमरीका का साम्राज्यवाद क्रूरात्मक और नृशंसतापूर्ण है, इतिहास में ऐसी बड़ी आक्रमणात्मक शक्ति पहले कभी नहीं देखी गई।" उनके शब्दों और वाक्यों को निस्सन्देह कम्युनिस्ट पार्टी के लिये वफादारी की कसौटी

पर पूरा उतरने वाला माना जाना चाहिए। पर चिरकालिक कामरेड जो प्रोपेगेंडा से अनभिज्ञ नहीं थे उनके इस भाषण को सुनकर उत्साहित नहीं दिखाई दिए और जो नये कामरेड थे अथवा दफ्तरों में काम करने वाले शिक्षित कार्यकर्त्ता थे वे इसकी पक्षपातपूर्ण ध्वनि से असन्तुष्ट हो गए यद्यपि इस मतभेद को प्रकट करने का साहस उनमें नहीं था। तुरन्त श्री नू ज्ञा जो अपने श्रोताओं की प्रतिक्रिया भांपने में बड़ा चतुर था अपनी आवाज धीमी करके कहने लगा मानो कि एक बहुत बडा रहस्य बताने लगा हो, "अमरीकन साम्राज्यवाद अपने आक्रमणात्मक उद्देश्यको सफलतापूर्वक छिपाना जानता है। उसके मुकाबले में जर्मनी और जापान के लोग अपने साम्राज्यवाद के विषय में कहीं अधिक ईमानदार थे, किन्तु हम अमरीका वालों की चालों में आने वाले नहीं हैं। अमरीकन साम्राज्ववाद अपने आपको भेड़ की खाल में कितना ही छिपाये किन्तु उसकी दुम खाल के बाहर दिखाई देती ही रहेगी जिससे पता लग जाता है कि इस खाल के अन्दर भेड़ नहीं भेड़िया है। जर्मनी का अतिक्रमण एक ठोस वास्तविकता थी और उसका ठोस ढंग से मुकाबला किया जा सकता था। किन्तु अमरीकन अतिक्रमण एक जहरीली गैस की तरह है जो वायु में ओत-प्रोत हो जाती है और इसलिए उसका मुकाबला भी बहुत चातुर्यपूर्ण ढंग से ही किया जा सकता है।"

सभा समाप्त हो जाने के पश्चात् एक शिक्षित नये कामरेड और मेरे बीच सु के भाषण को लेकर बातचीत शुरू हो गई। यह नया कामरेड हंसते हुए कहने लगा, "कभी आप यह कल्पना कर सकते हैं कि जर्मन अतिक्रमण तो ठोस था और अमरीकन अतिक्रमण जहरीली गैस के समान है? क्या इस गधे को इससे कोई ज्यादा अच्छी बात नहीं सूझ सकती थी? अगर इसको इस प्रकार की बात करनी ही थी तो पूरी तरह से करनी चाहिए थी और साथ ही यह भी बता देना चाहिए था कि यदि अमरीकन या अमरीका का अतिक्रमण गैस के जैसा है तो रूस का द्रव पदार्थों के समान।"

इस भाषण के पश्चात् हमारी छोटी टुकड़ी की जो सभाएं हुई वे लगभग एक महीने तक अमरीका विरोधी विषय ही को लेकर वाद-विवाद करती रहीं। अमरीका के श्वेत-पत्र को जिस संशोधित रूप में चीन में छापा गया था, हमारा वाद-विवाद उसका विश्लेषणमात्र करने तक ही सीमित था।

अमरीका के विरुद्ध समाचार पत्रों में जो छः लेख छापे गए थे और सु के भाषण पर जो टिप्पणियां हुई थी, साथ में उनकी चर्चा होती रही। इस स्वाध्याय का स्पष्ट उद्देश्य यह था कि किसी के मन में भी अमरीका के साम्राज्यवाद के विषय में कोई "छुपा हुआ भ्रम" भी न रहे। ऊपर से जो किताबें पर्चे आदि भेजे जाते उनके आधार पर हमारे छोटे टुकड़ी के अध्यक्ष ने कुछ इस प्रकार की बात बतानी शुरू की : "अमरीका के लोग दिखावटी, अपव्ययी और गहराई को समझने मे असमर्थ होते हैं। अमरीका के पुरुष स्त्रियों के अतिरिक्त और कोई बात नहीं सोच सकते। अमरीका की जनता जब वोट डालती है तो वह किसी समस्या को लेकर वोट नहीं डालती बल्कि यह देखकर अपनी राय दिया करती है कि डिवै साहब की मूंछें सुन्दर हैं और उनका स्वभाव शान्त हैं या यह कि क्योंकि ट्रूमैन किसी कपड़े की दुकान में नौकरी करते थे इसलिए वे अवश्य ही वोट के अधिकारी हैं।

"अमरीका चीन के प्रति जो सद्भावना प्रदर्शित करता है वह दुष्टतापूर्ण है। आरम्भ में जान लेटन स्टुअर्ट चीन में यह बहाना करके आया था कि वह यहां पर शिक्षा प्रसार में सहायता करेगा किन्तु वास्तव में वह जासूसी करने के लिए ही आया था इसलिए बाद में अमरीका की सरकार ने उनको पुरस्कार के रूप में अपने राजदूत का पद दे दिया।

अपने देश में कीमतों को ऊंचा बनाये रहने के तथा पूंजीपतियों को मोटा बनाए रहने के लिए अमरीका अपने ही सामान को नष्ट कर दिया करता है और अपनी खाने पीने की फालतू सामग्री को समुद्र में फेंक दिया करता है। उसकी इस मूर्खता के कारण उसकी सारी आर्थिक व्यवस्था छिन्न भिन्न हो जायगी और अमरीका का पतन हो जायगा।

"अपने सामान को कूड़े कर्कट की तरह फेंकने और विज्ञापन-कला की अतिशयता के कारण अमरीका के लोग अब तक संसार को धोखा देते रहे हैं। किन्तु वास्तविकता यह है कि उसके मुकाबले में रूस के लोगों का जीवन स्तर कहीं ऊंचा है और उसकी औद्योगिक अवस्था कहीं अधिक प्रगतिशील है।

"अमरीका का परमाणु बम रूस के परमाणु बम के मुकाबले में कोई

महत्व नहीं रखता । मोलोटोव ने एक बार कहा था 'कि केवल पिछड़े हुए चीन में परमाणु बम को अमरीका का गुप्त अस्त्र माना जाता था।' वास्तविकता तो यह है कि रूस के पास तो ये गुप्त अस्त्र वर्षों पहले ही से थे।"

इन वक्तव्यों के खंडन करने का किसी को स्वप्न में भी साहस नहीं हो सकता था। हम सभी रूस के उत्पादन की प्रशंसा किया करते थे और अमरीका के उत्पादन की निन्दा। किन्तु नये शिक्षित कामरेडों में अमरीका विरोधी आवेशपूर्ण प्रचार का कुछ और ही परिणाम हुआ। वे लोग उसके विषय में गंभीर चिन्तन करने लगे और फलतः उनके मस्तिष्क में अमरीका के साम्राज्यवाद के विषय में भ्रमों की संख्या और भी बढ़ गई। चिरकालिक कामरेडों का व्यवहार कुछ और ही दिखाई दिया। यदि उनमें से किसी को आप दो फौन्टेनपैन देते और कहते कि एक रूस का बना हुआ है और दूसरा अमरीकन पार्कर ५१ है और उसको कहते कि उनमें से एक ही उसको मिल सकता है तो यह तय करते समय कि कौन सा कलम लेना चाहिए यह चिरकालिक कामरेड गलती नहीं करते थे। जिसका स्पष्ट अर्थ यह था कि अमरीका विरोधी प्रचार उनके मस्तिष्क पर भी बहुत बड़ा असर नहीं डाल रहा था।

× × ×

उप-प्रचार मन्त्री से मेरा निरन्तर सम्पर्क रहता था। इस कारण मुझको अन्तर्राष्ट्रीय मित्रों अर्थात रूसी प्रतिनिधियों से जो रूस की सरकार द्वारा वहां भेजे गये थे बातचीत करने का अवसर मिला करता था। चिरकालिक कामरेडों को मेरे इन लोगों से बातचीत करने के सौभाग्य पर बड़ी ईर्ष्या होती थी। पर प्रकटतः वे मेरे स्थान और प्रभाव के विषय में नया मूल्यांकन करके मेरे साथ सम्मान-पूर्ण व्यवहार करते थे।

उत्तर पूर्वी चीन के साधारण लोगों को भी वास्तव में रूसियों का बड़ा अनुभव रह चुका था। उत्तर पूर्वी स्त्रियों को तो 'लाओ माओ चू' (घने बालों वाला आदमी) वाक्य सुनकर डर के मारे कंपकपी आ जाया करती थी या क्रोध के मारे उनका चेहरा तमतमा जाया करता था—ऐसी कटुतापूर्ण स्मृतियां थी उनके मन में इन रूसी सहोदरों के प्रति ! बच्चे तो 'टा बी चु' (लम्बी नाक वाले आदमी) को अपनी ओर आता देखकर भाग खड़े हुआ

करते थे। उत्तरी पूर्वी चीन के सैनिक इस बात से असन्तुष्ट थे कि नई सरकार प्रत्येक विषय में निर्देशन के लिए रूस की ओर ही देखती थी। यद्यपि उत्तर-पूर्व में की जाने वाली कटु आलोचना अन्य भागों में भी फैल चुकी थी, चीन के शासकों ने किसी प्रकार अपने स्टाफ अफसरों और सैनिकों के बीच उक्त [illegible] अभद्रतापूर्ण वाक्यों के प्रयोग को बन्द कर उनके स्थान में "सोवियत मित्रों" और "अन्तर्राष्ट्रीय मित्रों" शब्दों का प्रचलन करवा दिया था।

रूसियों को चीन में किस व्यवहारिक दृष्टिकोण के कारण लाया गया मैं कभी यह नहीं समझ पाया। पर उधर वुहान में उनकी संख्या नित्य प्रति बढ़ती जा रही थी। उस समय मैं जनतंत्रीय मनोविनोद व्यवस्था का भार संभाले हुए था और सारे वुहान में मुझको इधर उधर घूमना पड़ता था इसलिए वे रूसी लोग जब कभी अपने घर की याद करके या अकेले होने के कारण व्यथित हो उठा करते थे तो मुझ से अपने मन की बात कहने बैठ जाया करते थे। जब कहीं कोई सामूहिक पार्टी होती या किसी और अवसर पर लोग एकत्रित होते तो मैं उन लोगों को छांट कर बढ़िया जगह दिया करता था, कभी कभी तो इतनी बढ़िया कि वे हमारे अपने मंत्रियों की सीटों से भी वे अधिक अच्छी होती थी। तीन महीने में मुझको इस प्रकार सीटों की व्यवस्था २० से बढ़कर ४५० व्यक्तियों तक के लिए करनी पड़ गई। हमारे प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय मित्र को फ्री पास मिल जाते थे जिसको "अन्तर्राष्ट्रीय मित्र मनोविनोद अनुमति-पत्र" कहा जाता था। इस अनुमति-पत्र को लेकर हमारे अन्तर्राष्ट्रीय मित्र वुहान के किसी भी थियेटर या सिनेमा में बिना किसी रोक थाम के पहुंच जाया करते थे।

जब रूसी लोग पहली बार वुहान आये तो मुझको उनके कुछ तौर-तरीके देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ था—विशेषतः इसलिए कि ३० साल तक समाज-वाद का उपभोग करने के बाद मेरी राय में ऐसा न होना चाहिए था। उनका मशीनवत् व्यवहार और संगतहीन कार्य और विचार देखकर मुझको यह स्पष्ट हो गया था कि रूस के शासक अपनी पुनः शिक्षा व्यवस्था और प्रचार द्वारा अपना मन चाहा परिणाम प्राप्त कर चुके हैं। किन्तु उनके वुहान में कुछ दिन और टिके रहने के पश्चात् मुझको उनके व्यवहार में भी कुछ परिवर्तन दिखाई देने

लगा। क्योंकि आये दिन उनकी खुशामद की जाती और स्तुति गाई जाती थी इसलिए उनको कुछ नशा सा रहने लगा था अब वे अपने आपको पार्टी-अनुशासन-शृंखला से कुछ मुक्त सा हुआ अनुभव करते थे और ऐसे रहते थे मानों वे ही चीन के विजेता हैं। चीन का इतिहास क्या रहा है और उसकी संस्कृति कैसी है, अथवा उसके सुन्दर खंडहर उसके इतिहास और संस्कृति के विषय में किस बात की साक्षी दे रहे हैं इसमें उनको तनिक भी दिलचस्पी न थी, क्योंकि उनकी राय में इन सब बातों को महत्व देना आवश्यकता से अधिक राष्ट्रवादिता को प्रदर्शित करना था। चीन के चोर बाजार में कुछ पश्चिमी देशों से आया हुआ सामान बिका करता था उसमें ही उनकी विशेष दिलचस्पी दिखाई देती थी। हमारी जनतन्त्रीय मुद्रा का एक बहुत बड़ा भाग उनके द्वारा ऐसे कपड़ों, कलमों, घड़ियों और जेवरों पर खर्च किया जा रहा था जो घृणित पश्चिमी देशों के औद्योगिक समाज द्वारा उत्पादित किया गया था। यह देखकर मुझको बहुधा यह संदेह हो जाया करता था कि शायद रूस में जीवन का स्तर इतना ऊंचा नहीं है, जितना कि बताया जाता है। पहली बार अब मुझको यह भी संदेह होने लगा कि "लौह-पट्ट" के पीछे रहने वाली रूसी जनता पूंजीवादी देशों की जनता की अपेक्षा अधिक प्रगतिशील है।

किन्तु रूस कुछ भी करता संघ के सदस्यों को चीन के नये शासक उसकी स्तुति करने के लिए सदा ही बाध्य करते रहते। अब हमको रूस और चीन के पारस्परिक संबंधों के इतिहास को भी नई नज़र से देखना था। रूस ने चीन के प्रति अब तक जो कुछ किया था उस सबको चीन के प्रति मैत्री का ही प्रतीक मानने का आदेश था। रूस के सैनिक किस प्रकार सन् १९४५ ई० में उत्तर पूर्वी चीन से हमारे देश की मशीनों को उठा ले गये, अब उसको भी हमें यही सिद्ध करना था कि उन्होंने ऐसा चीनी भाइयों की सहायता करने के लिए ही किया था क्योंकि वे उक्त मशीनों को राष्ट्रवादी प्रतिक्रियावादियों के हाथों से सुरक्षित रखना चाहते थे। इस कार्यवाही में लेश मात्र भी उनकी बैर भावना नहीं थी, ऐसा हमको बताया जा रहा था और उसके पक्ष में यह कहा जा रहा था कि जब रूसी और चीनी भाई भाई हैं तब इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती कि रूसी अपने चीनी भाइयों के विरुद्ध कोई वैर-भाव प्रदर्शित करेंगे। यदि कोई रूसी सैनिकों द्वारा

संस्कृति एवं मित्रता प्रसार समितियां" बन गईं । रूसी भाषा सीखने के लिए जो पहली किताब तैयार की गई उसके प्रथम पाठ का शीर्षक था "रूसी संसार की सर्वश्रेष्ठ भाषा ।"

यह सब कुछ देखकर मुझको ३५ वर्ष पहली वह बात याद आने लगी जबकि विदेशों से डिग्रियां लेकर आने वाले विद्यार्थी चीन में पश्चिमी देशों के रहन सहन को अपनाने और लोकप्रिय बनाने में बड़े गर्व का अनुभव किया करते थे और चीनी जनता में विज्ञान और जनतंत्र का प्रचार करना अपना धर्म समझा करते थे । इन लोगों का पाश्चात्य-प्रेम देखकर चीन में अब यह मजाक सुना जाने लगा था कि शायद "चीनी चांद की अपेक्षा पश्चिमी देशों का चांद अधिक गोल है ।" रूस की नकल करने का चीन में इस समय जो दौर शुरू हुआ उसको चीन की नैसर्गिक मनोवृति मानना गलत है किन्तु नये शासक संघ पर और उसके द्वारा जनता पर जो राजनैतिक दबाव डालते रहे हैं उसके कारण ही इसमें सफलता मिली है । अंतर केवल यह है कि इस समय तो पुराने युग के प्रतिकूल कोई यह मज़ाक भी नहीं कर सकता कि "रूस का चाँद चीन के चांद की अपेक्षा अधिक गोल है" । नये समाज में इस प्रकार के वक्तव्य परकोई सन्देह नहीं किया जा सकता क्योंकि स्वयं शासक-वर्ग इस मत की पुष्टि करता है ।

तेरहवां परिच्छेद

प्रेम और क्रांति

क्रांतिकारी कैम्प में महिला कामरेडों को सबसे अधिक सुविधाएं प्राप्त थीं। विवाह के विषय में उनको किसी प्रकार की चिन्ता न थी। पुराने समाज की मृत्यु के साथ उनके कुमारीपन का भी अन्त हो गया था। अब किसी ऐसी महिला को जो क्रांतिकारी कैम्प में सम्मिलित हो जाती थी इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं रहती थी कि उसके जीवन का बसन्त काल कहीं व्यर्थ ही न चला जाय। जिस व्यक्ति को वे चाहती थीं उसको प्राप्त करने के लिए उनको अब शृंगार आदि की आवश्यकता नहीं थी और न ही उनको अब यह चिन्ता करने की आवश्यकता थी कि उनका विवाह ज़ांग से होगा, वांग से होगा या चैन से। दहेज और विवाह संस्कार की प्रथा को अब आडम्बर बताया जाता था और 'स्त्रियोचित शील धर्म को सामन्तशाही युग की एक धारणा। अब प्रणय और लज्जा सम्पत्तिशाली वर्ग गत समाज की विशेषताएं बताई जाने लगीं थीं।

अब किसी स्त्री को असहाय समझने या उसके विषय में स्त्रिलिंगात्मक किसी विशेषण के प्रयुक्त करने की आवश्यकता नहीं रह गई थी। विवाह अब स्त्री के लिए जन साधारण के प्रति कर्तव्य बन गया था। संघ सबसे अच्छी माता के समान था। अब विवाह से लेकर मृत्यु तक का सारा भार संघ ही के ऊपर है, ऐसा कहा जा सकता था। विवाह में सफलता प्राप्त करने के लिए संघ की आज्ञा को कार्यान्वित करना अनिवार्य था। महिलाओं से कहा जाता था कि किसी के प्रेमी की आकृति कैसी है, उस की आयु कितनी है और उसकी अभिरुचि कैसी रही है यह सब ऐसी बातें हैं जिनका एक क्रांतिकारी विवाह में कोई महत्व नहीं है। सबसे अधिक महत्व की बात तो यह थी कि वे अपना विवाह केवल वफ़ादार पार्टी सदस्यों से करें। बिना चिरकालिक कामरेडों से शादी किये स्त्रियां अधिकारियों की पत्नी

नहीं बन सकती थी। निस्सन्देह किसी अधिकारी की पत्नी बनने पर गर्व करना पुराने समाज की धारणा का द्योतक बताया जाता था यद्यपि वास्तविकता यह थी किसी महिला कामरेड को संघ में तभी कुछ महत्व प्राप्त होता था जब उसका प्रेमी (यह शब्द नवचीन में पति अथवा उस व्यक्ति के लिये प्रयुक्त होता था जिसके साथ कोई स्त्री रहती हो) कोई उच्च अधिकारी हो।

उत्तर पूर्वी चीन में जो स्त्रियां क्रांति में भर्ती हुईं, उनकी आयु १५ वर्ष से लेकर ५० वर्ष तक की थी। क्रांति में भर्ती होने के पहले साल ही में उन सब के लिए संघ की ओर से "प्रेमी" नियुक्त कर दिये गए थे। उत्तर पूर्वी चीनके 'मुक्त' हो जाने के पश्चात् अब क्रांति की आवश्यकता बढ़ गई थी और इन आवश्यकताओं के अनुरूप ही अनुशासन हो इस उद्देश्य से शासकों ने विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्धों में कुछ कमी कर दी थी जिसका परिणाम यह हुआ था कि ऐसी महिला सदस्यों को भी जो अभी तक पूरी तरह पार्टी की सदस्य नहीं बनी थी, पार्टी सदस्यों से विवाह करने की अनुमति और सुविधा प्राप्त हो गई थी।

पीपिंग और टियन्टेसिन की जो शिक्षित महिलाएं क्रांति में इसलिए सम्मिलित हुई थीं कि उन्होंने इसी में अपने भविष्य को सुधारने का एक साधन देखा था उन्हें संघ के विवाह सम्बन्धी माता-तुल्य व्यवहार पर खीझ होने लगी। यद्यपि उनकी पुनः शिक्षा हो चुकी थी विवाह के सम्बन्ध में उनका अपना विचार था और वे अभी तक यह स्वप्न देखती थीं कि क्रांतिकारी सेना म कुछ दिनों तक काम करने के पश्चात् उनको अपने प्रेमियों से पुनः मिलने का अवसर मिलेगा और वे निश्चिन्त होकर अपने पारिवारिक जीवन को चला सकेंगी। क्रांति के द्वार के उस ओर प्रवेश करते ही उनको विवाह द्वारा अपना क्रांति-प्रेम प्रदर्शित करना पड़ेगा ऐसी कल्पना उन्होंने न की थी। इसलिए वे वैवाहिक कर्तव्यों के प्रति उदासीन थीं। संघ द्वारा माताओं जैसा व्यवहार और चिन्ता करना उनको रुचिकर नहीं था यद्यपि उनमें से सभी इसको कोई भयानक बात नहीं मानती थी।

मेरे कार्यालय में एक लड़की अक्सर आया करती थी। कई महीने से वह पार्टी के आदेशानुसार समाचारपत्रों की कतरने संभालने का काम करती आयी थी और किसी को ज्ञात न था कि वे कतरने आखिर किस दिन

काम आयेंगी । उनका आगे चलकर जो उपयोग होगा उसको संघ ही जानता है ऐसा उनको विश्वास दिलाया गया था। यह ऐसा काम था जिससे उसका मन ऊब जाया करता था और इससे बचने के लिए वह किसी न किसी बहाने से मन्त्री महोदय के सुन्दर स्वागतालय में कुछ समय के लिए आ बैठा करती थी। जब उसको पता लगा कि क्रांतिकारी कैम्प में विवाह का केवल यह अर्थ है कि सप्ताह के अन्त में सभा समाप्त होने के तुरन्त पश्चात् स्त्रियां अपने प्रेमियों से मन बहलाव करें और तुरन्त ही उसके पश्चात् सो रहें, तो वह मेरे पास आकर इस नई खोज का बखान करने लगी। क्रांतिकारी कैम्प में इस प्रकार की व्यवस्था हो सकती है, यह जानकर उसको जो विस्मय हुआ उसका उल्लेख करते हुए उसने मुझसे ऐसी मुद्रा बनाकर बात शुरू की मानो कि वह किसी सोई हुई चाह को जगाने का यत्न कर रही है। उसने मुझ से कहा कि "मैं नहीं समझती कि मैं कभी इस प्रकार के क्रांतिकारी विवाह में कोई दिलचस्पी ले सकूंगी।"

वह एक सुन्दर बाला थी और यौवन और चंचलता उसके मन में झकोरे मार रही थी, ऐसा दिखाई देता था। वह शिक्षित थी पर फिर भी काफी भोली। उसको यह देख कर बड़ी झल्लाहट हुई थी कि चिरकालिक कामरेड कुर्सी जैसी छोटी-छोटी बातों पर आपस में झगड़ा किया करते हैं। एक दिन जब वह मुझ से कहने लगी—"सम्भवतः अध्यक्ष माओ को संघ की ऐसी कुछ बातों का पता नहीं है और मैं उनको पत्र लिख कर उनका ज्ञान कराऊंगी" मुझसे हंसे बिना नहीं रह गया था। वह बहुधा मुझ से अपने युवा प्रेमी के विषय में बात किया करती थी जो एक स्नातक था और पीपिंग में छोटा सा कारोबार करता था। उसको आशा थी कि एक दिन जब कि परिस्थितियां अनुकूल हो जायेंगी वह पीपिंग वापस चली जायगी और विवाह करके सुख पूर्वक अपना जीवन बिताएगी।

पीपिंग के मुक्त होने के कुछ समय पहले साम्प्रदायिक सामाजिक स्थिति से असन्तुष्ट होने के कारण वह जनतंत्रीय युवक संघ में भर्ती हो गई थी। उस समय उसको यह कल्पना तक भी नहीं थी कि यह संस्था अमुक क्षेत्रों में काम करने के लिए कम्युनिस्टों ही का एक छद्म वेशधारी दल है। उस समय वर्तमान शासकों की ओर से आदर्शों का जो दावा किया गया था उसका इस

पर बड़ा प्रभाव पड़ा था और यह समझ कर कि अपने ढंग से इस कार्य में छोटा बड़ा योग देकर वह सम्भवतः अपने देश की राष्ट्रीय समस्याओं का शान्तिपूर्ण हल करने में सहायक हो सकेगी वह इस संघ में भर्ती हो गयी थी। जब पीपिंग मुक्त हुआ तो पहली बार उसको पता लगा कि वह नवचीन की कम्युनिस्ट पार्टी के लिए ही एक प्रचारक का काम करती आयी है। अब खेद प्रकट करने से काम नहीं चलता था और पीछे हटने का अवसर नहीं था। इसलिए बुहान में प्रचार मंत्रालय में उक्त काम करने के सिवाय उसके पास अन्य कोई मार्ग शेष न था।

एक दिन वह दौड़ी हुई मेरे पास आई और बहुत व्यग्रता से मुझको अपनी छोटी टुकड़ी की एक ऐसी सभा के विषय में जो कुछ महिला कामरेडों के लिए की गई थी, कुछ बताने लगी। उसने मुझको बताया कि जो महिला उक्त सभा का निर्देशन कर रही थी उसने चिरकालिक कामरेडों द्वारा जनता की सेवा करने तथा उनके द्वारा क्रांतिकारी अनुभव का यश प्राप्त करने की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। इस महिला के कथनानुसार उन सभी महिलाओं का जो संघ के लिए कार्य करती आई हैं यह कर्तव्य था कि वे चिरकालिक कामरेडों से विवाह करें, चाहे वे नियमित रूप से पार्टी की सदस्या हों या न हों। संघ के बाहर विवाह करने की बात किसी के मन तक में भी नहीं आनी चाहिए, ऐसा आग्रह था। मुझको यह सब कुछ बताते समय उसका चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था। वह बोली "कभी सोचा था आपने कि ये हमको इन चिरकालिक कामरेडों से विवाह करने का परामर्श देंगे ? यदि संघ के बाहर किसी से विवाह करने पर प्रतिबन्ध है तो मैं विवाह ही नहीं करूंगी। तब ये मेरा क्या कर लेंगे ?"

एक दिन शाम के वक्त उसको एक ऐसी महिला से व्यक्तिगत बातचीत करने के लिए अलग ले जाया गया जो दूसरी स्त्रियों से संघ के चिरकालिक कामरेडों से विवाह करने के विद्वतापूर्ण सुझाव को स्वीकार कराने में सिद्धस्त मानी जाती थी। उसके बारे में कहा जाता था कि इस विषय में उसको जितना धैर्य और कौशल प्राप्त है वह किसी सिद्धहस्त दलाल को भी नहीं हो सकता। यह स्त्री रात भर इस लड़की को समझाती रही और उसने कभी उसके साथ तर्क किया तो कभी अनुनय विनय, कभी प्रलोभन दिखाया तो कभी

उसको डराया धमकाया । पर फिर भी वह लड़की इतनी हठी सिद्ध हुई कि वह उसकी बात मानने को तैयार नहीं हुई । प्रातःकाल होने तक यह लड़की अपने भाग्य पर फूट फूट कर रोने लगी पर फिर भी मनाये नहीं मानती थी । वह महिला अपनी दलीलों को फिर भी बार बार दोहराये ही जा रही थी । उसका तर्क इस प्रकार चल रहा था "आंसू बहाना कमजोरी का सबूत है । याद रखो अब महिलाए हजारों वर्ष के सामन्तशाही नियन्त्रण से मुक्त हो गई हैं । हम अब अबला नहीं हैं, हमको प्रत्येक बात का निर्णय स्वयं करना है । इस विषय में हमारा सबसे पहला कर्तव्य यह है कि हम संघ की आज्ञा को शिरोधार्य समझें क्योंकि संघ पर विश्वास करने का अर्थ यह है कि हम अपने ऊपर विश्वास करती हैं । यही बोलशविक परम्परा है । तुम इस बात को समझो या न समझो मगर यह तुम्हारे अपने ही हित में है कि तुम अब अपने आपको इस परम्परा की परिधि में समझो । तुमको संघ की समझ पर भरोसा होना चाहिए और तुमको उसका आदेश मानना चाहिए । इसके अतिरिक्त, प्यारी मुनिया, विवाह इतनी बुरी चीज नहीं है जितनी तुम समझती हो । तुमको सप्ताह में एक बार से अधिक अपने प्रेमी के साथ नहीं रहना पड़ेगा । कुछ दिनों के पश्चात् तुमको पता लगेगा कि यह वास्तव में बहुत ही रुचिकर व्यवस्था है । जरा सोचो तो सही कि प्रति सप्ताह तुम कैसा मनोविनोद कर सकोगी । एक सप्ताह में जो कामना सिद्ध होगी उसकी स्मृति और अगले सप्ताह में जिस चाह को पूरी करोगी उसकी आकांक्षा—ये दोनों कितनी आकर्षक बातें हैं, तुमको तो अपने भाग्य पर प्रसन्न होना चाहिए । संघ ने तुम्हारे लिए जो प्रेमी चुना है उसकी आयु शायद तनिक अधिक है किन्तु यह तो सोचो कि वह उन सबसे तो कहीं कम आयु का है जो हममें से कईयों के हिस्से में आए हैं । इसके अतिरिक्त वह पिछले महीने क्षय रोग से मुक्त हो गए हैं । चिरकालिक कामरेडों में ऐसे कितने व्यक्ति हैं जिनके विषय में ऐसा कहा जा सकता है, संघ में अब तक उसका अच्छाई और वफादारी का रिकार्ड रहा है और उसको मध्य स्तर की सुविधाएं प्राप्त हैं । तुम उन सभी सुविधाओं का उसके साथ मिलकर उपभोग कर सकोगी । जरा सोचो तो सही तुमने ऐसा सौभाग्य पाया है और तुम नियमित रूप से अभी तक पार्टी की सदस्या भी नहीं हो ।'

उस लड़की ने कोई उत्तर नहीं दिया बल्कि फूट फूट कर रोती ही रही और उस विशेषज्ञा को हार माननी पड़ी । तब उसने उसके विषय में यह रिपोर्ट कर

दी कि वह "एक समस्यात्मक" स्त्री है।

वह अगले दिन प्रातः काल मेरे पास आई और उसको देखने से लगता था मानो वह वर्षों से बीमार रही है। उसकी आंखों में आँसू झलक रहे थे। पिछली रात को उस पर जो बीती थी अब उसने उसे सिसक सिसक कर मुझसे कहना शुरू किया। जब उसकी करुणा-कथा समाप्त हुई तो वह सोफे पर बैठ गई मानो क्लान्ति के कारण अब वह इतनी थक गई थी कि अपनी जबान भी नहीं हिला सकती थी। आंसू जहां के तहां उसके चेहरे पर सूख गए थे। उसको किन शब्दों में सांत्वना मिलेगी यह मैं नहीं जानता था। इतनी बात मुझे अवश्य मालूम थी कि ऐसी आदर्शवादी महिला केवल अपने ही लिए कष्ट नहीं पा सकती, वरन् उसको तो अपनी समस्त समवयस्की पीढ़ी के ही दुख का अनुभव हो रहा है। उसको अपने प्रेमी से अलग होना पड़ा और अब संघ की ओर से उसके लिए जो बर ढूंढा गया उसकी आयु और शिक्षा और उसकी अपनी आयु और शिक्षा में जो महान अन्तर था वह कुछ कम दुःख की बात न थी। किन्तु उससे भी अधिक दुखजनक बात तो यह थी कि उसको जिन व्यक्तिगत कठिनाइयों का अब यकायक अनुभव होने लगा था वे तो उन समस्त कठिनाइयों की जिनका अनुभव चीन के सब युवक युवतियां कर रहे थे एक छोटा सा अंग ही थीं।

कुछ देर के बाद वह अपने स्थान से उठी और बोली, "मैं पीपिंग वापिस जाने की अनुमति पाने का आग्रह करूंगी। पीपिंग पहुंच कर मैं इस दानवता के विरुद्ध कार्य आरम्भ कर दूंगी।" उन परिस्थितियों में उसके भोलेपन पर हंसने का साहस मुझे नहीं हुआ। यह जानते हुए कि उसको अब उसके नए निश्चय से विचलित करने का प्रयत्न करना व्यर्थ होगा, मैंने उसको केवल यह सलाह दी कि वह आगे चल कर सावधानी बरते क्योंकि किसी भी मूर्खतापूर्ण कार्य से उसके नए उद्देश्य की सिद्धि नहीं हो सकती।

उस दिन के पश्चात् केवल एक ही बार मुझको उसे देखने का अवसर मिला। वह पास की इमारत से निकल रही थी। मुझको एक चिरकालिक कामरेड से पता लगा कि अब बेचारी को अनेक गुप्त निर्णय समितियों के सामने हाजिर होना पड़ रहा है। उक्त चिरकालिक कामरेड का कहना था

कि अन्त तक उसने एक शब्द भी नहीं बोला—'पूछ ताछ की समस्त कार्यवाही के दौरान में वह केवल रोती ही रही। कुछ दिनों पश्चात् उस महिला काम-रेड ने जो मन्त्री की सहकारिणी के नाम से जानी जाती थी मुझको आज्ञा दी कि मैं पीपिंग शिक्षक विद्यालय को निम्न आशय का एक पत्र लिखूं:—"यह लड़की विचारों की दृष्टि से पिछड़ी हुई है। अपने काम में इसका मन नहीं लगता। व्यक्तिगत बातों में यह बड़ी हठी है। संघ ने इसको बार बार पुनः शिक्षित करने का प्रयत्न किया किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। चिर-कालिक कामरेडों ने जब कोई इसको परामर्श दिया तो उसने उसका तिर-स्कार ही किया। और तिस पर भी अपने किए पर इसको कोई पश्चात्ताप नहीं हुआ। इसलिए संघ ने यह निश्चय किया है कि इसकी घर वापिस जाने की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया जाय। आरम्भ में यह आपके ही विद्यालय से सेना में भरती हुई थी। कृपया इससे संपर्क स्थापित करें।" इस पत्र में उस क्रांतिकारी विवाह का कोई उल्लेख नहीं था जिसको करने से उसने इन्कार कर दिया था। मन्त्री की सहकारिणी ने स्वयं उस पत्र पर हस्ताक्षर किए और उसको लड़की के विषय में किए गए निर्णय की एक प्रति के साथ एक लिफाफे में बन्द कर दिया और लिफाफे पर मोहर लगा दी। अब इस लड़की को इन दोनों खरीतों को अपने साथ लेकर ही पीपिंग जाना पड़ा।

उसके चले जाने के कुछ सप्ताह पश्चात् एक दिन अचानक मुझको उसका एक पत्र मिला। वह पीपिंग में एक सप्ताह रह चुकी थी और अब उसकी स्थिति इतनी भयंकर हो गई थी कि उसके भूखों मर जाने का डर था। शिक्षक विद्यालय में स्थित सैनिक प्रतिनिधि ने उसको स्कूल में वापिस लेने से इन्कार कर दिया था। उसको कहीं कोई काम धंधा नहीं मिल सकता था। उसके अतीत के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त किए बिना कोई भी कार्यालय या व्यापारी उसको अपने यहां काम देने को तैयार नहीं था। यदि वह किसी को वे दोनों चिट्ठियां दिखा देती जो उसको संघ की ओर से दी गई थीं तो फिर किसी की क्या हिम्मत थी कि उसकी प्रार्थना पर विचार तक भी करता? जिस दानवता के विरुद्ध उसने संघर्ष करने की सोची थी उसके विरुद्ध अब आवाज उठाने तक की भी क्षमता उसमें शेष न रह गई थी: पीपिंग में उसको एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला था जिसको उसके नये रुख से किसी

प्रकार की सहानुभूति हो। अपने पत्र में उसने मुझ से प्रार्थना की थी कि मैं उन छोटी मोटी चीजों को उसके पास भेज दूं या किसी से भिजवा दूं जो वह वुहान में छोड़ गई थी। अपने भविष्य के विषय में उसको अब अन्धकार के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता था इसलिए अब उसने यह निश्चय कर लिया था कि यदि वह जीवित बची रही तो अपने पुराने घर ही वापिस चला जायगी और सूत कातने में अपनी मां का हाथ बटाएगी। उस पर क्या बीती इसके पश्चात यह जानने का अवसर मुझे कभी नहीं मिला।

चौदहवां परिच्छेद

भूमि-सुधार

यद्यपि मैं चिरकालिक कामरेडों की कार्य अक्षमता, भ्रष्टाचार, क्रूरता, तुच्छता और मूर्खतापूर्ण अहंकार से ऊब गया था, मेरे हृदय में अभी तक उनके लिए सहानुभूति थी। आधुनिक काल के इस मानवीय दुखान्त नाटक के वे ही ऐसे सच्चे शिकार थे। जिनका तानाशाहों के हाथ में पड़कर जीवन नष्ट भ्रष्ट हो गया था उन मानव प्राणियों में वे ही सबसे पहले व्यक्ति थे। यदि उनमें से कुछ ऐसे व्यक्ति थे जो शिक्षित थे तो मुझसे कभी भी यह बात छुपी नहीं रहती थी कि वे अपने मन ही मन में अपनी अवशिष्ट मानवता और क्रांतिकारी सिद्धान्त और व्यवहार में पाए जाने वाले व्याघात पर घुटते रहते हैं। मैंने यहां देखा कि क्रान्ति के कारण उनकी मानवता उनके मन से उत्तरोत्तर मिटती जा रही है। उनमें से जो अशिक्षित थे वे तो शासकों की इच्छा एवं आज्ञा पूर्ति को अपना कर्तव्य मानकर सन्तुष्ट रहते थे। यदि कोई अशिक्षित प्राणी व्यक्तिगत रूप से कष्ट पाता तो संघ की दृष्टि में उसके इस व्यक्तिगत कष्ट का कोई महत्व न था क्योंकि शिक्षित व्यक्तियों के प्रतिकूल उससे आगे चलकर किसी प्रकार की आशंका न थी। अशिक्षित व्यक्ति के हाथ में केवल अतीत काल में कमाए पुण्य का ही एक अस्त्र था जिसकी वे बार बार दुहाई देते नहीं थकते थे या कभी कभी कटुतापूर्ण ढंग से शिकायत कर लिया करते थे। किन्तु उनके मन में यह विचार तक भी नहीं उठा था कि वे क्रांति को छोड़ कर संघ के बाहर रहकर कालयापन कर सकते हैं। उनके ऐसे रवैये का कारण आतंक था या अज्ञानता।

मंत्रालय में मेरा जो स्थान था और उपमन्त्री से मेरा जो घनिष्ट सम्पर्क था उसके कारण मुझको जितना आदर सत्कार मिलता था क्रांति में कमाए अपने स्वल्प पुण्य के आधार पर मैं उसका अधिकारी नहीं था। सचिवालय में केवल मैं ही नया कामरेड था। इसलिए मेरे वर्ग के अध्यक्ष और दूसरे

कामरेडों को मुझको प्रदान की जाने वाली समानता पर खीज होती थी। किन्तु धीरे धीरे वे भी मेरी समानता के अभ्यस्त हो गए और उस प्राणी को छोड़कर जिसको मेरे साथ एक ही कमरे में रहना पड़ता था अन्य सभी व्यक्ति यह भूल से गए थे कि मैं चिरकालिक कामरेड नहीं हूं। अन्य नये कामरेडों को खुले आंगन में, बरामदे में अथवा जीने के नीचे सोना पड़ता था। उनको मेरे सौभाग्य और बटेलियन के स्तर की मेरी सुविधाओं पर ईर्ष्या होती थी। सरकारी काम से जो चिरकालिक कामरेड या उच्च सरकारी अधिकारी बाहर से आते थे वे तो मुझको चिरकालिक कामरेड ही समझ लिया करते थे क्योंकि मुझको उपमन्त्री का विश्वास प्राप्त था।

क्रांति की किसने कितनी देर तक सेवा की है इस बात को ध्यान में रख कर चिरकालिक कामरेडों को तीन वर्गों में रखा गया था। प्रथम वर्ग में वे लोग थे जिनको "लम्बी मार्च" का अनुभव था और जो पार्टी के उन कष्टकर प्रारम्भिक दिनों को काटकर जीवित बचे रह गये थे। वे पार्टी की कुल सदस्य संख्याके २ प्रतिशत से अधिक न थे। उनमें से अधिकांश का जन्म स्थान हुनान, क्यांगसी और जेच्वान प्रान्तों में था। उनमें से जिनको प्रारम्भिक अथवा मिडल स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त थी, उनको आयु का ध्यान रखे बिना ही डिवीजन या उससे ऊपर के स्तर के पद प्रदान कर दिये गये थे और अब वे साधारणत: मंत्री अथवा उपमंत्री पदों को सुशोभित किये हुए थे। उनमें से जो अशिक्षित थे उनको रेजीमेन्ट स्तर की सुविधाएं प्राप्त थीं, यद्यपि उनमें से बहुत से ऐसे भी थे जो घुड़साल में काम करने अथवा शाक सब्जी आदि काटने बाटने का काम करते आये थे। उदाहरणार्थ, जो व्यक्ति मेरे मंत्री के अंगरक्षक का काम करता था उसको खाने पीने के विषय में वे सभी सुविधाएं प्राप्त थीं जो मध्य स्तर के लोगों को दी जाती थीं यद्यपि वह जन्म से निम्नतम श्रेणी का किसान था। "लम्बी मार्च" में कमाए पुण्य ही का यह प्रताप था।

द्वितीय वर्ग में वे लोग थे जो येनान प्रान्त में क्रांति में सम्मिलित हुए थे और जापान युद्ध में भाग ले चुके थे। उनमें से अधिकांश का जन्म उत्तरी और उत्तर पश्चिमी चीन में हुआ था और वे अब मध्यस्तर के स्टाफ अफसर बन गये थे। इस वर्ग में जो लोग थे उनमें से बहुत से ऐसे शिक्षित व्यक्ति भी थे जो शंघाई, पीपिंग और टियेन्टसिन के रहने वाले थे। तीसरे वर्ग

के चिरकालिक कामरेडों को मध्य स्तर के कामरेडों से नीचा समझा जाता था। उनमें से अधिकांश ऐसे युवक थे जो उत्तर पूर्वी चीन के मिडल स्कूलों से भर्ती करके चौथी फील्ड आर्मी में लिए गए थे और जो तीन वर्ष से ५ वर्ष तक क्रांति में पुण्य कमाने का दावा करते थे। यद्यपि उन्होंने क्रांति सम्बन्धी प्रचार आदि को स्वीकार कर लिया था और उसकी सत्यता पर किसी प्रकार का सन्देह प्रकट नहीं किया था वे अब बहुत जल्दी ही यह समझ गये थे कि संघ रूपी हाथी के दांत खाने के और हैं और दिखाने के और। अन्दर ही अन्दर उनके मन में संघ के प्रति घृणा की जो ज्वाला सुलग रही थी, वह एक दिन इतनी शक्ति संचय कर लेगी कि उसको नियन्त्रण में रखना सम्भव नहीं हो सकेगा, ऐसी आशंका थी।

उत्तर पूर्व से आने वाले लोगों के मन में जो कई बातें खटकती थीं उनमें से एक भूमि-सुधार के विषय में थी। मध्य-स्तर के नीचे के बहुत से स्टाफ अफसरों ने अपनी आंखों से देखा था कि उत्तर पूर्व चीन में तथाकथित भूमि-सुधार को किस प्रकार कार्यान्वित किया गया है। उनमें से बहुत सों ने तो अपनी आंखों से अपने माता पिताओं को पिटते मरते अथवा विवश हो कर आत्म-हत्या करते देखा था। किसी के माता-पिता को जब "प्रदर्शन सभाओं" में लाया जाता था और सामन्तशाही जमीन्दार कह कर बदनाम किया जाता था तो वह किं-कर्तव्य विमूढ़ हो देखता ही रह जाता था। कभी-कभी ऐसा व्यक्ति यह भी सोचने लगता था कि जब शासकों की दृष्टि में माता-पिता वास्तव में अपराधी हैं तो उनका जनता के हाथों दंड पाना न्यायोचित बात ही है।

जब मैंने इन उत्तर पूर्व से आने वाले लोगों से भूमि-सुधार के विषय में चर्चा चलानी चाही तो आरम्भ में तो वे विषय बदलने की कोशिश करते पाये गये क्योंकि वे अपनी वाणी से कोई ऐसी बात नहीं कहना चाहते थे जिससे संघ क्रुद्ध हो जाय। पर धीरे-धीरे मैं उनका विश्वास पाता गया और वे मुझको अधिक अच्छी तरह पहचानने लगे। फिर वे अपने मन में होने वाले कष्टों को संकेत मात्र ही से जताते थे और कभी-कभी भूमि-सुधार के विषय में अपने व्यक्तिगत अनुभवों की भी चर्चा कर दिया करते थे। उनकी दुखान्त कहानियों का श्रीगणेश प्रायः इस प्रकार हुआ करता था: "उत्तर पूर्वी चीन में जिस

प्रकार भूमि-सुधार कार्यान्वित किया गया उसको उग्रवादिता की अतिशयता ही मानना चाहिए" या "चीन के अन्य भागों में रहने वाले लोगों को इतने कष्ट सहन नहीं करने पड़े जितने उत्तर पूर्वी चीन के वासियों को।" अपनी दुखान्त कहानियों के अन्त तक पहुँचने पर वे कुछ इस प्रकार की बातें कहा करते थे : "केवल मैं ही एसा व्यक्ति नहीं हूं जिसके ऐसे विचार हों, स्वयं अध्यक्ष माओ भी यह कह चुके हैं कि भूमि-सुधार का कार्यान्वित करते समय ज्यादतियां हुई हैं।" एक दिन मैंने एक उत्तर पूर्व के स्टाफ अफसर से बात-चीत की। हम बुहान के एक छोटे पार्क में भ्रमण कर रहे थे । तारों भरा नीला आसमान अपना सौन्दर्य बखेर रहा था और सुमधुर बयार बह रही थी। बातचीत करते-करते कुछ क्षण के लिए हम चुप हो गये थे। उस नीरवता में अपने पांव की आहट के अतिरिक्त हमको कुछ भी नहीं सुनाई दे रहा था, हां बाहर नगर में उठने वाली आवाज भी कभी-कभी हमारी तरफ आ रही है, ऐसा लगता था। तब उस युवक ने अचानक मुझसे कहा "यदि मैं अपने विषय में कुछ कहूं तो आप मुझको क्षमा कर देंगे न ?"

मैंने कहा, "क्षमा याचना की क्या आवश्यकता है जो मन में आये कहिये।

"मुझसे अपनी स्वल्प-सम्पत्तिशाली वर्गगत धारणाओं को नहीं छोड़ा जा सकता।" यह कहकर वह रुक गया। मैंने उपहास सा करते हुए कहा "मुझको यह कहने में तनिक भी झिझक नही कि स्वयं अध्यक्ष माओ के मन में भी अभी तक पूराने समाज का कोई न कोई अंश अवश्य जीवित है।"

"ऐसे व्यक्ति बहुत से हैं जो अपने मन में छुपी अप्रगतिशीलता को बाहर नहीं आने देते।" उसके इन शब्दों में एक विचित्र गहरी दाह थी। अब आगे वह क्या कहेगा मैं उत्कण्ठा से इसकी प्रतीक्षा करने लगा। "मुझको पता ही ही नहीं है कि मैं कहां से अपनी कहानी शुरू करूं। मैं चाहूं तो इसको लम्बी और रोमांचकारी भी बना सकता हूं। किन्तु अब मैं जो कुछ कहूंगा संक्षेप रूप में ही कहूंगा और व्यर्थ में ही कोई ऐसी बात नहीं कहूंगा जिससे आपको कोई परेशानी हो क्योंकि मेरी कहानी तो अपनी जैसी हजारों कहानियों में से एक ही तो है। आप सम्भवतः पहले भी ऐसी बहुत कहांनियां सुन चुके हैं"

"मेरे पास सुनने को सारी रात पड़ी है। आप अपनी बात जितने विशद रूप से कहना चाहें कहें।" मैंने उसको आश्वासन दिया।

"स्वातन्त्र्य के पहले मेरे पिता के पास कोई १२ माउ (½ एकड़) जमीन थी। तब स्वातन्त्र्य का श्रीगणेश हुआ और उसके साथ साथ भूमि सुधार का भी। संघ के कुछ मदान्ध स्टाफ अफसरों ने एक ऐसी सभा की जिसमें भूमि-विहीन किसानों की बहुत बड़ी भीड़ जमा थी। इस सभा का उद्देश्य जमीन्दारों के भाग्य का निपटारा करना बतलाया गया था। वे लोग मेरे पिता को खींच कर उस सभा में ले आये। मेरे पिता हठी थे और बराबर यह आग्रह करते रहे कि उन्होंने किसानों पर अनाचार करके नहीं बल्कि घोर परिश्रम करके और अपना पेट काट कर पैसा बटोर कर इतनी जमीन इकट्ठी की है। अपने पक्ष में तर्क के रूप मे उन्होंने जो कुछ कहा व्यर्थ रहा। तब सभा में एक ऐसा नाटकीय क्षण आया कि एक सैनिक उठा और उसने अपनी रायफल का दस्ता मेरे पिता के सीने में घुसेड़ दिया जिससे वे गिर पड़े और उनके मुंह से खून बहने लगा। कुछ क्षण पश्चात् ही उनके प्राण पखेरू उड़ गये। कुछ दिन पश्चात् किसान सभा की ओर से मुझको एक पत्र मिला जिसमें कहा गया था कि मेरे पिता जमींदार नहीं थे बल्कि मध्यम-स्थिति के किसान ही थे। उस पत्र में सभा की ओर से मेरे पिता की मृत्यु पर खेद प्रकट किया गया और मुझको यह आश्वासन दिया गया कि हमारी जमीन में से ६ माउ जमीन मुझको लौटा दी जायगी। दुर्भाग्यवश मेरे पिता के खेती बाड़ी करने के जो औजार आदि थे वे तो पहले ही दूसरे लोगों को बांटे जा चुके थे और इसलिए वे वापिस नहीं किये जा सकते थे। उक्त चिट्ठी के मिलने के एक दिन पहले मेरी माता ने आत्म हत्या कर ली थी। जब किसान सभा को मेरी माता की आत्म-हत्या का पता लगा तो उसने ६ माउ जमीन मुझसे वापिस ले ली क्योंकि अब उसकी राय में मैं ३ माउ जमीन से ही अपना काम चला सकता था। कुछ महीने पश्चात् किसान सभा ने मुझ पर फिर छापा मारा और मेरी रही सही जमीन भी मुझ से ले ली। यद्यपि ऐसा करते समय उसने खेद प्रकट करने का बहाना भी किया। उसकी इस नई कार्यवाही का कारण यह था कि अब मैं क्रान्तिकारी सेना में "स्वयं-सेवक" की हैसीयत से भर्ती होकर सम्मानित कार्य करने जा रहा था। मैंने पहले तो यह बात नहीं मानी। एक स्टाफ अफसर ने तब मुझसे कहा, "तुम बेसमझी की बात करते

हो। क्या तुमको अपने माता पिता की मृत्यु पर इतनी देर तक रोष करते जाना चाहिए ? हमने अपनी भूल पहले ही स्वीकार कर ली है। किसी व्यक्ति के हाथों ऐसा हो गया था। अब सभा ने तुम्हारे सारे मामले को फिर से समझ लिया है और उसकी ओर से यह आश्वासन भी तुमको दे दिया गया है कि जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है अब भविष्य में ऐसा कभी न होगा। जन-तन्त्रीय सरकार की यही तो एक बड़ी शिष्टता है। हम बिना किसी झिझक के अपनी भूलों को स्वीकार कर लेते हैं। प्रतिक्रियावादी सरकार कभी ऐसा नहीं कर सकती थी। और तुमको यह दिखाने के लिए कि हमको तुम्हारे माता-पिता की मौत पर वास्तव में खेद है यद्यपि उसका कारण उनकी अपनी ही हठ थी, हम तुमको सेना में स्वयं सेवक बनने का अवसर दे रहे हैं। तुमको जानना चाहिए कि इस प्रकार की सुविधाएं हरेक व्यक्ति को नहीं मिलतीं। और तुमको इस बात पर भी गर्व होना चाहिए कि तुम्हारी ज़मीन अब जन-कल्याण के काम में लायी जा रही है। और मैं अभी तक उसी संघ में हूं जिसने मेरे पिता की हत्या की और मां को आत्म हत्या करने के लिए बाध्य किया।"

अब हम पार्क से होकर बहने वाले एक छोटे से सोते के पास खड़े थे जो अपने अनन्त मार्ग पर इस तारों भरी रात में खिलखिलाता हुआ बहता चला जा रहा था। युवक की वाणी में हल्का सा कम्पन था जब उसने कहा—"ऐसी बातें तो उत्तर पूर्व में सभी जगह हो चुकी हैं।"

मेरे कमरे में जो दूसरा एक व्यक्ति रहता था वह १६ वर्ष तक क्रांति की सेवा का पुण्य प्राप्त किये हुये था। वह होपियाइ के उन थोड़े से लोगों में से था जिन्होंने अपने अन्य देशवासियों से बहुत पहले ही क्रांति में प्रवेश कर लिया था। उसकी आयु लगभग ३० वर्ष थी और कुछ वर्षों तक ही एक प्रारम्भिक स्कूल में शिक्षा पा चुका था। अभी तक उसका आचार व्यवहार-छोकरों जैसा था। चाहे वह सार्वजनिक सभा में हो या किसी अकेले में बात-चीत कर रहा हो। उसकी जबान पर शिकायत हमेशा रहती थी। संघ की ओर से उसके साथ किस प्रकार दुर्व्यवहार किया गया वह उसकी ही कहानियां सुनाता रहता था। उसको यह विश्वास था कि १६ वर्ष तक सेवा करके उसको जो पुण्य प्राप्त हुआ है उसके आधार पर उसको वटालियन

स्तर से ऊंचे की सुविधाएं मिलनी चाहिए । क्योंकि ऐसे कुछ कामरेड थे जिन्होंने उसके साथ ही क्रांति में प्रवेश किया था पर फिर भी उनको रेजीमेन्ट और डिवीजन स्तर की सुविधाएं मिल चुकी थीं ।

अपनी कहानी कहने में उसको मानों बड़ा रस मिलता था। वह कहा करता था कि आरम्भ में वह एक बहुत ही छोटी सी स्थिति का व्यक्ति था अर्थात् सेना के जनरल ज़ू तेह का साधारण काम करने वाला नौकर रह चुका था। वह यह भी जानता था कि सायंकाल के भोजन के समय जनरल पेंग ते-हवाई कितनी रोटियां खा जाया करता था । कुमारी तेंग यिन ज़ाओ कौन-कौन से पाउडर और चेहरे को लाल करने वाले किस रंग का इस्तेमाल करती थी और ज़ाई यांग को अपनी मेज़ पर ताजे फूल रखने का कितना शौक था। यह सब कुछ बताने के बाद वह अपनी कहानी छेड़ दिया करता था और अपने गुणों की डोंडी पीटने लगता था। संघ की ओर से सेना के आत्म निर्भर रहने के लिए येनान में व्यक्तिगत उत्पादन को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देने के काम में उसको जो तमगा मिला था वह उसको भी दिखाया करता था। ऐसा मालूम होता था कि इसके पश्चात् उसने क्रांति के लिए और कोई काम न किया था। पुण्य की जो पूंजी जमा की थी उसी पर अब वह आनन्द करना चाहता था। उसको चांदनी से विशेष लगाव था और वह रात के समय बाग में मेरी खिड़की के सामने कुर्सी डालकर चन्द्रमा को देखते हुए घंटों बिता दिया करता था। इस मौन और आत्म-चिन्तन के समय उसके मन में क्या भाव होते थे और क्या विचार उठते थे इसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता था। किन्तु प्रत्येक मानव प्राणी के हृदय में कहीं न कहीं कोई न कोई पवित्र बात छुपी होती है जिसको वह छोड़ना नहीं चाहता। अलग रहकर वह किस बात या किसकी स्मृति को सहलाने में आनन्द ढूंढ रहा था इसका पता लगाने की मैंने कभी कोशिश नहीं की।

कभी-कभी वह अपने माता पिता और छोटी बहिन का भी उल्लेख कर दिया करता था। पिछले १६ वर्ष में वह उन्हें एक बार भी नहीं मिला था और क्रांति में सम्मिलित होने के ५ वर्ष पश्चात् केवल एक बार ही उनको उनका सन्देश मिला था। मैंने एक बार उससे पूछा—"क्या कभी तुमको अपने परिवार की भी चिन्ता होती है?" इसका उसने "नहीं" कहकर उत्तर

दे दिया था और अपनी मेज़ की दराज से कुछ कागज निकाल लिये थे। उसको कुछ थोड़ा सा ही अक्षर ज्ञान था। वह अपना और अपने माता पिता का नाम पढ़ लेता था और ३०-४० अन्य साधारण अक्षरों को समझ लेता था। (चीनी भाषा में प्रत्येक शब्द एक चित्र है, इसलिये वहां साक्षरता का अर्थ हमारे देश की साक्षरता से भिन्न है-अनु०)। इसलिए उसने मुझसे कहा कि इन कागजों को मैं उसको जोर जोर से पढ़कर सुनाऊं ताकि वह एक बार फिर उनको सुनने का आनन्द उठा सके। ये कागज उन सनदों की प्रति-लिपियां थी जो उसको स्थानीय सरकार और किसान सभाओं से इस अभि-प्राय से दी गई थी कि वह समझले कि उसके परिवार का विशेष रूप से ध्यान रक्खा जावेगा। वह एक पुराना योद्धा जो था। इन कागजों में उन आश्वासनों की प्रतियां भी थीं जो स्थानीय सरकार की ओर से दी गई थीं और जिनमें कहा गया था कि उसके लिए जो सिफारिशें की गईं हैं उन पर अमल किया जायगा। संघ की ओर से उसके प्रति जो अनेक कृपाएं हुई थीं उनके प्रमाण-स्वरूप वह उन प्रचारात्मक नाटकों का भी उल्लेख कर दिया करता था जो वह देख चुका था। उन सब में भी पुराने योद्धाओं के परिवारों के साथ की जाने वाली विशेष रियायतों का उल्लेख पाया जाता था। इस चिरकालिक कामरेड ने एक बार कहा था कि "यदि किसी का बेटा क्रांति में सम्मिलित हो जाता है तो उसके परिवार वालों को भी उसके पुण्य का फल मिलता रहता है।"

"क्या वास्तव में जो कुछ तुम कह रहे हो तुम उस पर विश्वास करते हो ?" मैंने उससे पूछा।

"निस्सन्देह," यह कहकर उसने प्रमाण के रूप में अपने नाटकों का उल्लेख किया। "मैंने उन नाटकों में से एक में देखा था कि नव वर्ष के त्योहार पर स्थानीय सरकार के अध्यक्ष एक पुराने योद्धा के परिवार के घर आते हैं। वह उनको सान्त्वना देता है और उसकी प्रशंसा करता है क्योंकि उनका बेटा सेना में है। इसके पश्चात् वह एक लाल रंग की लालटेन उनके बाहर के द्वार पर टांग देता है जिस पर मोटे-मोटे शब्द लिखे होते हैं ताकि प्रत्येक व्यक्ति उनको पढ़ सके। उस लालटेन पर लिखा था "माननीय योद्धा परिवार"। इसके पश्चात् बहुत बड़ी संख्या में किसान सभा के लोग उस घर

में प्रवेश करते हैं और परिवार वालों को नव वर्ष की शुभ कामनाएं भेंट करते हैं"। यह सब कुछ बताते हुए उसकी मुद्रा से सुख टपक रहा था और उसकी आंखें आह्लाद से चमक रही थीं। देखने से यह विश्वास नहीं होता था कि १६ वर्ष तक जो व्यक्ति क्रांति में काम करने का अनुभव प्राप्त कर चुका है वह भी इन सब बातों पर विश्वास कर सकता है और यह नहीं समझ सकता कि यह तो केवल प्रचार मात्र ही था। यह देखकर अब मुझको आश्चर्य नहीं हुआ कि कुछ अधिक भोली वृत्ति के चिरकालिक कामरेड क्यों सहर्ष क्रांति के लिए अपना रक्त-दान देने को तैयार रहा करते हैं। घोर निराशा के समय भद्दे से भद्दा प्रचार भी उनकी आत्मा को आनन्द विभोर कर दिया करता था। संघ की ओर से जब आदेश हुआ कि वे अपने घर बार की चिन्ता छोड़ दें क्योंकि उनके परिवार वालों के लिए तो पहले ही समुचित प्रबन्ध किया जा चुका है तो वे साधारण कृतज्ञता के भार से इतने दबे नजर आते थे कि संघ की आज्ञा को मानना ही उनका परम कर्तव्य होगया था।

एक दिन वह बहुत उत्तेजित था। अपने सिर के ऊपर एक चिट्ठी हिलाते हुए वह कमरे में आ धमका था और जोर से कहने लगा था "यह मेरी मां की चिट्ठी है"। उसकी इस आनंददायक पांती को मैंने उसके कहने पर जोर से पढ़ना शुरू किया। पांती इस प्रकार थी :

"प्यारे बेटें,

तुम्हारे पिता की जब जमीन उनसे छिन गई तो उनको एक सरकारी सड़क पर मेहनत करके आजीविका चलानी पड़ी। तुम्हारी बहिन को विवाह करने के लिए बाध्य होना पड़ा। मुझको टियन्टसिन जाकर अपने फालतू कपड़े बेचने पड़े ताकि हमारे उपर लगे नये करों को अदा किया जा सके। किसान सभा का कहना था कि सरकार से सहयोग प्रदर्शित करके हमको गांवों के सामने एक ज्वलन्त उदाहरण रखना चाहिए। क्योंकि हम एक पुराने योद्धा के माता पिता हैं। उसका कहना था कि हमारा उदाहरण देखकर अन्य गांव वाले भी हमारा अनुकरण करेंगे। बहुत कठोर जीवन है यह। तुम अपने बूढ़े माता पिता को छोड़ कर क्यों क्रातिकारी बन गए ?"

यह सुनकर वह मुंह फैलाए रह गया और मुझसे उक्त पत्र को पुनः पढ़ने के लिए प्रार्थना करने लगा। उसके पश्चात् उसने पत्र मुझ से ले लिया और उसको जेब में रखकर बिना कुछ बोले कमरे से बाहर निकल गया। एक सप्ताह तक प्रत्येक रात को वह बाग में बैठता और चांद को निकलते और छिपते देखते रह कर रात काट देता। पहले पत्र के लगभग एक सप्ताह पश्चात् उसकी मां का एक और पत्र आ गया। जिसमें लिखा था।

"प्यारे बेटा,

तुम्हारे पिता अभी मेरी बांहों में लेटे हुए प्राण तोड़ गए हैं। तुम्हारी बहिन कहां है इसका मुझको पता नहीं। अब न कहीं घर है, न जमीन, न खाना न परिवार। मैं टियन्टसिन जा रही हूं ताकि भीख मांग कर पेट भर सकूं। प्रभु से प्रार्थना करना कि तुम्हारी बूढ़ी मां की टांगें धोखा न दे जायं।"

उसके चेहरे पर उस समय जो भाव थे उनको मैं कभी नहीं भूलूंगा। किस प्रकार आवेश और रोष के कारण उसके चेहरे पर गहरी लकीरें सी पड़ गईं थी उसका वर्णन करना सम्भव नहीं। मैं आधे घण्टे तक उसको सान्त्वना देता रहा तब कहीं वह ठंडा हुआ। वह दोनों चिट्ठियों को लेकर मन्त्री के पास गया और सहायता दिए जाने का आग्रह करने लगा। ऐसा करते समय बार बार उसने याद दिलाया कि क्रांति की सेवा करके उसने जो पुण्य कमाया है उसके कारण वह सहानुभूति और सहायता का अधिकारी है। मन्त्री महोदय ने कुछ चिट्ठियां स्थानीय सरकार को लिख दीं जिससे उक्त चिरकालिक कामरेड के लिए 'अ' श्रेणी का आश्वासन प्राप्त हुआ कि उसकी मां के आराम का ध्यान रखा जायगा। यह आश्वासन पाकर वह एक दिन बड़े गर्वपूर्ण ढंग से कमरे में दाखिल हुआ। उसका चेहरा मुस्कराहट से चमक रहा था जब उसने मुझको उक्त खरीता दिखाया, "देखा आपने" वह बोला "संघ अपने सदस्यों की किस प्रकार देख भाल करता है।" मेरी यह समझ में ही नहीं आया कि किस प्रकार स्थानीय सरकार इस कामरेड की मां को टियन्टसिन जाने वाली सड़कों पर टियन्टसिन के सहस्त्रों भिखारियों में से ढूंढ निकालेगी। परन्तु मैंने उससे यह सन्देह व्यक्त नहीं किया, और न ही उससे यह पूछा कि क्या वास्तव में उसका संघ की

बात पर भरोसा है। संघ के द्वारा किए गए वायदों पर विश्वास करके ही यदि उसको सन्तोष मिलता था तो मैं विश्वास को तोड़ने वाला कौन था।

× × ×

आने वाले युग में जब कभी इतिहास वेत्ता आज का इतिहास लिखेंगे तो वे सम्भवतः हमारे युग को सार्वभौम दुखान्त नाटक का युग ही कहेंगे। क्रांति की चण्डी पर कितने लोगों की बलि चढ़ाई गई, कितने परिवारों का रक्त उसको अर्पित किया गया यह गणना से परे की बात है। वास्तव में किसी को पता नहीं कि कितने पतियों ने अपनी पत्नियों और अपने भविष्य को संघ के लिए तिलांजलि दे दी; न कभी यही गणना होगी कि कितने बूढ़े, लूले, लंगड़े, व्यक्तियों को कठोर श्रम भार सहन करना पड़ा न ही कभी किसी को यह पता लगेगा कि कितने युवक बिना आवश्यक सैनिक-शिक्षा ही के युद्धाग्नि में धकेल दिये गये। न ही कभी कोई यह जानेगा कि पराजय होने पर कितने घायल सैनिकों को पहाड़ियों पर ही सांस तोड़ने के लिए छोड़ दिया गया और कितने अभागों को उपयुक्त औषधि आदि न मिलने के कारण अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। यदि कभी आंकड़े जमा हो सके तो किसी को विश्वास भी न होगा कि इतने लोगों को अपना काम धन्धा छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा और इतनी स्त्रियों को जनता के कल्याण के लिए अपने शरीर को दूसरों को सौंपना पड़ा था। पर इस सबसे भी अधिक भयंकर क्षति यह थी कि सारे राष्ट्र ही का मस्तिष्क और हृदय कलुषित कर दिया गया। किसी मानव प्राणी के लिए उसके मस्तिष्क और हृदय के विकृत हो जाने से अधिक पतन क्या हो सकता है ? तिस पर भी, शासक लोग आये दिन व्यक्तिगत दुखान्त कहानियों की प्रशंसा करते नहीं अघाते थे और अपने दृष्टिकोण से संघ के अन्य सदस्यों को पुनः शिक्षित करने के लिए इन कहानियों का इस्तेमाल करने से नहीं झिझकते थे।

संघ की ओर से एक कहानी को विशेषतः प्रसिद्ध किया गया, विशेषतया सैनिक टुकड़ियों में, जिसका सम्बन्ध एक ऐसे किसान से था जो उत्तर पूर्व का वासी था। वह देश-भक्ति के कारण जापान विरोधी युद्ध में भाग लेने के लिए छापा-मारों में सम्मिलित हो गया था। नित्य प्रति यह प्रचार सुनते-सुनते कि चीन का भविष्य कम्युनिष्टों के हाथ ही में सुरक्षित है वह पार्टी

का सदस्य बन गया था। सेना में वह अत्यन्त प्रशंसनीय काम कर चुका था इसलिए उसको उन्नति करने में कोई बाधा नहीं हुई। वह पहले प्लेटून-नायक बना बाद में कम्पनी नायक और आगे चलकर बटेलियन-नायक। जब एक बार वह युद्ध में घायल हो गया तो स्वास्थ्य लाभ के लिए उसको येनान भेजा गया। येनान में रहने के दिनों में उसको मार्क्स लेनिन शिक्षालय में एक विशेष प्रशिक्षण का भार ग्रहण पड़ा करना। १९४७ ईस्वी के दूसरे भाग में जब कम्युनिस्ट शासक उत्तर पूर्वी चीन में अपने अधिकार और नियन्त्रण बढ़ाते जा रहे थे उसको लड़ने के लिए फिर मैदान में आना पड़ा। इस बार रेजिमेन्ट नायक के रूप में। इसी डिवीजन के दो रेजीमेन्टों ने उसके अपने नगर को स्वतन्त्र कराया। जब उसको अपने नगर के स्वतन्त्र होने का समाचार मिला, वह उससे कोई दो दिन के सफ़र की दूरी पर था।

अपने सैनिकों को जिस अधिनियम को उसको बार बार सुनाना पड़ता था उसका आशय यह था कि किसी भी सैनिक को अपने घर की याद नहीं करनी चाहिये। इसीलिये किसी को घर जाने की नियमित अनुमति नहीं मिलती थी और यदि कोई सैनिक अपनी टुकड़ी को छोड़कर घर चला जाता था उसको उक्त अधिनियम को भंग करने का घोर अपराधी ठहराया जाता था और गिरफ्तार होने पर कठोर दण्ड भोगना पड़ना था। येनान में उसने प्रचार-शैली के विषय में जो कुछ सीखा था, उससे प्रभावित होकर वह इन सभी कामरेडों की प्रशंसा किया करता था जो इस अधिनियम का पालन करते थे। यद्यपि वास्तव में इस अधिनियम की बहुधा अवहेलना हो जाया करती थी। अपने शहर या गांव से होकर जाते समय जो कामरेड अपनी टुकड़ियों में ही रहते और अपने माता पिता और मित्रों के आंसुओं की अवहेलना करके भी अपने दृढ़ निश्चय का प्रमाण देते उनकी तो यह विशेष रूप से प्रशंसा किया करता था।

किन्तु जब इस रेजिमेन्ट-नायक ने सुना कि उसका अपना नगर राष्ट्रवादियों के चंगुल से छुड़ा लिया गया है तो उसका हृदय द्रुत गति से धड़कने लगा। वह जानता था कि इस प्रकार की भावनाओं का मन में उत्पन्न होना उसके पिछड़ेपन का सबूत है और बौद्धिक दृष्टि से वह उस पर लज्जित था। इसलिए वह अपनी इन भावनाओं का प्रतिरोध करता रहा और दौड़कर

घर जाकर अपने माता पिता से मिलने की उत्कट इच्छा को मन में ही दबाये रहा। किन्तु उसके ऐसा प्रयत्न करते रहने के बावजूद भी उसकी उत्कण्ठा का निराकरण नहीं हो सका और वह अनेक प्रकार से अपने आपको व्यक्त करने लगी। उसने उसको जितनी ही दबाने की कोशिश की उतनी ही वह तीव्र होती गई; कभी वह सोचता कि पता नहीं कि उसका वह छोटा भाई जिसको वह छोड़ आया था वयस्क होकर कैसा लगता होगा; कभी उसके मन में विचार उठता कि सम्भवतः उसकी गैरहाजरी के दिनों में उसकी बहिन ने शादी कर ली होगी, तो कभी उसके मन में विचार आता कि शायद अब उसके माता-पिता ऐसी अवस्था में पहुंच गये होंगे जब कि उनको आराम मिलना ही चाहिये; कभी उसका मन उससे कहता, "अरे हां वह जो उसकी भाभी विधवा हो गई थी पता नहीं उसका क्या हुआ और उसका वह छोटा भतीजा जिसको वह छापा-मारों में भरती होते समय २ वर्ष का ही छोड़कर चला आया था न जाने अब कैसा हो गया होगा।"

क्राँति की अनेकों वर्षों की सेवा में पहले भी उसको अपने परिवार की बहुधा याद आती रही थी। पर जहां कि उसके मन में ऐसी भावनाओं को उत्पन्न होने में "पुराने समाज की दुम" या पिछड़ेपन का प्रतीक माना जाता हो, वहां वह कभी कभी अपने प्रिय परिजनों के लिए मन ही मन प्रार्थना कर लिया करता था और उस धारणा को मन में पोसता रहता था कि आखिर कभी न कभी तो ऐसा आयेगा ही जब युद्ध समाप्त हो जायगा और वह अपने घर वापिस जा सकेगा।

अपने जीवन भर कठोर परिश्रम करके उसके पिता ने जो आठ माउ कृषि भूमि एकत्रित की थी। उसकी भी अब उसको चिन्ता थी। येनान प्रवास के दिनों में उसने भूमि-सुधार सम्बन्धी कानूनों का अध्ययन किया था; वहां इस भूमि-सुधार को उसने जब मन ही मन अपने नगर पर लागू किया था तो उसको लगा कि यह बहुत रुचिकर नहीं है! वह उसका वास्तविक रूप उन नगरों में देख चुका था जिनको उसने स्वयं स्वतन्त्र कराया था। तब उसने भूमि-सुधार सम्बन्धी अनेकों सरकारी पुस्तिकाओं और खरीतों को फिर से प्राप्त करके बड़ा ध्यान लगाकर पुनः अध्ययन किया था। यदि किसी परिवार विशेष की ७५ प्रतिशत से अधिक किन्तु १०० प्रतिशत से कम आय व्यक्ति-

गत काम से होती तो उक्त कानून के अनुसार उसको मध्य वर्ग का किसान माना जाता था। इस रेजीमेन्ट नायक का अपना परिवार इसी श्रेणी में आता था, तब उसको यह जानकर बड़ा सन्तोष हुआ था। क्योंकि कानूनी दृष्टि से मध्यम श्रेणी के किसान की जमीन सुरक्षित थी और ऐसे परिवार का अध्यक्ष किसान सभा का सदस्य भी बनने की योग्यता रखता था। उसको यह जानकर बड़ी ही प्रसन्नता हुई थी कि उसके पिता जमीन्दार कहे जाने के अभिशाप से बच जायेंगे। किन्तु फिर भी न जाने क्यों उसको यह आशंका बनी हुई थी कि यदि कानून में कहीं कोई परिवर्तन हो गया या उसको कार्यान्वित करते समय कोई व्यक्ति गलती कर बैठा तो उसके पिता का अहित अवश्य हो सकता है।

उसके पिछड़ेपन की भावनाएं यद्यपि बार बार उसके मन को इतना व्यथित करने लगी कि वह कभी अपने काम पर अपना ध्यान केन्द्रीभूत नहीं कर पाता था, वह बार बार नही निश्चय करता कि पार्टी के सदस्यों को पिछड़ी हुई भावनाओं के वश में नहीं आना चाहिए। इसी को जीवन का मूल मन्त्र मानकर वह कुछ साहस बटोरने का यत्न करता था, किन्तु अब इधर उसको अपनी भावनाओं और इच्छाओं को अपने आपको तर्क युक्त सिद्ध करने की कला आने लगी थी और कई बार न चाहते हुए भी वह यह सोचने लगा कि मैं अपने माता पिता की दर्शन पिपासा को तृप्त करके ही उस नियम के अन्तर्गत रह सकता हूं जिसके द्वारा ऐसी सामन्तशाही धारणाओं को वर्जित कर दिया गया है। यदि वह दो दिन पैदल चलता तो अपने परिवार से जाकर मिल सकता था और यदि कहीं घोड़े पर सवार होकर जाता तो २४ घण्टे में उनसे मिलकर बापिस भी आ सकता था और अपने परिवार के साथ कुछ घण्टे बिता भी सकता था। इसके अतिरिक्त यह बात भी थी कि वह स्वयं रेजीमेण्ट का नायक था। वह कहां गया और कैसे गया इस विषय में रेजी-मेण्ट में से कोई उससे प्रश्न करने का साहस नहीं कर सकता था। वह तो केवल अपने डिवीजन नायक ही के प्रति उत्तरदायी था और इस समय वे अधिकारी उसके अपने नगर से दूसरी ओर थे। उसके उच्च अधिकारियों ने कभी उसकी वफ़ादारी और योग्यता पर सन्देह नहीं किया था। यदि कहीं रास्ते में उसको कुछ पतरौली करने वाले लोगों ने रोका भी तो उसके अपने सैनिक पद को देखकर वे सन्तुष्ट हो जायंगे और इस प्रकार वह सुरक्षित रह

सकेगा। फिर और कुछ न सही तो यह तो वह हमेशा ही कह सकता था कि वह अपने हैडक्वाटर जा रहा है। "पर मैं पकड़ा जाऊं या न पकड़ा जाऊं, मेरा काम तो अनुशासन विरोधी ही होगा।" यह दुविधा उसके मन को सताने लगी। अब अपने आपसे तर्क करने लगा कि "वास्तव में मेरे विचार और धारणाएं पिछड़ी हुई हैं। पर उनके पूर्णतः दमन करने का एक मात्र उपाय भी तो यही है कि अपने नगर जाकर स्थिति को स्वयं अपनी आंखों से देख लूं। जिन नायकों के हाथ में मेरे नगर का अस्थायी प्रशासन है, वे मेरे अपने मित्र हैं। और उनसे किसी प्रकार की आशंका नहीं हो सकती। बल्कि उनसे तो सहायता ही मिल सकती है। क्योंकि कुछ समय पहले मैं भी तो उनके साथ कोई न कोई व्यक्तिगत भलाई कर ही चुका हूं।" इस प्रकार तर्क वितर्क करके वह अब एक निश्चय पर पहुंच गया।

एक दिन प्रातः काल उसने अपने रेजिमेन्ट को अपने एक सहकारी के सुपुर्द कर दिया और उसका कारण यह बता दिया कि उसको स्वयं किसी आवश्यक काम से हेड क्वाटर जाना है। वह एक घोड़े पर सवार हुआ और अदृश्य हो गया। फिर भी ग्लानि काटती सी रही कि वह अपने परिवार के प्रेम के कारण अपने क्रांति के प्रति कर्त्तव्यों को ढीला कर रहा है। पर अब तो वह चल ही पड़ा था। चलते चलते दोपहर बाद वह अपने नगर की सीमा पर जा पहुंचा। अब उसका हृदय और भी जोर से धड़कने लगा। वह भावों के सागर में डूब उतर रहा था। "जब मैं अपनी घर की ड्योड़ी पर पहुंचूंगा तो मेरी मां और मेरे पिता किस प्रकार आंख फैलाये देखते रह जायंगे तब कितना उल्लास और सुख होगा। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि मेरे बाप को मेरी सैनिक पदवी को देखकर बड़ा गर्व होगा।" ऐसी बातों की मन में कल्पना करते हुए वह जोर से हंसा और अपनी घोड़ी को सम्बोधित करके दुलकी चाल से चलते हुए उस जानवर को अपने अतीत जीवन की वे सब घटनाएं सुनाने लगा जिनकी उसको परिचित दृश्यों को देख कर अब याद आती जा रही थी। प्रत्येक वृक्ष, प्रत्येक घर, प्रत्येक खेत, प्रत्येक गली और प्रत्येक वीथिका से किसी समय उसका परिचय रह चुका था। यदि उसने कुछ लोगों को खेत में काम करते सड़कों पर चलते या किसी घर से निकलते देखा तो अपनी गरदन झुका लेता और उनसे न बोलता यद्यपि वह उनको जानता था। ऐसा करने में उसको कष्ट अवश्यहुआ, किन्तु उसको अपने पहिचाने जाने का भय भी तो था।

वह जब अपने जीवन की सबसे अधिक परिचित गली में मुड़ा तो तुरन्त अपने घोड़े को रोक कर उसकी पीठ पर से कूद पड़ा । लगभग १०० गज की दूरी पर सामने ही उसका वह मकान था जिसमें कभी उसका जन्म हुआ था । पर अब इस घर को देखने से भय लगने लगा । उसके सामने एक भीड़ जमा थी जो कभी-कभी चिल्लाती हुई सुनाई पड़ती थी । वह तुरन्त ही समझ गया कि यह निश्चय ही वह चिरपरिचित "सभा" है जिसमें जमीन्दार कहे जाने वाले लोगों के भाग्य का निर्णय किया जाया करता है । भीड़ के ठीक बीच में उसके पिता खड़े थे और अपने आपको अपने ऊपर लगाये गये उन आरोपों से बचाने की कोशिश में दिखाई देते थे जिनकी चारों ओर से उन पर बौछार हो रही थी ।

उसको स्वयं अपने अनुभव से मालूम था कि उसके पिता का क्या हाल होने वाला है । किन्तु अपने पिता को बचाने के लिए वह अब कर ही क्या सकता था ? उसके कानों में संघ की ओर से कूट-कूट कर यह बातें भर दी गई थी कि यदि कोई स्टाफ-अफसर अपने ऐसे परिवार की तरफ से आवाज उठायेगा, जिसको जनता दण्डनीय मानती है तो वह भारी अपराध का दोषी ठहराया जायगा । जनता की धारणा सर्वोपरि थी न ? इसके अतिरिक्त फिर वह तो स्वयं अनुशासन का उलंघन करके ही घर आया था । उसकी आंखे आंसुओं के कारण जलने सी लगी थीं । अब वह घोड़े पर सवार हो गया और उसको वापस करने ही को था कि जो स्टाफ अफसर उस समय सभा की अध्यक्षता कर रहा था उसने स्वातंत्र्य सेना की यूनिफार्म धारण किये हुए इस घुड़सवार को देख लिया और उसको आगे आने के लिए कहा । जब उक्त स्टाफ अफसर ने देखा कि घुड़सवार किसी रेजिमेण्ट का नायक है तो उसने बड़े सम्मान के साथ उसको सलाम किया और विनम्रता पूर्वक उससे सामन्त-शाही जमींदारी प्रथा के विषय में अपने विचार व्यक्त करने का अनुरोध किया । नायक घोड़े से उतर आया और भीड़ में से होता हुआ उस घेरे में पहुंच गया जो उसके पिता के चारों ओर बना हुआ था ।

ऐसी स्थिति में किसी परिजन को कष्टग्रस्त देख कर जो हुआ करता है, वही हुआ । उसके मन में धक्का-सा लगा । उसकी श्वेत-केश मां उसको देख कर जोर से चीख पड़ी और उससे गले मिलने को घेरे की ओर दौड़ी पर

बेहोश होकर गिर पड़ी। उसकी बहिन और उसके छोटे भतीजे ने उसके आंचल को आ पकड़ा। उनकी आंखें रो रही थीं, लेकिन न तो उनसे कोई आंसू गिरता था और न उनकी जिह्वा से कोई शब्द निकलता था। जिह्वा शक्तिहीन हो गई थी और आंखों को जितने आंसू बहाने थे पहिले ही बहा चुकी थी। उसके पिता जिनके दोनों हाथ पीठ पीछे बंधे थे उसकी ओर देख कर अपनी आंखों में अचानक ज्योति पा जाने का अनुभव करने लगे; पर उनके सिर में चक्कर आने लगा और उनका जी मितला गया। चारों ओर जो निस्तब्धता छाई हुई थी वह उनको सता रही थी और अनन्त की भांति निःशेष दिखाई देती थी।

अब भीड़ धीरे-धीरे हिलने लगी और कुछ बड़बड़ाने सी लगी। तुरन्त ही सभा के अध्यक्ष की वाणी तोप की तरह गरजी और जोर से रेजीमेंट नायक से उसके वहां पहुंचने का कारण पूछने लगी। ऐसी मननशील धैर्यपूर्ण वाणी में, जो उससे बहुत दूर प्रतीत होती थी, उसने उत्तर दिया कि "मैं किसी सरकारी कार्यवश हैडक्वाटर जा रहा हूं।"

इस पर उससे सामन्तशाही जमींदारी प्रथा के विषय में कुछ शब्द कहने को आग्रह किया गया। बाहर जो निस्तब्धता छाई थी वह उसके कपाल में बिजली की भांति गरज रही थी। वह जानता था कि यदि वह चाहे तो भीड़ को अपने पक्ष में इतना प्रभावित कर सकता है कि उसके पिता की जान बच जाय। अभी तक भीड़ में इतनी अदमनीय मदान्धता नहीं दिखाई दे रही थी जितनी कि ऐसे अवसरों पर दण्डित जमींदार के विरुद्ध दिए गए निर्णय के आधे मिनट पहले वह अन्यत्र देख चुका था। इसके अतिरिक्त उसको यह भी विश्वास था कि वह उन चिरकालिक कामरेडों को अपनी ओर कर सकता है जो इस सभा को चला रहे थे। वह एक उच्च अधिकारी था और यदि चाहता तो उस क्षण अपने शब्दों को कानून की भांति मनवा सकता था और इस प्रकार अपने पिता के भाग निकलने के लिए आवश्यक समय प्राप्त कर सकता था। पारिभाषिक दृष्टि से कानून भी उसके ही पक्ष में था। क्योंकि वास्तव में उसके पिता जमींदार न थे बल्कि मध्यम स्थिति के एक किसान ही थे। उसको यह देखकर आश्चर्य अवश्य हुआ था कि उसके पिता के पक्ष में किसान सभा की ओर से अब तक किसी ने कुछ भी क्यों नहीं कहा और किसान सभा

के लोग वहां क्यों मौजूद नहीं है। साथ ही वह यह भी जानता था कि यदि उसने भवितव्य के विरुद्ध आवाज उठाई तो उसका अर्थ जन-तंत्रीय दण्ड व्यवस्था में हस्तक्षेप करना समझा जायगा। पारिभाषिक दृष्टि से उसकी बात ठीक हो या गलत, नैतिक दृष्टि से उसका पक्ष भारी हो या हलका, विजय तो जनतंत्रीय दण्ड विधान की ही होनी चाहिए। ऐसा अब वह अपने मन में सोचने लगा था। वह यह भी जानता था कि जमींदारों के भाग्य का निर्णय करने के लिए बुलाई गई सभाओं ने उत्तेजित जन-भावनाओं में हस्तक्षेप करना भारी अपराध माना जाता है क्योंकि जनता की सामूहिक भावना "नाना वाक्यम् प्रमाणम्" है। जो आरोप लगाने वाला था वही निर्णायक भी और इसलिए उसी का बचन शिरोधार्य है। भीड़ ही किसी को मृत्यु दण्ड देती थी और भीड़ ही उस दण्ड को कार्यान्वित भी करती थी, इसलिए उसकी बात को तो पवित्र माना ही जाना चाहिए। यही एक मार्ग है जिस पर चल कर जनता स्वशासन के अधिकार को प्रस्थापन कर सकती है। विजय जनता ही की होनी चाहिए, उसने अपने मन में निर्णय कर लिया।

अब वह एक पुत्र नहीं वरन् रेजिमेंट नायक की हैसियत से बोलने लगा। "इस समय जो स्थिति है उसमें यदि मैं सभा की कार्यवाही में वास्तव में भाग न लूं तो मुझको क्षमा करना। इस समय तो मैं केवल यही कहना चाहता हूं कि संघ की आज्ञा मेरे लिए सदा शिरोधार्य है। जनता की इच्छा सदा मान्य है। सभा जो निर्णय करेगी वही मेरे लिए शिरोधार्य होगा।"

इन शब्दों को सुनकर सभा में जोर से करतल ध्वनि हुई और मदान्धता पूर्ण ढंग से जयनाद होने लगा। एक मिनट ही में लोग उसके पिता पर टूट पड़े और उसको जमीन पर गिरा कर नृशंसता पूर्ण ढंग से पीटा जाने लगा; अकथनीय निर्दयता के साथ बहुत से लोग उस पर ठोकरों की बौछार करने लगे। आवेश ठंडा होने पर भीड़ ने उक्त कामरेड को अपने पिता से एकान्त में दो शब्द कह लेने की आज्ञा दी। सम्भवतः इससे अधिक कटु गृहागमन इससे पहिले कभी किसी का न हुआ होगा।

अपने कर्तव्य पालन में वीरता के उदाहरण के रूप इस कहानी को विशद रूप से प्रकाशित किया गया। मैंने एक समाचार पत्र में पढ़ा कि कुछ दिन

पश्चात् उस कामरेड को राजनैतिक कमिसार डिवीजन हैडक्वाटर में पेश किया गया जहां उसको पार्टी का श्रेष्ट अफसर घोषित किया गया और उस नाते उसकी बड़ी प्रशंसा की गई। ऊपर से उसको पांच नक्षत्रों वाला एक पदक प्रदान किया गया। डिवीजन के सभी अफसरों और साधारण सैनिकों से उसके आचरण का अध्ययन और अनुकरण करने को कहा गया। उसकी प्रशंसा में नृत्य प्रदर्शन हुए, डोंडियां पीटी गईं, गाने गाये गये। सर्वत्र इस वीर के साहस की प्रशंसा की गई। सरकार के प्रचार विभाग ने इस कहानी से अधिकतम लाभ उठाने का यत्न किया; नाटक लिखवाये; माओत्सी-तुंग ने स्वयं उसका सम्मान किया, और पुरस्कार स्वरूप, उसको डिवीजन स्तर का अधिकारी बना दिया गया, जिसके फलस्वरूप उसको मन चाहा खाना पकवाने और खाने की सुविधा प्राप्त हो गई!

परिच्छेद १५

जन तन्त्रीय कला और मनोविनोद

मैं सदा ही दार्शनिकों और कलाकारों की प्रशंसा करता आया था। मेरे मतानुसार ये ऐसे लोग थे जो राजनीति में ऊपर रहते हुए भी राजनीति पर प्रभाव डाल सकते थे। किन्तु मेरी यह धारणा अक्रांतिकारी थी। अब हमको आदेश किया गया था कि कलाकारों और दार्शनिकों का स्थान राजनीति में है और इस लिये उनका कार्य राजनीति से प्रभावित होना चाहिए। प्रचार मंत्रालय में मैं जिस हैसियत से काम करता था उसमें रहते हुए मुझको अनेक बार विद्वानों और कलाकारों को मदान्ध व्यक्यिों की तरह "सरकार जिन्दाबाद" और "प्रतिक्रियावादियों का नाश हो" के नारे लगाते हुए देखने का अवसर मिल चुका था। निस्सन्देह, मन्त्रालय का जन-तन्त्रीय कला और मनोविनोद पर पूरा पूरा नियन्त्रण था। प्रचार के स्पप्ट साधनों एवं समाचार पत्रों के साथ साहित्य संगी, चित्रकला, नृत्य, नाटक, सिनेमा, पीपिंग आपरा और आधुनिक आपरा पर भी उसका अंकुश था। दूसरी और तीसरी फील्ड सेनाओं के साथ कोई १५०० ऐसे कलाकार और इसी प्रकार के कार्य करने वाले अन्य व्यक्ति थे जिनका मन्त्रालय सीधे स्वयं ही निरीक्षण और निर्देशन करता रहता था।

कला में जब तक व्यवहारिकता का अंश न हो तब तक उसके जीवित रहने की सम्भावना नहीं है, ऐसा हमको बताया गया था। अब सौन्दर्य-कला और साधारण कला सम्बन्धी समालोचना में इसी सिद्धान्त को प्रथम स्थान दिया जाता था। इस सम्बन्ध में अध्यक्ष माओ का वह भाषण जो उन्होंने येनान संस्कृति सम्मेलन में दिया था बार बार उद्धत किया जाने वाला मापदण्ड बन गया। जब जन साधारण से पृथक कला का कोई अस्तित्व ही नहीं है तो कला को वास्तव में जनता ही की आज्ञा में चलना चाहिए था!

चीन की परम्परागत चित्रकार-कला और पश्चिमी चित्रकार-कला की अब इसलिए आलोचना की जाने लगी कि उसमें कोई विशिष्ट दृष्टिकोण नहीं पाया जाता था। क्रांति युग में सबसे अधिक महत्व के कलात्मक कार्य राजनैतिक कार्टून और 'वुडकट' बन गये! कोई किसी कार्य को कितनी दक्षतापूर्वक कर सका है इस विषय की आलोचना निषिद्ध कर दी गई क्योंकि यह क्रांतिकारियों की दृष्टि में सौन्दर्य-कला के विषय में पिछड़ी हुई भावनाओं की प्रतीक थी। गांव के किसी किसान द्वारा गाया गया लोक गीत अब संसार का सर्वश्रेष्ठ संगीत बन गया हां, शर्त केवल यह थी कि ऐसे लोक गीत जन-तन्त्रीय संगीतज्ञों द्वारा आवश्यक रूप से संशोधित कर दिये गये हों।

पीपिंग आपरा, एक ऐसा क्षेत्र अवश्य रह गया था जहां परम्परागत कला को अभी तक जीवित रहने की अनुमति थी। क्योंकि सभी लोग, शिक्षित हों या अशिक्षित, धनी हों या गरीब, साधारण सैनिक हों या स्टाफ अफसर, इसके प्रशंसक थे—यहां तक कि कोई संघ के भी कितने ही ऊंचे स्तर पर क्यों न हो, उसको सराहे बिना न रहता था।

शासकों को अब यह भान होने लगा था कि पीपिंग आपरा के प्रति लोगों के मन में जो चाव है उससे चिरकालिक कामरेडों को भी अछूता नहीं रखा जा सकता—बड़ी से बड़ी पुनः शिक्षा के बावजूद भी उनको इस विषय में नहीं सुधारा जा सकता था। पर जो बात उनके हाथ में थी शासक उससे बाज न आये—जब कभी सम्भव हो सका उस पर भी राजनैतिक पुट दे दी गई तथा कथित आधुनिक आपरा और आधुनिक नाटक तो शासकों के प्रचारार्थ थे ही। पर उनको भी ऐसे साम्प्रतिक विषयों के साथ जोड़ दिया जाता था कि उनका प्रचार महत्व आये दिन बदलता रहता था। उनकी विशेषता यह थी कि उनमें मुख्य पात्र सदा कोई न कोई "निर्धन व्यक्ति" ही होता था। संस्कृति का उत्थान करने वाले लोगों के पास ऐसे वस्त्र थे जिनको पहिन कर वे किसानों अथवा भिखमंगों का अभिनय करते सबसे मूल्यवान समझे जाते थे। अनेक बार तो ये "संस्कृति-श्रमिक" कुलियों से कपड़े मांग लिया करते थे क्योंकि बहुत से ऐसे नाटक थे जिनमें आवश्यक वस्त्रों की प्राप्य संख्या भावी अभिनय कर्ताओं की संख्या से बहुत कम हुआ करती थी।

सिनेमा के विकास में रीति-नीति सम्बन्धी सबसे बड़ी सिद्धियां बोल-शेविकों ने प्राप्त की हैं, ऐसा हमको बताया जाता था। हालीवुड से भावुकता-पूर्ण जो कूड़ा निकलता है उसकी जनता की ओजस्वी कृतियों से क्या तुलना की जा सकती है ऐसी नये शासकों की धारणा थी। नार्थ-ईस्ट-मूवी प्राडक्शन नामक कम्पनी ने उत्तर-पूर्व चीन के लोक-तंत्रीय जीवन पर अनेक फिल्में तैयार की थीं। उनमें से प्रत्येक फिल्म कम से कम दो घंटे चलती थी। उनके सौंदर्य कार्य-कौशल और सार्थकता की तो सदा ही भूरी-भूरी प्रशंसा की जाया करती थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जन-तंत्रीय कला और मनोविनोद में कला की दृष्टि से कुछ कम ही सार पाया जाता था, किन्तु उसकी चिन्ता किसको थी ? शासकों की दृष्टि में वही कला सौंदर्य-पूर्ण और मनोविनोदात्मक थी जिससे सही राजनैतिक दृष्टिकोण को लोक-प्रिय बनाया जा सके।

× × ×

उन लोगों को जो स्टाफ अफसर होने की हैसियत से प्रचार कार्यों और मनो-विनोद स्थानों की देख रेख रखते थे सिनेमा और नाटक देखने की अप-रिमित सुविधाएं प्राप्त थीं। मन्त्रालय के पास अपनी ही एक प्रोजेक्टर टीम थी और अपना ही प्रौजेक्टर रूम। जब कभी मन्त्री महोदय प्रसन्न मुद्रा में होते तो वह किसी नई फिल्म को हम सबको देखने के लिए परदे पर चढ़वा दिया करते और इस प्रकार हम लोग वुहान में प्रत्येक व्यक्ति से पहले ही ऐसे चित्रों को देख लिया करते थे। बहुत से कार्यकर्ता चुपके से पड़ौस के किसी सिनेमा घर को खिसक जाया करते थे। वहां दो घण्टे तक या तो कोई चित्र देख लिया करते या उसके अन्धकार में और किसी प्रकार का आनन्द मंगल करते थे।

उपमन्त्री महोदय मुझसे अत्यन्त प्रसन्न थे। जब कभी उनको आवश्यकता पड़ती मैं उनके लिए विशेष प्रचार-कार्य कर दिया करता था। अब उन्होंने अपनी प्रसन्नता के प्रतीक स्वरूप मुझको वुहान के समस्त मनोविनोद के साधनों और स्थानों का निरीक्षक नियुत कर दिया। अब मैं ही फिल्मों और नाटकों को मंगाने और वितरित करने का काम करने लगा और कब कहां कौन सा प्रोग्राम चलेगा और कहां किस प्रकार के श्रोता और दर्शक होंगे, यह निश्चय भी मैं ही करने लगा। मैं ही प्राइवेट मंडलियों का आयोजन करता। बुलेटिन लिखता

और आने वाले चित्रों और नाटकों को लोकप्रिय बनाने के लिए विज्ञापन तैयार करता था। मुझको अब यह भी सुविधा प्राप्त थी कि मैं जितने चाहूं पास लिख सकूं और अपने मित्रों और सहयोगियों को जब चाहूं निशुल्क चित्र अथवा नाटक दिखा सकूं। यदि मेरे मित्रों और सहयोगियों में से किसी को तीन चार दिन तक बराबर कोई "शो" देखने का अवसर न मिलता तो वे अनिवार्यत: मेरे पास आते और मुझसे पूछ जाते कि उनको कब, किस स्तर का चित्र या नाटक देखने का अवसर प्राप्त होगा। मैं कभी टहलता हुआ रसोई की तरफ चला जाता तो रसोइया मुस्करा कर मेरा अभिवादन करता और मुझको कई प्रकार की खाद्य सामग्री खाने के लिए पेश करता जबकि अभी भोजन का समय दूर ही होता। उसको आशा थी कि इस प्रकार वह मुझको प्रसन्न करके कोई निशुल्क टिकट अवश्य प्राप्त कर लेगा।

यद्यपि मुझको मन चाही फिल्म आपरा अथवा नाटक देखने का अवसर और अधिकार प्राप्त था, मैं बहुत ही कम इस सुविधा का लाभ उठाता था। मैं तो तभी किसी सिनेमा या नाटक घर में जाता था, जब मुझको उसके प्रचार-महत्व के विषय में रिपोर्ट करनी पड़ती अथवा जब कभी सम्बन्धित व्यक्तियों के लिए सभा बनाकर बैठता और उनसे "शो" के महत्व के विषय में विचार विमर्श करता या कुछ सामग्री तैयार करनी होती। फलत: मेरी ख्याति बढ़ने लगी। चिरकालिक कामरेडों को यह विश्वास हो गया कि मैं एक सचेत कर्तव्य परायण कामरेड हूं और अपनी सुविधाओं का अनुचित लाभ नहीं उठाता हूं। यह तो कहने की आवश्यकता ही क्या है कि मैंने उनसे कभी यह नहीं कहा कि जनतन्त्रीय "शो" नाम से जो चित्र या नाटक दिखाये जाते थे उनसे कोई भी ऊबे बिना नहीं रह सकता था। बुहान के सिनेमा घरों में उस समय तीन प्रकार के चित्र दिखाये जा रहे थे। लम्बी लम्बी न्यूज रील तथा ऐसे चित्र जिनमें सेना को दक्षिण की ओर स्वातन्त्र्य युद्ध के लिए जाते हुए दिखाया गया था अथवा अन्य कोई ऐसा प्रचारात्मक फिल्म जिसका कोई साम्प्रतिक महत्व हो, तथाकथित शिक्षात्मक फिल्में जो रूस से मंगाई गई थीं और जिनमें बहुधा चीनी भाषा की इतनी इनी गिनी पक्तियां भी नहीं होतीथीं जिनसे दर्शक को यह पता चल जाता कि वह देख क्या रहा है। तीसरे प्रकार के वे चित्र थे जो पुरानी फिल्मों को कांट छांट कर तैयार कर लिये गए थे और जिनमें यहां वहां प्रोपेगण्डा की बातें जोड़ दी गई थीं। जिस समय

में पुराने समाज में कालयापन करता था, तीसरी श्रेणी के प्रायः सभी चित्रों को देख चुका था। पहले दोनों श्रेणी के चित्र नीरस प्रचारात्मक कूड़ा करकट थे, जिनका कला अथवा मनोविनोद की दृष्टि से कोई भी महत्व न था।

लगभग डेढ़ महीने तक हमको "पुल" नाम की फिलम के विषय में अत्यन्त अतिरंजित विवरण मिलता रहा। उस समय यह चित्र उत्तर चीन के सिनेमा घरों में चल रहा था। इसको सर्वश्रेष्ठ कृति कहा जा सकता था और इसके बारे में यह तय किया गया था कि जनतन्त्रीय फिल्म कला के इतिहास में इससे अधिक पैसा भी किसी दूसरे चित्र ने नहीं कमाया। एक दिन उपमन्त्री महोदय को सूचना मिली कि अब वुहान में भी "पुल" को दिखाया जायगा। उन्होंने हम सबको तुरन्त अपने कमरे में बुला लिया और एक महत्वपूर्ण सभा ही कर डाली। इस सभा में हमको आदेश किया गया कि अगले दो सप्ताह में जनता को उक्त फिल्म का उपयुक्त अभिवादन करने के लिए तैयार करना होगा। शहर में प्रोपेगेन्डा करने वाले जितने व्यक्ति और समूह थे उन सब को आज्ञा दी गई कि उनसे जितना बन पड़े उतना ही इस फिल्म के विषय में शोर-शार करें। फिल्म को लोकप्रिय बनाने के लिए विज्ञापन के लिए भी बहुत सा रुपया स्वीकृत कर दिया गया। वुहान के सबसे बड़े सिनेमा घर पर जिस कामरेड का नियन्त्रण था, उसने उन दो सप्ताहों में इतना जी तोड़कर काम किया, जितना उसने अपने जीवन में पहले कभी नहीं किया था। कई बार तो ऐसा हुआ कि वह २०-२० घण्टे तक निरन्तर काम करता रहा। हर सड़क के कोने और चौराहे पर बड़े बड़े रंगीन इश्तिहार लगा दिए गए थे और शहर के समाचार पत्रों में इस चित्र के विषय में अनेक प्रकार की ऐसी कहानियां छपने लगी थीं जिनसे लोगों का मत पहले ही से उक्त चित्र के पक्ष में हो जाय। वुहान में जिस दिन यह फिल्म पहली बार दिखाई गई उस दिन सारी ही प्रचार-टुकड़ियों को शहर के प्रत्येक मुहल्ले और सड़क पर नाच-नाच कर "पुल" की स्तुति बखान करने की आज्ञा हुई।

इस प्रकार का प्रचार मेरी व्यक्तिगत राय में अमरीका की उन सिगरेट कम्पनियों और फिल्म वितरकों के प्रचार से भिन्न न था, जिसको संघ की ओर से आये दिन इतनी कटु निंदा की जाया करती थी और जिसको पाश्चात्य साम्राज्यवादी पूंजीवाद का एक रूप बताया जाता था। संघ ने इस बात से

इन्कार नहीं किया कि इस चित्र से जो प्रचार और विज्ञापन किया जा रहा है उसका उद्देश्य जनतन्त्रीय फिल्मों के लिए बाजार तैयार करना है। किन्तु यह अवश्य कह दिया गया था कि जनतन्त्रीय विज्ञापन कला और पूंजीवादी विज्ञापन कला में एक मौलिक अन्तर है। हमको बताया गया कि वह अन्तर यह है कि जबकि पाश्चात्य देशों में कभी कोई अच्छाई हो ही नहीं सकती संघ में कोई बुराई नहीं हो सकती। जनतन्त्रीय विज्ञापन कला का एक उद्देश्य यह भी बताया गया था कि उसने उन हालीवुड के चित्रों पर एक प्रहार किया जो अभी तक साधारण जनता में आकर्षण और लोकप्रियता का विषय बने हुए थे। यह उस समय की बात है जबकि फिल्म तो क्या इस नये समाज में अमरीका का किसी प्रकार का सामान आयात के रूप में विधिवत प्रवेश नहीं कर सकता था।

सम्पूर्ण सत्ता प्राप्त करने से पहले चीन के शासक साधारण जनता की निरन्तर प्रशंसा किया करते थे। "साधारण जनता की दृष्टि हिम की भांति स्वच्छ है," ऐसा वे तब अपना विश्वास बताते थे। वास्तव में वे इस प्रकार के वाक्यों को राष्ट्रवादी सरकार और जनता के बीच व्याघात उत्पन्न करने के ही काम में लाते थे। किन्तु अब जब समस्त राजसत्ता उनके हाथ में थी, साधारण जनता की दृष्टि भी हिम की भाँति स्वच्छ न रह गई। अब साधारण जनता नये शासकों की दृष्टि में अंधी और अज्ञानी थी। साधारण जनता के विषय में उनके मन में विशेष कटुता पाई जाती थी क्योंकि भगीरथ प्रयत्न करने के पश्चात् भी "पुल" नामक फिल्म इतनी बुरी तरह नाकामयाब रही कि उसकी कल्पना करना आसान नहीं। संघ की समझ में यह बात आती ही न थी कि पश्चिमी देशों की विज्ञापन कला क्यों इतनी सफल रहती है जब कि उसकी अपनी विज्ञापन बाजी जिसमें पश्चिम के देशों की शैली और साधनों को अपनाया गया था इतनी बुरी तरह से क्यों विफल रही। पश्चिमी देशों के विज्ञापक और फिल्म वितरक अपने चित्रों को यदि अपनी आय के मापदण्ड से सफल या असफल हुआ ठहराते थे तो उसका कारण शासकों की दृष्टि में यह था कि उन साम्रज्यवादियों को पैसे के अतिरिक्त और किसी बात से चाव ही नहीं है। उनकी राय में "पुल" वास्तव में एक श्रेष्ठ चित्र था यदि आय की दृष्टि से वह नाकामयाब रहा तो इससे इसके गुणों में कोई कमी न थी बल्कि उस विफलता का तो एक मात्र कारण यही था कि साधारण जनता

अभी अंधकार के गर्त में पड़ी हुई थी ।

"पुल" के लिए विज्ञापन करने में जितने पैसे खर्च हुए उसका केवल एक चौथाई भाग ही टिकटों आदि से वसूल हो सका । प्रारम्भ में हमारी योजना उस चित्र को कम से कम दो सप्ताह चलाने की थी । जो कामरेड सिनेमा घर का निरीक्षण करता था वह प्रत्येक दिन मंत्रालय में आता और उपमंत्री को अपनी टिकटों की बिक्री की प्रगति की रिपोर्ट सुनाता । फिल्म के चलने के सातवें दिन तो सिनेमा हाल की केवल १० प्रतिशत सीटें ही भर पाईं । उपमंत्री दूरदर्शी था उसने विज्ञापन बाजी पर किये जाने वाले खर्च को बन्द करने का निश्चय कर लिया और मजदूरों, सैनिकों और छात्रों को उक्त चित्र को बिना टिकट दिखाने का आदेश कर दिया । इस प्रकार हाल भी भर गया, चित्र भी एक सप्ताह और चलता रहा और साथ में साधारण जनता को यह भी बताया जा सका कि सरकार को अपने फिल्म उद्योग को कामयाब बनाने के लिए उसके पैसे की आवश्यकता नहीं है । जिस समय मुझको आज्ञा हुई कि मैं उक्त आशय का आदेश उपयुक्त विधि से जारी करवा दूं तो मुझको मन ही मन हंसी आये बिना न रही । एक घण्टे पश्चात् "हूनान दैनिक" नामक समाचार पत्र के चांगशा संस्करण की एक प्रति मेरी मेज से हो कर गुजरी । मुझको नित्य-प्रति इस प्रकार के समाचार पत्रों में छपने वाली ऐसी सामग्री पर नजर दौड़ानी ही पड़ती थी । जब मैंने उक्त समाचार पत्र पर नजर डाली तो क्या देखता हूं कि उसमें निम्न आशय का एक समाचार छपा है ।" चांगशा की जनता मुक्त कंठ से 'पुल' नामक चित्र की प्रशंसा करती है और मुक्त बाहुओं द्वारा उसका अभिनन्दन करती है हम आगामी सप्ताह में "पुल" के उद्घाटन की उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रहे हैं । इस समय यह चित्र बड़ी कामयाबी के साथ वुहान में चल रहा है । हमारे युग की इस महानतम कृति को अवश्य देखिये ।"

इस चित्र के कथानक का सम्बन्ध उत्तर-पूर्व चीन की स्वतंत्र हुई जनता से बताया जाता था । उसमें कहा गया था कि जनता ने वसन्त ऋतु की भयानक बाढ़ आने से पहले ही नदी पर एक पुल बना दिया जिससे नदी के आर-पार सैनिक यातायात सुविधाजनक ढंग से जा आ सके । इस चित्र की कहानी में आगे यह भी कहा गया था कि कुछ दिन पहले ही संघ ने जिस कारखाने

पर अधिकार कर लिया था उससे इस पुल को बनाने का आग्रह किया गया था। कारखानों के मजदूरों ने बड़े उत्साह से स्वातन्त्र्य का स्वागत किया था। उन मजदूरों ने बड़े उत्साह के साथ अपने नये कर्त्तव्य को स्वीकार कर लिया था। स्वातन्त्र्य सेना के कामरेडों को लेकर जो प्रशासक मंडली तैयार की गई थी उसी के आधीन इन मजदूरों ने काम किया। इस पुल के बनाने की तैयारी करने में एक ऐसे इंजीनियर को भी काम करने दिया गया जिसके विचार अभी तक पुराने समाज ही के थे और जो अमरीका में शिक्षा प्राप्त करके आया था। कहानी के अनुसार उक्त इंजीनियर ने निर्माण के लिए आवश्यक रेखाचित्र तैयार किये और बताया कि इस पुल को बनाने में तीन मास लगेंगे। प्रगतिशील मजदूरों ने एक मत हो इस कार्य-क्रम का विरोध किया और इंजीनियर के पिछड़े हुए विचारों की आलोचना की। और उसको नौकरशाही युग की भांति समय व्यर्थ गंवाने, सामान और मेहनत को खुर्द-बुर्द करने का दोषी ठहराया। जिस समय फिल्म में मजदूरों और इंजीनियर में होने वाला आवेश पूर्ण तर्क-वितर्क अपनी चरम सीमा पर था मजदूरों की ओर से संघ को आश्वासन दिया जाता है कि वे अपना नक्शा स्वयं तैयार करेंगे और एक मास में ही उक्त पुल को बनाकर दिखा देंगे।

कहानी में आगे चलकर बताया गया था कि पुल का काम आरम्भ करने से पहले मजदूरों ने उस मशीनरी की मरम्मत की जिसको प्रतिक्रियावादी युद्ध स्थल से भागते समय नष्ट कर गये थे। उस समय भी इंजीनियर उसको यह आग्रह करता हुआ दिखाया गया था कि मशीनरी के कुछ आवश्यक भागों को सुधारने के लिए "प्लेटिनम" की आवश्यकता है जो टीयंटसिन शहर से ही मिल सकता है। प्रगतिशील मजदूरों ने इस मूर्खतापूर्ण सुझाव का विरोध किया और इसको भी समय गंवाने की बात ठहराया। ध्वस्त मशीनरी कुछ ही घण्टों में चित्र में ऐसी खूबी के साथ काम करती हुई दिखाई गई थी जैसे कि वह नयी ही थी। कुछ दिनों पश्चात् बिजली बनाने वाली मशीन टूट गई। उस समय चित्र में उक्त इंजीनियर को निठल्ला और जेब में हाथ डाले खड़े हुए व्यक्ति के रूप में दिखाया गया था। परन्तु प्रगतिशील मजदूरों ने उस मशीन को भी बात की बात में ठीक कर दिखाया। ऐसा उस फिल्म की कहानी में बताया था।

उक्त कहानी में आगे चलकर दिखाया गया था कि दो सप्ताह के भीतर ही पुल बन कर तैयार हो गया । यद्यपि प्रगतिशील मजदूरों ने इस काम को चार सप्ताहों में और उक्त पिछड़े हुए इंजीनियर ने आठ सप्ताहों में पूरी करने की बात कही थी । यहां पहुंचकर उक्त चित्र में गम्भीर उच्च स्वर में संगीत शुरू हो जाता है और पुल पर से गाड़ी को उतरते हुए दिखाया जाता है जिस समय यह हो रहा होता है उस समय उक्त इंजीनियर अपनी प्रशंसा व्यक्त करने के लिए आंसू बहाता है और "मजदूर ही मेरे गुरू हैं," यह घोषणा करता है । दूसरी ओर सारे ही प्रगतिशील मजदूर स्वतः ही पार्टी के सदस्य बनने के अधिकारी हुए दिखाये जाते हैं ।

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि इस चित्र में नायक एक चिरकालिक पार्टी कामरेड ही थे । कहानी के शुरू में उसको बीमार दिखाया जाता है । किन्तु जब उसको समाचार मिलता है कि एक नया पुल बनने वाला है तो वह इतना उल्लसित और अभिप्रेरित हो जाता है कि वह अपनी दवा की शीशी और भात के कटोरे को फेंक देता है क्योंकि यही तो उसके रोग के बाहरी प्रतीक थे । वह अपने कमरे से निकल कर दौड़ता है और अपने सहयोगी मजदूरों से जा मिलता है, और १५ दिन तक रात दिन काम करता रहता है और उस समय तक नींद की झपकी तक नहीं लेता जब तक कि पुल बनकर तैयार नहीं हो जाता । इस चिरकालिक कामरेड के प्रोत्साहन, प्रतिभा और शारीरिक बल से दूसरे मजदूरों को इतनी प्रेरणा मिलती है कि पुल बनाने का नया रिकार्ड स्थापित हो जाता है । आगे चल कर कहा गया था कि वह व्यक्ति तो जन-साधारण का नायक था केवल इस चित्र ही का नहीं । चित्रों में नायक और नायिका का काम करने वाले व्यक्ति जीवन संघर्ष से दूर तो पूंजीवादी देशों में ही पाये जाते हैं । यह उस चित्र का निष्कर्ष था । वैसे सारे कामरेड एक ही पात्र के रूप में दिखाये गये थे अर्थात् वफादार जनता के रूप में । शेष भूमिका में स्वातन्त्र्य सेना के अज्ञात कामरेड और मजदूर कामरेड ही थे ।

आप किसी भी इमारत के किसी भी कमरे से, चाहे वह ऊपर हो या नीचे, होकर निकल जाते तो उस समय कोई न कोई आपको पीपिंग आपरा की धुन गुनगुनाता मिल जाता । एक "मछुवे का परिवार" नामक एक आपरा था । उसमें एक जगह निम्न पंक्तियां आती थी, "हम दोनों पुत्री और

प्रकार की नई घोषणा कर देता ।

"कुमारी चाउ हि्व लिन को उनकी नयी वेश-भूषा में देखिए" आदि-आदि । इस कार्य-पद्धति की बहुत आलोचना की गई और इसको प्रतिक्रिया-वादी ठहराया गया । उनमें से एक आपरा संचालक एक अशिक्षित दक्षिण-वासी थे और उनको आपरा नाम की चीज़ से कोई घनिष्ट परिचय न था। किन्तु उसका साथ देने के लिए उसकी "प्रेमी" महिला थी जो उस समय वहां राजनीतिक कमिसार का काम करती थी । उसको व्यापार की बड़ी सूझ-बूझ थी और वह जानती थी कि पैसा केवल ऐसे ही नाटकों को दिखाकर कमाया जा सकता है जिनमें सुन्दरियां काम करती हों । उस आपरा घर के लिए कार्यक्रम निर्धारित करते समय मैं बहुधा इसी महिला की सूझ बूझ और अनुग्रह के सहारे चलता था क्योंकि ऐसा करने से कम से कम एक घर के बारे में तो हमारी चिन्ता कम हो जाती थी । एक दिन मुझको मन्त्री महोदय की ओर से एक स्मरण-पत्र मिला जिसमें कहा गया था कि पीपिंग के उच्चस्तर के लोग वुहान के अपराधों के प्रतिक्रियावादी कार्यक्रम के आलोचक हैं और इस लिए अब उक्त महिला को मनमानी करने का अवसर नहीं दिया जाना चाहिए। इस आज्ञा पर अमल किये जाने के कुछ दिन पश्चात् वह महिला बहुत ताव में मेरे पास आई । मैंने बहुत धैर्य के साथ उसको यह समझाने की कोशिश की कि उसमें मेरा कोई दोष नहीं था । यह सुनकर वह संघ की नयी नीति को कोसने लगी और अपना असंतोष प्रकट करने लगी ।

"क्या आराम कुर्सियों में लेटे रहने वाले पीपिंग के वे लोग यह महसस नहीं करते कि हमको पैसा देने वाले जन साधारण के धनिक अंग ही हैं। जनता प्रचारात्मक आपरा नहीं चाहती । प्रचार के लिए उसके पास पुस्तकों, समाचारपत्रों और फिल्मों की क्या कमी है ? जब एक साधारण व्यक्ति आपरा में आता है तो वहां उसकी एक मात्र इच्छा मनोविनोद ही की होती है। मजेदार बात यह है कि यदि कल इस आपरा घर का दिवाला निकल गया, और इसको बन्द करना पड़ा तो उसकी दोषी मैं ही ठहराई जाऊंगी ।"

आर्थिक दृष्टिकोण से उसने जो बात कहीं उस पर कोई आपत्ति नहीं की जा सकती थी । किन्तु पीपिंग के उच्चस्तर के लोग उससे सहमत नहीं हुए ।

दोनों आपरा घरों की आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो गई कि एक दिन दोनों संचालक और उक्त महिला कमिसार ने आपस में यह निर्णय कर लिया कि, चाहे कुछ भी हो, चाहे नियमों का उलंघन ही क्यों न करना पड़े, रसीले आँपराओं को दिखाते ही रहना चाहिए। तब से विज्ञापन-प्रचारात्मक आप-राओं का होता था और दिखाया वहां कुछ और ही जाता था। दोनों घर इस प्रकार दिवाले से बच सके।

कुछ दिन तक इस प्रकार की छद्म गतिविधि चलती रही। पर इसकी मन्त्रालय को जानकारी नहीं थी, ऐसी बात न थी। एक दिन पीपिंग को भी इसका पता चल गया और उक्त मन्त्री महोदय को एक बड़ा चातुर्यपूर्ण आदेश मिला जिसमें कहा गया था कि "अविवेकपूर्ण ढंग से प्रतिगामी आपराओं को दिखाया जाना अवांच्छनीय है।" इस आदेश से यह ध्वनि आती थी कि वास्तव में क्रांतिकारी व्यवहार विफल रहा है। और इस प्रकार यह भी संकेत उसमें छिपा था कि यदि मन्त्रालय चाहे तो स्वयं ही कोई विवेकपूर्ण नीति निर्धारित कर ले। मन्त्री महोदय ने एक कान्फ्रेंस बुलाई जिसमें इस बात पर विचार किया गया कि कौनसी ऐसी नीति निर्धारित की जाय कि आवश्यकता से अधिक उग्रवादिता और आवश्यकता से अधिक प्रतिक्रियावादिता बचाई जा सके। किन्तु न इधर, न उधर, होने की स्थिति को मन्त्रालय स्वीकार करने को तैयार नहीं था क्योंकि ऐसा करने से उसको यह डर था कि इस पर दृष्टिकोणहीनता का आरोप लग जायगा। उसकी ओर से अनेक बार कान्फ्रेंस बुलाई गई तब कहीं जाकर एक नीति निर्धारित की गई जिसका उद्देश्य यह था कि संघ के सदस्यों को प्रतिक्रियावादी आपरा दिखा दिया जाय और साधारण जनता को उग्रवादी। इस नीति को ग्रहण करके मन्त्रालय ने अपना निश्चित दृष्टिकोण भी प्रदर्शित कर दिया और अपनी नीति को "अवि-वेकपूर्ण" कहलाये जाने से भी बचा लिया।

साधारण जनता के लिए उग्रवादी कार्यक्रम का आयोजन करने के अति-रिक्त कभी कभी मुझको उपमन्त्री की स्वीकृति से दकियानूसी कार्य-क्रम भी तैयार करना पड़ता था—ऐसे अवसरों पर जबकि नाटक देखने वालों में ऐसे स्टाफ अससर होते थे जिनकी कोई विशेष रुचि न हो, उस दशा में विभिन्न प्रवृत्तियों को दृष्टि में रखते हुए ३ या ४ छोटे नाटक रखे जाते थे। आरम्भ

में मैं कार्यक्रम इस प्रकार बनाता था कि अन्त में कोई गम्भीर ऐतिहासिक अथवा गम्भीर दुखान्त नाटक हो क्योंकि उस समय मेरी राय में सायंकाल का अन्तिम खेल ऐसा ही होना चाहिए था। किन्तु जनरल लिन पियाओ ने एक दिन मेरे द्वारा आयोजित किये गये एक कार्यक्रम को देखने के पश्चात् हमारे कार्यक्रम को एक आदेश भेज दिया। उस आदेश में लिखा था :—

"गत रात्रि को थियेटर में जो कार्यक्रम था वह नितांत असन्तोष जनक था। कौन चाहता है कि उसका सायंकाल का मनोविनोद का अंत किसी शुष्क ऐतिहासिक नाटक से हो। इस समय जो स्थिति है उसमें सैनिक कामरेडों को वैसे हा बिछोह का कुछ कम दुख नहीं है। वे तो कोई मन बहलाव के लिए ऐसो चीज़ देखना चाहते हैं जिससे उनका मन बहले अथवा जो प्रणय का मिठास लिये हुए हो। वे बिस्तरों में लेटते समय मुस्कराना चाहते हैं, माथा चढ़ाना या दुखी होना नहीं।"

इसके पश्चात् मैं कभी कभी ऐसा "खुला कार्यक्रम" तैयार करने लगा जिसका उद्देश्य संघ के सदस्यों का मनोविनोद होता। इस लिये मैं आरम्भ में कोई शुष्क ऐतिहासिक नाटक रखा करता था। बाद में कुछ एक दो परिहास-पूर्ण आपरा होते तो अन्त में कोई ऐसी मिठासपूर्ण प्रणय कहानी या संगीत जिसमें सुन्दर अभिनेत्रियां गाती, नाचतीं या एक दूसरे को मंच पर ही गुदगुदा कर हंसाती।

वुहान में उस समय जो दो पीपिंग आपरा चल रहे थे उनमें लगभग ४०० व्यक्ति काम करते थे। उसमें से एक वह मण्डली थी जो किसी समय "ज़्वे शिशु आपरा" के नाम से बहुत प्रसिद्ध हो चुकी थी। जिस समय जापान के विरुद्ध युद्ध चल रहा था। उस समय यह मण्डली सारे दक्षिण पश्चिम चीन में घूमती फिरती थी। उसी समय उसने देशव्यापी ख्याति प्राप्त कर ली थी। किन्तु उस समय जो शिशुओं का अभिनय किया करते थे वे अब शिशु नहीं रह गये थे और उनकी वाणी भी अब बच्चों जैसी नहीं थी। दूसरी मण्डली चिर-प्रख्यात "मध्य चीन मण्डली" थी। उसमें काम करने वालों की आवाज परि-पक्व और मंजी हुई थी और उनका अभिनय ज़्वे मण्डली की अपेक्षा अधिक चातुर्यपूर्ण था।

ये दोनों मण्डलियां किसी समय राष्ट्रवादी सेना को अपने खेल दिखा चुकी थीं। इसलिए जब उन्हें स्वातन्त्र्य सेना ने वुहान के दक्षिण में किसी स्थान पर पकड़ लिया तो उनको अपने पुराने अमिट प्रतिक्रियावादी पाप के कारण वन्दी बना लिया गया। उनको दो महीने तक "पुनः शिक्षा" के लिए वुहान में रखा गया और इसके पश्चात् उनको परीक्षार्थियों के तौर पर पुनः अभिनय करने की अनुमति दी गई। उनमें से एक अभिनेत्री जिसका नाम कुमारी चांग वांग-ह्वा था समस्त मध्य चीन में प्रसिद्ध रह चुकी थी और अनेक बार नाटक-घर के प्रकाशपूर्ण अक्षरों में जनता के सामने आ चुकी थी। अब उस बेचारी को इस लिए आलोचना का शिकार बनना पड़ा कि अब नये स्वामियों का आग्रह था कि जो प्रथम या द्वितीय श्रेणी की ख्याति प्राप्त करने के लिये इच्छुक रह चुका है, वह वास्तव में विचारधारा की दृष्टि से सुलझा हुआ व्यक्ति नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त उनकी ओर से तय किया गया कि जिसको धनार्जन की अपेक्षा रही है वह पुरानी पद्धति का प्रतिक्रियावादी ही है। जिन लोगों को अपनी पुरानी ख्याति के कारण अब यह सब कुछ सहन करना पड़ रहा था मुझसे उनसे सहानुभूति किये बिना न रहा गया। पुराने समय में ये लोग अपने अभिनय के लिए मुंह मांगा मूल्य पा सकते थे। उनमें से कुछ तो ऐसे भी थे जिनको ४० या ५० औंस तक सोना प्रति मास प्राप्त हो जाया करता था। किस कार्यक्रम में भाग लेना है, और किस समय तथा किसके साथ अभिनय करना पड़ेगा, इन सब बातों के विषय में उनकी राय मानी जाती थी, अब उनको सामान्य अभिनेताओं और "एक्स्ट्राओं" की तरह काम करना पड़ता था। तिस पर भी न तो उनकी कोई तनख्वाह थी और न ही खाने के लिये उपयुक्त भोजन। दिन में दो बार रूखा सूखा चावल मिल जाय तो उनका सौभाग्य था।

जिन आपरा-मण्डलियों का इस समय पुनरुद्धार किया जा रहा था उनसे मुझको बहुत दिलचस्पी थी। मैं बहुधा उनसे बातचीत करने के लिए मंच के पीछे चला जाया करता था। किन्तु वे जानते थे कि मैं ऊपर के स्तर के एक कार्यालय का प्रतिनिधि हूं। इसलिए वे मुझसे बातें करते समय बहुत सतर्क रहते थे और बहुत कुछ सोचने समझने के पश्चात् ही अपनी जबान खोलते थे। केवल एक बूढ़ी स्त्री ही उनमें ऐसी थी जो संघ के विरुद्ध अपना कटुतापूर्ण वक्तव्य देने का साहस ही न दिखाती थी बल्कि जो अपनी वर्तमान परिस्थि-

तियो के लिए शासको को कोसने से भी न चूकती थी। वह एक समय कुमारी चॉग वाग-ह्वा की सेविका रह चुकी थी और अपनी स्वामिनी की वर्तमान अधोगति के लिये सघ ही को उत्तरदायी समझती थी। वह अपनी स्वामिनी को "कामरेड" शब्द से सम्बोधित करने को तैयार न थी। उसकी दृष्टि मे वह अब भी "प्यारी नायिका" ही थी। एक बार बडी क्रुद्ध होकर उसने शिकायत करनी शुरू की, "ये गवार, जिनको चिरकालिक कामरेड कहा जाता है, तो सफेद चावल, डबलरोटी, मास और शाकादि खाते है, जबकि हमको मोटे चावलो से ही सतोष करना पडता है"। मै उसकी यह बात सुन कर हस पड़ा और कहने लगा, "तुम जानती हो कि तुम्हारी स्थिति इससे भी खराब हो सकती थी। तनिक कल्पना तो करो कि यदि तुमको और तुम्हारी स्वामिनी को किसी कैम्प मे काम करना पड़ता तो क्या होता ? तुम तो अब भी अपना पुराना व्यवसाय चला सकती हो। हम मे से बहुत लोगों को ऐसी सुविधा प्राप्त नही है"।

उस समय कुमारी चाग फर्श पर बैठी हुई एक प्याले से भात खा रहीथी। उसने पहिले उसकी ओर देखा और फिर मेरी ओर मु ह फेरा और बहुत क्रुद्ध वाणी मे बोली, "यह भी खूब कहा तुम भी निरे बुद्धु हो सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के बारे मे तुम क्या जानो। तुम और तुम्हारी निर्मम क्रान्ति की एक मात्र सिद्धि यही है कि तुमने उन सब बातो को जिनसे जीवन सर्थक बनता है नष्ट कर दिया है। स्वातन्त्र्य के पहले तुम कुछ भी क्यो न रहे हो तुम्हारा आसन इतना ऊचा न था जितना हमारी नायिका का। इस लिए तुम्हारे पतन की तुलना नही की जा सकती। तुम तो यह जानते तक भी नही कि कष्ट किसको कहते है। तुमको शायद अपना सिर छिपाने के लिए किसी आश्रय की आवश्यकता थी जो तुमने क्रान्ति मे पा लिया। किन्तु तुम मुझसे पूछते हो कि मै क्या बोलती हूं ? मै अगर तुमसे यह कहती कि अब तो सूर्य ही का अन्त हो गया तो क्या तुम्हारी मोटी बुद्धि मेरी बात को समझ पाती ?"।

सोलहवां परिच्छेद

लिन पियाओ और सैनिक

मैने जनरल लिन पियाओ को पहिली बार पीपिंग मे देखा था। यह उस समय की बात है जब वह दक्षिण की ओर जाने वाली कार्य टोली के कैम्प में आये थे और हमको बता गये थे कि हम सेना के स्वयसेवक हैं। हम अपनी उन अरुचिकर भावनाओ को याद करने लगे जो उस समय हमारे मन मे इस जनरल की आकर्षक एव प्रभावशैली शब्दशैली और वाणी के बीच छिपी हिंसात्मक शक्ति को पहचान कर उत्पन्न हुई थी। उस समय १० लाख से अधिक सैनिक उस जनरल के नियन्त्रण मे थे। लिन पियाओ का चेहरा पीला, भौंए भारी, कधे चौड़े और शरीर सामान्य था। उसको देखकर ऐसा लगता था मानो वे कोई साधारण व्यक्ति ही है। तिस पर भी उनकी आकृति से कुछ ऐसी शक्ति और भयकारिता भी टपकती थी जिसकी परिभाषा नही की जा सकती।

जनरल लिन पियाओ बहुत उत्साही नाटक प्रेमी थे। जिस बारहवी सेना ने पीपिंग आपरा की उक्त मण्डलियो को वुहान के दक्षिण मे पकडा था उससे इन्होने उनको ले लिया, बारहवी सेना ने उस समय उक्त "पुरस्कार" के हस्तगत करने के पश्चात् अपने हैडक्वार्टर को जो सूचना दी थी उसमे एक मण्डली को लिन पियाओ को देने और एक स्वय रखने की इच्छा प्रकट की थी। किन्तु लिन पियाओ तो दोनो ही लड्डू अपने हाथ मे रखना चाहते थे। फिर उनमे इतनी शक्ति भी थी कि जो चाहते पा सकते थे। इसलिए उन्होने बारहवी सेना के हैडक्वार्टर को आज्ञा दे दी कि उक्त दोनो मण्डलियो को वापस भेज दिया जाय। बात तो यह अन्यायपूर्ण थी किन्तु किसमे साहस था कि लिन की इच्छा का अनादर करता अथवा बड़बडाता ही।

मुझको उस समय जो सुविधाये प्राप्त थी उसके सहारे मै जब चाहता

किसी भी थियेटर में जा सकता था। इसलिए जब कभी जनरल लिन पियाओ कोई आपरा देखना चाहते थे तो मैं वहां मौजूद हो जाया करता था। अनिवार्यतः उनकी सैनिक कार नाटक घर के द्वार के सामने आकर रुका करती और वे नाटक घर में जिस समय प्रवेश करते उस समय उनके दायें बायें उनके अंग-रक्षक चला करते थे; उनके हाथों में भरी हुई पिस्तौलें होती थी। उनके आने से पहले ही नाटक घर के प्रत्येक द्वार पर सैनिकों का पहरा लगा दिया जाया करता था। आठ सीटों वाली एक सारी की सारी पंक्ति उनके लिए सुरक्षित कर दी जाया करती थी और चार कोनो वाली सीटें और तीन आगे वाली पंक्तियां और तीन पीछे वाली पंक्तियों पर उनके अंग रक्षक आसीन हो जाया करते थे। ये अंग रक्षक प्रत्येक समय सचेत हुए, हाथों में पिस्तौलें ताने दर्शकों को ताकते रहते थे। जिस दिन लिन पियाओ नाटक घर में आते थे उस दिन रेजीमेन्ट-स्तर के ऊपर के कामरेड भी वहां न आ सकते थे। उस दिन के लिए यदि संघ के बाहर के लोगों ने अथवा उन कामरेडों ने जो रेजीमेन्ट-स्तर से नीचे के थे, टिकट खरीद लिए होते थे तो उनके टिकटों को रद्द कर दिया जाया करता था अथवा उनके स्थान में किसी और दिन के टिकट उनको मिल जाया करते थे।

जनरल लिन पियाओ साधारणतः अपनी "प्रेमी" के साथ नाटक घर में आया करते थे। यह महिला क्रांति में चिरकाल तक सेवा करने का पुण्य प्राप्त किये हुये थी। देखने में उसकी आयु लिन पियाओ से अधिक थी। दोनों ही अपने व्यवहार और हाव-भाव में बहुत गम्भीर प्राणी थे। मैंने जितनी बार भी उनको देखा दोनों के चेहरों पर एक बार भी कभी हल्की सी मुस्कराहट भी नहीं दिखाई दी। तिस पर भी लिन पियाओ को जो आपरा पसन्द थी वह दिल को गुदगुदाने वाली अथवा परिहासपूर्ण ही थी। जब कभी गाने वाली स्वच्छन्दता का प्रमाण देती, भड़कीले वस्त्र पहनती और अभिनेत्री सुन्दर होती तो वे बहुत ही प्रसन्न हुआ करते। एक बार उन्होंने "वु-हवां-तुंग" नामक नाटक देखने की इच्छा प्रकट की तो साथ ही यह भी आदेश कर दिया कि मण्डली की चार सुन्दरतम एवं ख्यातिलब्ध अभिनेत्रियां उसमें काम करें। वे किस प्रकार के कपड़े पहनें यहां तक भी लिन पियाओ की ओर से बता दिया गया।

लाल चीन के नये नाटक में लिन पियाओ ही सबसे बड़े व्यक्तिगत नायक थे यद्यपि किसी भी व्यक्तिगत ख्याति को प्राप्त करना लोकतन्त्रीय नायक की कम्युनिस्ट धारणा के विरुद्ध है। अपने सैनिकों का प्रेम और श्रद्धा प्राप्त करने के लिए लिन ने बहुत कुछ कार्य किया था। कोई डिवीजन स्तर का राजनैतिक कमिसार हो या सैनिक, साधारण रसोइया हो या घोड़ों का सईस, सभी लोग उनकी प्रशंसा में लिखे गीत गाते रहते थे। एक गीत जो उस समय बहुत लोकप्रिय हो रहा था, इस प्रकार शुरू होता था :

'बढ़ो बढ़ो आगे बढ़ो,
तुम लिन पियाओ के सेनानी।'

सैनिकों को उनसे किस प्रकार की अभिप्रेरणा मिलती थी इस विषय में अनेक किंबदंतियां प्रचिलित थीं। यदि कभी संगीनों से लड़ाई होने की बात होती तो छोटे स्तर के सैनिक अधिकारी अपने सैनिकों को यह कहकर प्रोत्साहित किया करते थे—"लिन पियाओ की शान न जाने पाये"। लिन पियाओ का विश्वास उनकी सर्वश्रेष्ठ निधि है यह धारणा बनाकर साधारण सैनिक युद्ध में कूद पड़ा करते थे। शेष चीन में और कोई भी नीति रही हो किन्तु पियाओ की सेना में तो नायक-पूजा ही का प्रचलन था।

लिन पियाओ एक कुशल सेनानी होने के साथ साथ बहुत प्रतिभाशाली प्रवक्ता भी थे। एक बार उन्होंने उत्तर-पूर्व चीन में कुछ ही दिन पहले भरती की गई दो सेनाओं के सामने भाषण दिया। इस भाषण में उन्होंने उनको यह आश्वासन दिया कि जैसे ही वे दक्षिण चीन के निकट पहुंचेंगे उनको अपने अपने घर वापस जाने की सुविधा प्राप्त होगी। वे सैनिक अपने नेता के शब्दों से इतने प्रेरित हुए कि बाद में जी-जान से युद्ध में कूद पड़े। किन्तु जब वे सैनिक वुहान पहुंचे तो उनको पता लगा कि उनका स्थान लेने के लिए दक्षिण से कोई सेना नहीं आने वाली है और न ही उनको घर जाने की अनुमति है। इसके प्रतिकूल उनको आज्ञा हुई कि वे वुहान में या वुहान के आसपास पड़ाव डाले रहें, और यदि कभी उत्तर की ओर उनको जाना पड़ा तो उसका उद्देश्य केवल मध्य-पूर्व में छापामारों द्वारा किये जाने वाले उत्पातों का दमन करना ही होगा। अब उक्त सैनिकों का धैर्य और साहस निम्नतम

स्तर पर पहुंच गए और जैसे कि सैनिकों की प्राय: आदत ही हुआ करती है, बुरी तरह कुढ़ने बकने लगे। मैंने लिन पियाओ को ऐसी सभाओं में जहां सहस्रों सैनिक उपस्थित होते थे और जिनका उद्देश्य साहस और धैर्य बढ़ाना था भाषण करते हुए देखा था। भाषण करते समय वह आंसू तक ले आते थे और अपने सैनिकों की भावना को इतना प्रज्ज्वलित कर देते थे कि कुछ समय पहले ही तक जो सैनिक आलोचना और निन्दा करते होते थे वे ही ज़ोर ज़ोर से अपने इस प्रिय नेता की प्रशंसा में नारे लगाने लगते थे। वह युद्ध कला के साथ साथ वक्तृता कला को भी जानते थे। इसलिए सदा ही उनका यह प्रयत्न था कि कुछ भी हो उनकी वक्तृता का प्रभाव कम नहीं होना चाहिए। उनके अपने साधे हुए शिष्य और आन्दोलनकारी सभा में जहां तहां बैठे होते थे और अवसर पाते ही "लिन पियाओ जिन्दाबाद", "हम लिन का अनुकरण करेंगे" आदि गगनभेदी नारे लगाने लगते थे। यहां तक कि सब ही श्रोता इस जयनाद में सम्मिलित हो जाया करते थे। यदि उनके भाषण के समय कोई बीच में बोल पड़ता था या कोई प्रश्न कर लेता था, या जिस समय उनकी प्रशंसा में जो जोर से करतल ध्वनि हो रही हो या नारे लग रहे हों कोई विघ्न डालता तो वह अप्रसन्न नहीं होते थे। वह चट्टान की भांति अपनी जगह पर खड़े रहते थे और उस अवसर की प्रतीक्षा मे रहते थे जबकि वे पुन: अपने भाषण को आरम्भ कर सकें। ऐसे अवसरों पर कभी कभी उनके कठोर चेहरे पर हल्की सी मुस्कान भी देखने को मिलती थी।

मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि पीपिंग में बैठे हुए जो लोग शासन सूत्र संभाले हुय थे वे लिन पियाओ की बढ़ती हुई लोक प्रियता को बड़ी सतर्क आंखों से देख रहे थे। पर साथ ही वे यह भी जानते थे कि उस समय लिन पियाओ के बिना उनका काम नहीं चल सकता। जब जनरल लिन जनरल चेन-च्यान की चगह नियुक्त हुए तो माओ त्सी-तुंग ने अपने एक भाषण में कहा था, "यद्यपि लिन पियाओ क्रान्ति में अपने कनिष्ट भ्राता की तरह हैं, उनमें इतनी क्षमता है कि वे लाखों सैनिकों को नियन्त्रण में रख सकते हैं। इसलिए यद्यपि चेन-च्यांग पुराने अनुभवी कामरेड हैं उनको लिन पियाओ के सहकारी की हैसियत से ही काम करना होगा"। जब कभी लिन पियाओ केन्द्रीय सरकार को अपनी शिकायत या सुझाव लिख भेजते थे तो अवश्य ही उनको ठीक करने पर ध्यान दिया जाता और उनके सुझावों को मान लिया

जाता था। इस कारण जनरल लिन उत्तोरोत्तर अहंकारी और आत्म-विश्वासी होते गए और केन्द्रीय सरकार को स्वयं आदेश देने लगे। उस समय फैली हुई अफवाहों पर यदि विश्वास किया जाता तो केन्द्रीय सरकार वास्तव में उनके आदेशों को भी स्वीकार करने लगी थी। मेरे लाल चीन से चले आने के पश्चात् लिन पियाओ कहां पहुंचे मुझको पता नहीं।

× × ×

डिवीज़न-स्तर के चिरकालिक कामरेड अथवा इस स्तर के सैनिक और उपमन्त्री जैसे व्यक्ति और लनरल लिन पियाओ ही से उन दिनों मेरा सम्पर्क रहा हो ऐसी बात न थी। वुहान में मैं और भी बहुत लोगों के सम्पर्क में आया। मेरे मन में सदा यह इच्छा रहती थी कि मैं साधारण सैनिकों से बात करूं, इसलिए नहीं कि मैं उनसे क्रांति के विषय में कोई स्वाध्याय करना चाहता था बल्कि केवल यह जानने के लिए कि संघ की ओर से उन पर आये दिन जो परस्पर विरोधात्मक दबाव पड़रहे हैं उनका उन पर क्या प्रभाव होता है। फिर क्रांति में वेही तो सच्चे, स्वाभाविक, व्यक्ति थे। आये दिन सुनी जाने वाली सतर्क बातों और सरकारी दफ्तरों में होने वाली टालमटोलों से मन ऊब न जाय इसलिए भी यह आवश्यक था कि उन्हीं लोगों से सम्पर्क रखा जाय। साधारण सैनिक अपने मन की सच्ची बात बताने में सशंकित या सतर्क नहीं होते थे। यदि उनको कोई बात अच्छी नहीं लगती थी तो वे अपनी नापसंदी को जोरदार शब्दों में व्यक्त कर दिया करते थे। जब ये लोग संघ के विषय में कोई शिकायत करते अथवा ऐसी बात कहते जिसको संघ की ओर से कहने की अनुमति नहीं थी तो अधिकारियों की ओर से उनकी बात को "भद्दी बात" कहकर उड़ा दिया जाया करता था। यदि आलोचना करने के पश्चात् भी उनमें कोई सुधार न होता था तो "भद्दी बात" करने वाले को पुनः शिक्षा और पुनः सुधार के रूप में दण्ड भोगना पड़ता था। किन्तु सैनिक जब अपने मन की "भद्दी बात" कहना चाहते थे तो उसको कह ही लिया करते थे, चाहे उसका परिणाम उनके लिए कुछ भी क्यों न हो। आगे चलकर "भद्दी बात" कहने वालों की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई संख्या देखकर संघ को भी परेशानी रहने लगी थी। इसीलिए मजबूर होकर साधारण सैनिकों के लिए वक्तृता सम्बन्धी कुछ स्वाधीनता प्रदान कर दी गई थी। एक कारण इस प्रकार की स्वतन्त्रता का यह भी था कि साधारण सैनिक को प्रचार और

प्रोपेगेन्डा से आसानी से भ्रम में डाला जा सकता था। प्रतिज्ञाओं से सैनिकों को प्रशान्त करना आवश्यक भी था, विशेषतः ऐसे समय जबकि सैनिकों का असंतोष अपनी चरम सीमा तक पहुंच गया हो और उसके एक भयंकर विस्फोट का रूप धारण करने का डर हो।

वुहान में जितने सैनिकों को मैं स्वयं जानता था उनमें से अधिकांश उत्तर और उत्तर-पूर्व चीन के अशिक्षित किसान ही थे। दक्षिण की ओर कूच करने से पहले दक्षिण के विषय में उनकी बड़ी विचित्र धारणायें थीं। उदाहरणार्थ उनका यह विश्वास था कि दक्षिण में इतनी गर्मी पड़ती है कि उत्तर का कोई व्यक्ति यदि वहां चला जाय तो उसकी खाल जलकर उसके शरीर से छूट जाती है; अथवा वहां सूरज इतनी आग बरसाता है कि यदि लोग चाहें तो राह में ही जमीन पर डाल कर अपनी रोटियां सेक सकते हैं। उनमें से कुछ का यह विश्वास था कि दक्षिण चीन में जो नमी मिलती है उससे उत्तर से आने वाले लोगों के पांव की उंगलियां फट जाया करती हैं। दक्षिण में पैदा होने वाले मच्छरों के विषय में उनकी धारणा थी कि वे बाज के बराबर बड़े होते हैं और यदि किसी को काट लें तो उसके शरीर पर ऐसा बड़ा फोड़ा पड़ जाता है जिसकी सूजन कई दिन तक नहीं जा पाती; दक्षिण के चूहों को बिल्लियों के बराबर बड़ा बताया जाता था और कहा जाता था कि यदि उत्तर का कोई आदमी उनके चंगुल में फंस जाय तो वे उसकी उंगलियां तक काट ले जाते हैं।

ऐसी अवस्था में यह कोई आश्चर्य की बात न थी कि उत्तर के ये भोले सैनिक क्रांति सम्पादित करने के लिये दक्षिण की ओर कूच करते हुए डरते थे। किन्तु जैसा कि सदा ही होता आया था इस विषय में भी प्रभावशाली प्रचार और प्रोपेगेन्डे द्वारा संघ ही बाज़ी मार ले गया और उत्तर के वे सभी सैनिक "स्वेच्छा" से दक्षिण की ओर चलने के लिए रजामंद हो गये। जब ये लोग वुहान पहुंचे तो उनको उसका वातावरण देखकर बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ। किन्तु उन का यह सुखद अनुभव देर तक टिका न रह सका कुछ समय पश्चात् ही वे पुनः अपने घर की याद करके व्यथित रहने लग और उस घड़ी की प्रतीक्षा जोहने लगे जब वे पुनः अपने घर में आराम कर सकें।

सेना का साहस और धैर्य टूट रहा था इसलिए शासकों को स्थिति में सुधार करने की आवश्यकता माननी पड़ी। इसका परिणाम यह हुआ कि अब सेना में एक "सुदृढ़ आत्म-रक्षा सेना" शीर्षक से वार्ता और भाषण होने लगे। मंत्रालय की ओर से स्वाध्याय के नाम पर स्वाध्याय-विशेषज्ञों को सेना की विभिन्न टुकड़ियों में काम करने के लिए भेजा गया। उस समय मेरा यह विशेष कर्तव्य था कि मैं उपमंत्री की ओर से ऐसी सभाओं में जाऊं और उन की सफलता अथवा विफलता से उनको अवगत रखूं। एक बार की बात मुझको याद है। एक स्वाध्याय विशेषज्ञ ने बड़े विशद रूप से सेना को यह बताना चाहा कि संसार में इस समय दो ही दल हैं। स्वातन्त्र्य सेना उस दल के साथ है जो सम्पत्ति-विहीन हैं, जो क्रांतिकारी हैं, जो प्रगतिशील हैं आदि-आदि। किन्तु साधारण सैनिकों के सामने तो अपना व्यक्तिगत प्रश्न यह था कि वे कब घर वापस जायेंगे। एक दूसरे स्वाध्याय-विशेषज्ञ ने साम्राज्यवादी प्रतिक्रियावादी विषय के पुराने राग की फिर ढपली बजाई और सैनिकों को बताया कि जब तक एक भी प्रतिक्रियावादी और साम्राज्यवादी बचा रहेगा तब तक युद्ध समाप्त नहीं हो सकता और नये समाज का जन्म नहीं हो सकता "इसलिए उस दिन की तैयारी करने के लिए जब कोई भी साम्राज्यवादी और प्रतिक्रियावादी बचा न रहेगा, हमारे पास एक सुदृढ़ आत्म-रक्षा सेना होनी चाहिए।"

यह सुनकर सैनिक और भी क्रुद्ध हो गये। उस समय जहां देखिये वहां "भद्दी बात" ही सुनने को मिलती थी और कोई भी तरकीब ऐसी दिखाई न देती थी जिससे सेना के अन्तर्गत फैले असन्तोष को दूर किया जा सके। एक दिन एक रेडियो कार्यकर्ता ने बड़े आवेश में कह डाला था, "आत्म रक्षा के लिए सेना! जहन्नुम में जाय वह। किस की रक्षा कर रहे हैं हम और किस से? युद्ध-युद्ध-युद्ध और युद्ध, मानो कि हम जैसे इस अनंत युद्ध के लिए ही बने हैं सम्भवतः तर्क ही से इसका अन्त होगा। हमारा अपना छोटा सा जो भविष्य है उसकी किसी को भी चिन्ता नहीं। जिसको देखिए वह संघ की ही बात करता नजर आता है; संघ के भविष्य की; जनता के भविष्य की!"

आन्दोलनकारियों और तथाकथित प्रगतिवादियों की पार्टी की नई नीति

को उत्साह पूर्वक अपना लेने में तनिक भी देर नहीं लगी। उनमें से कुछ कहते थे कि अब उनको हिमालय में रहना पड़ेगा, तो दूसरे कहते थे कि वे दक्षिण-पूर्व में समुद्र तट पर रहा करेंगे जो हिमालय वास की अपेक्षा कहीं अधिक रुचिकर होगा। उनमें से बहुत से तो इस आशा में कि गरमियों में सम्भवतः उनको पहाड़ पर रहना पड़ेगा, पर्वतारोहण सीखने लगे। कुछ ऐसे व्यक्ति भी थे जिन्होंने "आत्म-रक्षा सेना" के सैनिक होने की आशा में तैरना सीख लिया। किन्तु जहां तक साधारण सैनिकों का सम्बन्ध था इस नये आन्दोलन का उन पर कोई भी प्रभाव न हुआ। वे तो अब भी अपने घर के ही विषय में सोचते रहे।

सैनिकों का ध्यान बटाने और बातावरण साफ करने के लिए एक और कोशिश की गई जिसके लिये "पुण्यार्जन सभायें" बुलाई गईं। ऐसी सभाओं को बुलाने का आशय यह पता लगाना था कि दक्षिण की ओर कूच करने वाली सेना में किस सैनिक ने क्रांति के लिए कार्य करके कितना पुण्य कमाया है। मन्त्रालय का यह विचार था कि इस प्रकार ऐसे बहुत से सैनिक मिल जायेंगे जो अपने भविष्य सुधारने के लिए अपने पुण्य के विषय में चिन्तन करने लगेंगे और अपने घर जाने की इच्छा को भूल जायेंगे। ऐसा हुआ या नहीं यह तो पता नहीं किन्तु इस प्रकार का तर्क-वितर्क अवश्य हुआ। शीघ्र ही साधारण सैनिकों में भी अब वर्गीकरण किया जाने लगा। किन्हीं को पार्टी का सदस्य समझा गया, तो किन्ही को आन्दोलनकारी, किन्हीं को प्रगतिवादी तो किन्हीं को पिछड़ा हुआ। पर पिछड़े हुओं का बहुमत था। क्योंकि साधारणतः वे उत्तर-पूर्व चीन से आये ऐसे सैनिक ही थे जो अपनी सहज बुद्धि के लिए प्रसिद्ध थे। इसलिए उनकी समझ में यह नहीं आया कि दक्षिण जाने के काम में किसी को क्यों अधिक प्रगतिवादी अथवा पुण्याधिकारी समझा जाय जब कि सभी दक्षिण की ओर जा रहे थे; सभी ने एक ही प्रकार कार्य किया था और समान ही रूप से लड़ाई में लड़ते, मरते मारते आये थे। उन किसान सैनिकों की केवल एक ही बात में दिलचस्पी थी और वह यह थी कि किसको कितना फल मिला, अर्थात् किसका कितना पुण्य माना गया। उनकी राय में यदि पुण्य निर्धारित ही किया जाने वाला था तो निश्चय ही उन्हीं लोगों को सबसे बड़े पदक मिलने चाहिएं थे जो क्रांति के लिए सबसे अधिक कष्टकर और लाभप्रद काम करते आये थे। यदि कोई व्यक्ति विशेष पार्टी का सदस्य रहा

था या प्रगतिशील समझा जाता था उनकी राय में पर्याप्त यह कारण न था कि उसको विशेष पुण्याधिकारी माना जाय। इसीलिए वे "पिछड़े हुए" सैनिक तर्क-वितर्क करते, सौदा करते, और बिना इस बात को सोचे कि उनकी भाषा संयत है या नहीं अपनी बात को सामने रख देते थे। किन्तु अन्त में परिणाम देखकर सिद्ध हो गया कि "भद्दी बात" से काम नहीं चल सकता। क्योंकि जब ये पुण्य-सभायें हुई तो पता लगा कि दक्षिण को कूच करने का पुण्यार्थी केवल उन्हीं लोगों को समझा गया और वे ही लोग अपनी यूनिफार्मो पर ऐसे पदक लगा सके जिनसे उनकी विशिष्टता प्रकट हो जो पार्टी के सदस्य थे।

किन्तु इन पुण्य सभाओं के बावजूद साधारण सैनिक अपने अपने घर की याद करते ही रहे। वास्तव में इन सभाओं की कार्यवाही देखकर उनके मन में घर लौटने की इच्छा और भी तीव्र हो गई, एक सभा में एक "प्रगतिशील" सैनिक अपने प्रगतिशीलता का परिचय देकर आत्म-श्लाघा कर रहा था और ऐसे ढंग से जिसको दख कर मन बड़ा खट्टा होता था। अन्त में एक "पिछड़ा हुआ" सैनिक उसकी इस करतूत को सहन न कर सका और कूद कर खड़ा हो गया। और चिल्लाने लगा, "क्या तुमको अपने घर की कभी याद नहीं आती। मैं जानता हूं अवश्य आती है किन्तु तुम उसका जिक्र नहीं करते क्योंकि तुमको यह डर है कि ऐसा करने से तुम पिछड़े हुए समझे जाओगे। तुम्हारे डर का कारण तुम्हारी प्रगतिशीलता है। मैं घर की याद करता रहता हूं और मैं खुल कर उसका जिक्र भी करता हूं, तो क्या होता है? मुझको "भद्दी बात" कहने वाला व्यक्ति कह कर मेरी आलोचना की जाती है। किन्तु यदि मैं अपने मन की बात स्पष्ट रूप से न कहूं तो मैं सूअर की औलाद हूं। तुम दिन भर अपना मुंह बंद किए बैठे रहते हो अपनी जीभ को दांतों में दबाए बैठे रहते हो, केवल इस डर से कि कहीं संघ तुम्हारे ऊपर न आ टूटे और तुमको कोई कष्ट न सहन करना पड़ जाय। तुम कहते भी क्या हो? यही न कि 'हां हां मेरे ऊपर जो कुछ हो रहा है वह जनता की ओर से हो रहा है इसलिए यह ठीक है और इसलिए मैं कोई शिकायत नहीं करता, मैं तो प्रगतिवादी हूं।' भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारी प्रगतिशीलता। मेरी दृष्टि में तो यह श्वान स्वांग ही है।"

उक्त सैनिक की इस घटना के पश्चात "भद्दी बात" कहने के लिए आलो-

चना की गई। मैंने—मैं उस सभा में मौजूद था—अध्यक्ष से अनुमति चाही कि सभा समाप्त होने के पश्चात् मुझको उससे बातचीत करने का अवसर दिया जाय। मन्त्रालय के उच्च स्तर से जिस कामरेड का सम्बन्ध होता था, उसकी बात बहुत सम्मान के साथ सुनी जाती थी। इसलिए उसके अनुरोध को भी स्वीकार कर लिया जाता था। जब मैं उस उत्तरवासी कुस्वभाव कामरेड से मिला तो कमरे में मैं अकेला ही था। मानो कि वह मेरे ऊपर कोई व्यंग कर रहा हो, मुझको देखते ही उसने कहना शुरू किया, "अच्छा अब शायद आप मेरा नाम खराब लोगों की सूची में लिखाना चाहते हैं। क्योंकि मैं "भद्दी बात" कहने का अपराधी हूं।"

मैं उसकी बात सुनकर हंस पड़ा और मैंने कहा, "कदापि नहीं। व्यक्तिगत रूप से मुझको स्पष्टवादी लोग अच्छे लगते हैं। सरकार की ओर से मुझको आदेश है कि मैं इन सभाओं में जाऊं और पता लगाऊं कि वास्तव में क्या खराबी है। क्योंकि खराबी होने के पश्चात् ही मैं स्थिति सुधारने का यत्न करता हूं ताकि आप सैनिक लोगों की दशा सुधर जाय। मैंने जो कुछ कहा सरासर झूठ था। पर चूंकि मैं कोई व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करने के लिए इच्छुक नहीं था, मैं उसका विश्वास प्राप्त करना चाहता था। मेरी बात सुनकर वह बड़ी उत्कण्ठा से बोला।

"शायद आप ही हमको जल्दी घर भिजवा देंगे।"

"शायद ऐसा तो मैं नहीं कर सकता, पर क्या कारण है कि तुम संगठन के व्यवहार से इतने असन्तुष्ट हो;"

"इसका कारण यह है कि हम सब ही अपने घर जाना चाहते हैं। जब हम लोग उत्तर चीन में थे तो हमसे यह प्रतिज्ञा की गई थी कि जैसे ही हम लोग स्वतन्त्रता को यांग्त्सी नदी तक फैला देंगे हमको अपने अपने खेतों और घरों को वापस जाने की सुविधा मिल जायगी।"

"यह ठीक है, किन्तु मैं तो इसके अतिरिक्त और क्या बात है यह जानना चाहता हूं। तुम लोग इतने क्रुद्ध क्यों हो;" मैंने उससे पूछा। उसकी मुख्य

शिकायत को मैंने टाल दिया क्योंकि वह तो समस्त सेना की सार्वभौम शिकायत थी।

इसके पश्चात् उसने मुझको बताया कि किस प्रकार संघ सैनिकों पर जासूसी और उनसे प्रचार का आयोजन करता रहता है। "जब संघ उत्तर में था तो उसने सैनिकों में कुछ ऐसे लोग यहां वहां ठूंस रखे थे जो उसको उन उत्तरवासियों के बारे में सूचना देते थे जो अपने घर वापिस अथवा क्रांति से दूर भाग जाना चाहते थे। इसके अतिरिक्त उन दक्षिणवासियों से प्रचार और आंदोलन द्वारा सैनिकों के धैर्य और साहस बढ़वाने का काम लिया जाता था। अब जब दक्षिण इतना निकट आ गया तो संघ ने उत्तर के कुछ लोगों को अपना जासूस और आंदोलनकारी बता कर उस काम में लगा दिया, ताकि दक्षिणवासियों को भागने से रोका जा सके। मैं अपने सहयोगियों के विरुद्ध जासूसी करने को घृणास्पद कार्य समझता हूं फिर भी मुझको ऐसा करना पड़ता है। कितना नाटकीय जीवन है यह। मेरा बस चले तो मैं उनमें से एक एक की अन्त्येष्टि करा दूं। मैं दूसरों की खबर रखता हूं किन्तु मुझको किसी के विषय में रिपोर्ट देने की आवश्यकता नहीं है। इन नारकीय कीड़ों को तो देखो इन्होंने अपने घर से निकल कर भाग जाने का यत्न करने वालों को मृत्यु दण्ड का विधान कर रखा है।"

मैंने उससे कहा कि शायद उसको भूल हुई है। "भूल" मानो कि इस शब्द को सुनकर उसके तन में आग लग गई। वह बिखर पड़ा, "अभी एक सप्ताह पहले की बात है मेरी ही कम्पनी नायक ने एक ऐसे सैनिक को देख लिया जो छिप कर अपने घर भाग जाना चाहता था। उसने उस बेचारे को वहीं गोली से समाप्त कर दिया। उस बेचारे को तनिक सा भी अवसर न मिल पाया।"

अगले दिन प्रातःकाल जब मैं मन्त्रालय गया तो मैंने उस व्यक्ति के गोली मारे जाने के विषय में रिपोर्ट कर दी और सम्बन्धित कम्पनी के नायक काम-रेड और सैनिक का नाम भी लिखा दिया। इस घटना का मन्त्रालय की फाइलों में कोई उल्लेख नहीं था इसलिए किसी ने मेरी बात पर विश्वास भी नहीं किया। उप-मन्त्री ने मुझ से कहा कि साधारण सैनिक बहुधा ऐसी झूठी कहानियां फैला दिया करते हैं जिनका कल्पना के अतिरिक्त और कोई

आधार नहीं हुआ करता। किन्तु एक दिन ऐसा आया जबकि उक्त हत्या-काण्ड का ज्ञान मन्त्रालय को भी हो ही गया। जिस खरीते में उसका उल्लेख था उसके आखिर में लिखा था, "यह एक दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्तिगत घटना है। ऐसा फिर कभी नहीं होगा।"

सत्रहवां परिच्छेद

जनतन्त्रीय चीन में प्रेस और धर्म

चीन के नये शासकों के राज में प्रेस की स्वाधीनता सम्पूर्ण सरकारी नियन्त्रण ही का दूसरा भ्रमात्मक नाम है। किन्तु आरम्भ के दिनों में एक दो उदाहरण ऐसे भी थे जबकि कुछ समय के लिये एक समाचार पत्र सरकार की आलोचना करता रह सकता था। बाद में इस समाचारपत्र को भी एक "विश्वनीय" सम्पादक के हाथ में दे दिया गया और इस प्रकार उसकी आवाज भी सदा के लिए बन्द हो गई। उत्तर-पूर्व चीन में हुई "ज्याओ चुन घटना" इस पर पूरा प्रकाश डालती है। उस घटना और तथाकथित "भूमि-सुधार" को लेकर उत्तर-पूर्व की जनता अपने मन में बहुत देर तक खटास और कटुता को पोसती रही थी।

जिन दिनों जापान के विरुद्ध युद्ध चल रहा था ज्याओ चुन अगस्त ग्राम नामक बीर गाथा के नायक के नाते प्रसिद्ध हो गये थे। अनेक व्यक्तियों ने उसका आह्वान किया और वह स्वयं अपनी ही देशभक्तिपूर्ण भावनाओं से अभिप्रेरित होकर जापान के विरुद्ध युद्ध करने के लिए येनान चला गया। वहां जाकर वह संघ का एक स्टाफ अफसर बन गया। येनान स्थित लु जुन कला विद्यापीठ में कुछ दिन तक शिक्षा और मार्क्स लेनिन इन्स्टीच्यूट में दीक्षा के उपरांत वह उत्तर-पूर्व चीन की स्वतन्त्रता की विभिन्न प्रोपेगन्डा टुकड़ियों में बहुत दिनों तक काम करता रहा। वहां से संघ ने उसको उत्तर-पूर्व के युवक और युवतियों पर प्रभाव डालने के लिए हारबिन भेजा जहाँ वह "संस्कृति" नामक पत्र का सम्पादक हो गया। यह पत्र हर तीसरे दिन काशित होता था।

तब एक अप्रत्याशित घटना हो गई। उक्त समाचार पत्र को अपने हाथ में अस्त्र के रूप में सम्भालने के पश्चात् ज्याओ चुन संघ ही की आलोचना

करने लगा। बूंद बूंद करके वर्षों से उसके हृदय में जो भावनाएं संचित हुई थीं वे अब फूट पड़ने के लिए मार्ग खोज रही थीं। संघ की ओर से निर्देशित प्रोपेगेन्डा साहित्य के स्थान में उसने अपने लेखों में न्याय का मांग करनी शुरू कर दी। अधिकारियों की ओर से जो गलतियां हुईं उनकी वह आलोचना करने लगा। अपने लेखों में उसने यह भी दिखाया कि पुराने जंगजू जमींदारों और सेना के नये अधिकारियों में कोई अन्तर नहीं है और इसलिए उसकी तीव्र आलोचना की। उसका आग्रह था कि जनता को शांति की आवश्यकता है न कि युद्ध की। अब वह बराबर यही कह रहा था कि जनता इतने लम्बे कष्ट सहने के पश्चात् अपने अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को सुधार लेना चाहती है। उसकी दृष्टि में सभी प्रकार के साम्राज्यवादी निन्दा के पात्र थे। इसीलिए उसने रूसी साम्राज्यवादियों को भी, जिसका उदाहरण वह उत्तर-पूर्व में देख चुका था, न छोड़ा। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि उसके दृष्टिकोण और शांति स्थापित करने की अभिलाषा से उत्तर-पूर्व के सभी युवक युवतियों में उसका बड़ा मान होने लगा और समस्त उत्तर-पूर्व में "संस्कृति" का जिक्र रहने लगा। किन्तु उस नए युग में जनता के लिए न्याय की अभिलाषा करना, "जनता" के विरुद्ध पाप करने के सदृश्य समझा जाता था; तब जनतन्त्रीय न्यायप्रणाली से ज्याओ चुन कैसे बच रह सकता था? ज्याओ चुन एक चिरकालिक कामरेड थे और उत्तर-पूर्व ही में प्रसिद्ध न थे बल्कि शेष देश के चिरकालिक कामरेडों पर भी बड़ा प्रभाव रखते थे। इसलिए उनके पत्र को किसी प्रकार दो मास तक सहन किया गया। शासकों को आशंका थी कि यदि उसको वहां से अचानक ही गायब कर दिया गया तो यह अच्छा नहीं लगेगा और उत्तर-पूर्व के युवक-युवतियों में उसका उत्तेजनात्मक प्रभाव होगा। इसके अतिरिक्त कम्युनिस्ट राष्ट्रवादी क्षेत्रों में प्रेस और भाषण की स्वतन्त्रता के अभाव को कोसा करते थे। अब यदि संघ "संस्कृति" जैसे पत्र को बन्द कर देता तो उसके राष्ट्रवादी-विरोधी प्रचार में कमजोरी आ जाती।

इसलिए पार्टी के अधिकारियों ने इस समाचार पत्र की आवाज को कुचलने और उसके ओजस्वी सम्पादक को पंगु कर देने के लिए एक और ही योजना बनाई। उन्होंने जुंग जे-टी नामक एक व्यक्ति को हारबिन से एक नया पत्र निकालने के लिए भेज दिया। इस नए पत्र का नाम "जीवन"

रखा गया। जुंग को आदेश था कि वह आग्रह और तर्क-वितर्क द्वारा "संस्कृति" को उसकी पापपूर्ण भूलों को दूर कराने का यत्न करे। दूसरी ओर ज्याओ चुन को डराने धमकाने के लिए कुछ गुण्डों को भेज दिया गया ताकि वह "आत्मालोचना" के नाम पर क्षमा याचना और अपनी भूलों पर खेद प्रकाश करे। किन्तु पार्टी के ये सभी प्रयत्न निष्फल रहे। जुंग जे-टी ने "जीवन" नाम का पत्र तो निकाल लिया पर उसको पढ़ने वाले बहुत लोग न थे। इतना ही नहीं उसके प्रकाशन से संस्कृति की बिक्री और भी बढ़ गई। कोई स्टाफ अफसर हो, या स्वातन्त्र्य सेना का कोई दूसरा अधिकारी, अथवा साधारण जन, सभी "संस्कृति" के लेखों को पढ़ना चाहते थे।

अन्त में बिना इस बात की परवाह किये हुए कि उनके इस कार्य का जनता पर क्या प्रभाव पड़ेगा शासकों ने इस पत्र को बन्द करने का निश्चय कर लिया। और उस समय "उत्तर-पूर्व दैनिक" नामक पत्र ने जिसको पार्टी की उत्तर-पूर्वी केन्द्रीय ब्यूरो चलाती थी, कई शृंखलाबद्ध लेख छापे जिनका उद्देश्य संघ के उक्त कार्य की प्रशंसा करना था। इन लेखों में कहा गया था कि अगर संघ इतनी जल्दी "संस्कृति" के विरुद्ध कदम न उठाता तो "जनता का बड़ा अनर्थ हो जाता; उसको बन्द करके संघ ने जनता को "विषैले प्रगति-विरोधी विचारों के प्रभाव से बचा लिया है।" कुछ महीने पश्चात् समाचार पत्रों में एक छोटा सा समाचार छपा जिसमें इस बात पर बड़ा संतोष प्रगट किया गया था कि ज्याओ चुन ने अपने पापों को स्वयं स्वीकार कर लिया है और पुनः स्वाध्याय करने की दृष्टि से वह अब एक कारखाने में काम करने लगा है।

× × ×

धर्म की स्वाधीनता एक और स्वाधीनता थी जिसको अस्थायी संविधान द्वारा जनता को औपचारिक रूप से प्रदान किया गया था। किन्तु धर्म और साम्यवादी भौतिकवाद तो परस्पर व्याघातात्मक हैं। उनका न तो कोई समन्वय हो सकता है और न वे दोनों एक साथ पनप ही सकते हैं। कम्युनिस्टों ने अपने अस्थायी विधान में धर्म की स्वाधीनता का आश्वासन देकर साधारण जनता का समर्थन प्राप्त करने ही की एक चाल चली थी।

मैं उपमन्त्री के लिये जो अनेक विशेष प्रोपेगेन्डा कार्य करता था उसमें कुछ ऐसे लोगों की आवश्यकता थी जो इश्तिहार लगा सकें अथवा उनके लिए डिजाइन तैयार कर सकें। मेरी इस प्रार्थना को उपमन्त्री ने तुरंत स्वीकार कर लिया और अगले दिन मन्त्रालय में दो युवतियां बुला भेजी गई। वे एक कला विद्यालय की छात्राएं रह चुकी थीं और उस कालेज के सैनिक प्रतिनिधि ने उनको क्रांति का कार्य करने के लिए भर्ती किया था। अन्य उन कलाकारों के प्रतिकूल जिनसे मेरा परिचय रहा था ये दोनों अपनी वेश-भूषा और आचार-विचार में उच्छृंखल न थीं और अपने कार्य को दक्षतापूर्वक करती थीं। स्वभाव से वे लज्जाशील थीं और अपने नए वातावरण में अपने काम को समझती थीं और इधर उधर न भटकती फिरती थीं। वे दिन भर काम ही पर अपना ध्यान केन्द्रीभूत रखती थीं। अपने काम के प्रति उनकी जो श्रद्धा थी उसके आधार पर उनको पुराने समाज में बड़ा आदर प्राप्त हो सकता था। उनकी मौन संलग्नताको एक अपराध समझा जाता था। किन्तु नए समाज में इसलिए उन बालाओं को "समस्यात्मक व्यक्ति" ठहरा दिया गया। अब अपने खाली समय में उनको अपनी अपनी "आत्म-कथाएं" लिखनी पड़ती थीं और स्वाध्याय की चक्की में दलना पड़ता था "ताकि वे अपने विचारों को व्यक्त करने का साहस प्राप्त कर सकें।"

वहां पहुंचने के एक सप्ताह पश्चात् यह भी पता लग गया कि उनको "समस्यात्मक व्यक्ति" क्यों ठहराया गया था। एक चिरकालिक महिला-कामरेड मेरे पास आई और मेरे कानों में कहने लगी, "तुमको मालूम है इन दोनों लड़कियों के बारे में? तुमको शायद यकीन भी न होगा कि ये दोनों लड़कियां अभी तक इतनी पिछड़ी हुई हैं कि धर्म में आस्था रखती हैं। क्या तुम कभी इसकी कल्पना भी कर सकते हो?"

मैं इतना जानता था कि इस महिला कामरेड का अभिप्राय मुझको यह बताना था कि ये दोनों लड़कियां या तो कैथोलिक धर्म को मानने वाली थीं या प्रोटेस्टेंट। मैं हंसने ही वाला था किन्तु रुक गया और मैंने कहा "क्या सच? मैं तो समझता था कि ये बुद्धि जीवी कलाकार हैं।"

"बुद्धिजीवी खाक। यदि कोई व्यक्ति धर्म में आस्था रखता हो तो इससे

अधिक और उसके पिछड़ेपन का क्या प्रमाण हो सकता ? किन्तु संघ इनको प्रगतिशील बनाने में सहायता देगा। पिछड़े हुए धर्मावलम्बियों को "प्रगतिशील" होने में सहायता देने का अर्थ केवल यह था कि उनको धर्म-विमुख कर दिया जाय। अब इन दोनों लड़कियों को समस्त मन्त्रालय के "स्वाध्याय" का विषय बना दिया गया। बहुत से चिरकालिक कामरेड धर्म के विषय में बहुत ही कम जानकारी रखते थे। वास्तव में उनको केवल इतना ही ज्ञान था कि संघ में रहते हुए धर्म में विश्वास करना गलत बात है, और यदि साधारण जनता को धर्म की स्वाधीनता प्रदान की गई है तो केवल अस्थायी रूप से ही। पिछड़े हुए धर्मावलम्बियों को डाकुओं से भी बुरा समझा जाता था क्योंकि डाकू तो अनेक बार राष्ट्रवादियों के विरुद्ध क्रांतिकारियों का साथ भी दे चुके थे और बहुत से डाकू जनतन्त्रीय योद्धा होने के नाते प्रशंसा के पात्र भी समझे जा चुके थे। परन्तु धर्म ने तो साम्यवादियों के साथ कभी सहयोग नहीं किया था। इसलिए धर्म में विश्वास करना जनता के विरुद्ध पाप करना था। इस तर्क के अनुसार उक्त दोनों युवतियां डाकुओं से भी अधिक भयंकर थीं।

किसी को "प्रगतिशील बनाने के लिए सहायता" प्रदान करने का कार्य एक योजना और सूक्ष्म व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता था। इस काम में विचार सम्बन्धी शिक्षा को प्रथम स्थान दिया गया था। जो लोग विचार-परिवर्तन कार्य में विशेषज्ञ समझे जाते थे पहले तो अनेक बार वे इन लड़कियों को व्यक्तिगत बातों में उलझाने लगे। उस समय उनकी बातें कुछ इस प्रकार शुरू हुआ करती थी "मानव प्राणी शनैः शनैः प्रगति करके बन्दर से मनुष्य बना है। एक आदम था और एक हौआ थी, इस तरह का तुम्हारा जो विश्वास है वह तुम्हारे मस्तिष्क पर एक बड़ा बोझ है जिससे तुमको छुटकारा पाना चाहिए। धर्म साम्राज्यवादियों द्वारा जनता को पथ-भ्रष्ट करने के लिए अफीम के तौर पर इस्तेमाल किया जाता रहा है। वह संपत्तिशाली वर्ग का एक अस्त्र है। सारे चीन में कुल मिलाकर १७ लाख व्यक्ति ही ऐसे हैं जो धर्म में विश्वास रखते हैं। यदि तुम अब भी धर्म में विश्वास करती हो तो तुम संपतिशाली वर्ग द्वारा किये जाने वाले पापों में सहायक होने की अपराधी हो। यदि तुम प्रगतिशील बनना चाहती हो तो तुमको केवल अपने धर्म ही को तिलांजलि नहीं देनी चाहिये बल्कि हम सब के

साथ मिलकर जनता को इस अभिशाप से बचाने के कार्य में हमको सहयोग देना चाहिये क्योंकि धर्म जनता के लिए अफीम जैसी त्याज्य वस्तु है।

इस कार्य-प्रणाली की दूसरी मंजिल में आत्मालोचना और आत्म-कथाओं का संशोधन शुरू होता था। उक्त लड़कियों से निम्न प्रकार के प्रश्न किये गये: "क्या तुम धर्म में विश्वास करती हो? तुमको किस घृणित प्रतिक्रियावादी ने धर्म ग्रहण करने के लिए प्रभावित किया और ऐसा करने में उसका क्या उद्देश्य था? क्या कभी तुमको किसी धार्मिक संस्था से अथवा अमरीकी धार्मिक शिक्षा देने में साम्राज्यवादियों से कोई आर्थिक सहायता मिली? क्या कभी तुमने धर्म की आलोचना करने की कोशिश की है? यदि नहीं, तो अब क्यों न करनी चाहिये! तुम्हारा धर्म के प्रति नया रुख क्या है? तुम्हारा विचार-परिवर्तन किस प्रकार आरम्भ हुआ? अब तुम अपने विचार परिवर्तन की कौन सी मंजिल में हो?"

इस प्रणाली की तीसरी मंजिल उसकी आखिरी मंजिल थी। उसको "जन साधारण का प्रोत्साहन" शीर्षक दिया गया था। इस प्रसंग में जन-साधारण का अर्थ था वे आन्दोलनकारी जिनका यह कर्तव्य था कि वे नये कामरेडों को सामूहिक रूप से दबाव डालकर प्रगतिशील बनायें। किस पर कितना प्रभाव डाला जाय यह भिन्न भिन्न व्यक्तियों के साथ भिन्न भिन्न रूप से निर्धारित होता था। ये लड़कियां यदि कहीं छोटी टुकड़ियों की सभा में बैठती, खाना खाती या अवकाश ग्रहण करती तो अनेक कामरेड उनको आ घेरते और घण्टों तक उनसे प्रश्न करते रहते और बड़े धैर्यपूर्ण ढंग से उत्तर पाने का आग्रह करते रहते। कभी कहते "हमको तो यह आश्चर्य है कि तुम जैसे बुद्धि-प्राण व्यक्ति भी धर्म में विश्वास रख सकते हैं। क्या आप बतायेंगी ऐसा क्यों हुआ? क्या जो लोग कला की शिक्षा पाते हैं उनको धर्म में विश्वास करना ही पड़ता है? ऐसा विश्वास करने के लिए तुमको किसने बाध्य किया? संघ तुमको प्रगतिशील होने में सहायता दे रहा है तो उसके प्रति तुम्हारा अब क्या रुख है? क्या तुमने यह कभी नहीं जाना था कि भगवान में विश्वास करना पिछड़ेपन का ही सबूत है और धर्म के विरुद्ध काम करना प्रगतिशीलता का? हम जानते हैं कि तुम प्रगतिशील होना चाहती हो क्योंकि यह सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं कि कोई भी पिछड़ा हुआ नहीं

रहना चाहता क्योंकि पिछड़ा हुआ होना बुरी बात है धर्म स्वयं एक बुरी बात है इसलिये तुमको धर्म को नष्ट करने में हमारी सहायता करनी चाहिये ।"

इन दोनों लड़कियों पर जो भारी दबाव पड़ रहा था वे देर तक उसको सहन न कर सकीं । कई बार वे रोईं चिल्लाईं कभी ऐसा होने पर वे क्रांतिकारी खुशियां मनाते थे । क्योंकि वे अपने अनुभव से यह देख चुके थे कि जब कोई व्यक्ति रोने लगता है तो यह समझ लेना चाहिये कि उसके विचार-परिवर्तन का श्रीगणेश हो गया । एक दिन आखिर मन्त्रालय की ओर से यह घोषणा भी कर दी गई कि उक्त दोनों युवतियों ने अपना अपना धर्म त्याग दिया है और वे अब वास्तव में प्रगतिशील बन गई हैं ।

संघ अदृश्य रूप से अपने सदस्यों पर किस प्रकार अनाचार करता है आये दिन यह देखकर मैं घबराने लगा था । मैं अब अपनी आंखों से देख रहा था कि इस प्रकार के अदृश्य अनाचार शारीरिक दंड अथवा दबाव से कहीं अधिक विनाशात्मक और प्रभावकारी साबित हो सकते हैं । अब मुझको यह भी स्पष्ट होता जा रहा था कि मनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहार शारिरिक दुर्व्यवहार से कहीं अधिक क्रूर हो सकता है । मुझको क्रांति में सम्मिलित हुए लगभग एक वर्ष हो चुका था और अब मैं इस असमंजस में पड़ा था कि आखिर कब तक मैं शासकों के साथ चलता रह सकता हूं और कब तक मेरी अपनी बुद्धि अपने ऊपर पड़ने वाले दबाओं को और मेरा हृदय उन संघर्षों को जो उसमें चल रहे थे सहन करता रहेगा ।

अठाहरवां परिच्छेद

विचारोपण

एक दिन वह चिरकालिक कामरेड जो मेरे साथ कमरे में रहता था बदल कर वुहान के दक्षिण में स्थित एक छोटे से नगर में भेज दिया गया। उसका स्थान लेने के लिए दूसरा काई कामरेड नहीं आया और मुझको एक पूरे कमरे में अकेले रहने अर्थात् डिवीज़न स्तर की सुविधा प्राप्त हो गई। उसके चले जाने के परिणाम स्वरूप मन्त्रालय के सचिव विभाग में केवल दो चिरकालिक कामरेड एक विभागाध्यक्ष और एक मैं यहां रुक गये। क्योंकि विभागाध्यक्ष साधारणत: ऊपर के कमरे में आराम से लेटा रहता था अन्य दो चिरकालिक कामरेडों को वहां से खिसक निकलने और अपने "प्रेमियों" से मिलने अथवा सिनेमा देखने के अनेक अवसर मिलते रहते थे। जब यदाकदा मन्त्री महोदय की सहकारिणी दफ्तर आ जाया करती थी तो मंत्री के स्वागतालय में मुझको ही काम या उपमंत्री के साथ किसी विशेष काम के विषय में विचार-विमर्श करता हुआ पाती थीं। अब बहुत सी ऐसी ब्योरे की बातें जिनमें पहिले मुझको समय गंवाना पड़ा करता था और सिर खपाना पड़ता था मुझ से अलग हो गई थीं। अब उनको निम्न-स्तर के दफ्तरी कार्यकर्ताओं को सौंप दिया गया था। मैं क्रांति में एक वर्ष तक की सेवा कर चुकने का पुण्य प्राप्त कर चुका था। बहुधा नियमित रूप से पार्टी सदस्य न होने के कारण मेरी आलोचना भी होती रहती थी और मेरी पुरानी धारणाओं की निन्दा भी, फिर भी मन्त्रालय में मेरा जो स्थान था और उपमन्त्री को मेरे ऊपर जिस मात्रा में उत्तरोत्तर आश्रित रहना पड़ता था उससे चिरकालिक कामरेड मुझको एक बहुत ही प्रभावशाली व्यक्ति मानने लगे थे।

यहां तक कि अब जब कभी मुझको उपमन्त्री से छुट्टी मिलती मन्त्री महोदय की सहकारिणी अपने किसी काम में लगा दिया करती थीं। सहकारिणी जी एक विचित्र प्राणी है और मन्त्रालय में उसका स्थान अद्वितीय

है यह बात मैं जानता था। उसकी आयु ३० वर्ष से भी कई साल अधिक थी फिर भी वह भरसक यह प्रयत्न करती रहती थीं कि किसी प्रकार युवती और सुन्दरी बनी रहें। जब कभी भी अवसर मिलता था वह अपने रहन-सहन और जीवन सम्बन्धी अन्य अवस्थाओं में सुधार कर लिया करती थी। तथा कथित क्रांतिकारियों के विवाहों की साधारणतः एक विशेषता यह हुआ करती थी कि पुरुष की आयु स्त्री से कहीं अधिक होती थी। कुछ तो ऐसे उदाहरण भी थे जिनमें पति की उम्र उसकी पत्नी से दुगनी थी। पद की दृष्टि से साधारणतः पति पत्नियों की अपेक्षा कहीं अधिक ऊंचे हुआ करते थे। बहुत से रेजिमेण्ट स्तर और उससे ऊपर के अधिकारियों की ऐसी प्रेमिकाएं थीं जो शायद ही प्लेटून स्तर से ऊंचे की हों। प्रभाव की दृष्टि से पुरुष अधिक शक्तिशाली होते थे और महिलाओं को अपने पतियों की स्थिति के अनुसार ही श्रद्धा और सम्मान प्राप्त था। क्रांतिकारियों की विवाह परम्परा के अनुसार स्त्रियां सप्ताह में एक बार अर्थात् शनिवार की रात को ही अपने प्रेमियों के कमरों में जाया करती थीं। किन्तु हमारी मन्त्री महोदय की सहकारिणी इन सभी अलिखित नियमों का अपवाद थीं।

उनका प्रेमी एक अति सुन्दर युवक था और पद की दृष्टि से एक निम्न स्तर का स्टाफ अफसर। वह प्रति शुक्रवार की रात को उसके कमरे में आ जाया करता था और सोमवार तक वहां रहता था। इस प्रकार मन्त्रालय में वह ही एक ऐसी प्राणी थी जिसको मंत्री के समान पारिवारिक जीवन रखने का अधिकार प्राप्त था। इसके अतिरिक्त उसको और भी मन्त्री के स्तर की सुविधायें प्राप्त थीं, जिनका वह हर प्रत्येक अवसर पर खुले दिल से उपभोग करती थी। वह कभी भी किसी दफ्तर में नीचे के कमरे में काम नहीं करती थी और मन्त्री के स्वागतालय में आवश्यकता पड़ने पर ही आती थी। उसके पास ऊपर की मंजिल में तीन कमरे थे जो उस इमारत में सर्व श्रेष्ठ थे। उन में रोशनी का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया था और दरवाजे और खिड़कियां ऐसी थीं कि हवा स्वच्छन्द रूप से इधर-उधर बह सके। एक कमरे का उसने अपना शयनागार बनाया हुआ था दूसरे को बैठक और तीसरे को वह व्यक्तिगत कार्यालय के रूप में इस्तेमाल करती थी। लोग वहां ही उससे मिलने को आते थे; वहीं से वह आज्ञायें जारी करती थी और वहीं अपनी रिपोर्ट तैयार करती थी। उसका फर्नीचर काफी मूल्यवान था, इतना मूल्यवान कि वह संघ से

प्राप्त होने वाले परिमित वेतन में इस सब को नहीं खरीद सकती थी। कभी-कभी वह मुझको अपने कमरे में ले जाती थी और यदि कोई नई चीज़ खरीदी होती थी तो उसको बड़े चाव से दिखाया करती थी। उसका एक बच्चा भी था। वुहान में चौथी फील्ड आर्मी के हेडक्वाटर की ओर से जो किन्टरगार्टन स्कूल चलाया जा रहा था उसी में वह पढ़ता था। उसकी सेवा सुश्रुषा के लिए उसने एक नर्स रखी हुई थी।

मंत्रालय में उसके समान शक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को प्राप्त हो इसमें संदेह था। यह सच है कि प्रोपेगेन्डा का जितना काम था उसका निरीक्षण मंत्री और उपमंत्री ही करते थे किन्तु मंत्रालय और सरकार के दूसरे विभागों में परस्पर जो सम्पर्क था उसकी देख-रेख वह ही करती थी। मंत्रालय में जितने व्यक्ति काम करते थे और उनका जिन बातों से सम्बन्ध था उन सभी पर उनके काम को छोड़ कर मंत्री महोदय की उक्त सहकारिणी ही का सम्पूर्ण नियंत्रण था। मंत्रालय में जितने कार्य-कर्ता और संघ के जितने स्टाफ अफसर थे वह उन सब के बारे में रिकार्ड रखती थी और कौन पार्टी का सदस्य है और कौन नहीं इस पर भी नज़र रखती थी। वह जब चाहे किसी के विरुद्ध स्वयं जांच पड़ताल कर सकती थी; पार्टी सदस्यों को पुरस्कार और दण्ड दिलवा सकती थी। जितने विशेष स्वाध्याय और आन्दोलन होते थे उन सब का निरीक्षण-सूत्र उसी के हाथ में था। मंत्रालय में जो पार्टी की शाखा थी उसकी वह उपमंत्री थी। किन्तु उसके अधिकार उतने ही थे जितने सेना में किसी राजनैतिक कमिसार के होते हैं। किसी के भाग्य निर्णय करने के लिए जो कोई सभा होती थी तो उसके अध्यक्ष पद पर वही आसीन हुआ करती थी। वही यह भी तय करती थी कि नये कामरेडों में कौन कैसा है और किस को क्या स्थान मिलना चाहिए। विवाह के बाज़ार में भी वही सर्वोच्च थी। उसकी जबान से एक शब्द या वाक्य सुनकर सारी सभा अपना रुख और रवैया बदल लिया करती थी।

मेरे कमरे वाले साथी के चले जाने के कुछ दिन पश्चात् उसने मुझको अपने कमरे में बुलाया और मुझसे कहा, "मैंने तुम्हारे कामरेड को इसलिए यहां से हटवा दिया है कि तुम समूचे कमरे में अकेले रह कर सेना के डिवीजन स्तर के अधिकारियों जैसी सुविधायें प्राप्त कर सको। पर वैसे भी तो वह

व्यक्ति एक निरा झंझट ही था। "तुम कुछ काम करो", उसने मुझसे पूछा कि "तुम्हारे विभाग में जो दो अन्य कामरेड हैं उनसे तुमको कुछ मदद मिलती है क्या ?

"वे ठीक ही हैं" मैंने कहा।

"मुझको पता है कि तुम्हारे विभागाध्यक्ष ने एक बार तुमको विपत्ति म डाल दिया था और फिर जांच पड़ताल करवा दी थी । तुम शायद उसको बहुत अच्छे नहीं लगते थे।"

"यह तो बहुत पुरानी बात है" मैंने सहज ढंग से कहा।

यह सुनकर उसने अपनी 'त्योरी' चढ़ा ली और बोली, "अगर मैं चाहती तो उनको इस तरह निकलवा सकती," यह कहते हुए उसने अपनी चुटकी बजायी। मैं फिर भी चुप रहा। वह फिर बोली, "तुम निश्चिन्त रहो"। यह कहकर उसने अपने कंधे को हल्का सा झटका दिया और मन्त्री महोदय के लिए जो रिपोर्ट उसके पास थीं उनमें से कुछ को मुझे दे दिया। तीन दिन पश्चात् हमारे विभागाध्यक्ष को शंघाई भेज दिया गया जहां उनकी ड्यूटी यह लगाई गई कि वह वहां से १० लाख ऐसे मेडल इकट्ठे करें जिन पर लिखा हो "केन्द्रीय और दक्षिण चीन की स्वतन्त्रता की स्मृति में" और डेढ लाख ऐसे जिन पर लिखा हो "हैनान द्वीप की स्वतन्त्रता की स्मृति में"।

अपने कमरे में जब कभी मैं अकेला बैठा होता तो रह रह कर मुझको अपने पुराने साथी की याद आती जो उस कमरे में मेरे साथ रहा करता था। एक दिन वह मेरे पास आया था और कहने लगा था, "मैं जानता हूं कि हम चिरकालिक कामरेडों के पास कुछ ऐसी बात है जो तुम नये कामरेडों को प्राप्त नहीं है।" मैंने उत्तर में कह दिया था, "निस्सन्देह मैं जानता हूँ। पुण्य से मतलब है न ?"

"नहीं मतलब पुण्य के अतिरिक्त किसी और बात से है।"

मैंने उसकी ओर देखकर व्यंगपूर्ण ढंग से कहा था "क्या आपका मतलब यह है कि आप चिरकालिक कामरेडों में योग्यता है, वास्तविक योग्यता ! सच बोलिये न भगवान के वास्ते ?"

"हां, और मैं शर्त लगाता हूं कि जो बात मैं कहना चाहता हूं उसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते ।"

मैं उसकी यह बात सुनकर देर तक विचार करता रहा था और काफी उधेड़बुन में पड़ गया था । अन्त में मुझको यह एक बात सूझी थी जिस पर मैंने प्रसन्न होकर कहा था कि "मैं जान गया । आप चिरकालिक कामरेड कभी भी क्रांति को नहीं छोड़ सकते चाहे संघ आपके प्रति कैसा ही दुर्व्यवहार क्यों न करे, जब कि हम नए कामरेड सदा ही क्रांति से पलायन की सोचते रहते हैं चाहे यहां हमको वैसे कितना भी आराम क्यों न हो ।"

"शाबाश, तुम वास्तव में चतुर हो ।" उसने मेरी प्रशंसा करते हुए कहा था । "तुमने मेरे मन की बात भांप ली । अब मैं तुमको एक ऐसी बात बताता हूं जो तुम मुझसे सीख सकते हो और वह यह है कि कुछ भी हो क्रांति से पलायन करने की कल्पना भी मन में नहीं आनी चाहिये ।"

"मैं अवश्य सीखूंगा", मैंने बड़े गम्भीर ढंग से कहा था ।

वास्तव में मैंने कभी क्रांति को तिलांजलि देने की योजना नहीं बनाई थी क्योंकि मुझको यह विश्वास हो गया था कि ऐसा करना असम्भव है । मुझको बहुत से ऐसे लोगों की कहानियां मालूम थीं जिन्होंने ऐसा प्रयत्न किया था और जिनके प्रयत्नों के भयंकर परिणाम निकले थे । परन्तु जब मेरा साथी वहां से चला गया तो वह बातचीत मुझको अक्सर याद आने लगी और अब मैं यह आश्चर्य करने लगा कि यह विचार इतने दिनों से क्या मेरे हृदय में सोया ही पड़ा रहा । तब मैं यह भी सोचने लगा कि क्या कोई ऐसा अवसर आ सकता है जबकि मैं अन्य लोगों के प्रतिकूल अपने प्रयत्न में सफल हो सकूं । जब कभी मैं मन्त्री महोदय के स्वागतालय में अकेला बैठा होता तभी ये विचार मेरे मन में बार बार उठा करते ।

छापामारी युद्ध के दिनों में किसी को तनिक भी भरोसा न था कि कहां क्या करना पड़े और जीवन रहे या न रहे। कब, किस स्थान में, किसको, किस देर तक रहना पड़ेगा, खाना मिलेगा या नहीं, अगले दिन क्या होगा, इसका कामरेडों को कुछ पता ही नहीं होता था। जब उनको किसी जगह से हटना पड़ता था तो वे हट जाते थे; जब कभी शत्रु उनको घेरे होता था, उनके पास न तो सहायता करने के लिए कोई और सहयोगी होता न रसद और न खाना। हटना तो उनको वहां से पड़ता ही था। यह आये दिन होने वाली बात थी। इसलिए बार बार जब ऐसी स्थिति उत्पन्न होने लगी तो वर्तमान शासकों ने दो नई बातों पर आग्रह करना शुरू कर दिया। ये थी क्रांतिकारी बचत और दूसरा क्रांतिकारी उत्पादन"। "क्रांतिकारी बचत का अर्थ वास्तव में लूट मार ही था। छापामार जब कभी किसी कस्बे या गांव पर अधिकार कर लेते थे तो वहां उनको जितना सोना, चांदी, ज़ेवर, विदेशी मुद्रा और ऐसा कीमती सामान जिसको आसानी से इधर उधर ले जाया जा सके मिलता तो वह उसको हस्तगत कर लिया करते थे। लूटने वाली हरेक टुकड़ी का अपना ही "क्रांतिकारी बचत" कार्यक्रम रहता था और उस पर दूसरी कोई टुकड़ी, चाहे सामरिक दृष्टि से वह कितनी ही ऊंची क्यों न हो, हाथ नहीं डाल सकती थी। "क्रांतिकारी उत्पादन" का अभिप्राय "क्रांतिकारी बचत" ही में योग देना था। जब कभी किसी स्थान विशेष पर कब्जा हो जाता था और छापामारों को वहां आशा से अधिक समय तक वहां टिकना पड़ जाता था तो वहां वे जमीन की जुताई, बीजाई, जानवरों की देख रेख और मछली मारने का काम शुरू कर दिया करते थे। इस प्रकार अपनी आवश्यकता पूर्ति से जो सामान बच रहता था उसको बेचकर वे या तो रुपया हासिल कर लेते थे या उसके बदले में कोई और सामान। इस प्रकार प्राप्त किए हुए रुपए और सामान को भी क्रांतिकारी बचत में जोड़ लिया जाता था। छापामारी सेना को आत्म-निर्भर बनाने के लिए यह साधारण एवं आवश्यक कार्यवाही थी।

सारे चीन पर छा जाने की अपनी मुहिम प्रारम्भ करने के पश्चात् भी चिरकालिक कामरेडों ने अपनी "बचत" और "उत्पादन" बढ़ाने की आदत को न छोड़ा। जब कभी वे किसी नगर या गांव में प्रवेश करते तो सबसे पहले यह सोचते कि उसको कैसे लूटा जाय। उस समय यही तो उनका प्रमुख कर्तव्य

भी था। यह स्वाभाविक ही था कि जितना बड़ा शहर होता उतनी ही बड़ी लूट। "क्रातिकारी बचत" मे वृद्धि होती ही गई। अब लगभग सभी चिरकालिक कामरेडो के पास फोउन्टेनपेन होते चाहे वे लिखना पढना जानते या न जानते; घड़िया होती चाहे वे समय देखना जानते या न जानते; और जितने प्रकार का भी भोजन वे चाहते खा सकते थे—वास्तव में उदर पोषण ऐसी बात थी जिनमे उनको सबसे अधिक दिलचस्पी थी। यह बताने की आवश्यकता नही कि "क्रातिकारी बचत" का क्रातिकारी वितरण करते समय प्रधान माप दड यही होता था कि क्राति मे किसने कितना पुण्य कमाया है और अब उसमें उसका क्या पद है। सघ की ओर से कोई हिसाब किताब का तो प्रबन्ध था नही। इसलिए प्रत्येक सैनिक टुकडी अपनी क्रातिकारी बचत को ऐसे चिरकालिक कामरेड के हवाले कर दिया करती थी जिसको वह सबसे अधिक ईमानदार समझती थी।

१९४९ ईस्वी समाप्त होने पर शासको की ओर से एक अधिनियम जारी किया गया जिसके अनुसार कामरेडो को अब और अधिक बचत करने से रोक दिया गया और आज्ञा दे दी गई कि जिसके पास इस प्रकार का जो धन है, उसको वह "पीपुल्ज बैंक" मे जमा करा दे। तिस पर भी कामरेड अपनी अपनी धन-राशि मे अभिवृद्धि करते ही गये। उनमे से कोई भी इतना मूर्ख नही था कि अपने हाथ मे आये हुए सोने को कुछ कागजी टुकडो के बदले खो बैठे। हम लोग जो मन्त्रालय मे थे इस वितरण मे बहुत कुछ न पा सके। क्योंकि समस्त पूंजी १२५० तोले सोने से कम की थी और हमारा जो ट्रक ड्राइवर था उसी के पास यह जमा थी। यह कामरेड नियमित रूपसे दक्षिण और मध्य-चीन मे कागज पत्र और प्रोपोगेन्डा साहित्य वितरण के लिए ले जाया करता था। एक मीटिंग मे निश्चय हुआ कि उक्त बचत का एक भाग किसी काम में खर्च कर दिया जाय क्योकि उस समय केन्द्रीय सरकार अपने सन् १९४९ वाले अधिनियम को पहले की अपेक्षा अधिक सख्ती के साथ कार्यान्वित करने मे लगी थी। उक्त ट्रक-ड्राइवर कामरेड प्रोपोगेन्डा के कुछ बुलेटिन लेकर केन्टन पहुंचा और वहा उनको किसी के सुपुर्द करके हांगकाग चला गया जहाँ से वह बहुत कुछ सामग्री खरीद लाया मन्त्री महोदय के लिए दो पार्कर "५१" फाउन्टेन पेन, दो पार्कर "५१" पेंसिल और एक ओमेगा घड़ी; जो विभागाध्यक्ष थे उनके लिए साधारण फोउन्टेन पेन, और १७ ज्यूएल वाली

वाटरप्रूफ घड़ियां । जो कम महत्वपूर्ण अफसर थे उनके हिस्से में एक लाल या काली बाल पाइन्ट कलम ही आई । नये कामरेडों को इस वितरण में कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ । हां तब सारे मन्त्रालय को पहले की अपेक्षा खाना अवश्य कुछ अच्छा मिल गया ।

मन्त्रालय में जो लोग काम करते थे वे क्रांतिकारी उत्पादन में भी संलग्न हो सकते थे यद्यपि हमारे पास उस समय न तो ऐसी जमीन ही थी जिसमें खेती की जा सके और न ऐसी मशीन ही जिससे कोई चीज़ तैयार की जा सके । ट्रक ड्राइवर कामरेड बहुत चतुर व्यक्ति था । वह जब कभी प्रोपेगेन्डा का सामान कहीं ले जाता तो वापस आते समय अपने ट्रक में या तो क्रय-विक्रय का कोई सामान भर लाता या मुसाफिर बैठा लाता और इस प्रकार पैसे बना लिया करता था उदाहरणार्थ, यदि वह केन्टन से आता तो अपने साथ कोई आधा ट्रक सस्ते केले भर लाता और आधा ट्रक क्यांग्सी प्रान्त में उत्पन्न होने वाले सस्ते संतरे, और केलों को रास्ते में मुनाफे से बेचता आता । इस ड्राइवर कामरेड से मेरी मित्रता हो गई थी । इसलिए मैं उससे हांगकांग केन्टन और दक्षिण के उन स्थानों के विषय में जहां वह जाता आता रहता था बातें कर लिया करता था । वह बहुत बातूनी था और उसने मुझको बहुत कुछ ऐसी खबरें दीं जो बहुत लाभ की सिद्ध हो सकती हैं, ऐसा मुझको लगता था ।

मेरे मन में उस समय अधिकाधिक स्पष्टता के साथ एक विचार बनने लगा । किन्तु जिस क्षण मुझको यह अनुभव हुआ कि मेरी उक्त विचार-प्रक्रिया का उद्देश्य निकल भागना है तो मुझको यह ऐसा लगा कि मेरा गला रुंध जायगा और मेरा हृदय बैठ जायगा क्योंकि वह इतनी तेज़ी से धधक रहा था । मैंने एक मित्र को, जो हांगकांग में था, पत्र लिखा और उसके स्वास्थ्य के बारे में और वहां की अवस्थाओं के बारे में पूछ ताछ की । किन्तु मैंने उक्त पत्र में कहीं भी यह संकेत तक नहीं किया कि मैं चीन की दैवी जनतन्त्रीय स्वतन्त्रता सेना में भर्ती हो गया हूं या यह कि मैं संघ के प्रचार मन्त्रालय में स्टाफ अफसर बन गया हूं । उत्तर के लिए मैंने अपने एक विश्वसनीय वुहान वासी मित्र का पता दे दिया । जब मुझको उसका उत्तर मिला तो मैं यह जानकर गदगद हो गया कि वह अब इतना सुखी और समृद्धहै जितना अपने जीवन में पहले कभी नहीं हुआ था । रही हांगकांग की अवस्था की बात, तो वहां तो अब भी

स्वतन्त्र जनता बसती थी। मेरे मित्र ने अपने पत्र में मुझसे पूछा था कि मैं वुहान में क्या कर रहा हूं और यह इच्छा प्रकट की कि कितना अच्छा हो कि मैं किसी प्रकार कुछ सप्ताह के लिए उसके पास हांगकांग में रह आऊं। "कुछ सप्ताह के लिए," ऐसे शब्द थे जो मुझसे व्यंग सा करते हुए दिखाई दिये। "यदि यहां से चल निकलना सम्भव होता..."।

"हां यदि"।

उस समय मैंने निश्चय कर लिया कि यदि अवसर मिला तो मैं लाल चीन का परित्याग कर दूंगा और हांगकांग मेरा पहला निर्दिष्ट स्थान होगा।

उन्नीसवां परिच्छेद

निश्चय

चीन के नववर्ष के त्योहार के कुछ पहले ही मन्त्रालय के ऊपरी स्तर के परिवारों की आत्मालोचनार्थ एक सभा हुई। उक्त सभा में मेरे विभागाध्यक्ष को छोड़कर मन्त्री, उपमन्त्री, मन्त्री की सहकारिणी, और सभी विभागाध्यक्ष उपस्थित थे। मेरे विभागाध्यक्ष उस समय शंघाई गये हुये थे। यह पहला अवसर था जब मुझको ऊपरी स्तर की आत्मालोचना सभा में भाग लेने के लिये आमन्त्रित किया गया। मैं बता नहीं सकता कि उक्त आमन्त्रण के पश्चात् मेरे मन में यह जानने की कितनी तीव्र इच्छा हुई कि ऊपरी स्तर के लोग अपने आपकी किस प्रकार आलोचना करते हैं। मन में कुछ भय भी था क्योंकि मैं नहीं जानता था कि उक्त सभा में जाकर आखिर मुझको करना क्या है।

सभा की कार्यवाही का श्रीगणेश मन्त्री महोदय की सहकारिणी ने किया जिन्होंने तनिक मुस्करा कर मुझको उनकी (सहकारिणी की) आलोचना करने को कहा। अब मैं सोचने लग गया कि वास्तव में मैं चक्की के दो पाटों के बीच में आ गया हूं। देर से जो कुछ देखता आया था और अपने अनुभव से यह जान गया था कि सहकारिणी महोदया बड़ी कुशल प्रवक्ता हैं और कभी भी निम्न-स्तर के अधिकारियों द्वारा बताई गई अपनी भूल स्वीकार नहीं करतीं। किन्तु यदि अब मैं उसकी भूलों की आलोचना करने से चूक जाता तो मुझको अपने विचारों को छुपाने की आदत की आलोचना सुननी पड़ती। साथ ही यदि मैं उसकी आलोचना करने की धृष्टता कर बैठता तो डर था कि मैं संघ के विरुद्ध कार्य करने वाला व्यक्ति समझा जाऊंगा। क्षण भर के लिए उलझन में पड़े रहने के बाद मैंने पहला ही मार्ग ग्रहण करने का निश्चय कर लिया। कुछ ऐसे वाक्यों द्वारा जिनका कोई स्पष्ट या ठोस अर्थ न हो मैंने उनके श्रेष्ठ गुणों की प्रशंसा की और कहा कि जहां तक मुझको जानकारी है मंत्री की

सहकारिणी जी ने कभी कोई भूल नहीं की । उक्त महिला ने यह सुनकर बहुत गम्भीरतापूर्वक मुझको स्पष्टवादी होने का आग्रह किया । "क्योंकि आलोचना से तो सभी चिरकालिक कामरेडों का कल्याण होता है !"

इस पर वैसी ही अस्पष्ट भाषा में मैंने उसके एक ऐसे दुर्गुण को उठा लिया जो सभी चिरकालिक कामरेडों में पाया जाता था, क्योंकि मुझको आशा थी कि मेरे इस प्रकार घुमा फिरा कर बात करने के पीछे जो मेरा वास्तविक मन्तव्य है उसको वह समझ जायगी । मैंने कहा, कि "यदि मैं आज की स्थिति का वर्णन करने के लिए 'गुटवाजी' शब्द का प्रयोग करूं तो मैं एक ऐसी बात का अतिरंजन करने का दोषी हूंगा जो उपस्थित परिस्थितियों में अनिवार्य है । सभी चिरकालिक कामरेडों में यह आदत देखी गई है कि जब कभी नये कामरेड अपना कर्तव्य पालन करने में उनसे होड़ लगाते हैं तो वे सभी उनके विपक्ष में घड़ा सा बनकर बैठ जाते हैं । यदि आपको चिरकालिक कामरेडों से जान पहचान न हो तो उनके साथ काम करना बड़ा कठिन है पर उनसे जान पहचान करने और उनका विश्वास प्राप्त करने में जो समय लगता है.........."

जैसी मुझको आशंका थी, मेरी पूरी बात बिना सुने ही मन्त्री महोदय की सहकारिणी मुझसे वाद विवाद करने लगी, "मेरे विचार से तुम्हारा कथन अशुद्ध है । अपनी आलोचना के पक्ष में तुम्हारे पास कुछ ठोस बात हो तो उसको हमारे सामने रखो ।"

मैंने उत्तर दिया, "क्रांति में सम्मिलित होने के पश्चात् नये कामरेडों को अपने परिवारों को छोड़ना पड़ता है; अपने व्यवसाय को छोड़ना पड़ता है; अपने मनोविनोद और अभिरुचियों को छोड़ना पड़ता है; अपेक्षतया सुखपूर्ण जीवन को छोड़कर कठोरपूर्ण जीवन का व्रत लेना पड़ता है । इसके प्रतिकूल चिरकालिक कामरेडों ने क्रांति के प्रारम्भिक दिनों में तो अपेक्षतया कुछ कष्ट सहे, परन्तु उनमें से अधिकांश के पास उस पुराने समाज में था ही क्या जिसका वे परित्याग करते ? अब वे ऐसे युग में पदार्पण कर चुके हैं जहां उनके लिये सुख ही सुख है । ज्यों ज्यों समय बीतता जाता है वे दूसरे लोगों के परिश्रमों के फलों का स्वयं उपभोग

करते जाते हैं। शुरू में उनका जो सन्यासी जीवन था उसको वे छोड़ते जा रहे हैं। और उन लोगों पर जिनका स्थान उन्होंने ग्रहण कर लिया है वे उत्तरोत्तर कष्ट भार लादते जा रहे हैं। इस प्रकार की प्रवृत्तियों से भयंकर दुराचार का डर है। और यदि भ्रष्टाचार न भी हुआ तो इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि क्रांति की मान-मर्यादा पर तो इससे अवश्य ही आंच आ जायगी। मेरी राय है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न न हो, हमको शीघ्रातिशीघ्र इसका प्रबन्ध करना चाहिये।"

मेरे इस कथन के पश्चात् वह समझ गई कि मेरी आलोचना उसी पर लागू होती है। विषयान्तर करने अथवा चातुर्य से उक्त समस्या को टालने का प्रयत्न करने के स्थान में, जिसकी मुझको आशा थी उसने नाराज होकर मुझसे प्रमाण पेश करने को कहा। सम्भवतः उसको आशा थी कि मैं डर कर अपने वक्तव्य को वापस ले लूंगा। "तुम्हीं ने तो कहा था कि ऐसा करो अब क्यों खीज उठीं," मैंने अपने मन में कहा। पर जवाब देते हुए मैं मुस्कराया और धीमी आवाज में बोला, "मुझको यह आशा न थी कि मैं ऐसी स्थिति में रख दिया जाऊंगा जहां मुझको दूसरों के लिये परेशानी पैदा करनी पड़े। परन्तु यदि आप प्रमाण चाहती हैं तो मैं अवश्य पेश कर सकता हूं। उदाहरण के लिये मैंने देखा है कि आप सप्ताह में दो बार एक बहुत मंहगे 'हेयर ड्रेसर' के यहां जाती हैं, ऐसे हेयर ड्रेसर के यहां जो अभी तक अवशिष्ट पुराने समाज की सेवा किये जा रहा है। वहां आप अपने बालों को शैम्पू कराती हैं। जब कभी आप मुझको अपने कमरे में ले गई हैं मैंने वहां पौंडस क्रीम और दूसरी अमरीकन सौन्दर्य-सामग्री आपकी मेज पर रखी पाई है और यह ऐसी सामग्री है जो प्रगति-विरोधी विश्व-साम्राज्यवादियों द्वारा उत्पादित की गई है। आपके दफ्तर में बिजली की चाय बनाने वाली केटली है जिसको अधिनियम के अनुसार उच्चतम अधिकारी भी नहीं रख सकते। आपके कमरे का फर्नीचर इतना कीमती है कि उसको आप उस वेतन में जो आपको संघ की ओर से मिलता है कभी नहीं खरीद सकती थीं। कभी कभी आपका प्रेमी शुक्रवार से सोमवार प्रातःकाल तक आपके साथ रहता है जो क्रांतिकारी विवाह-व्यवहार के बिल्कुल विरुद्ध है। आपके बच्चे की देख भाल के लिये आपके पास अपनी ही एक नर्स है। आप⋯"

मैं अभी अपना वाक्य समाप्त भी नहीं कर पाया था कि वह बहुत आवेश में आकर कहने लगी, "यह बिल्कुल झूठ है। तुमने बहुत सी झूठी बातें कही हैं। और तुम अपने उच्चाधिकारी के आचरण पर आक्षेप कर रहे हो। तुम अपना काम नहीं करते और दूसरों पर जासूसी करते-फिरते हो और इस पर अपना महत्व बढ़ाने के लिए झूठ तक बोलने से नहीं झिझकते। तुम प्रगति विरोधी एवं स्वार्थी व्यक्ति हो और अपने उन चिरकालिक कामरेडों की जो तुम्हारे अफसर ह, इज्जत नहीं करते। कामरेड-मंत्री मैं इस व्यक्ति की जांच-पड़ताल चाहती हूं। नववर्ष के त्योहार के एक दो सप्ताह पश्चात् मैं इसके विरुद्ध निर्णय सभा बुलवाऊंगी ताकि इसके वास्तविक विचारों का पता लगाया जा सके। इस बीच में यदि मुझको अपने काम से फुर्सत मिली तो मैं इससे व्यक्तिगत बातें कर लेना चाहती हूं। हम अपने बीच में किसी राष्ट्रवादी जासूस को सहन नहीं कर सकते।"

मंत्री सहमत हो गया किन्तु इस शर्त पर कि मैं जो कुछ काम कर रहा था उसमें विघ्न नहीं पड़ना चाहिए। क्योंकि अचानक ही मुझको अलग कर दिया गया तो काम में बहुत हानि होगी। उसने भांप लिया था कि सहकारिणी ने अभी जो आरोप लगाये हैं उनके पीछे रोष है। उनको शायद यह भी आशा थी कि निर्णय-सभा होने में जो अभी कुछ सप्ताह शेष हैं उनमें वह संभवतः ठण्डी हो जायगी। लेकिन मेरे भीतर मुझको कोई शक्ति बता रही थी कि उसका प्रशान्त होना सम्भव नहीं। मैं यह भी जानता था कि वह मेरी आत्म-कहानी का अध्ययन करेगी और मेरा पुराना रिकार्ड देखेगी जो उसके पास फाइलों में मौजूद था। निस्सन्देह उसको उसमें ऐसी बातें मिल सकती थी जिनको, यदि वास्तव में वह मेरे विरुद्ध निर्णय-सभा कराने पर तुली हुई थीं, वह मेरे विरुद्ध इस्तेमाल कर सकती थी। उस परिस्थिति में मेरे लिए अपने भविष्य के विषय में संदिग्ध हो जाना और यह कल्पना करने लगना कि मुझको रक्षा मन्त्रालय में ले जाया जायगा स्वाभाविक ही था। अब मेरे मस्तिष्क में भाग निकलने का विचार और भी जोर पकड़ गया। अब तक मन में जो बात अस्पष्ट इच्छा के रूप में थी वह अब उत्कटता ग्रहण कर गई और मैं यह अभिलाषा करने लगा कि किसी न किस तरह हांगकांग पहुंच जाना चाहिए।

मुझको बहुत कुछ काम करना है। सायंकाल भोजन के पश्चात्। उसका पता क्या है ?"

लड़की ने उसका पता लिख दिया। तब मैंने धीरे से उससे पूछा, "आखिर यह मामला क्या है ?" लड़की बिना उत्तर दिये ही कमरे को छोड़ गई।

मुझको यांगयांग का पता लगाने में पूरा एक घण्टा लग गया। वुहान के हेंकों विभाग में एक छोटा सा गंदा होटल नदी के किनारे था। उसी में वह ठहरी हुई थी। समाचार समिति में काम करने वाली लड़की पहले ही से वहां मौजूद थी। जब मैं अन्दर पहुंचा तो मुझको देखकर यांगयांग खड़ी हो गई। अब उसके शरीर पर सैनिक यूनिफार्म न थी, बल्कि वह एक पुराना साधारण चोगा पहने हुई थी। उसके बाल बिखरे हुए थे और आँखें रक्ताक्त हो रही थी; चेहरा सूख गया था और ओंठ सिकुड़े हुए थे। उसको देखकर मुझको जो आश्चर्य हुआ उसको मैं अपने बस में न रख सका। मैं बैठ गया। कुछ इधर उधर की विनम्रतापूर्ण बातें करने के पश्चात् वह रोने लगी। जब आंसू रुकते तो वह मुझसे अपनी कहानी कहने लगती। उसकी कहानी इस प्रकार थी :

यांगयांग और "धनिक वर्ग की कुमारिका" पन्द्रहवीं सेना के हेडक्वाटर के दफ्तर में काम करने के लिए रखी गई थी। अभी उनको वहां पहुंचे हुए एक घण्टा भी न हुआ था कि उन्होंने अपने अध्यक्ष के "प्रेमी" को कहते हुए सुना, "क्या बुद्धि-जीवी जोड़ा आया है ! ये दोनों ही निस्सन्देह बहुत पिछड़ी हुई होंगी।" इसके तुरन्त पश्चात् ही उनके विषय में दो सप्ताह की जांच-पड़ताल प्रारम्भ हो गई। दो सप्ताह समाप्त होने के पश्चात् उनको एक निर्णय-सभा के सामने लाया गया और उन पर यह आरोप लगाया गया कि वे अभी तक पिछड़ी हुई हैं। उनके विरुद्ध लगाये गये आरोपों के प्रमाण में कहा गया था कि वे अभी तक ऐसी विनम्रता और शिष्टता बरतती हैं जो एक शुद्ध विचार के कामरेड को नहीं बरतनी चाहिये। (वास्तव में यह उन भोले भाले किसान कामरेडों को धोखा देने की बात ही थी जो छापामार युद्ध में भाग ले चुके थे) ये स्वयं पार्टी सदस्या नहीं और न ही प्रगतिशील हैं ये

एक जमींदार-परिवार की पुत्रियां हैं; दूसरों से बहुत कम बोलती हैं क्योंकि इनको डर है कि ऐसा करने से इनकी विचार-सम्बन्धी वास्तविकता का पता लग जायगा; सप्ताह में एक बार अंडे की सफेदी से अपने सिर के बाल धोती हैं और आवश्यकता से अधिक बार अपने कपड़े। जब खाना आता है तो ये अपने चावल खाने की तूलियों और प्यालों को कागज से साफ कर लिया करती हैं; अगर प्याले में कुछ खराब चावल दिखाई देते हैं तो ये उनको खाती नहीं बल्कि उनको निकाल कर एक तरफ रख देती हैं; जहां जाती हैं दोनों एक साथ रहती हैं; चिरकालिक कामरेडों से ये न तो कुछ सीखना चाहती हैं और न उनके साथ रहना ही।"

इसके पश्चात् उनको एक ट्रेनिंग कैम्प में भेज दिया गया जहां "श्रम द्वारा आत्म सुधार" होता है ऐसा कहा जाता था। उनको प्रति दिन बांस की खपचियों की चटाइयां और फूस की चप्पलें बनानी पड़ती थीं आराम के लिए उनको रविवार को भी छुट्टी नहीं मिलती थी और दिन में काम के घण्टों में तनिक भी अवकाश की आज्ञा न थी। यदि वे एक क्षण के लिये भी आराम करती पाई जातीं तो जो व्यक्ति उनके ऊपर निरीक्षण रखता था वह उनको अपशब्द कहने लगता और उनको निठल्ली बताता था। क्योंकि "निठल्लापन" एक पिछड़े हुये व्यक्ति का प्रतीक माना जाता था, जितनी बार उनको क्षण भर के लिये सुस्ताते देखा जाता था उतनी ही बार उनको पिछड़ेपन के मापदण्ड में और भी नीचे गिरा दिया जाता था। उस कैम्प से छुटकारा पाने के लिए अब दोनों को अधिकाधिक परिश्रम करना आवश्यक हो गया।

छः महीने तक "श्रम-द्वारा आत्म सुधार" करते रहने के पश्चात् यांगयांग और "धनिक वर्ग की कुमारिका" के व्यवहार में कुछ अन्तर आया। अब उन्होंने अपने बालों में कंघी करनी छोड़ दी, कपड़े धोने बन्द कर दिये और खाने की तूलियों और चावलों के प्यालों को साफ करना भी छोड़ दिया। दिन में खाने को मोटा चावल मिल जाता तो उसको वे अपना अहोभाग्य समझतीं और अब कभी कभी सड़ा हुआ चावल खाने से भी न हिच-किचातीं; शाक आदि की तो अब उनकी कोई अभिलाषा शेष रह ही न गई थी। किसी समय उनके हाथ गोरे और मुलायम थे लेकिन अब बहुत कड़े

और काले हो गये थे। आरंभ में बांस की खपच्चियों से उनके हाथों की खाल कट जाया करती थी; जिनसे खून बहने लगता था किन्तु बाद में उनके हाथों में ऐसी ठेट पड़ गई कि अब ऐसा कोई डर न रहा। यांगयांग ने मुझको अपने कठोर, सूखे हुये, ठेटदार, हाथ दिखाए और कहने लगी, "यह देखो ये मेरे हाथ हैं अगर तुम इनमें सूई भी चुभोओ तो खून नहीं निकलेगा"। यह कहकर उसने अपने हाथ अपनी गोद में रख लिये और अत्यन्त दुखभरी दृष्टि से उनको देखने लगी। फिर बोली, "अब तो मानों उनमें जान ही नहीं रही है। मैं कलम पकड़ना चाहूं तो इनसे ठीक ठीक पकड़ नहीं सकती। मेरे लेख को देखने से लगता है जैसे किसी बच्चे ने लकीरें कर दी हों।"

यह सब कुछ तो हो गया किन्तु "श्रम द्वारा आत्मा-सुधार" के बाद भी यांगयांग के विचारों में परिवर्तन नहीं हो सका। बल्कि इसके प्रतिकूल नये शासकों और संघ के प्रति उसके मन में अब गहरी कटुता अपना घर कर बैठी और उसने मन ही मन क्रांति को तिलांजिली देने का निश्चय कर लिया। किन्तु भाग निकलने का अवसर मिलना कठिन था।

एक दिन उसने सुना कि संघ ने निश्चय कर लिया है कि किसी एक चिरकालिक कामरेड से उसका विवाह कर दिया जाय। अब उसने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और इसका कारण अपना "पिछड़ापन" बताया। इस पर संघ के प्रतिनिधियों ने उससे कहा, "यह कोई बात नहीं है। जो चिर-कालिक कामरेड तुम्हारा "प्रेमी" होने वाला है उससे तुम सब कुछ सीख लोगी। यदि तुम उससे विवाह करो तो तुरन्त ही तुमको पार्टी की सदस्यता भी प्राप्त हो सकेगी"। इस प्रस्ताव पर विचार करने के लिए यांगयांग ने कुछ और समय चाहा।

अगले दिन यांगयांग ने लोगों को कहते सुना कि संघ को इस बात पर बड़ी प्रसन्नता है कि उसने उसके दयापूर्ण प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और अब उसका तुरन्त ही विवाह होने वाला है। यह सुनकर वह हतबुद्धि हो गई और, परिणाम की परवाह किये बिना, चिल्लाती हुई कैम्प से निकल भागी और दौड़ती ही गई और दौड़ती ही गई। वह नगर की सड़कों से चिल्लाती हुई निकल गई और जाकर कहीं जंगल में छुप गई। वहां उसको

एक किसान महिला से एक पुराना चोगा मिल गया और खाने के लिये कुछ रूखे सूखे चावल। किसी प्रकार वह एक रेलवे स्टेशन पर पहुंच गई और यद्यपि उसके पास शनाख्ती कागज तथा अधिकार पत्र न था वह वुहान जाने वाली रेल गाड़ी पर सवार हो गई। उसके पास न तो टिकट था और न टिकट खरीदने के लिये पैसे। जब टिकट चैकर आया तो वह उसको देखकर ऐसे रोने चिल्लाने लगी मानो कि वह पगली है और चैकर की कोशिश करने के बावजूद भी रेल गाड़ी से न उतरी। बड़े स्टेशनों पर यात्रियों के शनाख्ती कागजों की जांच पड़ताल करने के लिये जो सैनिक अधिकारी रेल गाड़ी में आये उनके सामने भी उसने वैसा ही किया। जब वह हैंकों पहुंची तो किसी प्रकार वहां समाचार-समिति में काम करने वाली अपनी उक्त सहेली से संपर्क स्थापित कर सकी। उसी ने नदी के किनारे वाले उस होटल में उसको यह कमरा लेकर दिया।

यांगयांग ने जब अपनी कथा समाप्त की तो उसकी आंखों से रोष टपक रहा था। मुझसे रोती हुई बोली, "तुमको मेरी रक्षा करनी पड़ेगी। भगवान के वास्ते जिस प्रकार भी हो मुझको पीपिंग जाने का खर्चा दे दो। वहां पहुंच जाऊं तो वहां मेरे मित्र मुझको अवश्य कहीं न कहीं छिपा लेंगे।"

मैंने उसको आश्वस्त करने का यत्न किया। मैं अब अपनी आंखों से देख रहा था कि उसने पागल बनने का जो ढोंग रचा था वह अब निरा ढोंग नहीं रह गया था। वह ऐसे बड़बड़ा रही थी और उसका शरीर ऐसे ऐंठ रहा था जिसको देखकर डर लगता था और मालूम होता था किसी भयंकर रोग के दौरे में है। मैंने समाचार समिति में काम करने वाली लड़की से कहा कि जब तक कि मैं उसके लिए कुछ रुपया पैसा लेकर न लौट आऊं वह उसके पास रहे।

अपने वुहानवासी मित्र के घर की ओर जाते समय मैं सड़क पर चलता हुआ बहुत व्यथा का अनुभव कर रहा था। मैं नहीं जानता था कि कितने दिन और बेचारी यांगयांग सरकार के गुप्तचरों की दृष्टि से बची रहेगी और न ही मुझको यह अनुमान था कि यदि वह किसी प्रकार पीपिंग जीवित पहुंच गई तो उसको पीपिंग वाले मित्र किस हद तक छिपा कर रख सकेंगे। पर फिर

भी यह लड़की है जो अपनी स्वाधीनता के लिए बाजी लगा रही है और मैं हूं कि अपने मन में इस विषय की केवल अस्पष्ट इच्छा ही लिए हूं, ऐसा मैं सोचता जा रहा था।

मुझसे मेरे मित्र को मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई और उसने बिना किसी झिझक और पूछताछ के मुझको काफी बड़ी मात्रा में रुपया दे दिया, जिसको लेकर मैं यांगयांग के होटल आ गया। मैं उसके लिए पीपिंग यात्रा के निमित्त जितना उचित समझता था उतना रुपया मैंने उसको दे दिया, शेष अपने पास रख लिया। मन्त्रालय को वापस जाते समय मैंने भी अपने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया, "जैसे ही अवसर मिलेगा तैसे ही मैं भी अपनी स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए बाजी लगा दूंगा।"

× × ×

अगले दिन प्रातःकाल उपमन्त्री बहुत सारे कागज लेकर मेरे पास आए और मुझसे आवेशपूर्ण शब्दों में कहने लगे "तनिक इन अर्जियों को तो देखो। सभी क्रांति छोड़कर भाग जाना चाहते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि अब क्या किया जाय। हमने इन अर्जियों में से किसी पर भी विचार नहीं किया है क्योंकि ऐसा करना तो समय ही गंवांना है। किन्तु उनके ऊपर के जो नजदीकी अधिकारी हैं उनके निर्णय को ये लोग स्वीकार भी तो नहीं करते और मन्त्री महोदय तक अपील ले जाते हैं। मैं मन्त्री महोदय को इन छोटी छोटी बातों के लिए कष्ट नहीं देना चाहता यद्यपि यह हो सकता है कि सम्बन्धित व्यक्ति के लिए यह ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात हो। यदि मन्त्री महोदय इन अर्जियों पर गौर न भी करें तो भी उनके पास इस सप्ताह कुछ कम काम है क्या ?"

ऐसा प्रतीत होता था कि मन्त्री ने उपमन्त्री की बात को सुन लिया था और वह एक दम पास के कमरे से मेरे पास आ धमका। "अच्छा, तो वे अपने उच्च अधिकारियों के निर्णय को भी स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। क्या ये नय कामरेड हैं ?" उपमन्त्री ने कागज पर उंगली दौड़ाई और कहा, "हां सभी, कामरेड मन्त्री, सभी। इतना ही नहीं ये सब केवल एक वर्ष ही क्रांति में रह चुके हैं।"

"इसका अर्थ तो यह है कि उन सभी के भविष्य का निर्णय करने का अधिकार मेरी सहकारिणी को है।" यह कहकर मन्त्री ने मुझको सम्बोधित किया और कहा, "उनको टेलीफोन करो और कहो कि मुझसे फौरन आकर मिलें।"

जब हम उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे उस समय उपमन्त्री ने हमसे कहा कि "ये अर्जियां ऐसे शिक्षित व्यक्तियों की हैं जो क्रांति में इस आश्वासन पर आये थे कि उनको एक वर्ष सेवा करने के पश्चात् छुट्टी मिल जायगी।" एक कागज को हाथ में उठाकर वे बोले, "यह एक साहब हैं जो जिंग ह्वा विश्व-विद्यालय में बी० ए० में पढ़ते थे, इमारत आदि बनाने की इंजीनियरी। यह क्रांति में इसलिए भरती हो गये थे कि उनको एक साल में फिर अपना अध्य-यन जारी करने का अवसर मिल जायगा। एक सांस्कृतिक टोली के साथ यह एक बिजली मिस्तरी का काम कर चुके हैं, कहते हैं कि यदि वह अब यहां से न चले गए तो जो कुछ इंजीनियरिंग का काम सीखा था वह उसको भूल जायेंगे। उनकी शिकायत है कि बिजली-मिस्त्री का काम करके उनको अपने ज्ञानार्जन में कोई सहायता नहीं मिलती।"

"क्या उसकी खोपड़ी में यह बात नहीं आ जकती कि एक बार जो व्यक्ति क्रांति में आ जाता है वह सदा के लिए वहीं का हो रहता है। जहां तक हमारा सम्बन्ध है हमारा काम तो उससे चलता ही है," कमरे में इधर उधर घूमते हुए मन्त्री ने कहा। उसी समय उसकी सहकारिणी ने प्रवेश किया। मन्त्री ने उसको सम्बोधित करते हुए कहा, "कामरेड, हमारे सामने यह एक ऐसा मामला आ गया है जिस पर तुमको विचार करना चाहिए, मुझको नहीं। किन्तु यदि तुम आज्ञा दो तो इस पर मैं ही निर्णय करना चाहता हूं, क्योंकि मैं एक वर्षीय क्राँतिकारियों के लिए एक उदाहरण बनाना चाहता हूं।"

"जैसी आपकी इच्छा कामरेड, मन्त्री", सहकारिणी ने कहा। कमरे में जब वह इस ओर से उस ओर जा रही थी उस सयय मुझको तीक्ष्ण दृष्टि से देखती गई।

उक्त एक वर्षीय क्रांतिकारी को मन्त्रालय में हाजिर करने के लिए एक

सन्तरी को भेजा गया। हरेक का ऐसा भाग्य कहां था कि उसके ऊपर स्वयं मन्त्री महोदय को निर्णय करना पड़े। मन्त्री महोदय की सहकारिणी की कृपा से कुछ सप्ताह पश्चात् मुझको भी ऐसा सौभाग्य मिलने वाला है, मैं सोचने लगा।

वह नवयुवक अन्दर दाखिल हुआ। मन्त्री, उपमन्त्री और मन्त्री की सहकारिणी को सोफा पर बैठे हुए देखकर उसने उचित रूप से अभिवादन किया और अपनी कहानी शुरू कर दी। सन्तरी उस समय मौन हुआ द्वार पर खड़ा था और मैं मेज पर बैठा हुआ कार्यवाही लिख रहा था। जब उक्त युवक ने अपनी बात समाप्त कर ली तो मन्त्री ने बहुत शुष्कतापूर्वक कहा, "क्रांति समय और स्थान की मर्यादा को स्वीकार नहीं करती। जब तक कहीं भी साम्राज्यवाद रहेगा क्रांति चलती ही रहेगी। वह सम्पूर्ण होने से पहले बंद नहीं हो सकती।"

"किन्तु मुझसे तो यह वायदा किया गया था कि मुझको क्रांति में केवल एक वर्ष तक ही सेवा करनी पड़ेगी। यही कारण था कि मैं उस समय भरती हो गया था", उक्त युवक कहने लगा।

"तुमको यह तो अपनी खोपड़ी से सोच लेना चाहिए था कि इस प्रकार के वायदों पर अमल नहीं किया जा सकता।"

"किन्तु मेरे ऊपर जो मेजर हैं वे स्वयं एक इंजीनियर हैं और मुझको एक साल अपना अध्ययन समाप्त करने के लिए चाहिए ही। मुझको एक वर्ष की छुट्टी दे दीजिए, तब मैं इंजीनियर बनकर क्रांति के लिए कहीं अधिक लाभप्रद सिद्ध हूंगा। आज तो बिजली-मिस्त्री के नाते मैं बल्ब लगाने और बिजली के तारों को सीधे करने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं करता हूं।

"तुम क्रांति में आ गए हो और यह तुम्हारे विषय में आखिरी बात है" संघ तुमको जो भी आज्ञा देगा तुमको माननी पड़ेगी। तुब क्रांति में क्या करते हो और कैसे करते हो इस सबका फैसला संघ के हाथ में है। मुझको लगता है कि तुम बहुत ही स्वार्थी व्यक्ति हो।"

"किन्तु श्रीमान् क्रांति के लिए मेरे जैसा व्यक्ति क्या महत्व रखता है। जिस प्रकार का काम मैं कर रहा हूं उसको तो कोई भी कर सकता है। बड़ी कृपा होगी आपकी यदि आप मुझको एक साल के लिए छुट्टी दे सकें।"

"इसमें क्या सन्देह है कि क्रांति के लिए तुम बड़े महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं हो, किन्तु तुम जैसे पिछड़े हुए व्यक्ति के लिए तो क्रांति महत्वपूर्ण है।"

अब एक वर्षीय क्रांतिकारी तनिक और जोर के साथ अपने प्रार्थना-पत्र के विषय में अनुनय विनय करने लगा। इस पर उपमन्त्री ने सन्तरी को इशारा किया जो तुरन्त ही कहीं चला गया और कुछ क्षण पश्चात् ही तीन मोटे ताजे कामरेडों को अपने साथ ले आया। युवक की वाणी में इस समय जो उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आतुरता थी मैं उसको भांप रहा था। अन्त में मन्त्री महोदय खड़े हो गये और क्रोध के साथ चिल्ला कर बोले, "मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि तुम जैसे अबुद्ध व्यक्ति को क्रांति में भरती क्यों होने दिया गया"।

इस समय तक युवक काफी आवेश में आ चुका था इसलिए बहुत कटु वाणी में बोला, "यही तो मैं भी नहीं समझता हूं। मैंने तो कुछ ऐसे लोगों की बात पर भरोसा कर लिया था जिन पर मुझको भरोसा नहीं करना चाहिए था क्योंकि वे झूठे हैं"।

',क्या कहा तुमने?"

"यही कि आप सब लोग झूठे हैं। और मुझको इस बात का खेद है कि मैं क्रांति में सम्मिलित हुआ।"

यह सुनकर मन्त्री महोदय तेजी से कमरे में इधर उधर घूमने लगे, "क्रांति में सम्मिलित होने पर तुमको खेद क्यों है"?

"क्योंकि क्रांति पाप है और क्योंकि अब इतनी देर बाद मुझको इस तथ्य का पता चल गया है।"

मन्त्री क्रोध के मारे भौंकने सा लगा, "कुछ देर में यह बात समझे हो ? तुम भ्रष्टाचारी, क्रांति विरोधी, प्रतिक्रियावादी, नारों द्वारा क्रांति का अपमान करने का साहस करते हो! सन्तरी ले जाओ इसको"।

फिर उपमन्त्री और अपनी सहकारिणी की ओर मुड़ कर उसने कहा, "देख लिया आपने कि इन पर अंकुश न रखा जाय तो क्या परिणाम होता है ? तनिक ढील दीजिए और ये तुरन्त अपने विध्वंसकारी विचारों पर अमल करना शुरू कर देंगे। यह तो देखा आपने कि नये कामरेडों से क्यों निरन्तर उनके विचारों को व्यक्त करवाते रहना चाहिए ताकि उनको और भी संशोधित किया जा सके"। मेरी ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "इस चिट्ठी को नीचे ले जाओ"। यह कहकर उसने एक चिट्ठी लिख दी जिसमें अनेक, भयंकर, प्रतिक्रियावादी अपराधों का उल्लेख था। इसके पश्चात् उसने आज्ञा दे दी कि बन्दी को उक्त पत्र के साथ रक्षा मन्त्रालय में ले जाओ। रक्षा मन्त्रालय में ही तो "देशद्रोहियों" के मुकदमे हुआ करते थे। उसके पश्चात् उसने उपमन्त्री और अपनी सहकारिणी से कहा, "यदि १०० व्यक्तियों को मुट्ठी में रखना चाहते हो तो बस एक का खून कर दो। यह व्यक्ति तो भयंकर सिद्ध हो सकता था"। यह कहकर वह जोर से अपने कमरे का द्वार बन्द करके, अन्दर चला गया।

जब मन्त्री महोदय की सहकारिणी भी चली गई तो मैंने उपमन्त्री से बहुत ही स्पष्ट ढंग से पूछा, "क्या आपकी राय में उसके साथ न्याय हुआ है"? उन्होंने अपने कंधे मटका दिए और धीमी वाणी में कहा, "कामरेड ऐसा अशुद्ध प्रश्न नहीं करना चाहिए। अपने मस्तिष्क और हृदय को ढीठ बना लो। मुझको तो यह देखकर आश्चर्य हो रहा है कि तुम जैसा समझदार आदमी अपनी साम्प्रतिक अवस्थाओं की अवहेलना करके अभीतक न्याय और अन्याय के विषय में प्रश्न कर सकता है। एक साल तक तुम क्रांति में रह चुके हो; इस प्रकार का प्रश्न करना, या ऐसी भावुकता दिखाना, तुम्हारे लिए हितकर नहीं है"।

"वास्तव में मैं तो यह जानने की कोशिश कर रहा हूं कि क्या मेरे साथ भी ऐसा ही होगा ?"

"हूं, तुम्हारे साथ ! भगवान के वास्ते सहकारिणी के प्रति सम्मान दिखाने का यत्न करो। मानोगे न मेरी बात ? अगले कुछ दिनों में उसको क्रोधित करने का यत्न न करना। सम्भवतः वह भूल जायगी कि तुमने गत सभा में उसको परेशान किया था। इधर मैं जैसे ही देखूंगा कि उसका मिजाज ठीक है उससे तुम्हारे पक्ष में कुछ कहने की कोशिश करूंगा।" यह कह कर वह सूखी हंसी हंस दिये और बोले, "कैसा दुर्दिन होगा वह जब मुझको तुम्हारे स्थान में किसी और को रखना पड़ेगा !"

"जब किसी को रक्षा मन्त्रालय में भेजते हैं तो उस पर क्या बीतती है," मैंने पूछा।

"हमारे पास इसके अतिरिक्त भी ऐसे अधिक महत्वपूर्ण विषय हैं जिन पर बातें की जा सकती हैं। इससे तो यह कहीं अच्छा है कि तुम बांटे जाने के लिये एक ऐसा पर्चा लिखो जिसमें किसी ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा की जाय जो क्रांति में अपने आपको मिले आश्वासन से अधिक दिन तक सेवा करता रहा हो। साधारणतः तुम जो कुछ लिखते हो यह पर्चा उससे कहीं अधिक प्रभाव-कारी होना चाहिये। आज गुरुवार है तुमने जो नयी मनोविनोद योजनाएं बना रखी हैं उनको सोमवार तक समाप्त कर दो। ठीक है न ? मन्त्री महोदय और मैं कहीं देहात में छुट्टी मनाने जा रहे हैं। वहां कुछ दूसरे मन्त्रियों के साथ एक कांफ्रेंस करनी है। मैं विशेष प्रकाशन-अध्यक्ष और उनके सहकारी को नानकिंग भेज रहा हूं ताकि वे वहां से अपने आगामी बुलेटिनों के लिए कुछ सामग्री ला सकें। कल सम्भवतः दो सैनिक पास आयेंगे। यदि वे दोनों व्यक्ति आ जायं तो ये पास उन्हें दे देना और उन्हें कह देना कि सोमवार को मैं उन पर हस्ताक्षर कर दूंगा। इतनी देर तो वे ठहर ही सकते हैं। यदि कोई जल्दी का काम आ गया तो तुम अपने आप उसको निपटा ही लोगे, यह मैं जानता हूं। शायद तुमको रविवार को भी काम करना पड़ेगा तब कहीं जाकर तुम्हारी सार्वजनिक मनोविनोद सम्बन्धी योजना समाप्त हो सकेगी। किन्तु तुम्हारे लिये इसका कोई और प्रतिकार कराने का यत्न करूंगा। और हां याद आ गई एक बात, आज दोपहर बाद वुहान में नये कामरेडों का एक जत्था जा रहा है। विचार यह था कि मैं उनको जाकर प्रोत्साहित करूं किन्तु आज दोपहर से पहले और दोपहर के बाद

मैं किसी व्यक्तिगत काम में व्यस्त रहूंगा, क्योंकि रात को बाहर जा रहा हूं। क्या यह काम भी मेरे लिये कर सकोगे ? बस दो घण्टे के लिए तुमको वहां जाना पड़ेगा। जो कामरेड हमारी क्रांतिकारी बचत का संरक्षक है, क्या नाम है उसका ? वह कल ही तो दक्षिण की यात्रा से लौटा है ? वह तुमको अपने ट्रक में स्टेशन पहुंचा देगा। तुम चार पांच सैनिक ट्रकों के साथ इस जत्थे को लेकर वापस आ जाना। समझ गये न ?"

मैंने उस स्मरण-पत्र को जिस पर मैं उनकी आज्ञाएं लिखता रहा था उनको पढ़कर सुना दिया। वे सुनकर चल दिये और कहते गये कि वह सोमवार से पहले नहीं आ सकेंगे।

उनके चले जाने के कोई १५ मिनट पश्चात् मन्त्री-महोदय की सहकारिणी ने मुझको टेलीफोन किया और कहा कि मेरे जो अशुद्ध विचार हैं उनके विषय में वह मुझसे बातें करना चाहती हैं। मैंने टेलीफोन से ही जबाब दिया कि मैं तुरन्त ही नहीं आ सकता क्योंकि उपमन्त्री के लिये मुझको बहुत कुछ काम करना था। उसको सन्तुष्ट करने के लिये मैंने उसको अपना स्मरण-पत्र पढ़कर सुना दिया। "किन्तु मुझको तो तुमसे बातें करनी हैं ताकि निर्णय सभा से, जो अगले सप्ताह होने वाली है, पहले ही तुम्हारे विचारों का विश्लेषण किया जा सके।" उसने रोषपूर्ण वाणी में कहा और बोली, "मैं तुम्हारे अब तक के अशुद्ध विचारों को जानती हूं। अब तो मैं केवल यह जानना चाहती हूं कि तुम कहां तक अपनी भूलों पर पश्चाताप करने को तैयार हो"।

मैंने शुष्कतापुर्वक उत्तर देते हुए कहा, "कामरेड, सोमवार के बाद आपको जैसी सुविधा होगी मैं वैसा करूंगा। हां रविवार को भी दोपहर के बाद या शाम को आप मुझसे मिलने को कहें तो मैं आ सकता हूं"।

उसने खिन्न होकर उत्तर दिया, "नहीं उस समय मैं व्यस्त रहूंगी। तुम सोमवार को दोपहर के बाद ही मुझसे मिलना"।

ठीक उस समय मन्त्री अपने कमरे से चल दिये। वह हैट लगाये हुए थे

और कोट पहने हुये थे और उनका 'ब्रीफ' केस उनकी बगल मे था। चलते हुए उन्होंने मुझसे पूछा, "कौन कर रहा था टेलीफोन ?" "आपकी सहकारिणी, कामरेड मन्त्री" मैंने कहा। "मै उनसे बात करूगा" यह कहते हुए वह लौटकर मेज पर आ बैठे और टेलीफोन मुझसे लेकर कहने लगे, "सुनो, मै अब जा रहा हू और सोमवार से पहले वापस नही हूगा। यदि कोई विशेष बात हो तो तुम जानती हो कि मै कहा हूगा।" यह कह कर उन्होने टेलीफोन बन्द किया और तेजी से कमरे के बाहर चले गये। अब इस कमरे मे मै था, मेरे विचार, और मेरा काम।

× × ×

मन्त्री के चले जाने के आधे घण्टे पश्चात् चौथी फील्ड आर्मी हेडक्वार्टर से एक अर्दली आ पहुचा और प्रकाशन-विभाग के अध्यक्ष और उनके सहकारी के लिये दो पास मुझको दे गया। अर्दली के चले जाने के बाद मै सोचने लगा कि कितनी लज्जा की बात है कि यदि ये आधे घन्टे पहले आ जाते तो उपमन्त्री उन पर हस्ताक्षर कर देते और उक्त दोनो कामरेडो को नानकिंग का प्रस्थान सोमवार तक स्थगित न करना पड़ता। पर तब ज्वाला की भाति एक विचार मेरे मस्तिष्क मे भभक उठा और उससे मेरे हृदय और मस्तिष्क मे एक भयकर आच सी पैदा हो गई। रह रह कर अब एक ही शब्द मेरे दिमाग मे था "अब" अब अब," मेरे हाथ मे ऐसे टिकट है जिसको लेकर मै स्वाधीनता प्राप्त कर सकता हू, मै सोचने लगा। मैंने उन पासो को ध्यान से देखा। उनपर मोहर लगी थी और हेडक्वार्टर के किसी कर्नल के हस्ताक्षर थे। अब केवल उपमन्त्री ही के हस्ताक्षरों की और आवश्यकता थी। कामरेडो का नाम और कहां उनको जाना है यह भरने के लिये पासों पर स्थान खाली था। उनमे से एक पास को लेकर कोई भी व्यक्ति चीन मे बिना किसी दिक्कत के यात्रा कर सकता था क्योकि इन पत्रो का महत्व शनाख्ती कागजों से कहीं अधिक था। इनको लेकर यात्रा करने के लिये और किसी प्रकार के अधिकार पत्र की आवश्यकता नही थी। सैनिक अधिकारियो अथवा सरकारी अधिकारियो के लिये ही इस प्रकार के पास होते थे।

"मन्त्री और उपमन्त्री सोमवार से पहले नही लौटेंगे। मन्त्री की सहकारिणी शुक्रवार से सोमवार के प्रातःकाल तक अपने "प्रेमी" के साथ व्यस्त

रहेगी। ऐसा मैं सोचने लगा। मैं यह जानता था कि सहकारिणी जी के लिये सप्ताह के अन्तिम दो दिन बहुत पवित्र हैं और उन दिनों में वह अपने सुखार्जन में किसी भी काम को विघ्न नहीं डालने देतीं। मेरे विभाग के अध्यक्ष अभी शंघाई गये हुए हैं और मेरे साथ जो अन्य दो सहकारी काम करते थे वे सप्ताह भर कार्यालय में दिखाई ही नहीं देते। सप्ताह के अन्तिम दो दिनों में तो कभी वे वहां आते ही नहीं हैं। क्योंकि उन्हीं दिनों वे भी अपने "प्रेमियों" के साथ आनन्द किया करते हैं। तब शुक्रवार की रात से बढ़कर स्वाधीनता खोज के लिये और कौन सा समय हो सकता है?" मैं अपने आपसे कहने लगा। मेरी इस योजना में दो त्रुटियां थी। शनिवार की सुबह को ६ बजे से ८ बजे तक किसी वाद-विवाद सभा में भाग लेना था और यदि प्रकाशन-विभाग का विशेषाध्यक्ष अथवा उसका सहकारी कभी सप्ताह के अन्तिम दिनों में कार्यालय में आ पहुंचा और अपना पास मांगने लगा तो उसका भी तो कोई प्रबन्ध होना ही चाहिए था। किन्तु दूसरी जो कठिनाई थी उसका मैंने तुरन्त ही निराकरण सोच लिया। मैंने उक्त चिरकालिक कामरेड को टेलीफोन करके सूचना दे दी कि मुझको बहुत खेद है कि मन्त्री और उपमन्त्री के बाहर चले जाने और सोमवार से पहले न लौटने की संभावना के कारण वह और उनके सहकारी सोमवार की सुबह या दोपहर से पहिले अपने पास न प्राप्त कर सकेंगे।

तब बहुत तेजी के साथ मैंने उपमन्त्री के हस्ताक्षरों का कोई नमूना ढूंढ निकालने की कोशिश शुरू कर दी। आध घण्टे तक मैं जाली हस्ताक्षर बनाने का अभ्यास करता रहा और तब कहीं उस कार्य में निपुणता प्राप्त कर सका। मैंने पहला पास उठा लिया और मन पक्का करके उसमें प्रकाशन विभागाध्यक्ष का नाम लिख दिया और निर्दिष्ट स्थान की जगह "केन्टन" भर दिया और नीचे उपमन्त्री के हस्ताक्षर कर दिये। यात्रा में अपने लिये कृत्रिम महत्व प्राप्त करने के लिये मैंने एक नौकर का नाम भी लिख दिया जो मेरी काल्पनिक योजना के अनुसार कुछ देर तक मेरे साथ सफर करने वाला था और रेलगाड़ी से सैनिक पुलिस के आने से पहले ही कहीं रास्ते में उतर जाने वाला था। दूसरे पास पर मैंने अपना नाम लिख दिया और निर्दिष्ट स्थान की जगह "पीपिंग" भर दिया।

दोपहर हुए एक घण्टा हो चुका था। मैंने अर्दली को बुलाया और उसको आज्ञा दे दी कि वह जहां भी हो उस चिरकालिक कामरेड का पता लगाये जिसके पास "बचत" जमा थी और उसको तुरन्त मेरे पास भेज दे। वह कामरेड १० मिनट में वहां आ गया। उसका चेहरा, हाथ और यूनिफार्म सभी तेल में सने थे। उसको देखकर मैंने सहज भाव से हंसते हुए कहा, "मालूम होता है कि आप बहुत व्यस्त हैं" "निश्चय ! इस पुराने छकड़े में तेल और ग्रीज़ लगाता रहा हूं अब तुमको क्या सूझी है" उसने मुस्कराते हुए पूछा भी।

"कुछ नये कामरेड दोपहर बाद वाली किसी रेल गाड़ी से आ रहे हैं। उपमन्त्री उनका स्वागत करने के लिये जाने वाले थे और उनका धैर्य और साहस बढ़ाने के लिये वहां भाषण भी करने वाले थे। किन्तु वे तो कहीं देहात में चले गये हैं और अब मुझको ही उनका स्थानापन्न बनना है। वे कह गये थे कि आप मुझको रेलवे स्टेशन तक पहुंचा देंगे, यद्यपि उन लोगों को अपने "ट्रक" में बैठा कर यहां लाना आपके लिये आवश्यक नहीं है वहां पहले ही से उनकी प्रतीक्षा में कुछ सैनिक ट्रक खड़े होंगे।"

"अच्छा अगर आप २० मिनट रुक जायं तो मैं जो कुछ काम कर रहा हूं वह समाप्त हो जायगा।"

"मैं आपको मन्त्रालय के सामने २० मिनट बाद मिलूंगा।"

"अच्छा" यह कहकर वह चला गया।

रेलवे स्टेशन की ओर जाते हुये मैंने ड्राइवर कामरेड से ऐसे ढंग से मानो मैं संयोगवश ही ऐसा कर रहा हूं, मैंने हांगकांग और केन्टन के बारे में कई प्रश्न पूछ लिये। वह अपनी यात्रा के विषय में बहुत बातें बनाया करता था। वह मुझको अनेक प्रकार से सूचनाएं देने लगा। उदाहरणार्थ केन्टन में आठ घण्टे का करफ्यू है। स्वातंत्र्य सेना के कामरेडों को सैनिक अथवा स्थानीय पुलिस बहुधा सड़क पर ही रोक अधिकार-पत्र मांग लिया करती है।"

जब हम उक्त व्यस्त रेलवे स्टेशन में दाखिल हुये तो नये कामरेडों को लेने वाली रेल गाड़ी अभी नहीं आयी थी और कहीं कोई सैनिक ट्रक भी दिखाई नहीं देता था। मैंने कहा, "ऐसा मालूम होता है कि मुझको बहुत देर तक यहां प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इसलिये आप चाहें तो वापस चले जांय। यदि मैं भोजन के समय वहां न पहुंचा तो आप उन लोगों से कह दीजिये मैं सैनिकों के सहयोग की प्रतीक्षा करता रह गया हूं।"

"निश्चय" यह कहकर वह हंसा और अपने शोर मचाते हुए गियरों को लगाकर ट्रक को भगा ले गया। उसके चले जाने के बाद मैं उस खिड़की पर गया जहां सैनिक यातायात टिकट कार्यालय लिखा हुआ था और पीपिंग जाने के लिए एक टिकट मांग लिया। मेरे पास जो पास था मैंने वह खिड़की के पीछे खड़े कामरेड को दिखा दिया। मैंने अनेक फार्मों आदि पर हस्ताक्षर कर दिये और एक जगह यह भी लिखना पड़ा कि "मैं प्रचार-विभाग के उपमन्त्री की आज्ञा से सरकारी काम करने पीपिंग जा रहा हूं"। तब मुझको वह महत्वपूर्ण रसीद मिल गई जिसको मैं अपनी यात्रा के लिये कवच के रूप में इस्तेमाल करने वाला था। इसके पश्चात् मैं एक साधारण रेलवे टिकट देने वाली खिड़की पर गया और वहां से केन्टन का टिकट खरीद लिया।

मुझको पता लगा कि कामरेडों को लाने वाली गाड़ी वुहान में एक घण्टा देर से पहुंचेगी। अभी तक सैनिक ट्रक नहीं आया था। यद्यपि मैंने भारी अमरीकन सैनिक कोट पहन रक्खा था मुझको सर्दी लग रही थी। गर्मी पाने के लिये मैं तेजी से इधर उधर टहलने लगा और बहुत सी बातों के विषय में अपने मन में उधेड़ बुन करने लगा: "किस प्रकार बचकर निकलना होगा, क्रांति में एक साल काम करने का जो अनुभव रहा है, उसका मेरे लिये क्या महत्व है; मेरा अतीत जीवन कैसा था; चीन के भाग्य में क्या बदा है; जो नये लोग आने वाले हैं वे कैसे हैं; सर्दी कैसी पड़ रही है; किसी समय मेरा क्या आदर्श था" आदि आदि। ऐसे समय में किसी की क्या मनोदशा होती है उसको शब्दों द्वारा कैसे व्यक्त किया जा सकता है? मैं याद करने लगा कि कभी मेरी यह आकांक्षा थी कि जब मैं बड़ा हो जाऊंगा तो सम्पादक बनूंगा। तब मैं अपनी किशोर अवस्था में ही था; मैंने एक संवाददाता को

एक पत्र लिखकर बताया था कि मेरी ऐसी आकांक्षा है और उससे पूछा था कि उनकी इस विषय में क्या राय है। मुझको जब यह याद आया कि उस संवाददाता ने मुझको बड़ा प्रोत्साहनात्मक उत्तर दिया था तो मुझको यह भी याद आ गया कि उससे मुझको असीम आनंद हुआ था, और उस रेलवे स्टेशन में जहां इतनी सर्दी लग रही थी मन में कुछ गर्मी सी आ गई। मैं सोचने लगा कि आगे चलकर मैं संवाददाता बना और एक छोटे से समाचार पत्र का सम्पादन भी करने लगा जो बहुत से लोगों की प्रशंसा का विषय बना। तब अपने आदर्शों के लिये मुझको अपना परिवार छोड़ना पड़ा था और अनेक भौतिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। किन्तु जब नये समाज की स्थापना हुई तो उसके लिये मुझको अपने आदर्शों को भी उसी प्रकार त्यागना पड़ा बिल्कुल उसी प्रकार जैसे कि मुझको अपनी पीकिंग विश्व-विद्यालय वाली नौकरी को त्यागना पड़ा था। क्रांति के लिये व्यक्तिगत इच्छाओं, अभिरुचियों तथा व्यक्तिगत आदर्शों का उतना ही महत्व था जितना कि किसी जमींदार की जमीन का। ये बातें भी तो जनता के विरुद्ध पाप ही का प्रतीक मानी जानें लगी थीं।

एक वर्ष से अधिक समय तक मैं जिस भयंकर यन्त्र में फंसा रहा उसमें पड़कर मुझको विदित हो गया कि व्यक्ति के व्यक्तित्व और आत्मीयता को नष्ट करना ही नए समाज का ध्येय है। नित्य-प्रति मैंने उन सभी बातों को अपने आप से छीने जाते देखा जिनको कभी मैं अपनी समझता आया था। मैंने यह भी देखा कि मेरी ही तरह सहस्रों और भी व्यक्ति थे जो इसी प्रकार के कष्ट और क्षति का अनुभव कर रहे थे। दूसरी ओर, मुझको मन्त्री और उपमन्त्री का विश्वास प्राप्त था। मुझको अकेले कमरे में सोने की डिवीज़न-स्तर की सुविधा उपलब्ध थी। मेरे तन पर एक अमरीकन सैनिक कोट था जो इतना लम्बा था कि उसमें मेरी जनतन्त्रीय सेना की यूनिफार्म छिप जाया करती थी। पुराने समाज में जिस काम के मिलने का मुझे प्रायः कोई अवसर न था अब मैं वही काम यहां कर रहा था। मुझ पर जो दायित्व-भार था उसको प्राप्त करने का सौभाग्य तो बहुत से चिरकालिक कामरेडों को भी प्राप्त नहीं था। यथा समय यदि मैं निर्णय सभा की अग्नि परीक्षा से बच निकलता तो यह बिल्कुल सम्भव था कि मैं क्रांति में बहुत बड़ा आदमी बन जाता और पार्टी की नियमित सदस्यता प्राप्त कर लेता।

किन्तु तब क्या और कोई "निर्णय-सभा" न होती ? क्रांति में कोई महत्वपूर्ण पद प्राप्त करना कौन से महत्व की बात है जबकि हर घड़ी एक व्यक्ति को अपने भविष्य के विषय में डर लगा रहता है? क्या क्रांति में सफलता प्राप्त करने के लिए आत्म-सम्मान, आत्म-स्वाधीनता और प्रेम के बलिदान की कीमत देना न्यायोचित है? क्या मैं कभी अपने मस्तिष्क की नैसर्गिक प्रक्रियाओं को तिलांजिली दे कर नये समाज में पाये जाने वाले व्याघातों को स्वीकार कर पाता? क्या मैं अपनी भावनाओं का परित्याग कर देता, केवल इसलिए कि संघ की यह इच्छा थी कि मैं "सही" भावनाओं को "सही" समय पर ही व्यक्त करूं? संक्षेप में क्या मैं अपनी उस मानवता से हाथ धो सकता था जो मेरे हृदय में अभी तक जीवित थी ?

ऐसे विचारों का सूर्य ढलते समय उस रेलवे स्टेशन पर मन में आना एक भयंकर अनुभव था। सर्दी और डर के कारण मेरे दांत कड़कड़ा रहे थे। किन्तु मैंने यह निश्चय कर ही लिया था कि ऐसे जीवन से जिनमें मनुष्यत्व और पशुत्व का अन्तर मिट जाय मृत्यु कहीं अधिक श्रेयष्कर है। नए कामरेडों की गाड़ी स्टेशन पर आ खड़ी हुई। मैं स्टेशन के बाहर गया और प्लेटफार्म पर लगभग १०० व्यक्तियों को गाड़ी से उतरते हुए देखने लगा। एक घुना हुआ सा चिरकालिक कामरेड उनको इस प्रकार पंक्ति में खड़ा कर रहा था जैसे कि कोई ग्वाला अपनी गाय भैंसों को खड़ा किया करता है। मैं उसके पास गया और उससे पूछा, "क्या आप ही इस दल के निरीक्षक हैं"?

उसने मेरे अमरीकन सैनिक ओवरकोट को देखा और सम्भवतः तुरन्त ही यह परिणाम निकाल कर कि मैं क्रांति में उससे कोई अधिक बड़ा व्यक्ति हूं, वह कुछ गंवारू ढंग से मुझको सम्मान दिखाने के लिए खड़ा हुआ और बोला, "जी हां कामरेड।"

"मैं प्रचार मन्त्रालय की ओर से आप लोगों के वुहान प्रवेश पर अभिवादन करने आया हूं। किन्तु अभी तक सैनिक ट्रक नहीं आये हैं, इसलिए आपको स्टेशन में रहकर ही उनकी प्रतीक्षा करनी होगी।"

अपने अपने झोले उठाकर वे आपस में बातें करते हुए खटाखट

स्टेशन पर चले गए। जब वे सभी लोग अन्दर पहुंच गए तो मैंने एक बेंच पर खड़ा होकर सबको खामोश हो जाने के लिए कहा और "कामरेड" कहकर उनको सम्बोधित किया। लगभग २० मिनट तक मन्त्रालय की परम्परा के अनुसार मैं भाषण करता रहा। उन लोगों में जो आन्दोलनकारी थे वे अपने काम की देख भाल बड़े अच्छे ढंग से कर रहे थे क्योंकि समय समय वै जयघोष कराने और स्टेशन को अपने नारों से गुंजाते रहे। मेरे भाषण के बीच बीच में इस प्रकार जो रुकावट हो जाया करती थी उस समय मैं व्यंगपूर्ण ढंग से मन ही मन यह कहे बिना न रह सका कि क्रांति में मुझ जैसा व्यक्ति भी किसी भी प्रवक्ता से दो गुणा अधिक प्रभावशाली प्रवक्ता हो सकता है और यह कि सम्भवतः बुहान में तो जनरल लिन पियाओ को छोड़कर मुझ जैसा प्रभाव पैदा करने वाला दूसरा कोई कामरेड नहीं है। मुझको यह जान कर अजब सा लग रहा था कि मैं भी क्रांतिकारी भाषण कला में दक्षता प्राप्त कर गया हूं और मैं भी उन नारों और शब्दों को जिनको सुनकर किसी समय मेरा जी खराब हो जाया करता था, प्रयुक्त करके ऐसा नशा पैदा कर सकता हूं। नए कामरेड थोड़े से नन्ही सी आयु के व्यक्ति थे और वे मेरी ओर उसी प्रकार आंखें लगाए देख रहे थे जैसे कि किसी समय मैं अपने चीनी ईलिया एहरनबर्ग की ओर देखता रहा हूंगा। पहली बार उनके दर्शन करते समय मुझको भी ऐसा ही अनुभव हुआ था। उधर उस बेचारे को भी हम लोगों को भाषण देते समय ऐसा ही कष्ट हुआ होगा जैसा कि मुझको अब हो रहा था। उन युवकों को आशाभरी दृष्टि से अपनी ओर देखते हुए मुझको यह आश्चर्य करना ही पड़ रहा था कि क्यों मुझको क्रांति में इतना ऊंचा पद पाने के योग्य समझा गया। एक साल के पश्चात् क्या उसमें से कोई ऐसा व्यक्ति बचा रहेगा जो मेरी ही तरह विचार रखता होगा? कौन सा उनमें से होगा जो एक साल पश्चात् मेरी ही तरह क्रांति से भाग जाने की तैयारी कर रहा होगा? वे सर्दी से पैदा होने वाली कंपकपी को रोकने में वास्तव में समर्थ थे या वे भी मेरी ही तरह अपने हृदय में काई डर छिपाए हुए हैं? इसी प्रकार के प्रश्न थे जो उस समय मैं अपने आप से कर रहा था।

मेरी वक्तृता के पश्चात् हम लोग ट्रकों की प्रतीक्षा में स्टेशन पर गए। नए कामरेड गपशप कर रहे थे और बहुत आदर्शपूर्ण ढंग से यह वाद विवाद करने में लगे थे कि युद्ध के पश्चात् उनमें से कौन क्या करेगा। कुछ उनमें से

कह रहे थे कि वे अपने स्कूल वापिस चले जायगे, तो दूसरे ऐसे थे जो लेखन कला चित्रकारी अथवा नाटक कला को अपना आदर्श बनाये हुए थे। कुछ ऐसे लोग भी थे जो यह भी कह रहे थे कि जब चीन में शान्ति हो जायगी तो वे अपना सुखी पारिवारिक जीवन चला सकेंगे; तब उनको कितना सुख होगा? एक युवा लड़की दूसरी एक समवयस्का युवती से कह रही थी, "युद्ध समाप्त होने पर मैं तुमको अपने घर बुलाऊंगी। मेरी मां मेरी सहेलियों को बड़ा चाहती है"। एक कामरेड जो अनायास किसी दूसरे कामरेड के सामान पर पांव रखे बैठा था और उसके लिए धिक्कार सुन चुका था, बोला, "आखिर क्या हो गया? क्रांति समाप्त होने पर इन पुरानी वस्तुओं की कौन चिन्ता करेगा?"

युद्ध समाप्त होने के पश्चात्—क्रांति सम्पूर्ण हो जाने के पश्चात! कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि ये सब बातें सुनते रहकर मैं किस प्रकार अपनी हंसी या अपने आंसुओं को रोके रह सका था। क्या ये भाई भी एक दिन मन्त्री के मुंह से सुनेंगे कि "क्रांति समय और स्थान की मर्यादा से बन्धी हुई नहीं है"? या उसको भी सुनना पड़ेगा कि अध्यक्ष माओ ने कहा था कि "आज क्रांति की सिद्धि करना तो १० हजार मील लम्बी मार्च में पहले कदम के समान ही है। क्रांति का अन्त तो अभी दूर बहुत दूर है"?

अन्त में ८ बजे के पश्चात् इस दल को लेने के लिए सेना के ट्रक आ गए। मेरा पेट भूख के मारे सूखा जा रहा था और हड्डियों में जाड़ा घुसा जा रहा था। जब नए कामरेड एक एक करके ट्रक में सवार होने के लिए स्टेशन से निकले तो उन्होंने एक रूसी गाना शुरू किया। जिसकी पहली पंक्ति इस प्रकार थी:—

"विश्व में नहीं है ऐसा कोई देश और। जहां स्वाधीनता का हो ऐसा ठौर।"

उस समय मेरे मन में रह रह कर यह विचार आता, "तनिक ठहरो युवा मित्रो, तनिक और ठहरो। जब क्रांति का फंदा तुम्हारी गरदन के चारों ओर तनिक और खिंच जायगा तनिक और खिंच जायगा तब...?

बीसवां परिच्छेद

घेरे से बाहर

अगले दिन शुक्रवार का प्रातःकाल था। मैं कार्यालय गया और रेलवे स्टेशन से टेलीफोन करके मैंने मालूम कर लिया कि ६ बजे दक्षिण को जाने वाली रेल गाड़ी सोमवार की सुबह को केन्टन पहुंचेगी और उत्तर की ओर पीपिंग जाने वाली रेलगाड़ी वहान से ५ बजे चलेगी। इसके बाद मैं थ्येटर में गया और जिस कमरे में स्टेज सम्बन्धी प्रबन्ध हुआ करता था वहां पहुंचा और लोहे के फ्रेम का एक जोड़ी चश्मा उठा लिया जिसमें सादे शीशे लगे हुये थे। मैंने वहां से टा कुंग पाओ और वेन व्हा नामक हांगकांग के दो समाचार पत्रों की प्रतियां उठा लीं और उनमें छपे केन्टन और हांगकांग से बीच आने जाने वाली गाड़ियों की समयतालिका पर नज़र डाली। किन्तु उस समय मेरे मन में जो बेचैनी और उत्तेजना थी उसको बहुत यत्न ही से मैं किसी प्रकार दबा पा रहा था। वैसे तो मैं तब इतनी दूर एक दिशा में बढ़ गया था कि अब अपनी योजना को त्यागना सम्भव नहीं रहा था। सैनिक पासों का चुराना, उपमन्त्री के हस्ताक्षर बनाना और कानून-विरोधी ढंग से सैनिक यातायात टिकट हासिल करना, ये सभी ऐसी बातें थीं जो मुझको देशद्रोही के पाप का दण्ड दिला सकती थीं। पर अब बाज़ी लग चुकी थी, अगर मैं उसको हारता तो निश्चय ही उसका परिणाम मेरे लिए मृत्यु होता, और यदि जीतता तो स्वाधीनता।

दोपहर के बाद दो बजे मैंने एक अर्दली बुलाया और उससे ट्रक ड्राइवर कामरेड को दफतर में बुला लाने को कहा। आधे घंटे तक मैं बेचैनी के सौंर्थ मिनट गिनता रहा। आखिर वह आ ही गया। उसकी प्रतीक्षा करते समय मैंने अपने चमड़े के केस को खाली कागजों से भर लिया था। वह दफ्तर में आया; वह कुछ रुष्ट दिखाई देता था क्योंकि मैंने उसको जिस समय बुलाया था उस समय वह सोने का यत्न कर रहा था। मैंने क्षमा याचना की और

उसको बताया कि क्यों मैंने उसकी निन्द्रा में विघ्न डाला है। "क्या मुझको लगभग ४ बजे रेलवे स्टेशन तक पहुंचा सकोगे ?"

"हां मेरा खयाल तो है किन्तु लगभग उसी समय मैं भी कहीं जाने की सोच रहा था। क्या आपको वास्तव में कोई महत्वपूर्ण काम है" ?

"जी, बात यह है कि सेना के कर्नल पांच बजे पीपिंग जाने वाली रेल गाड़ी को लेना चाहते हैं, और उनका यह पोर्टफोलियो जिसमें बहुत ही महत्व-पूर्ण कागज़ रखे हैं, केन्द्रीय सरकार के पास पहुंचाना है। मैं बाद में बताऊंगा कि इन कागजों में क्या है"। मैंने यह बात ऐसे ढंग से कही जिससे उसको तनिक भी सन्देह न हो। "समझिए अगर मैं यहां से साढ़े तीन बजे चला तो शायद रेलवे स्टेशन कुछ पहले ही पहुंच जाऊंगा। पर मैं कर्नल से कुछ बातें भी तो करना चाहता हूं। आप जैसे ही मुझको रेलवे स्टेशन छोड़ देंगे वैसे ही आप जहां जाना चाहें जा सकेंगे। आपको मेरे लिए वहां प्रतीक्षा न करनी होगी। वापसी में मुझको कोई न कोई सैनिक ट्रक मिल ही जायगा।"

"बहुत अच्छा", चिरकालिक कामरेड ने कहा और मुझको वचन दिया कि हमारी इमारत के सामने साढ़े तीन बजे उसका ट्रक पहूंच जायगा।

अभी मेरे पास एक घंटा समय और था जिसमें मैं अपनी योजना पर विशद रूप से विचार कर सकता था। जैसे ही वह चला गया मैंने एक युवा स्त्री को टेलीफोन किया। मैं इस स्त्री को कभी प्रीति-भोज दे चुका था। मैंने उससे कहा कि सभा का कोई भी अध्यक्ष हो आप उन्हें मेरी ओर से कह दीजिए कि एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य से जिसका सम्बन्ध नये कामरेडों के जत्थे से है, जो पहली रात को ही आये हैं, मैं सभा में उपस्थित नहीं हो सकूंगा।

टेलीफोन करने के पश्चात् मैं अपनी कुर्सी पर बैठ गया और अपने मन को दृढ़ करने लगा। उस समय मैं यह भी सोचने लगा कि अभी मुझको और क्या कुछ करना शेष है। मेरे हिसाब से सोमवार की सुबह तक या सोमवार

की दोपहर बाद तक मेरी ढूंढ नहीं होने वाली थी। और उस समय तक यदि कोई अनपेक्षित घटना न हुई तो मैं केन्टन पहुंच चुका हूंगा और कुछ घंटे पश्चात् ही स्वतन्त्र हांगकांग में। मैं अपने कमरे में गया। जहां से अपना ओवरकोट उठाया। मैंने वह झूठा चश्मा और पीपिंग के रेल टिकट की सैनिक रसीद अपने पास रखली। मैंने अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया और कुछ कांपता हुआ दफ्तर की ओर वापस चल दिया। रास्ते में मैं सोचता जा रहा था कि यदि सप्ताह के किसी अन्तिम दिन कोई मुझसे यहां मिलने आया और उसने मेरे दरवाजे में ताला लगा पाया तो वह शायद यही समझेगा कि मैं दफ्तर में काम कर रहा हूं। पर यदि उसने दफ्तर में भी मुझको न पाया तो वह शायद समझेगा कि मैं किसी थ्येटर घर में पहुंच गया हूंगा या कोई विशेष काम कर रहा हूंगा। दफ्तर में पहुंच कर मैं कुछ मिनट के लिये सोफा पर लेट गया। मेरी आंखें छत पर गड़ी हुई थीं और माथे पर पसीना आगया था यद्यपि उस कमरे में उस समय बहुत ही ठंड थी।

एक बात और ऐसी रह गई थी जिसका प्रबन्ध करना मेरे लिये आवश्यक था, इसलिए अपने पीपिंग टिकट की रसीद मैंने अपनी मेज की दराज में रख दी। मैं यह अनुभव कर चुका था कि ऐसी अवस्था में चिरकालिक कामरेड अपने पहले ही अनुमान से काम किया करते हैं। क्योंकि मैं पीपिंग से आया था और मेरे अधिकांश मित्र वहीं थे, वे शायद यही समझेंगे कि मैं उसी बड़े नगर में छिपने के लिये चला गया हूं। यह स्वाभाविक ही होगा कि वे मेरे कमरे की तलाशी लें दफ्तर में छान बीन करें, और मेरी मेज की दराज को देखें, ताकि उनको कोई सुराग मिल जाय। यदि उनको दराज में मेरी उक्त रसीद मिल गई तो वे निश्चय ही यह समझेंगे कि पहिला अनुमान ही सही था और मैं अवश्य ही पीपिंग गया हूंगा। तब वे तमाम रेलवे स्टेशनों को तार भेज देंगे और पीपिंग की सारी मुहल्ला सरकारों को सावधान कर देंगे कि वे मेरी ताक में रहें और रेलवे लाइन के साथ साथ जो सैनिक पुलिस रहती है उसको भी मेरे पलायन की सूचना दे देंगे। जिस समय मेरी तलाश होती होगी उस समय यदि ट्रक ड्राइवर कामरेड कहीं मिल गया तो उसकी कहानी सुनकर वे अवश्य ही यह विश्वास कर लेंगे कि मैं पीपिंग चला गया हूं।

जो कुछ होना था वह तो होता ही, मेरे हिसाब से जो कुछ होने वाला था उसकी यही रूपरेखा थी। मैं यह भी सोचने लगा कि यदि प्रत्येक बात मेरे पक्ष में हुई तो दो-ढाई दिन के पश्चात् ही उनको मेरे गायब होने का पता लगेगा; और जब तक वे केन्टन की पुलिस को खबर देंगे तब तक मैं समस्त सैनिक चौकियों को पार करके केन्टन रेलवे स्टेशन में या सम्भवतः हांगकांग में पहुंच गया हूंगा।

मेरी प्रतीक्षा के अन्तिम १५ मिनट अनन्त काल का रूप धारण किए हुए थे। उन १५ मिनटों में मेरे सारे काम पर पानी फिर सकता था; सैकड़ों ऐसी अनपेक्षित बातें हो सकती थीं जिनकी मुझको कल्पना तक भी नहीं थी; पर समय की गति कितनी ही धीमी क्यों न हो, वह कटता तो है ही। अन्त में मेरे चलने की घड़ी भी आ ही गई। मैंने अपना कोट पहन लिया और अपने नकली चश्मे को अन्दर की जेब में रख लिया और एक बार फिर देख लिया कि मेरे पास काफी रुपया है या नहीं। दोनो रेलों के टिकट और सैनिक पासों को भी संभाल लिया। एक बार फिर उस कमरे पर जो मेरा कार्यालय और मन्त्री का स्वागतालय रह चुका था नज़र डाली। इसी कमरे से मैंने कम्युनिस्टों के लिए इतना प्रचार कार्य किया था। मेरे काम से चीन का मस्तिष्क कितना कलुषित हुआ होगा उस समय यह बात मैं नहीं सोच सकता था। न ही मैं यह जानता था कि क्या कभी किसी रूप में मैं उस क्षति की पूर्ति भी कर सकूंगा या नहीं। किन्तु उस समय अपने से झगड़ा करने से कोई लाभ न था। मैंने रद्दी कागजों से भरे पोर्टफोलियो को अपनी बगल में दबाया और बाहर आया। बाहर निकलते समय बड़ी सावधानी के साथ कमरे का द्वार बन्द कर दिया।

अपना ट्रक लिये हुये चिरकालिक कामरेड इमारत के बाहर मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। उसका चेहरा और हाथ चमक रहे थे। वह हजामत बनाकर आया था और अब उसके कपड़े साफ थे। मैं कूद कर उसके पास वाली सीट पर बैठ गया और अपनी वाणी के प्रकम्पन को काबू में करते हुए मैंने उससे हंसी की "क्यों मित्र, कहीं आज कोई विशेष कार्यक्रम बना लिया है क्या?" "हूं', कह कर उसने जवाब दिया। वह मुस्करा रहा था और उसी प्रसन्न मुद्रा में उसने अपना ट्रक चालू कर दिया। ऐसा मालूम होता था कि उसको

अपने गियरों के शोर से बहुत प्रेम है। उनकी तीखी आवाज से मुझको बहुत घबराहट होती थी, क्योंकि वैसे भी मेरी धमनियों की घबड़ाहट की कुछ कमी न थी। यह मेरे सौभाग्य की बात थी कि वह इतना बातूनी था। जिस सरकारी काम से मैं रेलवे स्टेशन जा रहा था उसमें उसको कोई विशेष दिलचस्पी न थी। उसको तो यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हो रही थी कि मुझको मन्त्रालय में वापस लाने के लिये उसको प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी, और मुझको उसकी इस जानकारी पर प्रसन्नता थी।

अपनी गाड़ी के लिए मुझको अब डेढ़ घंटा और प्रतीक्षा करनी थी। अपने चिरकालिक कामरेड को नमस्कार करने के पश्चात् मैं रेलवे स्टेशन के स्नानागार में गया और वहां पीपिंग वाली टिकट को और उस सैनिक पास को जिस पर मेरा असली नाम लिखा हुआ था फाड़ डाला और फ्लश के पानी में बहा दिया। अब अपना चश्मा चढ़ानेके पश्चात् मैं स्नानागार से निकला और अपने पोर्टफोलियो को जान बूझकर कर खिड़की के बाहर ही रख दिया। मैं सैनिक पुलिस से कम से कम मुठभेड़ करना चाहता था इसलिये स्टेशन से बाहर चला आया और बाहर की ठंडा हवा में घूमने लगा। अब मैं बड़ी व्यग्रता के साथ मिनट मिनट करके समय काटने लगा। समय काटने के लिये नदी के किनारे चला गया। नदी आतुर है, सम्भवतः क्रुद्ध भी, उसके प्रवाह को देखकर ऐसा लगता था। कुछ देर तक मैं उसमें उठने और मिटने वाली पटारों को देखता रहा। कितनी द्रुतगति से बह रही थी उस नीरवता में वह नदी!

स्टेशन को वापस आते समय मुझको अब एक और आशंका होने लगी। क्योंकि मैं मन्त्रालय में विशेष जनतन्त्रीय मनोविनोद के निमित्त कार्य करता रहा था, चौथी फील्ड आर्मी के कम से कम दो सहस्त्र सैनिक तो मुझको नाम और सूरत से पहिचानते थे। मैं सोचने लगा यदि उनमें से कोई मुझको रेल गाड़ी में मिल गया तो कितना बुरा होगा। सभी रेलगाड़ियों में कुछ सैनिक डिब्बे चला ही करते थे। मेरा अनुमान था कि यदि मैं साधारण नागरिकों के डिब्बे में बैठा तो शायद उक्त आशंका कम हो जाय, किन्तु तब मुझको सैनिक अधिनियमों का उलंघन करने के लिये हवालात में रहना पड़ सकता था। फिर मैंने सोचा कि दूसरा मार्ग ही मेरे लिए अधिक श्रेयस्कर

है, क्योंकि उसमें मुझको यह अवसर तो था कि मैं किसी बिना जानते हुये व्यक्ति ही को बातें बनाकर टालूं जबकि सैनिक डिब्बों में जाने पहचाने लोगों को धता बताना पड़ेगा। मैंने निश्चय कर लिया कि चाहे लोग मुझको घूर-घर कर ही क्यों न देखते रहें, मैं साधारण जनता के डिब्बे से ही सफ़र करूंगा।

मैं रेलवे स्टेशन पर वापस आया तो रेल गाड़ी के जाने में १५ मिनट रह गये थे और गाड़ी प्लेटफार्म से लगाई जा रही थी। मैं जिस समय पहुंचा उस समय सैनिक पुलिस के दो आदमी अपने सैनिक कामरेडों का अभिवादन कर रहे थे। उस समय एक मूर्खों जैसा डर मुझको फिर लगने लगा और बिना किसी कारण ही के मैं स्टेशन ही में रुक गया। तब मैंने देखा कि सैनिक डिब्बों के साथ दो सैनिक पुलिस मैन और खड़े थे। वे अपने सैनिक कामरेडों के शनाख्ती कागजों और पासों की जांच पड़ताल कर रहे थे। उस समय मुझको ऐसा कंपन हुआ कि मुझको अपने पांव पर खड़ा रहना मुश्किल हो गया। उस समय मैं अपने साधारण डब्बे की ओर इस डर से नहीं बढ़ा कि यदि सैनिक डिब्बों में से किसी ने मुझको पहचान लिया तो अनर्थ हो जायगा। इसके अतिरिक्त मैं इतना घबड़ाया हुआ था कि यदि कोई मुझसे साधारण प्रश्न भी करता तो मैं सम्भवतः उसको भी ठीक उत्तर न दे पाता, यद्यपि मेरे पास वह सर्वोपरि पार-पत्र था।

दस मिनट बात की बात में ही चले गये, और रेल गाड़ी के चलने में कुछ ही मिनट शेष रह गये। यदि उस समय मैं गाड़ी में न बैठता तो सदा के लिये मेरी कोशिशों पर तुषार-पात हो जाता। अन्त में अपने कोट का कालर इतना ऊंचा करके कि मेरा चेहरा ठंडी हवा और किसी की जानी पहचानी आंखों से शरण पा सके, मैं प्लेटफार्म पर पहुंच गया। मेरे आगे ५-६ कामरेड और जा रहे थे। जिनको रेल के एक अगले डिब्बे में जाना था। सामने वाले कामरेडों में से दो को सैनिक पुलिस ने रोका। मैं उनमें से बचकर आगे निकला तो एक पुलिस मैन ने मुझको सम्मान पूर्वक नमस्कार किया। मैं गाड़ी में चढ़ गया पर मेरा हृदय अभी तक बांसों उछल रहा था। मैं डिब्बे की आखिरी सीट पर बैठा और प्रत्येक कामरेड से नजर बचाता रहा। अब मैं अपने सिर को नीचा किये बैठा रहा। मैं एक थका मांदा

यात्री दिखाई देना चाहता था; ऐसा यात्री जो कई दिनों से बराबर सफ़र करता रहा हो। वास्तव में उस समय मैं एक एक सेकिंड गिन रहा था, पर ये सेकिंड थे कि समाप्त ही होते नजर नहीं आते थे उस समय प्रति क्षण मुझको यह भय लगा हुआ था कि न जाने कब किसी का हाथ मेरे कन्धे पर आ पड़े और कौन मुझको धर पकड़े।

रेल गाड़ी एक झटके के साथ चल पड़ी और मैं अब अधिक सहज ढंग से सांस लेने लगा। अभी तो मुझको यह विश्वास ही न हो रहा था कि मैं स्वाधीनता का उपभोग करने जा रहा हूं। अब मैं सोचने लगा कि न जाने क्यों उस सैनिक पुलिसमैन ने मेरा इतना सम्मान किया था। "क्या उसने मुझे पहचान लिया था ? तब उसने मुझको रोका क्यों नहीं ?" पांच मिनट तक मुझको ऐसे ही प्रश्नों में उलझा रहना पड़ा तब कहीं कुछ हद तक बात मेरी समझ में आई। "उसने मुझको मेरा अमरीकन सैनिक ओवरकोट देखकर सलाम किया था।" उसको उस कोट को देखकर यह विश्वास हो गया होगा कि मैं निश्चय ही रेजीमेन्ट अथवा डिवीज़न स्तर का कोई महत्वपूर्ण चिरकालिक कामरेड हूं। क्योंकि साधारणतः महत्वपूर्ण चिरकालिक कामरेडों के पास ही ऐसे चुने हुए कीमती कपड़े हुआ करते थे। भगवान भला करे साम्राज्यवादी अमरीकनों का वे अपने सैनिकों के लिये ऐसे बढ़िया गरम कपड़ों का प्रबन्ध करते हैं।

रेल गाड़ी के टिकट चेकर के आने के समय तक मरी मनोदशा बहुत सुधर चुकी थी। अब मैं सीधा बैठा हुआ था, और अपने साथी यात्रियों पर इधर-उधर दृष्टि डाल रहा था। किन्तु अभी तक मैंने यह निश्चय बनाया हुआ था कि यदि मैं किसी महत्वपूर्ण अधिकारी से मुठ-भेड़ होने पर उसके प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर न दे सका तो चलती हुई रेलगाड़ी से कूद जाऊंगा। उसी डिब्बे में दो चिरकालिक कामरेड जिनको मैं जानता था, बैठे हुए दिखाई दिये, जिनको देखकर मुझको अत्यधिक आश्चर्य न हुआ। यह सौभाग्य की बात थी कि वे एक फिल्म दिखाने वाली टुकड़ी के प्रोजेक्टर आपरेटर ही थे। वे अपने साथ एक फिल्म की कुछ रीलें ले जा रहे थे। उपमंत्री से आज्ञा प्राप्त करने के लिये कई बार वे मुझसे मिलने के लिए मेरे दफ्तर आ चुके थे। उनसे मुझको कोई आशंका न थी क्योंकि उनकी दृष्टि में तो मैं एक महत्वपूर्ण

चिरकालिक स्टाफ अफसर था। मैंने अपना चश्मा उतार लिया और उनके पास चला गया। वे आश्चर्य से मुझको देखने लगे। और मेरे स्वास्थ्य आदि के विषय में प्रश्न करने लगे।

मेरे यह पूछने पर मैंने उनको धन्यवाद दिया और उनके अगले प्रश्नों का सत्यमिश्रित असत्यपूर्ण उत्तर देने लगा, कि वे कहां जा रहे हैं, उनमें से एक ने बताया, "योयांग हमारे अध्यक्ष ने हमको वहां यह फिल्म दिखाने के लिए भेजा है।" मेरे इस प्रश्न के उत्तर में कि वे कौनसी फिल्म ले जा रहे हैं, उनमें से दूसरे व्यक्ति ने कहा कि यह तो उनको भी पता नहीं क्योंकि उन्होंने स्वयं उसको नहीं देखा है।

इसके बाद कुछ देर तक खामोशी रही। उसको तोड़ने के लिए मैंने उनको बताया कि मैं चांगशा जा रहा हूं, "उपमंत्री की ओर से किसी कार्य वश" यह सुनकर वे दोनों बहुत प्रभावित हुए और उसके बाद हमारी आपस की बात-चीत सहज ढंग से चलने लगी। तिस पर भी उनके योयांग में रेल गाड़ी से उतरने पर मुझको काफी सन्तोष हुआ।

पहले एक दिन और एक रात मेरा मन अस्थिर सा रहा। लेकिन जब मेरी गाड़ी हुंनयांग पहुंची तो मेरा आत्म-विश्वास पूर्णतः लौट आया। अब मैं डिब्बे में इधर से उधर घूमने भी लगा तथा रेलगाड़ी से उतर कर ताजी हवा के लिए कुछ स्टेशनों के प्लेटफार्मों पर भी जाने लगा। हुंनयांग में दो सैनिक कामरेड मेरे डिब्बे में आ गये और मुझसे बात-चीत करने लगे। वे दोनों युवा थे और चार वर्ष पहले उत्तर पूर्व चीन में क्रांति में सम्मिलित हुए थे। अब वे अपने कार्यालय के लिए कुछ प्रारम्भिक बातों का प्रबन्ध करने के लिए केन्टन जा रहे थे, ताकि हेनान की सैनिक सरकार की आवश्यक सहायता कर सकें। सम्भवतः मेरे कोट को देख कर उन्होंने भी मुझको एक महत्वपूर्ण चिरकालिक कामरेड समझा। मैं बार-बार अपने काल्पनिक नौकर की मूर्खता पर जो कुछ कहता रहता था उससे उनकी यह धारणा और भी दृढ़ हो गई है, ऐसा मुझको लगा। अपनी बात को और भी पक्का करने के लिए मैंने उनसे कहना शुरू किया कि "कैसा मूर्ख है। मैंने उसको चांगशा के रेलवे स्टेशन पर सिगरेट और कुछ खाने की चीजें लाने को भेजा था। मैंने उसको

गाड़ी की तरफ दौड़ कर आते हुए देखा भी पर तब तक गाड़ी छूट चुकी थी। सबसे बड़े खेद की बात तो यह है कि मेरा पोर्टफोलियो भी उसी मूर्ख के पास रह गया।"

मेरी क्षति पर उन्होंने मुझसे सहानुभूति दिखाई। तब मैं उनको अपनी १० वर्ष की काल्पनिक क्रांति सेवा की कहानियां सुनाने लगा। मैंने उनसे कहा कि मैं अब चौथी फील्ड आर्मी के हेडक्वार्टर में हूं। इस भय से कि कहीं वे मुझसे उत्तर-पूर्व चीन में उक्त सेना के साम्प्रतिक अधिकार क्षेत्र के विषय में कुछ न पूछ बैठें, मैंने कह दिया कि एक साल पहले मैं तीसरी सेना के पूर्वी चीन हेडक्वार्टर भेज दिया गया था। जो लोग तीसरी सेना से बदल कर वुहान आये थे उनसे मैं उसके विषय में बहुत कहानियां सुन चुका था। उन्हीं में से मैंन अपने युवा सहयात्रियों को कुछ कहानियां कह सुनाई मानो उन सभी का मुझको स्वयं अनुभव था। मैं देर तक ऐसे कामरेडों के बीच में रह कर काम कर चुका था जो १० वर्ष से २० वर्ष तक की क्रांति सेवा का पुण्य कमा चुके थे। इसलिए मैं उनकी वक्तृता शैली से पूर्णतः परिचित था। उनकी शैली में दम्भ और क्षमा याचना का विचित्र सम्मिश्रण रहा करता था। तदनुसार मैंने उनको बताया कि मैं शंघाई के एक कालेज में पढ़ा करता था और वहीं से क्रांति की सेवा करने के लिए सुपियाई के क्षेत्र में चला गया था, जहां मैंने एक साइकिलोस्टायल समाचार पत्र निकाला जो छापामार सैनिकों के काम आता था। उन दिनों मैंने हजारों ऐसे बुद्धिजीवियों को मारे जाते देखा जो बिना किसी आवश्यक तैयारी के युद्ध में झोंक दिये गए थे।

मेरी इस बात में उन्होंने बड़ी दिलचस्पी दिखाई और मुझसे विशद विवरण मांगने लगे। मैंने कुछ हल्की सी कटुता और व्यंग के साथ हंसते हुए कहा, "उस समय पार्टी शिक्षित व्यक्तियों से केवल घृणा ही करना जानती थी। शासकों में से कुछ लोगों का यह मत था कि शिक्षित व्यक्तियों का क्रांति के लिए कुछ व्यवहारिक महत्व नहीं है। सामान वे उठा नहीं सकते; मार्च वे नहीं कर सकते; खाना वे पका नहीं सकते; हल वे चला नहीं सकते और युद्ध वे नहीं कर सकते; तो फिर क्रांति का उनसे क्या लाभ : जब कभी शत्रु हमारी किसी ऐसी टुकड़ी पर टूट पड़ता जिसमें बुद्धिजीवियों

की काफी संख्या होती तो उस टुकड़ी की बुरी दशा होती थी। क्योंकि पढ़े लिखे लोग एक दूसरे से सहयोग नहीं करना जानते। उन दिनों शासकों का यह विश्वास था कि बुद्धिजीवी संघ के लिए भार ही हैं। वे तो केवल बातें बनाना जानते हैं, चिंग वंश से लेकर मिंग वंश तक के विषय में वाद-विवाद सभाओं में बात करनी हो तो वे बहुत अच्छे हैं। इसके अतिरिक्त वे और कुछ नहीं जानते। एक परिश्रमी किसान और नीचे दरजे का हाथ का काम करने वाला मजदूर उनकी अपेक्षा क्रांति के लिए कहीं अधिक आवश्यक है। उस समय नायक से लेकर साधारण सैनिक तक सभ। पढ़े लिखे लोगों से घृणा किया करते थे और उनकी बाधाजनक उपस्थिति को वे समाप्त करा देना चाहते थे।" उनमें से एक ने मुझको एक सिगरेट पेश की और स्वयं ही मेरी सिगरेट सुलगाई। मैं सिगरेट पीते समय कुछ चिन्तन की मुद्रा बनाकर बैठ गया और फिर कहने लगा, "मैंने एक कमाण्डर को नये बुद्धिजीवियों को अपने डिवीजन में भरती करते देखा था। उसने उनको छोटे छोटे बटेलियनों में संगठित करके एक रेजिमेन्ट के रूप में तैयार किया था। किन्त उनमें से किसी को भी नियमित रूप से न तो सैनिक शिक्षा ही मिलती थी और न कोई कोई युद्धानुभव ही था। अब तक वे साधारण बाबुओं का काम करते आये थे उक्त कमांडर उनकी शिक्षा और युद्धकातरता का उल्लेख करके बहुत हंसा करता था। किन्तु वितंडा और प्रचार करके वह जो कुछ सिद्ध करना चाहता था उसमें सफल हो गया। उसकी बातें सुनकर सभी बुद्धिजीवी उससे अपना मतभेद प्रकट करने लगे और उत्साहपूर्वक रण में उतरने के लिए तैयार हो गए। अगली बार शत्रु से जब मुठभेड़ हुई तो इस में उन पढ़े लिखे लोगों ही की बटेलियनों को झोंका। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि उनमें से बहुत थोड़े ही व्यक्ति जीवित लौटे। परिशिक्षण ओर सामरिक अनुभव के अभाव में और होता भी क्या? किन्तु उससे कमान्डर का मनोरथ सिद्ध हो गया। उसको तो उन लोगों से छुटकारा पाना था। उसी के लिए यह उपाय ढूंढ निकाला गया था।" मैं इतना कहने के बाद तनिक देर के लिए चुप हो गया। और मैं फिर बड़े नाटकीय ढंग से बोला। "मैं उन थोड़े से भाग्यशाली व्यक्तियों में से हूं जो बचकर लौट आये थे।"

मेरी बातें सुनकर दोनों युवा कामरेड आश्चर्य की लम्बी सांस लेने लगे और मैं कहता ही गया, "हममें से जो लोग जीवित बचे थे उनको लौट कर

आने पर अपने कामरेडों से अपनी आलोचना सुननी पड़ी। वे सभी हमको आक्रमण के लिये निकम्मा बताने लगे। उनकी राय में तो जो युद्ध में मारे जा चुके थे वे भी क्रांति के लिये निरर्थक ही थे। "कितना अच्छा हो कि सभी शिक्षित व्यक्ति इसी प्रकार खेत हो रहें, एक कामरेड ने तो यहां तक कह डाला था!" यह सुनाने के बाद मैंने दोनों कामरेडों की ओर देखा जो अब मेरी बात सुनकर अपना मुंह खोले रह गये थे। मैंने अपने कंधों को तनिक हिलाकर कहा, "जहां तक मेरा सम्बन्ध है, निःसन्देह मुझको तो उस अनुभव से लाभ ही हुआ। मैंने पहिली बार आग बरसती देखी और इस प्रकार अपनी अग्नि-परीक्षा पूरी कर ली। बाद की लड़ाइयों में वह अनुभव मेरे काम आया। चीन में बहुत व्यक्ति मेरी तरह भाग्यशाली नहीं। मैंने सुना है कि जो कुछ हमारे डिवीज़न में देखा गया था ऐसा तो सारे ही चीन में होता रहा है।"

उन दोनों में जो कम आयु का था वह कामरेड बोला, "मैंने स्वयं उत्तर-पूर्व चीन के विषय में ऐसी कहानियां सुन रखी हैं।"

किन्तु मैंने चिरकालिक कामरेडों की भांति कुछ क्रांति-विरोधी बातें कहने के पश्चात् अब दूसरा सुर छेड़ा, "संघ जानता है कि हमारे लिये क्या शुभ है और क्या अशुभ। फिर बाद में शासकों की ओर से समय समय पर ऐसे विशेष अधिनियम भी जारी किये गये जिनसे भारी भूलों को दूर किया जा सके। मेरा अपना विश्वास है कि अन्त में वे सभी बुद्धिजीवी जो बाधायें पैदा करते रहते हैं पूर्णतः सुधार लिये जायेंगे और संघ के कृपापूर्ण नेतृत्व में एक ऐसा समाज बन सकेगा जिसमें कोई भी बात बेढंगी अथवा बेतुकी न होगी।"

चिरकालिक कामरेडों के विचार व्यक्त करने का मैंने जो यह अभिनय किया था उससे बढ़कर संभवतः कोई भी व्यक्ति न कर सकता था। मुझको अपने "सही" विचारों को शिष्ट शब्दों में व्यक्त करते हुये देखकर वे दोनों कामरेड बड़े ही प्रभावित हुये। रास्ते भर वे मेरे लिये छोटी छोटी सेवायें करते रहे। कभी कोई मेरे लिये सिगरेट खरीद लाता तो दूसरा मेरे लिये हाथ मुंह धोने के लिये पानी ले आता या मेरे लेटे रहने के लिये उपयुक्त प्रबन्ध कर देता।

वास्तव में उस काल्पनिक नौकर से जिसको मैं चांगशा में खो आया था वे कहीं अधिक लाभप्रद सिद्ध हुये !

सौकुआन नामक रेलवे स्टेशन पर एक चिरकालिक कामरेड जो सेना की ओर से खरीदारी आदि का काम करता था रेल गाड़ी में सवार हुआ। उसने डिब्बे में चारों ओर दृष्टि दौड़ाई और हम तीनों को अपना यात्रा-संगी बनाने का निश्चय कर लिया। अपने आपको बड़े हास्यपूर्ण ढंग से हमारे सामने पेश करके और अपना परिचय देते हुए वह हमारे सामने की सीट पर आ बैठा, और "पाइ कान" (मदिरा) की बोतल निकाल कर बैठ गया। मैंने देखा कि वह पहले ही घूंट में अपनी बोतल से काफी शराब चढ़ा गया था। उससे मैंने अनुमान कर लिया कि यदि वह हमारे साथ चला तो बड़ी सहायता मिलेगी क्योंकि उसके साथ होने से मेरे प्रति किसी को संदेह न होगा। वूहान से चलने के पश्चात् अब पहली बार मुझको सुरक्षा का अनुभव होने लगा।

किन्तु मेरे मन में सुरक्षा की सांत्वना लगभग दो घंटे ही रह सकी। हम चारों आपस में मजाक करते और बातें करते चलते रहे पर वह कामरेड उत्तरोत्तर बेहोश होता गया और अपने विषय में खुल कर बातें करने लगा। उसने हमको बताया कि वह टियंटसिन नामक नगर के निकटस्थ एक गांव में पैदा हुआ था और जिस समय वह "क्रांतिकारी उत्पादन" का निरीक्षण कर रहा था उस समय अपने लिये काफी रुपये पैसे जोड़ लिये थे। यह बताने के पश्चात् उसने बहुत ही गर्व के साथ अपनी उंगलियों में पहनी हुई दो भारी सोने की अंगूठियां दिखाईं। मदिरा का प्रभाव जब तनिक और गहरा हो गया तो उसकी बातचीत असंगतिपूर्ण होने लगी।

किन्तु उसकी बेहोशी से मुझको चिन्ता हुई, ऐसी बात नहीं थी। जब वह हमारी गाड़ी में चढ़ा तब सोमवार की सुबह हुई थी। केन्टन पहुंचने के ~~सम्बन्ध~~ में जितना समय वास्तव में लगना चाहिये था उसके विषय में हिसाब लगाते समय मैं भूल कर गया था। मुझको यह पता होना चाहिए था कि लाल चीन में रेल गाड़ियां न तो समय पर अपने निर्दिष्ट स्थान पहुंचती हैं और न समय पर कहीं से छूटती हैं। "केन्टन अभी बहुत दूर है, और इस समय तक मन्त्रालय को और हमारे कामरेडों को मेरे गायब होने का पता हो

ही गया होगा । इस समय तक तो मन्त्री और उपमन्त्री वापस आ गये होंगे और मन्त्री की सहकारिणी भी दोपहर बाद मुझसे मिलने की तैयारी में होगी इस कारण मैं कल्पना करने लगा कि शायद वे लोग मेरे कमरे और मेरी मेज की दराज की तलाशी ले रहे होंगे, दराज से उन्हें मेरे टिकट की रसीद मिल गई होगी जिससे उन्होंने सैनिक यातायात टिकट घर से पूछ ताछ कर ली होगी, शायद इस समय तक उन्होंने पीपिंग को तार भी दे दिया होगा और कोई ऐसा व्यक्ति जो गुप्त और महत्वपूर्ण कार्य में लगाया हुआ है इस समय तक उत्तर जाने वाली रेल गाड़ी को पकड़ने के लिये वहां से चल भी पड़ा होगा । संघ गायब होने वाले लोगों को कभी नही बख्शता, और मेरे सामान, आत्म-कथा और मेरे रेकार्ड की अब तक छानबीन की जा चुकी होगी ताकि मेरे पलायन का कारण जाना जा सके; इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि उनको किसी बात से भी मेरे ऊपर यह संदेह नहीं होगा कि क्रांति-विरोधी राष्ट्रवादी जासूस था, किन्तु भागने वाले लोगों पर गिरफ्तार हो जाने के बाद यही तो आरोप लगाया जाता था; मेरे पलायन और मेरे विषय में होने वाली निर्णय सभा, जिसमें मेरे विचारों और मन्त्री की सहकारिणी द्वारा लगाये गये अभियोगों की सत्यता का पता लगाया जाना था, दोनों ऐसे कारण थे जिन पर मुझको मृत्यु दण्ड दिया जा सकता है।" फिर मैं सोचने लगा कि "सम्भवतः वे मेरे पलायन की बात उस समय तक छिपाए रहेंगे जब तक कि वे मुझको पकड़ ही न लें और पकड़ने के बाद राष्ट्र-वादियों के लिए जासूसी करने के अभियोग में मुझको दण्ड न दे दें । क्योंकि यदि वास्तव में कोई भाग निकले तो उसके विषय में समाचार देने से अन्य कामरेडों के ऊपर बुरा प्रभाव होने की आशंका रहती है"। मेरी विचार शृंखला चलती ही रही: "यदि रविवार ही को मेरे भाग जाने का पता लग गया होगा तो वे शायद यही परिणाम निकालेंगे कि मैंने पीपिंग जाने का ढोंग रचा है । इस अवस्था में संघ अपने गुप्तचरों को शंघाई, केन्टन और अन्य बन्दरगाहों को सूचित कर देगा । यदि कहीं केन्टन रेलवे स्टेशन पर वह गुप्तचर मेरी प्रतीक्षा मे खड़ा हुआ पाया गया तो ? तब मैं क्या करूंगा"। मेरे मन को फिर चिन्ता ने आच्छादित कर लिया । मैं ऐसे व्यक्तियों को स्वयं देख चुका था जिन्होंने भागने की कोशिश की थी पर जिनको पकड़ लिया गया था और फिर कठघरे में डाल दिया गया था। ऐसे अभागे व्यक्तियों के चेहरे पर मैं जो चिन्ह देख चुका था वे मेरे मस्तिष्क में अभी तक ज्यों के त्यों बने थे

और इसलिए मैं अपनी वर्तमान स्थिति के विषय में किसी भी भयावह सम्भावना के प्रति उदासीन नहीं हो सकता था।

मैं फिर संकट उपस्थित होने पर रेलगाड़ी से कूदने की बात सोचने लगा। मेरी चिन्ता मेरे चेहरे से दृष्टिगोचर होने लगी होगी क्योंकि मेरे अन्य तीनों साथियों ने अब मुझसे पूछा कि मैं इतना व्यथित क्यों दिखाई देता हूं। यह सौभाग्य की बात थी कि उनमें से किसी को भी दूसरों पर संदेह करने के व्यवसाय की ट्रेनिंग न थी। उत्तर-पूर्व से आने वाले दोनों युवकों में जो अधिक आयु का था, अब उसने मुझसे पूछा—"क्या आप अभी तक अपने नौकर के विषय में चिन्ता किये जा रहे हैं ?"

उसके इस प्रश्न को सुनकर मैंने यह निश्चय कर लिया कि उस अस्तित्वहीन नौकर ही को अपनी बैचेनी का कारण बताते रहना चाहिए। मैंने उससे कहा, "ठीक यही बात है। मैं उसी की चिन्ता कर रहा हूं। उसके पास मेरा पोर्टफोलियो भी है, मेरी मूर्खता तो देखिये।" मैं बड़ी नृशंसता पूर्वक उसकी आलोचना करने लगा। चिरकालिक कामरेड ने मुझसे पूछा—कि "आखिर मामला क्या है ?" मैंने उससे अपनी काल्पनिक क्षति की कहानी कह सुनाई। यद्यपि वह मेरी बात अच्छी तरह नहीं समझ पाया क्योंकि मदिरा के कारण उस समय तक उसका मस्तिष्क चक्कर खा रहा था। वह मुझसे सहृदयता पूर्ण सहानुभूति प्रकट करने लगा; यह ऐसी बात थी जिसको किसी चिरकालिक कामरेड को कोई महत्व नहीं देना चाहिए था वह इतना ही समझ पाया था कि साम्प्रतिक जीवन से सन्तोष नहीं हो सकता। किन्तु मेरी ओर मुड़कर वह मुझको प्रोत्साहित करते हुए बोला—"खुश रहो, इसी में गनीमत समझो कि तुम्हारा और कुछ नुकसान नहीं हुआ।" यह कह कर उसने बहुत जोर से डकार ली और एक शुष्क तीखी धुन छेड़ दी।

केन्टन से स्टेशन पर मेरी गाड़ी में सैनिक पुलिस आ गई। वह प्रत्येक यात्री के शनाख्ती कागजों की जांच पड़ताल कर रही थी। उस समय मेरा हृदय मानो उछल कर मेरे गले में आ चुका था और मैं उस आशय का तनिक सा संकेत पाते ही कि उनको मेरे विषय में सावधान रहने के लिए आदेश आ चुका है, रेलगाड़ी से कूदने के लिए तैयार था। जहां हम चारों ओर बैठे थे

वहां रेलवे गार्ड आ गया। उसने हमारे प्रति बड़ी मैत्री दिखाई। उसने मुझको (या मेरे ओवर कोट को) सलाम किया जिसका मैंने उपयुक्त उत्तर दिया। फिर उसने विनम्रतापूर्ण ढंग से मुझसे अपने शनाख्ती कागज दिखाने के लिए कहा।

उत्तर देते समय मैं बड़ा ही सहज व्यवहार बनाये हुए था और जितनी निर्भीकता से मुझको अपना पास उसको दिखाना चाहिए था उतनी ही निर्भीकता से मैंने दिखा दिया और कह दिया कि शनाख्ती कागज मेरे पास नहीं है। "शायद चौथी फील्ड आर्मी के हेडक्वाटर के इस विशेष पास से काम चल जायगा ?" मेरा पास लेते हुए वह कहने लगा, "मुझे दुख है कि आपको इतना कष्ट दे रहा हूं, किन्तु यह तो एक औपचारिक कार्यवाही है।" तब तनिक दम्भपूर्ण वाणी में बोला, "यदि अध्यक्ष माओ भी स्वयं यहां आये तो उनको भी मुझको अपना पास दिखाना पड़ेगा। बात यह है कि अभी पिछले दिनों कुछ ऐसे कामरेड पकड़े गये थे जिन्होंने गैर-कानूनी ढंग से हांगकांग जाने का प्रयत्न किया था।"

उसके मुख से यह शब्द सुनकर मुझको लगा कि शायद भय से मेरी कनपटी फट जायगी। मगर उसने पास पर नजर डाली और मुझसे मेरे नौकर के बारे में प्रश्न किया। मैंने उस काल्पनिक नौकर के लिए अपशब्दों का तांता बांध दिया और कहा, "कि वह धूर्त कहीं चांगशा में रह गया है।" साथ में उत्तर-पूर्व चीन से आया हुआ जो कम आयु का कामरेड था उसने उस समय मेरी बड़ी ही सहायता की और हंस कर बोला, "आपको पता नहीं यह तो उसकी चिन्ता में घुले जा रहे हैं, गार्ड ने मेरा पास मुझको लौटा दिया और अब उस युवक से उसके पास के बारे में पूछा। वह तनिक झेंप के साथ मुस्कराता हुआ कहने लगा; कि "मैं इतना महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं हूं कि मुझको विशेष पास मिले। मुझ पर तो केवल शनाख्ती कागज ही हैं।" गार्ड यह सुनकर हंस पड़ा। सम्भवतः उसको उक्त कामरेड का मेरे ऊपर किया हुआ हल्का-सा वह व्यंग अच्छा लगा था। उत्तर-पूर्व चीन से आये हुए कामरेडों ने कागज दिखा दिये। चिरकालिक कामरेड ने भी अपने नशे की हालत में गार्ड को अपना पास दे दिया और सोता हुआ सा बोला, "तुम लोग हमारी जान के लिए बबाल बन गये हो।" गार्ड ने उससे कुछ नहीं कहा किन्तु मेरी

ओर झुककर मेरे कान में कह दिया, कि "जब आप केन्टन पहुंचे तो उस मित्र के विषय में सावधान रहियेगा। वहां करफ्यू के विषय में अभी तक बड़ी सख्ती है। ८ बजे बाद उनको जो भी मिल जाता है उसी को वे धर पकड़ते हैं।" गार्ड की मैत्री से मेरी जान में जान आई। मैंने उसको धन्यवाद देते हुए कहा कि "आपकी सलाह पर अवश्य काम करूंगा। किन्तु केन्टन में जब हम लोग पहुंच जायें तो फिर कहां जाया जाय। ११ तो अब बज चुके हैं और हमारा रेलवे स्टेशन आने ही को है।"

"कह नहीं सकता, कई बार तो रेलगाड़ी को रात भर शहर के बाहर ही खड़े रहना पड़ता है, तब कहीं उसको क्लीयरेंस मिलता है। किन्तु यदि आप सूर्य निकलने से पहले पहुंच गये और यदि स्टेशन के वेटिंग रूम में आप न सोना चाहें तो रेलवे स्टेशन के पास एक छोटा सा होटल है जहां आप ठहर सकते हैं।"

मैंने पुनः उसको धन्यवाद दिया। वेटिंग रूम में जाने के लिये तो मैं इच्छुक हो ही नहीं सकता था। किन्तु साथ में उस होटल में भी अपना नाम नहीं लिखाना चाहता था, ऐसी अवस्था में भीड़ में रहने ही में बुद्धिमानी है, मने अपने मन में कहा। ये तीनों व्यक्ति स्वातन्त्र्य सेना की यूनिफार्म पहने हुये हैं। संदेह से बचने के लिए इससे अच्छा और कोई प्रबन्ध क्या हो सकता है? अब मैंने अपने तीनों साथियों को उसी छोटे से होटल में ठहरने पर रजामन्द कर लिया, किन्तु इस शर्त पर कि उनका बिल मैं ही अदा करूंगा। मैंने उनको बताया कि खर्च करने के लिए मुझे सरकार की अनुमति है और जब संघ ने मेरे प्रति इतनी उदारता दिखाई है तो उससे लाभ न उठाना मूर्खता होगी। क्या ऐसी राय नहीं है आपकी?"

तीन घंटे बाद हमारी गाड़ी केन्टन के प्लेटफार्म पर आ लगी। उस समय दो बजकर कुछ मिनट हो चुके थे। यह मंगलवार की सुबह थी और मैंने देखा कि प्लेटफार्म पर मुझको गिरफ्तार करने के लिए कोई भी नहीं खड़ा था। हमारा चिरकालिक कामरेड इतना बेहोश और निद्रा भार से इतना दबा था कि उसका खड़ा होना दूभर हो रहा था। किन्तु कुछ क्षण पश्चात् ताजी हवा लगने से उसको इतनी चेतना अवश्य हो गई कि होटल तक अपने

ही पांव पर मेरे साथ चला गया। होटल की लाबी में पांच सशस्त्र सैनिक मौजूद थे। उन्होंने जब देखा कि हम स्वातन्त्र्य सेना के सदस्य हैं तो वे बहुत सम्मानपूर्वक ढंग से हमारे पास आये और हमसे कहने लगे कि "हम रात भर करफ्यू की पत्रोली करते रहे हैं। आप अपने कागज दिखा दीजिये।" दोनों युवा साथियों ने अपने अपने कागज तथा चिरकालिक कामरेड और मैंने अपने अपने पास दिखा दिये। हमने उनसे कहा कि हमारी रेल गाड़ी अभी अभी केन्टन आई है और हम रात भर ठहरने के लिये एक कमरा चाहते हैं"। करफ्यू के उक्त संरक्षकों को हमारी प्रत्येक बात पर विश्वास हो गया। तब हम थके मांदे होटल बाबू के पास गये और टूटी फूटी केन्टनी भाषा में उससे चारों व्यक्तियों के लिए एक कमरा मांगा। कमरा चिरकालिक कामरेड के नाम लिया गया, क्योंकि अभी तो कई ऐसी बातें और थीं, जिनपर मेरा स्वतन्त्रता प्राप्त करना निर्भर था। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि मुझको बिल्कुल नींद नहीं आई।

प्रातःकाल दोनों युवा कामरेड तो चले गए। जब चिरकालिक कामरेड निद्रा और नशे से उन्मुक्त हुआ तो अपने सिर में भारी दर्द की शिकायत करने लगा। इस पर मैंने उसको उसी होटल में एक रात और ठहरने के लिए तैयार कर लिया। हम दोनों एक साथ भोजनालय में गए और मैंने ही उसके नाश्ते आदि करने का खर्च बरदाश्त किया। जब वह मुझको छोड़कर अपने किसी काम से चला गया तो मैं स्टेशन वापस चला आया और वहां जाकर मैंने मालूम किया कि हांगकांग को उसी दिन आखिरी गाड़ी दोपहर बाद दो बजे जायगी। मेरे पास अब इतना समय नहीं रह गया था कि मैं कहीं जाकर साधारण नागरिक के कपड़े खरीद लूं। मैं रिक्शा में भी बैठना नहीं चाहता था, क्योंकि मैं कई ऐसी कहानियां सुन चुका था, जिनमें कई कामरेड इसलिए संकट में पड़ गए थे कि वे रिक्शा में बैठे पाए गए थे और इसलिए संपत्तिशाली वर्ग के सदस्य ठहराये जाकर दंड पा चुके थे। पर क्योंकि सड़कों से मुझे परिचय नहीं था, मेरे होटल पहुंचने के पहिले ही तीन बज चुके थे। मैं होटल बाबू के पास गया और अपने कमरे की चाबी मांगने लगा। उस समय वह अखबार पढ़ रहा था। उसने मेरी ओर सिर उठाकर देखा और कहा, "सुनिए, अगर आपका सामान अस्तव्यस्त मिले तो आप रुष्ट न हूजिएगा। कुछ देर पहले सैनिक पुलिस यहां आई थी"। उसकी यह बात

सुनकर मैं ऊपर से नीचे तक कांप गया और ऐसी वाणी में, जिसका मैं कोई विवरण नहीं दे सकता, मैंने उससे पूछा, "किस बात की खोज में थी सैनिक पुलिस ?"

"कोई विशेष बात न थी। जब कोई व्यक्ति यहां आता है तो ऐसी जांच पड़ताल तो वह करती ही रहा करती है, या जो आगे जाते हुए यहां ठहर जाता है, उसकी तलाशी ली जाती है।" यह कह कर वह पुन: अपना अखबार पढ़ने में व्यस्त हो गया और जैसे कि वह अपने आप में बड़बड़ा रहा हो, कहने लगा, "न जाने क्यों ऐसा होता है। हमारा कारोबार तो सम्मानित है।"

वुहान से मैं अपने साथ कुछ लाया ही न था। इसलिए यदि किसी का सामान अस्तव्यस्त हुआ था तो केवल उस चिरकालिक कामरेड का जो मेरे साथ था। परन्तु फिर भी मैं बड़ी दुर्बलता का अनुभव कर रहा था। स्वतन्त्रता के इतने निकट और फिर भी अपने आपको उससे इतनी दूर पाकर किसको कटु कष्ट का अनुभव न होगा ? मैं एक घंटे तक कमरे में ही आराम करता रहा। सायंकाल का खाना खाने के पश्चात् जब मैं लौटा तो मैंने देखा कि चिरकालिक कामरेड फिर शराब का एक बड़ा जग लिए बैठा है। जब उसने मुझसे पीने को कहा तो मैंने धन्यवाद पूर्वक इन्कार कर दिया और साथ ही उसको पीने के लिए प्रोत्साहित भी किया। वह कह रहा था कि सरकारी काम से केन्टन आने का अवसर उसको कम ही मिलता है। फिर अब जब वह यहां आ ही गया है तो उसको जितना समय यहां रहना है, मौज से रहना है। मैं बहुत सी बातों के बारे में विचार-विमर्श करने लगा। चिरकालिक कामरेड प्रति क्षण उत्तरोत्तर अधिक मतवाला होता गया और अन्त में मुझसे पूछने लगा कि "क्या तुमको कोई स्त्री चाहिए। मैं ऐसे काम में विशेषज्ञ हूं।" वह बोला—"और चाहो तो एक घंटे में ही इसी कमरे में एक स्त्री मंगवा सकता हूं।" उसको शायद खयाल था कि यदि मैंने उसकी मदिरा में हिस्सा नहीं बटाया तो शायद स्त्री में तो हिस्सा बटा ही लूंगा। विशेषत: यदि वह देखने भालने में अच्छी हुई। मैं उसकी बात सुनकर हंस पड़ा और उससे कहने लगा, कि "मैं गुरुवार की रात को हेंगकों में अपने 'प्रेमी' के साथ था। गाड़ी का सफर बहुत लम्बा और थकान पैदा करने वाला रहा है। उत्तर-पूर्व चीन के जो दो

कमरे के बाहर सर्दी थी। मैं एक रेस्ट्रां में गया और गरम गरम नाश्ता लिए हुए समय काटता रहा। मेरे मन में उस समय जो खिंचाव था उसके कारण मैं कुछ खा नहीं सका और बार बार उस समय मेरे मन में यही उलझन पड़ी हुई थी कि आखिर दो बजे दोपहर बाद तक क्या करता रहूं ? तब मन में ख्याल आया कि रेलगाड़ी की टिकट खरीद ली जाय। रेलवे स्टेशन तक पहुंच कर पता लगा कि दोपहर से पहले ही एक गाड़ी जाती है और उसके जाने में केवल पांच मिनट है। मैं तुरन्त उसी गाड़ी में सवार हो गया। उस समय मेरे मन में जो भावनाएं थीं उनको आसानी से नहीं बताया जा सकता है। जिस व्यक्ति को एक साल से अधिक से स्वाधीनता का स्वाद तक न मिला हो उसके मन में ऐसे क्षणों में कैसे विचार और भावनाएं आती हैं उसका अनुमान केवल वे ही व्यक्ति लगा सकते हैं जिसको ऐसा अनुभव हुआ हो। जिनका यह सौभाग्य है कि उनको ऐसी किसी व्यवस्था में रहना नहीं पड़ा है जिसमें मैं रह चुका था उनके लिए मेरे इन शब्दों का क्या महत्व हो सकता है ? उस समय मैं जिस असीम सुख के कारण उन्मत्त सा हो उठा था उसके विषय में उन लोगों को कोई कल्पना नहीं हो सकती, स्वाधीनता जिनके जीवन का एक दैनिक आवश्यक अंग है, अर्थात् ऐसे लोगों को जो कम्युनिस्ट शासन में नहीं रहे और जिनकी हृदयस्थ मानवता को रौंदा नहीं जा सका है।

मैं जब रेलगाड़ी से उतरा और यह अनुभव करने लगा कि मैं वास्तव में एक स्वतन्त्र नगर में आ पहुंचा हूं, तो मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा मानो मैं अपना जीवन मेंह और तूफान में ही काटता आया था और अब पहली बार सूर्य के दर्शन कर रहा हूं। मैंने एक गाड़ी रोकी और उसमें बैठकर तुरन्त अपने मित्र के घर चला गया। उसको देखकर मेरी आंखों में आंसू भर आए। यह भी विधाता का विचित्र व्यंग है कि जिस समय मैं अपने अतीत के विषय में सब कुछ भूल जाना चाहता था उस समय मेरे मित्र का सबसे पहला प्रश्न मुझसे यही था कि "लाल चीन का क्या हाल है" ? कुछ देर चुप रहने के पश्चात् मैंने कहा कि "यदि कम्युनिज्म के गंदले पानी की बाढ़ दुनिया में आ गई तो उसमें मानवता डूब जायगी। प्रिय मित्र, क्या तुम समझ सकोगे मेरी बात यदि मैं तुमसे कहूं कि मैंने अपनी आंखों से एक बूढ़ी औरत को रो रो कर यह कहते हुए सुना था कि चीन में तो सूर्य ही अस्त हो गया है ?"